केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद्

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN AYURVEDA AND SIDDHA

32

वार्षिक प्रतिवेदन
वर्ष 2005-06

ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2005-06

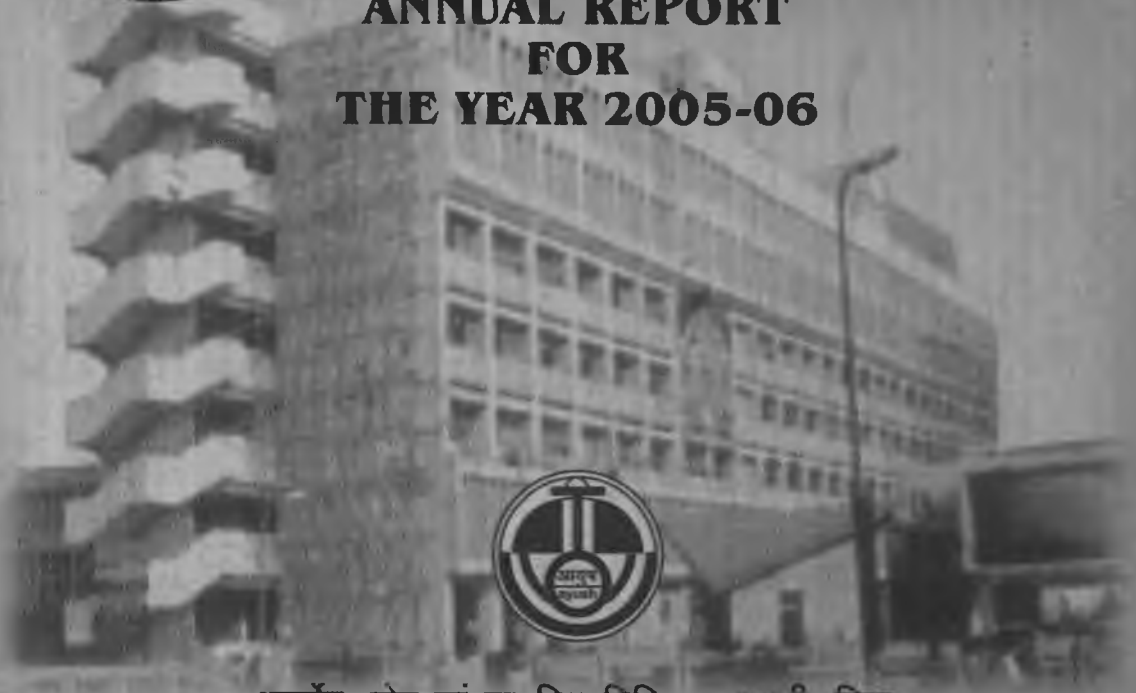

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, युनानी, सिद्ध,
और होम्योपैथी (आयुष) विभाग
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार) नई दिल्ली

Department of AYUSH
Ministry of Health and Family Welfare
(Govt. of India) New Delhi

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद

वार्षिक प्रतिवेदन

2005-2006

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) विभाग
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)
नई दिल्ली

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
I.	प्रस्तावना	1
II.	प्रशासनिक प्रतिवेदन	5
III.	तकनीकी प्रतिवेदन	20
अ.	**आयुर्वेद**	
1.	संस्थान/केन्द्र/एकक के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर	20
2.	निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम	22
	अ) निदान चिकित्सात्मक परीक्षण	22
	ब) रोग समूह,अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और 2005-06 के दौरान परियोजनाओं की सहभागिता	42
	स) 2005-06 के दौरान बहिरंग रोगी विभाग और अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट/निर्मुक्त रोगियों की संख्या	44
	द) स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम	45
3.	चिकित्सा-प्रजाति-वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम	47
4.	औषध पादप कृषि कार्यक्रम	51
5.	कस्तूरी मृग प्रजनन कार्यक्रम	57
6.	भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन	58
7.	पादप ऊत्तक संजनन	60
8.	औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम	62
9.	भेषज गुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	72
10.	वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम	78
11.	परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम	80
12.	सोवा-रिग्पा (आमची) अनुसंधान कार्यक्रम	85
13.	प्रकाशन एवं सहभागिता	87

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
ब. सिद्ध		
1.	संस्थान/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर	115
2.	निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम	116
3.	चिकित्सा वानस्पतिक अनुसंधान कार्यक्रम	121
4.	भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	124
5.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम	127
6.	भेषज मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम	129
7.	भेषज निर्माण	131
8.	वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम	132
9.	प्रकाशन एवं सहभागिता	133
IV	**आभार**	137
V	**अंग्रेजी रुपान्तर**	139

I. प्रस्तावना

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है तथा भारत में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक विधि से शोध कार्य-प्रतिपादित करने, उसमें समन्वय स्थापित करने, सहायता करने, सूत्र वृद्ध करने, उसका विकास करने एवं समुन्नत करने से संबंधित शीर्ष राष्ट्रीय संस्था है । यह परिषद देश के विभिन्न भागों में स्थित अपने परिधीय 38 आयुर्वेद एवं सिद्ध के संस्थानों/ केंद्रों/एककों, अस्पतालों, आधुनिक संस्थानों के माध्यम से अपने उद्देश्यों एवं कार्यो का संचालन एवं नियंत्रण करती है । परिषद की आयुर्वेद एवं सिद्ध के उपयुक्त अनुसंधान अध्ययन एवं संबंधित विज्ञान क्षेत्र को वित्तीय सहायता प्रदान करती है । क्रमबद्ध अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न रोगों हेतु प्रभावी एवं अल्प लागत उपचार पर खोज करने के लिए जोर देना है । परिषद की अनुसंधान गतिविधियों में निदान चिकित्सात्मक एवं मौलिक अनुसंधान, औषधि अनुसंधान, साहित्य अनुसंधान तथा परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम सम्मिलित है । वर्तमान में परिषद ने पोषक पदार्थ एवं सुन्दरता बढ़ाने वाले द्रव्यों के अनुसंधान के क्षेत्र में भी कदम रखा है ।

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम

आयुर्वेद में निदान चिकित्सात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत 22 निदानचिकित्सात्मक स्थिति यथा आमवात, अपस्मार, अर्स भगन्दर, ग्रहणी, गृध्रसी, किटिभ, मधुमेह, मनोद्वेग, मूत्राष्मरी, मेदोरोग, परिणामशूल, पक्षाघात, पंगु, श्लीपद, तमकश्वास, तिमिर रोग, विषमज्वर, व्यानवबलबैषम्य, कामला, अतिसार, एवं प्रवाहिका का अध्ययन किया गया ।

सिद्ध चिकित्सा पद्धति के निदानचिकित्सात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत 9 निदानचिकित्सात्मक स्थिति यथा कलंजगपादाई, वातसूलई, करप्पन, यनिक्कनोई संधिवातशूलाई, एनुम्बुमरिवुचिकिचाई, एरेप्पूनोई, वेनपादई एवं निरिझिवु रोगो का अध्ययन किया गया ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद के विभिन्न संस्थानो /केंद्रों/एककों में 4,63,306 रोगियों की वहिरंग रोगी विभाग तथा 2459 रोगियों को अंतरंग रोगी विभाग में चिकित्सा प्रदान की गई । प्रतिवेदन अवधि में आयुर्वेद में 22 निदानचिकित्सात्मक स्थिति पर 2621 रोगियों का अध्ययन किया गया जबकि सिद्ध पद्धित में 586 रोगियों पर परिषद के विभिन्न संस्थानों/ केंद्रों/एककों में अध्ययन किया गया ।

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान को ग्रामोन्मुखी बनाया गया है ताकि अनुसंधान कार्यक्रमों का लाभ जनसामान्य को मिल सके । इस कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसंधान कार्मिकों का दल अध्ययन के लिए चुने/अपनाए गए गांवो/आदिवासी पॉकेटों में घर-घर जाते हैं और क्षेत्र में व्याप्त रोगों की प्रकृति एवं प्रसार, विभिन्न ऋतुओं के आहार - विहार, सामाजिक, आर्थिक पहलुओं, प्राकृतिक संसाधनों, रहने के स्तर तथा ग्रामीण/आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध चिकित्सा के प्रकार से संबंधित आंकड़े एकत्र करने के अतिरिक्त आकस्मिक चिकित्सा सहायता प्रदान करता है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान इस कार्यक्रम के अंतर्गत 39 गांवों के 32,202 लोगों का अध्ययन किया गया तथा 18,162 रोगियों को आकस्मिक चिकित्सा सहायता प्रदान की गई ।

औषध अनुसंधान कार्यक्रम

औषध अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषध पादप कृषि, कस्तूरी मृग प्रजनन पादप उत्तक सजनन भेषजअभिज्ञानीय, पादप उत्तक संजनन, भेषजगुणविज्ञानीय/विषाक्तता अध्ययन के अतिरिक्त औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम भी सम्मिलित है । औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 13 सर्वेक्षण दौरे (आयु.-7 सिद्ध - 6), 76 स्थानीय एवं 4 बाजार सर्वेक्षण किए गए जिनमें 1002 पादप किस्में 329 कच्ची औषधियों के अतिरिक्त 131 संग्रहालय नमूनों को एकत्र किया गया । सर्वेक्षण एककों द्वारा उदिभदालय एवं संग्रहालय के रख - रखाव का कार्य किया गया । लगभग 382 औषध पादप किस्मों के साथ 14081 गुग्गुलु के पादप वर्तमान में विभिन्न औषध पादप उद्यानो में उग रहे हैं । 1024.25 कि.ग्रा.(सूखी एवं ताजी) कच्ची औषधियों का विभिन्न पादप उद्यानों से अनुसंधान के उद्देश्य से संग्रह किया गया और अनुसंधान के उद्देश्य के लिए विभिन्न संस्थानों को मात्रानुसार आपूर्ति की गई । प्रतिवेदन अवधि के दौरान आयुर्वेद एव सिद्ध चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली औषधियों में से 47 औषधियों पर भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन तथा 36 औषधियों पर भेषजगुण विज्ञानीय एवं विषाक्तता अध्ययन किए गए ।

औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत 82 (आयुर्वेद 75 एवं सिद्ध 7)एकल मूल पादप औषधियों, 2 खनिज औषधि, आयुर्वेद एवं सिद्ध में प्रयुक्त होने वाले 40 (आयुर्वेद -31 एवं सिद्ध - 09) औषध योगों 5 आसव/अरिष्ट, 270 अन्य योगों के विश्लेषित मानक तैयार किए गए। विश्वस्त योगों में भारी धातु एवं पेस्टनाशी अवशेषों की उपस्थिति टी.एल.सी./ एच.पी.टी.एल.सी.अध्ययन द्वारा साथ करना भी सम्मिलित हैं । विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्विवार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत पांच आयुर्वेदिक योग तैयार किए गए एवं उनके मानक प्रचालन प्रक्रिया तथा

मानकीकरण अध्ययन पूर्ण किए गए । भारतीय चिकित्सा पद्धति प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के स्तर तक शुरु करने की परियोजना के अंतर्गत संभाव्यता उत्पन्न करने के लिए अंतिमस्तर पर मानक प्रचालन प्रक्रिया एवं मानक के विकास हेतु 14 आयुर्वेदिक योग तैयार किए गए ।

परिषद द्वारा कुमाऊँ की पहाड़ियों में महरुरी में एक कस्तूरी मृग प्रजनन फार्म का रख रखाव किया जाता है तथा वहां पर प्रतिवेदन अवधि के अंत तक 18 मृग थे ।

वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम

वाङ्.मय अनसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के चिकित्सा इतिहास अध्ययन, शास्त्रीय ग्रंथों अप्रकाशित पांडुलिपियों, कोषविज्ञान, समसामयिक साहित्य, आयुर्वेद एवं सिद्ध तथा आधुनिक चिकित्सा के प्रकाशनों, औषध एवं रोगों से संबंधित संदर्भो के संकलन के कार्य को जारी रखा गया । परिषद द्वारा ' आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका ', ' चिकित्सा प्रजाति - वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका ', ' भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका ' के अतिरिक्त परिषद समाचार भी प्रकाशित किए जाते हैं । प्रतिवेदन अवधि के दौरान आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका और चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका के पिछले अंकों का भी प्रकाशन किया गया ।

परिषद मुख्यालय के प्रकाशन विभाग ने 'आयुर्वेद में प्रयुक्त औषधि पादपों पर आधारित आँकड़े ' के सप्तम अंक को प्रकाशित किया । 'आयुर्वेद एवं सिद्ध औषधि के गुणवत्ता निर्धारण हेतु मापदंड ' नामक दुसरी पुस्तक को भी प्रकाशित किया है । इसके 'अतिरिक्त आयुर्वेद में प्रयुक्त औषधि पादपों पर आधारित आँकड़े ' के द्वितीय एवं तृतीय अंको को पुनः मुद्रण किया गया और चार मोनोग्राफ/पुस्तकें यथा - कॉमन हीलिंग हर्बस, सामान्य रोग हर वनस्पति, आयुर्वेदीय घरेलू उपचार (हिंदी एवं अंग्रेजी) एवं सिद्ध वैद्य सरल उपचार प्रणाली का पुनर्मुद्रण किया गया । कुछ दुर्लभ ग्रंथों का अनुवाद एवं प्रकाशन किया गया जिनमे वैद्य मनोरमा, रस मंजूषा एवं वैद्यक संग्रह का भी समावेश है । परिषद मुख्यालय के प्रकाशन प्रकोष्ठ ने हिंदी एकक ही सहायता से दुर्लभ आयुर्वेद के प्राचीन पांडुलिपियों के अनुवाद कार्य की शुरुआत की है। इनमें अष्टांग संग्रह, अभिनय चिंतामणि भी है, इसके अतिरिक्त शल्य तंत्र की पाठ्य पुस्तकें जिसमें 30 योगदानक/लेखकों के 30 अध्याय समाविष्ट है, को प्रकाशनार्थ लिया है । और 16 योगदानक के 16 अध्याय के संपादन कार्य प्रक्रिया में है ।

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत मुखीय गर्भनिरोधक औषधियों का निदान - चिकित्सात्मक तथा भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया जाता है । पिप्पल्यादि योग मुखीय और नीम तैल स्थानीय गर्भ निरोधक अभिकर्ताओं का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन हेतु 143 नए रोगियों के अतिरिक्त 368 पुराने रोगियों पर अध्ययन किया गया । प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत बालकास, बालातिसार, बाल दौर्बस्थ तथा शिशु एवं बाल परिचर्या पर कार्य किया गया तथा कुल 160 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।

संगोष्ठी, सम्मेलन और कार्यशाला

परिषद ने 25 -26 मई, 2005 को नई दिल्ली में एकीकृत औषधि (आयुर्वेद एवं सिद्ध) पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के अंतर्गत सफलतापूर्वक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया । परिषद द्वारा दिनांक 26 से 30 सितम्बर,2005 तक नई दिल्ली में निदान चिकित्सात्मक परीक्षण में सांख्यिकीय विधियाँ पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । परिषद द्वारा आयुष श्रोतागार नई दिल्ली में 23 से 24 दिसम्बर 2005 को (जैव - सांख्यिकी एवं अनसंधान कार्यप्रणाली पर) दो दिवसीय (विश्व स्वास्थ्य संगठन द्विवार्षिक 2004 -05) कार्यशाला का आयोजन किया गया । पुनः परिषद द्वारा चिकित्सा (वैज्ञानिक एवं तकनीकी) लेखन पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय,भारत सरकार द्वारा 21 से 23 मार्च, 2006 को नई दिल्ली में प्रायोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। परिषद के अनुसंधान संस्थानों ने भी 20 अन्य संगोष्ठी/कार्यशाला/मेले आदि में सहभागिता/आयोजित की । परिषद के वैज्ञानिको ने राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता की ।

लव्हेकर जी.एस.

(डॉ. जी.एस.लव्हेकर)
निदेशक
एवं सदस्य - सचिव
शासी निकाय,
केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद

दिनांक 03.8.2006

II. प्रशासनिक प्रतिवेदन

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1860 के नियम XXI के अंतर्गत 30 मार्च, 1978 को पंजीकृत एक संस्था है। 31मार्च, 2006 को समाप्त प्रतिवेदन अवधि में संस्था तथा शासी निकाय के सदस्य इस प्रकार हैं-

अध्यक्ष		**डा. अम्बुमणि राम दास** स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री
उपाध्यक्ष		**डा. पी. एन. वी. कुरूप**
शासकीय सदस्य :		
1. सचिव (आयुष)		श्रीमती उमा पिल्लै (31 -1-2006 तक) श्री विजय सिंह (1-2-2006 से)
2. संयुक्त सचिव (आयुष)		श्री तारा दत (15.6.2005 तक) श्री शिव बसन्त (15 .6.2005 से)
3. संयुक्त सचिव (वित्त सलाहकार)		श्री अरूण शर्मा
अशासकीय सदस्य	1.	डॉ.(कु.) पी. वी. तिवारी
	2.	डॉ. पी. के. वारियार
	3.	वैद्य डी. के. त्रिगुणा
	4.	वैद्य बालेन्दु प्रकाश
	5.	डॉ. अनिल कपूर
	6.	डॉ.पी. सी. भट्टाचार्य
	7.	डॉ.जी. थिआगराजन
	8.	डॉ.आई. चेलादुराई
	9.	डॉ.एस. के.गुप्ता
	10.	डॉ.जी. टी. पानसे

11. डॉ.एम. संजप्पा
12. डॉ.डी.नागराजा

निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर - डॉ.बी. एल. गौड़
निदेशक, राष्ट्रीय सिद्व संस्थान, चेन्नई - रिक्त
सदस्य-सचिव : निदेशक, के. आयु. सि. अनु.परि. - डॉ.जी एस.लव्हेकर

प्रतिवेदन अवधि में शासी निकाय की एक बैठक हुई ।

स्थायी वित्त समिति

स्थायी वित्त समिति निम्नप्रकार से गठित है -

1.	श्री तारा दत (15.6.2005 तक) संयुक्त सचिव (आयुष)	अध्यक्ष
	श्री शिव बसन्त (15 .6.2005 से) संयुक्त सचिव (आयुष)	अध्यक्ष
2.	श्री संजीव मिश्र, अतिरिक्त सचिव (वित्त सलाहकार)	सदस्य
3.	वैद्य डी. के. त्रिगुणा	सदस्य
4.	डा. जी. वेलुचामी	सदस्य
5.	परिषद निदेशक	सदस्य-सचिव

प्रतिवेदन अवधि के दौरान स्थायी वित्त समिति की दो बैठकें हुई तथा वित्तीय मामलों से संबंधित विषयों पर विचार किया गया और स्वीकृति दी गई ।

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति / अनु. जनजाति का प्रतिनिधित्व एवं अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के लिए कल्याणकारी उपाय

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति/ अनु. जनजाति के आरक्षण और प्रतिनिधित्व के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय समय पर जारी किए गए आदेशों और दिशा-निर्देशों का पालन किया जा रहा है। भर्ती/ पदोन्नति रोस्टर के अनुसार की जा रही है । परिषद में विभिन्न समूहों में 1.1.2006 के अनुसार कर्मचारियों की कुल संख्या इस प्रकार है :

समूह	कर्मचारियों की संख्या	अनुसूचित जाति	कर्मचारियों का कुल प्रतिशत	अनुसूचित जन जाति	कुल की प्रतिशत
क	203	29	14.29	10	4.93
ख	59	10	16.95	1	1.69
ग	598	99	16.56	33	5.52
घ	568	212	37.32	60	10.56
योग	1428	350	24.51	104	7.28

परिषद के अंतर्गत आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम परियोजना (आयु.) हैं जो कि विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है । इस कार्यक्रम में न केवल स्थानीय समस्याओं और उनसे संबंधित विषयों पर अपितु इन समस्याओं को सुलझाने की विधियों / उपायों की पहचान और कार्यान्वयन पर अधिक घ्यान दिया जाता है । इसके अतिरिक्त कुछ अनुंसघान संस्थान / केंद्र / एकक भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है तथा इन संस्थानों/केन्द्रों/एककों के बहिरंग रोगी विभाग /अंतरंग रोगी विभाग के माध्यम से और चल निदान चिकित्सात्मक अनुसंघान का कार्यक्रम / सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंघान कार्यक्रम के अंतर्गत आक्समिक चिकित्सा प्रदान की जाती है एवं अनुसूचित जाति / अनुसूचित जन जाति बहुल संख्या वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य लाभ की सुविधा प्रदान की जाती है । परिषद के बजट में अनुसूचित जाति / अनुसूचित जन - जाति संबंघी योजना के लिए विशेष बजट आबंटित है ।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद)

प्रतिवेदन अवधि के अंतर्गत वैज्ञानिक परामषर्शदाता समिति (आयु) निम्नप्रकार से गठित थी :-

1. डॉ. कणुभाई गोविन्द जी मावणी — अघ्यक्ष
2. डॉ. के रघुनाथन — सदस्य
3. डॉ. एस. एस. सावरीकर — सदस्य

4.	डॉ. ताशि यंगफेल तशहिगंग	सदस्य
5.	डॉ. (श्रीमती) मालती जी.चौहान	सदस्य
6.	डॉ. एस. के. शर्मा	सदस्य
7.	डॉ. अधिशया राज	सदस्य
8.	डॉ. के शंकरन	सदस्य
9.	डॉ. सुभाष लक्ष्मणराव गोविन्दवर	सदस्य
10.	डॉ. अरविन्द पाण्डेय	सदस्य
11.	डॉ. बी. एल. गौड	सदस्य
12.	निर्देशक,ए. एल. आर.सी.ए,चेन्नई	सदस्य
13.	डॉ. जी. एस. लव्हेकर निदेशक,के.आयु.सि.अनु.परिषद	सदस्य-सचिव

प्रतिवेदन अवधि के अन्तर्गत वैज्ञानिक परामषर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) की दो बैठकें हुई ।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्व)

प्रतिवेदन अविघ के दौरान वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्व) निम्नप्रकार से गठित थीः-

1.	डॉ. सी. एन. डेईवन्यांगम	अध्यक्ष
2.	डॉ. एम. ए. कुमार	सदस्य
3.	डॉ. पी. अरूणचलम	सदस्य
4.	डॉ. जयप्रकाश नारायणन	सदस्य
5.	डॉ. वी. आर. शेषाद्रि	सदस्य
6.	डॉ.सेल्लामुथु	सदस्य
7.	प्रो. जी. गणपथि	सदस्य
8.	प्रो. जी. अंबुगणपथि	सदस्य
9.	निदेशक,राष्ट्रीय सिद्व अनुसंघान संस्थान, चेन्नई	रिक्त
10.	डॉ. जी.वेलुचामी,निदेशक,के.सिद्व अनु.संस्थान,चेन्नई	सदस्य
11.	डॉ. जी. एस.लव्हेकर निदेशक,के.आयु.सि.अनु.परिषद	सदस्य-सचिव

केंद्रीय आयुर्वेद एंव सिद्व अनुसंधान परिष्द का संगठनात्मक स्वरूप

परिषद के अंतर्गत 10 केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, 15 क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, एक क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, एक आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना, एक तिब्बती चिकित्सा पर अनुसंधान, परियोजनाः मैटटूर में सिद्व चिकित्सा पद्वति पर एक औषध पादप उद्यान, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्व) चेन्नई के सीधे नियंत्रण में है । भारतीय चिकित्सा इतिहास संस्थान, हैदराबाद, ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र और कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई तथा आयुर्वेद अनुसंधान एकक बंगलूर निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु.) , कोट्टाकल, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य, अहमदाबाद औषध मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर तथा चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक और औषध् पादप सर्वेक्षण एकक (सिद्व), पलायमकोट्टै तथा वांड्मय अनुसंधान एवं प्रलेख प्रभाग, चेन्नई में कार्यरत है ।

बजट प्रावधान

निम्नलिखित तालिका में परिषद के बजट प्रावधान को दिखाया गया है -

योजना व्यय	बजटअनुमान2005-06 (रूपये लाखों में)	2005-06 से जारी निधियों (रूपये लाखों में)	2005-06 में वास्तविक व्यय (रूपये लाखों में)
योजना	1250.00	1249 .99	1371 .15
गैर - योजना	2756.00	2573 .90	2839.29

परिषद के वर्ष 2005-2006 का लेखा परीक्षा महानिदेशक लेखा परीक्षा एवं केन्द्रीय राजस्व द्वारा किया गया है ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

परिषद के अन्तर्गत राजभाषा कार्यान्वयन समिति, परिषद निदेशक की अध्यक्षता में बनी हुई है जो राजभाषा अधिनियम / निति/नियमों/आदेशें, कार्यक्रमों आदि के कार्यान्वयन की स्थिति तथा परिषद में हिंदी को बढावा देने के लिए परामर्श देती है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान 7 जून, 2005 एवं 19 दिसम्बर, 2005 को समिति की बैठकें हुई ।

संगोष्ठी/कार्यशाला एवं सम्मेलन

1. मानकीकरण में आधुनिक दृश्य एवं भा.चि.प. औषधियों के अच्छी निर्माण विधियों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ।

कैप्टन श्रीनिवास मूर्ति आयुर्वेद औषधि अनुसंधान संस्थान (सी सी आर ए एस) द्वारा मानकीकरण में आधुनिक दृश्य एवं भा.चि.प. औषधि के अच्छे निमार्ण प्रचलन पर दो दिवसीय संगोष्ठी 7 एवं 8 जुलाई, 2005 को विजय पार्क होटल, चेन्नई में संचालन किया गया ।

सुश्री पिल्लै सचिव, भाचिप, भारत सरकार द्वारा कार्यवाही का उदघाटन किया गया । उन्होंने भारतीय औषधियों के मानकीकरण पर बल दिया । श्री एम. एफ. फारूकी, राज्य भारतीय औषधि के विशेष आयुक्त भी इस अवसर पर उपस्थित थे । डॉ. जी.एस. लक्ष्केकर, निर्देशक, केन्द्रीय आयुर्वेद एंव सिद्व अनुसंघान परिषद ने इस अवसर पर स्वागत भाषण एवं आधार व्याख्यान दिया ।

अपने स्वागत भाषण एवं आधार व्याख्यान के दौरान डॉ. लक्ष्केकर ने कहाकि यद्यपि भारत को जड़ी-बूटियों पर चीन के पारम्परिक ज्ञान से आगे करने का समय आ गया है । जड़ी-बूटियों के निर्यात का अंश चीन की अपेक्षा मानकीकरण की कमी की वजह से कम है । उनके आधार व्याख्यान ने चेन्नई के स्टाफ को उत्प्रेरित किया कि अनुसंघान कार्य में अधिक से अधिक योगदान दें ।

सम्पूर्ण देश से बहुत से आयुर्वेदिक चिकित्सक संगोष्ठी में उपस्थित हए तथा उन्होंने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।

सम्पूर्ण देश से 100 से अधिक प्रतिनिधियों ने संगोष्ठी में भाग लिया । संगोष्ठी से वैज्ञानिकों, शिक्षार्थीयों उद्योगपति, शोधकर्ता एंव छात्र एक मंच पर एकत्र हुए । विभिन्न वैज्ञानिक सत्रों में 50 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए तथा प्रस्तुतीकरण पर विचार -विमर्श भी किया गया ।

2. मडितस्स्या आयुष-2005

मदुरै में 22 से 24 जुलाई, 2005 तक आयोजित मडितस्स्या आयुष . 2005 प्रदर्शनी में केन्द्रीय सिद्व अनुसंघान संस्थान, चेन्नई के माध्यम से परिषद ने सहभागिता की । प्रदशर्नी में आयुष की विशेषताओं को उजागर किया गया ।

प्रदर्शनी में केन्द्रीय सिद्व अनुसंघान - संस्थान चेन्नई द्वारा आम लोगों के लिए सिद्व पद्वति की विशेषताओं की जानकारी हेतु एक स्टाल लगाया गया । पर्चा सामग्री, वाउचर्स, एवं पत्रक तमिल एवं अंग्रेजी में वितरित कर लोगों का घ्यानाकर्षण किया गया ।

सिद्व चिकित्सा पर विभिन्न 6 प्रकार की पुस्तक लोगों को उपलब्ध करायी गयी । लगभग 195 पुस्तकों की बिक्री की गई । लोगों द्वारा आयर्वेद में प्रयुक्त औषधि पादपों पर आधारित ऑकड़े ,खड I -III पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण की सभी ने प्रशंसा की । लोगों के ज्ञानवर्द्वन हेतु चार्ट एवं कच्ची औषधियों की प्रदर्शनी की गई । 25,000 से अधिक आगन्तुक स्टाल में आए और प्रभावित हुए । लोंगों की मॉग थी की औषधि से संवंधित प्रकाशन एवं चार्ट की बिक्री की जाए ।

3. आयुर्वेदिक औषधियों के मानकीकरण हेतु पैरामीटर्स विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला

नागपुर में 23-24 जुलाई 2005 को आयुर्वेदिक औषधि मानकीकरण हेतु पैरामीर्टस पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । क्षेत्रीय अनुसंघान संस्थान (आयुर्वेद), नागपुर ने औषधि निर्माण विज्ञान विभाग नागपुर के साथ संयुक्त रूप से मिल कर कार्यशाला का आयोजन किया था । कार्यशाला का प्रायोजक आयुष विभाग था ।

श्री सुरेश चतुर्वेदी, माननीय मंत्री नागपुर ने समारोह का उद्घाटन किया । डॉ. जी. एस. लव्हेकर, निर्देशक, सी. सी. आर. ए.एस. नई दिल्ली ने कार्यवाही की अघ्यक्षता की । डॉ. डी. एन. खोने, उप - निर्देशक आयुर्वेद, मेडिकल शिक्षा विभाग मुम्बई माननीय अतिथि थे । 24 जुलाई 2005 को कार्यशाला समापन हुआ । समापन समारोह की अघ्यक्षता डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, अघ्यक्ष एम. सी. आई. द्वारा की गई । डॉ. आनन्द ओमप्रकाश निर्देशक, औषधि निर्माण विज्ञान विद्यालय, ग्वालियर कार्यवाही के मुख्य अतिथि थे । डॉ. आर.बी.सोंगवा, सयुक्त निदेशक, भाचिप विभाग, भोपाल माननीय अतिथि थे ।

4. यौन पुनरूत्पादन स्वास्थ्य एवं अधिकार पर नीति निर्माताओं की संगोष्ठी

31 दिसम्बर 2005 को होटल सिसमो में यौन पुनरूत्पादन स्वास्थ्य एवं अधिकार पर नीति निर्माताओं द्वारा संगोष्ठी की गई । इसका आयोजन भारतीय परिवार नियोजन संघ, भुवनेश्वर शाखा द्वारा किया गया । डॉ. बी. के. दास., निर्देशक (परिवार कल्याण) , उड़ीसा सरकार द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया । जनसंख्या वृद्वि, पौराणिक गाथा एवं मिथ्या घारणा, पूर्व यौन चयन एवं बालिकाओं की पूर्व में ही गर्भ हत्या, यौन रूपान्तरण एवं वस्तुतः में पुनरूत्पादन अधिकार, पर संगोष्ठी केन्द्रित था । डॉ. अनिता चौघरी, चिकित्सा अधिकारी - परिवार नियोजन संघ भारत, भुवनेश्वर ने संगोष्ठी के समापन पर सभी को धन्यवाद दिया।

5. जड़ी- बूटी व्यापार मेला संगम-2005

जड़ी-बूटी व्यापार मेला संगम -2005 का आयोजन एनजीओ " संबन्ध द्वारा नबार्ड, ओटेल्प एवं एक्शन एड के साथ मिलकर 17 से 23 नवम्बर, 2005 तक आदिवासी प्रदर्शनी ग्राउन्ड, यूनिट -1, भुवनेश्वर में आयोजन किया गया। श्री अरविन्द बेहरा, आयुक्त सह सचिव, आर.डी. विभाग, उड़ीसा सरकार द्वारा इसका उदघाटन किया गया, औषधि पादपों की बिक्री की गई । पारम्परिक वैद्यों को औषधि पादपों की कृषि हेतु सचेत करना । स्वयं सहायता समूहों का स्वास्थ्य जॉच किया गया तथा औषधियों की आपूर्ति की गई। श्री बल्लभ मांझी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री, उड़ीसा सरकार समापन समारोह में उपस्थित हुए ।

6. 30वें कालचक्र पर्व में चिकित्सा शिविर

अमरावती, गुंटुर जिला, आन्ध्र प्रदेश् में 5-16 जनवरी, 2006 तक आयोजित 30वें कालचक्र पर्व में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद) , विजयवाड़ा द्वारा एक स्टाल लगाया गया तथा निःशुल्क जॉच शिविर का आयोजन किया गया । स्टाल का उद्घाटन श्रीमती विजयलक्ष्मी, जिलाधीश, गुंटुर द्वारा किया गया । संस्थान ने स्टॉल में परिषद की गतिविधि एवं प्रकाशन को प्रदर्शित की ।

श्री कन्ना लक्ष्मीनारायण, माननीय सहकारी राज्य मंत्री का स्टॉल में शुभागमन हुआ तथा उन्होंने संगठन की प्रशंसा की । 3000 से अधिक तीर्थयात्री स्टॉल में आए । तीर्थयात्रियों एवं रोगियों की संस्था में बोद्व साधु, मठवासी एवं विदेशी थे ।

7. गून्टूर में चिकित्सा शिविर

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद) , विजयवाड़ा ने चिन्ना जियार आश्रम, सीतानगरम, गून्टूर जिला में 17 दिसम्बर 2005 को दो दिवसीय निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया । संधिवात, वातव्याधि, त्वकरोग, प्रतिश्याय, दौर्बल्य, उदरशूल, कास, कटिशूल आदि रोग से पीड़ित मरीजों को निःशुल्क उपचार एवं आयुर्वेदिक औषधि दी गई । आयोजनकर्ता के अनुसार 376 रोगियों को शिविर में सुविधा प्रदान की गई । उन्होंने प्रचार तथा मरीजों की प्रतिपुष्टि हेतु संस्थान तथा आयुर्वेद के लिए प्रचार सामग्री एवं वाउचर वितरित किया ।

8. पेंडाना ग्राम में चिकित्सा शिविर

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद) , विजयवाड़ा ने पेंडाना ग्राम,जिला-कृष्णा, आन्धप्रदेश के निगम कार्यालय में 21 से 22 दिसम्बर, 2005 तक फिलेरियासिस के मरीजों हेतु निःशुल्क चिकित्सा उपचार शिविर का आयोजन किया । एम. एन. ओ. एवं पी.एच. सी. चिकित्सक भी इसमे सम्मिलित हुए । शिविर में दौरान पैरामडिकल स्टाफ एवं स्थानीय एम.एन. ओ. के साथ चिकित्सक टीम इस गॉव के प्रभावित क्षेत्रों का द्वार से द्वार तक दौरा किया । ग्रामीणों को निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधि एवं जाचं मुहैया कराया । शिविर प्रतिवेदन के अनुसार ग्रामीणों के बहुसंख्याकों में यह रोग बृहत स्तर पर फैलने का कारण यह है कि, ग्रामीण बुनकर हैं और अधिक समय तक गढ्ढे में बुनने का काम करतें हैं जो कि अंधेरा एवं अधिकाधिक मच्छरों से भरा रहता है । कई रोगियों को शिविर में उपचार प्रदान किया गया । 177 स्लीपद के रोगियों का शिविर में उपचार किया गया ।

9. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम में आरोग्य - 2005

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्देम ने अरोग्य 2005 चन्द्रशेखर नायर स्टेडियम में 24 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2005 तक आयोजित आरोग्य 2005 में प्रदर्शनी हेतु स्टाल लगाया था । माननीय मुख्य मंत्री केरल श्री ओमनचांडी ने 25 दिसम्बर 2005 को आरोग्य-2005 पर प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी का उद्घाटन किया । श्री एम. विजयकुमार, पूर्व स्पीकर एवं जिला सचिव, सी.पी.एम. ने प्रदर्शनी हॉल का उद्घाटन किया ।

प्रदर्शनी स्टाल में आए रोगियों को निःशुल्क परामर्श एवं उपचार दिया गया । सी सी आर ए एस प्रकाशनों का लघु स्टाल भी लगाया गया । आगन्तुकों को औषधीय पादपों एवं धरेलू चिकित्सा में उनके प्रयोग की महत्वता की व्याख्या की गई । प्रदर्शनी के दौरान प्रचार हेतु परिषद प्रकाशन एवं साधारण रोग के सम्बन्ध में मलयालम भाषा में पर्चा वितरित किए गए । प्रदर्शनी के दौरान लोगों की अच्छी भीड़ थी एवं आगुन्तुकों ने संस्थान की व्यवस्था एवं कार्य की सराहना की ।

10. जरा रोग (जराव्याधि) प्रबन्धन पर एक संगोष्ठी

डॉ. ए. लक्ष्मीपति अनुसंधान केन्द्र (आयुर्वेद) , चेन्नई द्वारा 19 से 20 अगस्त 2005 तक जरा रोग (जरा व्याधि) प्रबन्धन पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । यह आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित था ।

डॉ. कृष्णदत शर्मा, उप निर्देशक (तक) केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद ने अपने स्वागत भाषण में कहाकि आयुर्वेद एवं सिद्व चिकित्सा पद्वति जरा रोग की समस्याओं के

उपचार में विशेष रूप से दक्ष हैं । डॉ. सी. एन. देयवनयगम, पूर्व निर्देशक, थोरेसिक चिकित्सा शासकीय चिकित्सालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहाकि जब आधुनिक चिकित्सा अधिक उम्र के उचित उपचार में असफल हो गया हो तो आयुर्वेद पद्वति जीवन शैली को परिवर्तित कर सकती है तथा ओसटिओपोरोसिस तथा अर्थरिटिस की स्थिति में सुधार ला सकती है । बुढ़ापे में प्रतिरोधक्षमता एवं संक्रमण, आयुर्वेद में जरा रोग, तथा जरा रोग समस्याओं का निवारण आदि विषयों पर संगोष्ठी में सात सत्र हुए । सुश्री शीला राम चुंकठ, अधिवक्ता ने संगोष्ठी का उदधाटन किया तथा कार्बनिक पेस्टनाशी खाद्य्य पदार्थ की वकालत की । देश के बहार से विभिन्न चिकित्सा पद्वतियों के लगभग 200 वैज्ञानिकों ने संगोष्ठी में सहभागिता की ।

11. अखिल भारतीय आयुर्वेदिक सम्मेलन के 57 वॉ समग्र सत्र के दौरान एक प्रदर्शनी

केन्द्रीय आयुर्वेद अंनुसघान संस्थान, जयपुर द्वारा बिड़ला श्रोतागार जयपुर में दिनांक 27 से 28 फरवरी, 2005 तक अखिल भारतीय आयुर्वेदिक सम्मेलन के 57 वॉ समग्र सत्र का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी में उन्होंने परिषद प्रकाशन, गुग्गुलु पादप, चार्टस अन्य सामग्रीयों को प्रदशित किया । प्रदर्शनी के दौरान श्री भैरो सिहं शेखावत, माननीय उपराष्ट्रपति, भारत, श्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान, डॉ एस.के.शर्मा,सलाहकार, आयुष विभाग, भारत सरकार एवं पदमश्री वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा ने स्टाल का दौरा किया । प्रदर्शनी के दौरान सम्पूर्ण देश से लगभग 2000 आयुर्वेदिक चिकित्सक तथा सामान्य लोगों का स्टाल में आगमन हुआ ।

12. आरोग्य - 2005 हैदराबाद

आरोग्य -2005, पीपुल प्लाजा, नेक लेक रोड, हैदराबाद में दिनांक 10 से 13 नवम्बर 2005 तक मनाया गया । इसका शुभ उदद्याटन डॉ.अम्बुमणिरामदास माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा लैम्प जलाकर किया गया । डॉ वाय. एस.राजशेखर रेडडी, माननीय मुख्यमंत्री, आन्ध्रप्रदेश, श्रीमती पनाबका लक्ष्मी, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने भी लैम्प जलाकर आरोग्य 2005 का शुभ उदघाटन किया । श्रीमती उमा पिल्लै, सचिव, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने इस अवसर पर अतिथियों को स्वागत भाषण से सम्बोधित किया । डॉ रामदास ने उच्च अधिकारियों को सम्बोधित किया । परिषद ने भी इसमें सहभागिता की । परिषद के पैविलियन में आयुर्वेदिक औषधि, जीवन रक्षक औषधि पादप एवं परिषद प्रकाशन मुख्य आकर्षण केन्द्र थे । परिषद शीघ्र विभिन्न विषयों पर शीघ्र पहुँच हेतु दूरदर्शन सर्किट स्क्रीन स्थापित किया था । डॉ जी. एस. लव्हेकर, निर्देशक, सी सी आर ए एस, ने वहां पर परिषद का प्रतिनिधित्व किया ।

13. संजीवनी 2006, वांशे

आधुनिक महाविद्यालय ग्राउन्ड, वशि, नवी मुम्बई में दिनांक 12 से 15 जनवरी 2006 तक संजीवनी 2006 को मनाया गया । इसका आयोजन टाइम्स वेलनेस एण्ड एकशन द्वारा किया गया।

संवर्द्धन प्रजापति निमार्ण द्वारा इसका संवर्द्धन एवं योगविद्या प्राणिक हीलींग द्वारा प्रायोजित संजीवनी 2006 का उदघाटन श्री संविध सुधवी, जिला शासक, अंतर्राष्ट्रीय लायन्स कल्ब द्वारा किया गया । यह प्रदर्शनी सयुंक्त रूप से आयुर्वेद, होम्योपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, एक्यूप्रेशर, एक्यूपन्चर, सूजोक, रिफलेक्सेलोजी, चुम्बकीय चिकित्सा, क्राइस्टल चिकित्सा, पिरोमिड चिकित्सा पिरोमिड, एरोमा चिकित्सा, प्रणायाम, ध्यानयोग चिकित्सा पद्वतियों द्वारा प्रस्तुत किया गया ।

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान मुम्बई ने, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद के लिए एक स्टॉल लगाया था । परिषद के स्टाल का विशेष आकर्षण प्रसार एवं विक्री हेतु परिषद प्रकाशन था । प्रदर्शनी के दौरान परिषद ने रूपये 11,566.00 की विक्री की । प्रदर्शनी के दौरान आगन्तुकों हेतु संस्थान ने निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच एवं आयुर्वेद पर परामर्श उपलब्ध कराया ।

14. पुल्लिचापुल्लम् में स्वास्थ्य मेला

पुल्लिचापुरम में आयुर्वेद पर दिनांक 27 फरवरी 2006 को पुल्लिचापुलम् वनुर तालुक, विल्लूमपुरम जिला में एक दिवसीय मेले का आयोजन किया गया । डॉ अम्बुमणि रामदास, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा मेले का उदघाटन किया गया । इस अवसर पर क्षेत्रीय सिद्व अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी ने परिषद के लिए एक स्टाल भी लगाया । स्टाल में परिषद की गतिविधि को पर्चे में प्रदशित किया गया तथा आगन्तुकों को समझाया गया । सजीव औषधीय पादपों को स्टाल में रखा था और उसके प्रयोग के सम्बन्ध में आगन्तुकों एवं रोगियों को जानकारी दी गई । परिषदीय प्रकाशनों को भी प्रदशित किया गया । सिद्व पद्वति के महत्वपूर्ण चिकित्सा परामर्श जैसे - आहार , ग्रामीण स्वास्थ्य, रोग निवारण, योग अभ्यास एवं परिवार नियोजन के संदर्भ में रोगियों को बताया गया । कुल 147 मरीज बीमार के उपचार से लाभन्वित हुए ।

15. आयुर्वेद पर 5वाँ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में 5 से 7 जनवरी, 2006 तक आयुर्वेद पर 5वी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई । सँगोष्ठी के दौरान क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), जूनागढ़ ने प्रदर्शनी में सहभागिता की । प्रो. आर. एच. सिंह, कुलपति, राजस्थान आयुर्वेद विश्वविधालय, जोधपुर ने प्रदशनीं क उद्घाटन किया । प्रो एम. एस. सावरीकर, कुलपति गुजरात आयुर्वेद विश्यविद्यालय, जामनगर एवं अन्य उच्च अधिकारियों ने प्रदर्शनी के सभी स्टॉलो को देखा ।

सभी उच्च अधिकारी जो संस्थान के स्टाल में आए उनका डॉ. आर.एन. आचार्य प्रभारी अनु. अधिकारी द्वारा स्वागत किया गया तथा परिषद के गतिविधियों के विषय में जानकारी दी ।

प्रदर्शनी के दौरान कई वैज्ञानिक, विद्वान, प्रतिनिधि जिसमें विदेशी प्रतिनिधि भी शामिल हैं तथा इच्छुक व्यक्तियों ने स्टॉल को देखा तथा परिषद की गतिविधि की भूरि - भूरि प्रशांसा की ।

16. चेन्नई में मल्टी मेडिआ कमपेइन

मीनाबक्कम, चेन्नई में 5 से 8 जनवरी 2006 तक मल्टी मेडिआ कमपेइन का आयोजन किया गया । मल्टी मेडिआ कमपेइन प्रदर्शनी के दौरान डॉ ए. लक्ष्मीपति अनुसंधान केन्द्र , चेन्नई द्वारा परिषद की गतिविधियों एवं प्रकाशनों के प्रचार - प्रसार हेतु स्टाल लगाया गया । कमपेइन के दोरान परिषद प्रकाशन, कच्चे औषधि, पर्चा एवं औषधि पादप प्रदशित किए गए । मेदारोग , व्यान बल वैषम्य तथा सी सी आर ए एस / ए एल आर सी ए नागरिक चार्टर, लोगों को निःशुल्क वाउचर वितरित किए गए । इस कमपेइन के द्वारा लगभग 539 रोगी लाभान्वित हूए । इस अवधि में केन्द्र ने एडस जागरूकता पर लोगों हेतु मुक्त डायस पर एन जी ओ की सहायता से एक पारस्परिक क्रिया सत्र का आयोजन किया गया । जिसका उद्घाटन प्रतिरक्षा मंत्रालय द्वारा किया गया ।

17. रानीपेत में स्वास्थ्यमेला

रानीपेत,अरकोनम संसदीय क्षेत्र तमिलनाडु में दिनांक 11 से 13 फरवरी 2006 तक स्वास्थ्य मेले का संचालन किया गया । केन्द्रीय सिद्व अनुसंधान संस्थान चेन्नई भी इससे सम्मिलित हुआ । संस्थान ने परिषद संस्थान की गतिविधि एवं कच्ची औषधियों की प्रदर्शन हेतु एक स्टाल लगाया था । निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का भी संचालन किया गया । मेले के दौरान कुल 236 रोगियों का उपचार किया गया । औषधियाँ निःशुल्क वितरित की गई । बिक्री हेतु परिषद प्रकाशनों को प्रदशित किया गया तथा कुल राशि रू. 2649/- की पुस्तकों की विक्री की गई । उन्होंने आर सी एच औषधि एवं जन सूचना हेतु जीवन शैली विकार के विषय में परिषद की गतिविधियों के प्रसार हेतु पर्चा एवं वाउचर्स इत्यादि को भी वितरित किया । श्री आर वेलु , माननीय रेल राज्य मंत्री एवं जिलाधीश अरकोट को स्टॉल में शुभागमन हुआ तथा उन्होंने परिषद की गतिविधि की प्रशंसा की । स्टाल में कुल 169 आगुन्तक आए ।

18. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की भूमिका पर एक कार्यशालल

क्षेत्रीय अनुंसघान संस्थान (आयुर्वेद) , पटना एवं आयुष विभाग, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वाधान में दिनांक 8 फरवरी 2006 को एक दिवसीय

राष्ट्रीय ग्रमीण स्वास्थ्य मिशन की भूमिका पर कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला के दौरान संस्थान ने बिहार की औषधि पादपों एवं उनकी उपयोगिता पर एक प्रदर्शनी की व्यवस्था की तथा स्वास्थ से संबंधित पौष्टिक भोजन पर पर्चा प्रदर्शित किया । श्री चन्द्र मोहन राय, स्वास्थ्य मंत्री, बिहार सरकार एवं श्री अर्जुन राय, सूचना एवं जन-सर्म्पक मंत्री, बिहार सरकार का अन्य प्रतिनिधियों के साथ प्रदर्शनी में शुभागमन हुआ । प्रदर्शनी के दौरान आदिवासी ग्राम्रीणों हेतु संस्थान की गतिविधयों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया ।

19. पैरियाकुलम में मल्टी मेडिआ कम्पेइन

पेरियाकुलम, चेन्नई में दिनांक 28 से 31 जनवरी,2006 तक मल्टी मेडिआ कम्पेइन मनाया गया । डॉ. ए. लक्ष्मीपति अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई ने परिषद की गतिविधियों एवं प्रकाशन के प्रचार हेतु मल्टी मेडिआ कम्पेइन में एक स्टाल लगाया । कम्पेइन के दौरान परिषद प्रकाशन, कच्ची औषधि, पर्चा, चार्ट एवं औषधि पादप प्रदर्शित किए गए। परिषद स्टॉल में श्री दयानिधि मारन, माननीय संचार एवं सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्री, श्री श्रीप्रकाश जायसवाल, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री एस रघुपति, माननीय गृह राज्य मत्रीं, श्रीमती पनाबाका लक्ष्मी, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री एवं श्री जे एम अरूण, माननीय संसद सदस्य का शुभागमन हुआ तथा उन्होंने परिषद गतिविधियों की प्रशंसा की । श्रीमती लक्ष्मी ने रूचि दिखायी तथा निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा सलाह के विषय में एवं रोगियों को निःशुल्क औषधि वितरण में जिज्ञासा प्रकट की । केन्द्र ने लोगों के लिए निःशुंल्क परामर्श की व्यवस्था की थी । इस कम्पेइन में कुल 597 रोगी लाभान्वित हुए ।

20. औरंगाबाद में पुस्तक मैंला

नेशनल बुक ट्रस्ट एवं मराठी प्रकाशक परिषद ने दिनांक 2 से 11 दिसम्बर, 2005 तक जिला परिषद ग्राउन्ड में पुस्तक मेले का आयोजन किया । श्री प्रभाकर श्रोत्रिय, निर्देशक, ज्ञानपीठ द्वारा मेले का उदधाटन किया गया । उन्होंने कहा कि शिक्षित, संस्कृतनिष्ठ से देश में एकता की स्थापना हो रही है । कई लेखक, कवि एवं साहित्य प्रेमी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए । उद्घाटन कार्यक्रम अवधि में श्री अरूण भोरकर, विभागाध्यक्ष, नेशनल बुक ट्रस्ट, श्री सुबीर दता, उपनिर्देशक, नेशनल बुक ट्रस्ट , एवं आयोजक मेला, प्रसिद्व हिन्दी लेखक उदय प्रकाश, डॉ नागनाथ कोटापल्ले, कुलपति मराठावाड़ा विद्यापीठ, श्री अरूण कुलकर्णी, मराठी प्रकाशन मंदिर प्रमुख आदि मंच पर उपस्थित थे । पुस्तक मेले में प्रसिद्व प्रकाशक स्टाल लगाए थे । दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र , उतर प्रदेश, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि प्रदेशों से प्रकाशक आए थे । इस अवधि में आयोजक ने आगन्तुकों के लिए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रबन्ध किया । मेले की अवधि में लोगों ने मेले के लिए अनुदान दिए । परिषद प्रकाशन हेतु आर आर ए पी, सी आर

आई (आयुर्वेद) , मुम्बई ने भी स्टॉल लगाया था । इस अवधि में रूपये 2980/- के परिषद प्रकाशन की बिक्री की गई ।

21. नैदानिक परीक्षण में सांख्यिकी विधि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

परिषद ने नैदानिक परीक्षण में सांख्यिकी विधि पर सफलतापूर्वक दिनांक 26 से 30 सितम्बर 2005 तक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयुष श्रोतागार सी सी आर ए एस मुख्यालय नई दिल्ली में शोधकर्ता, सांख्यिकी एवं विभिन्न संस्थानों के अधिकारियों आयुष विभाग के अनुंसधान परिषदों हेतु आयोजन किया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 26 सहभागिताओं ने भाग लिया । सभी विशेषज्ञों, प्रवीण पर्यवेक्षक एवं सहभागिताओं ने आयुर्वेद एवं सिद्व की बेहतर हेतु इस अनुपम प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए परिषद की प्रशंसा की ।

22. जैव - सांख्यिकी एवं अनुसंधान कार्यप्रणाली पर कार्यशाला

विश्व स्वास्थ्य संगठन के इस अवसर के अन्तर्गत परिषद ने आयुष श्रोतागार, सी सी आर एएस, नई दिल्ली में जैव - सांख्यिकी एवं अनुसंधान कार्यप्रणाली पर कार्यशाला शोधकर्ताओं एवं राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों तथा आयुष विभाग के अनुसंघान परिषदों हेतु दिनांक 23 से 24 दिसम्बर 2005 को दो दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया । विभिन्न क्षेत्रों के 60 सहभागिताओं तथा 35 आयुर्वेद, 5 सिद्व, 9 होम्योपेथी, 3यूनानी, 3 योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा,3 जैव सांखियकी, 2 मनचिकित्सा एवं सामाजिक कार्य ने कार्यशाला में उपस्थित हुए ।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर, राष्ट्रीय सिद्व संस्थान, चेन्नई स्नातकोतर संस्थान प्रशिक्षण एवं अनुंसधान, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर केन्द्रीय यूनानी अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनंसधान परिषद नई दिल्ली के प्रतिनिधि उपस्थित हुए विभिन्न प्रसिद्व राष्ट्रीय संस्थानों के प्रख्यात विशेषज्ञ भी उपस्थित थे ।

आयुष विभाग के वैज्ञानिकों को एक स्थल पर इस अनुपम पारस्परिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालन हेतु सभी विशेषज्ञों दक्ष एवं सहभागिताओं ने परिषद की भूरि भरि प्रशंसा की ।

23. चिकित्सा लेखन (वैज्ञानिक एंव तकनीकी) पर राष्ट्रीय कार्यशाला

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रायोजित आयुष श्रोतागार, केन्द्रीय आयुर्वेद एंव सिद्व अनुसंधान परिषद मुख्यालय नई दिल्ली में आयुष विभाग के अनुसंधान परिषदों एवं राष्ट्रीय संस्थानों के शोधकर्ताओं एवं शिक्षार्थीयों हेतु दिनांक 21 से 23 मार्च 2006 को परिषद द्वारा चिकित्सा लेखन (वेज्ञानिक एवं तकनीकी) पर राष्ट्रीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया ।

विभिन्न क्षेत्रों के 150 सहभागिताओं यथा आयुर्वेद, सिद्व, यूनानी, होम्योपैथी, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा तथा केन्द्रीय यूनानी अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद एवं केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद के भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में स्थित विभिन्न एककों के साथ ही राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर, राष्ट्रीय संस्थान चेन्नई, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा और संस्थान बंगलूर, ने कार्यशाला में उपस्थित हुए ।

24. सम्पूर्ण चिकित्सा (आयुर्वेद सिद्व) क्षेत्र एवं चुनौती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

परिषद ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के शुभ अवसर के अन्तर्गत दिनांक 25 से 26 मई 2005 को भारत अतंर्राष्ट्रीय केन्द्र नई दिल्ली में सम्पूर्ण चिकित्सा (आयुर्वेद एवं सिद्व) क्षेत्र एवं चुनौती विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया ।

सुश्री उमा पिल्लै, सचिव, आयुष विभाग स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भारत सरकार द्वारा संगोष्ठी का उद्घाअन किया गया । डॉ. पी. वी कुरूप, उपाध्यक्ष, शासी निकाय, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की ।

मूलभूत अनुंसधांन, किलीनिकल एवं एप्पलाईड अनुसंधान तथा मानकीकरण, गुणवता नियन्त्रण, भेषजगुण विज्ञान एवं संबधित क्षेत्र, इसके अतिरिक्त भा. चि. प. एवं हो औषधियों के विकास हेतु एक पारस्परिक मिलन सत्र पर तीन तकनीकी सत्र संचालित किए गए । सभी विशेषज्ञ, निपुण पर्यवेक्षक एवं सहभागिताओं, भेषजीय अद्योगों के प्रतिनिधियों ने परिषद के इस अनोखा संगोष्ठी संचालन एवं आयुर्वेद एवं सिद्व के बहेतर हेतु पारस्परिक मिलन सत्र के प्रयास की सराहना की ।

III. तकनीकी प्रतिवेदन

(अ) आयुर्वेद

1. संस्थान/केंद्र/एकक के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर

क्र. सं.	संस्थान/केंद्र/एकक का नाम	संकेताक्षर
1.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	कें.अनु.सं.दि.
2.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर	कें.अनु.सं.भु.
3.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मुम्बई	कें.अनु.सं.मुं
4.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटियाला	कें.अनु.सं.प.
5.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेरूतुरूति	कें.अनु.सं.चेरू.
6.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	कें.अनु.सं.को.
7.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, लखनउ	कें.अनु.सं.ल.
8.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर	कें.अनु.सं.ग्वा.
9.	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपूर	कें.अनु.सं.ज.
10.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटना	क्षे.अनु.सं.प.
11.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जूनागढ़	क्षे.अनु.सं.जू
12.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम	क्षे.अनु.सं.त्रि.
13.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ईटानगर	क्षे.अनु.सं.ई.
14.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गुवाहटी	कें.अनु.सं.गु..
15.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गंगटोक	कें.अनु.सं.गं.
16.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मंडी	क्षे.अनु.सं.मं.
17.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जम्मू	क्षे.अनु.सं.ज.
18.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी	क्षे.अनु.सं.झां.
19.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नागपुर	क्षे.अनु.सं.ना.
20.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा	क्षे.अनु.सं.वि

21.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बंगलूर	क्षे.अनु.सं.बं
22.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ताड़ीखेत	क्षे.अनु.सं.ता.
23.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे	क्षे.अनु.सं.पु.
24.	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद	भा.आयु.इ.सं.है.
25.	कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान	कै.श्री.आयु.औ.अनु.स.चे.
26.	डा. ए.लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, चेन्नई	ए.ल.आयु.अनु.कें.चे.
27.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, हस्तिनापुर	क्षे.अनु.कें.ह.
28.	आयर्वेद अनुंसधान एकक, निम्हांस, बंगलूर	आयु.अनु.ए.ब.
29.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु) कोट्टाकल	नि.चि.अनु.ए.कोट.
30.	निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु) अहमदाबाद	नि.चि.अनु.ए.अह.
31.	भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान एकक परि.क.अनु.प जामनगर	भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.
32.	आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान परियोजना, कारनिकोबार	आ.स्वा.अनु.परि.का.नि.
33.	औषध मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर	औ.मान.अनु.परि.जा.
34.	सोवा-रिग्पा (आमची) अनुसंधान एकक, लेह	सो.रि. (आ.) अनु.ए.ले.
35.	आयुर्वेद चिकित्सा केंद्र , सफदरजंग, नई दिल्ली	आयु.चि.के.सफ.दि.

2. निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान

परिषद के अधीन निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है । निदान चिकित्सात्मक स्थिति में चयनित चिकित्साओं का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन एवं आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम ।

किसी भी जैव-चिकित्सा अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य चिकित्सीय उपयोग है । अतः विभिन्न प्रकार के चिकित्सा अनुसंधान में इसे विशिष्ट माना जाता है । आयुर्वेद के पक्ष में इसका महत्व और बढ़ जाता है । क्योंकि यह मुख्य रुप से निदान चिकित्सात्मक अवलोकनों पर आधारित है ।

प्रतिवेदन अवधि 2005-06 में आववात,अपस्मार,अर्श,भगन्दर ग्रहणी रोग, गृध्रसी, किटिभ, मधुमेह, मनोद्वेग, मेदोरोग, मूत्राश्मरी, पक्षाघात, पंगु, परिणामशूल, श्लीपद, तमकश्वास तिमिर रोग, विषमज्वर, ब्यानबल वैषम्य पर निदान चिकित्सात्मक अध्ययन किए गए कामला एवं मधुमेह पूर्व परियोजना कार्यक्रम के है तथा वर्तमान प्रतिवेदन अवधि 05-06 में संचालित किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त दो रोगों अतिसार एवं प्रवाहिका का जीवीके कमपाउन्ड के साथ पायलट अध्ययन किया गया । उपरोक्त रोगों में कुल 2621 रोगियों का अध्ययन अंतरंग रोगी विभाग/बहिरंग रोगी विभाग स्तर पर किया गया । परिषद के अंतर्गत कार्यरत चिकित्सालयों के बहिरंग रोगी विभाग में 388657 रोगियों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गयी । और अंतरंग रोगी विभाग में 2204 रोगियों को चिकित्सा हेतु भर्ती किया गया तथा 2158 रोगियों को चिकित्सा उपरान्त मुक्त किया गया । चिकित्सा विवरण,भाग लेने वाले संस्थानों/केंद्रों/एककों में अध्ययन किए गए रोगियों की कुल संख्या तथा परिणामों का विवरण निम्नलिखित है ।

(अ) निदानचिकित्सात्मक परीक्षण

(1) आमवात

आमवात पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई, ग्वालियर, जयपुर, चेरुतुरुति, कोलकाता, पटियाला, लखनऊ, दिल्ली, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान मंडी, त्रिवेन्द्रम, विजयवाड़ा, नागपुर, जम्मू जूनागढ, पटना और ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 432 रोगियों पर विभिन्न प्रकार से निदानचिकित्सात्मक अध्ययन किए गए। इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को भी निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है ।

आमवात पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधे	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वर्धमान पिप्पल्यादि क्षीरपाक समीर पन्नगरस	कें.अनु.सं.मुं.	6	1	4	1	-	-
		कें.अनु.सं.ग्वा.	12	-	3	1	-	8
		क्षे.अनु.सं.मं.	11	-	4	6	-	1
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	11	-	-	5	2	4
		क्षे.अनु.सं.वि.	18	3	8	5	1	1
2.	शुंठी गुग्गुलु एवं गोदन्ती का योग	कें.अनु.सं.ग्वा.	28	-	7	11	1	9
		कें.अनु.सं.मुं.	14	1	12	1	-	-
		कें.अनु.सं.ल.	19	9	4	1	-	5
		कें.अनु.सं.ज.	19	8	5	3	-	3
		कें.अनु.सं.दि.	36	2	8	6	2	18
		कें.अनु.सं.भु.	24	11	7	12	2	3
		कें.अनु.सं.प.	8	-	1	1	-	6
		कें.अनु.सं.को.	13	-	8	4	1	-
		क्षे.अनु.सं.मं.	10	1	5	3	-	2
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	03	1	3	6	-	3
		क्षे.अनु.सं.वि.	15	-	7	5	1	1
		क्षे.अनु.सं.प.	17		9	2	6	-
		क्षे.अनु.सं.जू.	3	-	1	-	2	-
		क्षे.अनु.सं.ई.	22	4	6	3	2	7
		क्षे.अनु.सं.ज.	13	2	5	1	-	5
3.	सुरान्जन एवं शाल्लकी	कें.अनु.सं.ज.	18	3	1	3	-	11
		कें.अनु.सं.मुं.	2	-	1	-	1	-
		कें.अनु.सं.ल.	11	-	4	6	-	1

4.	पंचकर्म चिकित्सा समूह -1 दीपन पाचन (बलागुडुच्यादि क्वाथ, स्नेहपान इंदुकांत घृत) स्वेदन, वमन	कें.अनु.सं.को. कें.अनु.सं.प. कें.अनु.सं.चेरु.	23 1 4	6 - 2	7 1 1	3 - -	1 - -	6 - 1
5.	समूह 2 स्नेहपान इंदुकांत घृत स्वेदन, वमन संसर्जन, बला गुडुच्यादि क्वाथ	कें.अनु.सं.चेरु कें.अनु.सं.को. कें.अनु.सं.भु.	13 10 20	3 3 13	7 6 4	2 1 2	- - -	1 - 1
6.	समूह 3 पंचकर्म के बिना उपरोक्त चिकित्सा पंचकोल चुर्ण का प्रक्षेय और पत्र - पिंड स्वेद के रुप में प्रयोग	कें.अनु.सं.चेरु क्षे.अनु.सं.ना.	11 7	3 -	7 1	- 5	- -	1 1
योग			432	76	147	88	22	99

(2) अपस्मार

अपस्मार पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए कुल ३ रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

अपस्मार पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	ब्रह्मयादि योग	आयु.अनु.ए.बं.	3	-	2	1	-	-
योग			3	-	2	1	-	-

(3) अर्श

अर्श पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जम्मू, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मण्डी, और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, बंगलूर क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र हस्तिनापुर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 439 रोगियों पर विभिन्न प्रकार के निदानचिकित्सात्मक अध्ययन किए गए । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है ।

अर्श पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	कंकायन वटी त्रिफला चूर्ण (सोते समय) एवं काशिसादि तैल का स्थानीय प्रयोग	कें.अनु.सं.ल.	30	4	2	7	-	17
		कें.अनु.सं.ग्वा.	43	1	6	19	2	15
		कें.अनु.सं.को.	92	16	24	20	32	-
		कें.अनु.सं.दि.	20	15	3	2	-	-
		कें.अनु.सं.मुं.	47	28	10	7	-	2
		क्षे.अनु.सं.ह.	10	-	5	1	-	4
		क्षे.अनु.सं.प.	21	3	7	6	5	-
		क्षे.अनु.सं.ज.	8	7	-	-	-	1
		क्षे.अनु.सं.म.	10	-	5	1	2	2
		क्षे.अनु.सं.बं.	14	3	6	1	1	3

2.	कंकायन वटी , क्रव्यादि रस,अभयारिष्ट और जात्यादि तैल का स्थानीय प्रयोग ।	कें.अनु.सं.ग्वा. कें.अनु.सं.को. क्षे.अनु.सं.ज. क्षे.अनु.सं.म. कें.अनु.सं.मुं.	29 7 7 12 30	1 1 6 - 11	8 2 - 8 13	9 3 - 2 4	- 1 - - 1	11 - 1 2 1
3.	कव्यादि रस, कशीशादि तैल, एवं त्रिफला चूर्ण	कें.अनु.सं.को.. कें.अनु.सं.भु. क्षे.अनु.सं.बं.	42 6 11	1 1 3	10 2 4	23 4 1	- - -	- 1 3
कुल योग			439	108	114	110	44	63

(4) भगन्दर

भगन्दर पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,दिल्ली एवं कोलकाता में किए गए । कुल 46 रोगियों पर क्षार सूत्र चिकित्सा विधि का प्रयोग करते हुए अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

भगन्दर पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	क्षार सूत्र कर्म	कें.अनु.सं.दि. के.अनु.सं.को.	20 26	15 5	3 4	2 14	- 3	- -
योग			46	20	7	16	3	-

(5) ग्रहणी रोग

ग्रहणी रोग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,ग्वालियर,पटना और गंगटोक में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 108 रोगियों पर

अध्ययन किया गया । इससे संबंधित संक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

ग्रहणी रोग पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	पंचामृत पर्पटी कल्प दूध के साथ	कें.अनु.सं.ग्वा.	14	5	3	1	-	5
2	बिल्वमज्जा चूर्ण तक्रारिष्ट	कें.अनु.सं.ग्वा.	19	5	5	2	1	6
		क्षे.अनु.सं.प.	21	8	6	5	2	-
		क्षे.अनु.सं.गं.	54	14	24	2	4	10
योग			108	32	38	10	7	21

(6) गृध्रसी

गृध्रसी पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेरुतुरुति, दिल्ली केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ईटानगर, पटना, और गंगटोक में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 148 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:-

गृध्रसी पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	हिंगु त्रिगुण तैल	कें.अनु.सं.चेरु.	20	5	7	5	3	-
		कें.अनु.सं.दि.	15	4	7	3	-	1
		कें.अनु.सं.ल.	4	2	1	-	-	1
		क्षे.अनु.सं.ई.	2	-	-	1	1	-
		क्षे.अनु.सं.प.	29	1	11	12	5	-
2	पंचकर्म चिकित्साः स्नेहपान (दशमूल बला तैल), स्वेद (वाष्प), विरेचन तैल)संसर्जन एवं वस्ति (वैथरण)	कें.अनु.सं.चेरु.	21	10	5	3	-	3
		कें.अनु.सं.ई.	4	-	-	2	-	2
3	हिंग त्रिगुण तैल एवं योगराज गुग्गुलु	क्षे.अनु.सं.गं.	53	5	18	8	3	19
योग			148	27	49	34	12	26

(7) किटिभ

किटिभ पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, पटियाला, चेरुतुरिति, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम, जम्मू तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, केंद्र हस्तिनापुर में किए गए। विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 83 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया हैः

किटिभ पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	आरोग्यवर्धिनी, कैशोर गुग्गुलु एवं चक्रमर्द तैल का स्थानीय प्रयोग	कें.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.ज. क्षे.अनु.सं.त्रि. क्षे.अनु.सं.ह.	7 7 10 5	- - - 4	3 2 4 -	1 2 2 -	- - - -	3 3 4 1
2	पंचनिम्ब लौह चूर्ण, कामदुधा रस हरिद्रा खंड	क्षे.अनु.सं.जं. क्षे.अनु.सं.ह.	3 8	- -	3 3	- 1	- -	- 4
3	स्नेहपान (महातिक्ति घृत), स्वेदन (मृदु), वमन (अल्प) संसर्जन, (भल्लातक) रसायन प्रयोग	कें.अनु.सं.चेरु. कें.अनु.सं.प.	5 10	- -	3 -	- 2	- -	2 8
4	पंचनिम्ब लौह चूर्ण, कामदुधा रस और हरिद्रा खंड	क्षे.अनु.सं.त्रि.	28	-	16	4	-	8
योग			83	4	34	12	-	33

(8) मधुमेह

मधुमेह पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, भुवनेश्वर तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,ईटानगर में किए गए। विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 85 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

मधुमेह पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	तुलसी, बिल्व पत्र निम्ब पत्र एवं कालीमिर्च	कें.अनु.सं.दि.	16	2	7	4	-	3
2.	करेला एवं जामुन बीज घनसत्व	कें.अनु.सं.भु. कें.अनु.सं.दि. क्षे.अनु.सं.ई.	30 18 19	2 11 2	- 3 4	2 1 2	- - -	26 3 11
3.	तुलसी, बिल्वपत्र नीम पत्र एवं कालीमिर्च घनसत्व ध्यान एवं योग	क्षे.अनु.सं.ई.	2	-	-	1	-	1
योग			85	17	14	10	-	44

(9) मनोद्वेग

मनोद्वेग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, मुबंई, पटियाला, तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,बंगलूर में किए गए। कुल 53 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए मनोद्वेग रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

मनोद्वेग पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1	मेध्य रसायन (वचा, ब्राह्मी घन सत्व बराबर मात्रा में)	कें.अनु.सं.प.	10	-	2	2	-	6
		कें.अनु.सं.मुं	35	1	27	6	-	1
		कें.अनु.सं.बं.	8	-	8	-	-	-
योग			53	1	37	8	-	7

(10) मूत्राश्मरी

मूत्राश्मरी पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेंद्रम, जम्मू , गुवाहाटी, जूनागढ और ईटानगर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 90 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया हैः

मूत्राश्मरी पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1	पाषाण भेद, गोक्षुर क्वाथ घन सत्व	कें.अनु.सं.दि.	17	2	7	4	3	1
		क्षे.अनु.सं.त्रि.	1	-	-	1	-	-
		क्षे.अनु.सं.ज.	8	2	1	3	1	1
		क्षे.अनु.सं.ई.	10	6	3	1	-	-

2	पलाशक्षार	कें.अनु.सं.दि.	20	5	7	4	3	1
		क्षे.अनु.सं.ज..	3	1	2	-	-	-
		क्षे.अनु.सं.जु.	5	2	-	1	-	2
		क्षे.अनु.सं.ई.	13	8	2	-	1	2
		क्षे.अनु.सं.त्रि	8	-	1	1	-	6
		क्षे.अनु.सं.गु.	5	-	2	-	-	3
योग			90	26	25	15	8	16

(11) मेदोरोग

मेदोरोग पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, मुंबई, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जम्मू, तथा ए.लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, चेन्नई में में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 125 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

मेदोरोग पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	वचा एवं कटुकी सम भाग में	कें.अनु.सं.ल.	34	14	5	4	-	13
		के.अनु.सं.मुं.	30	1	12	11	3	3
		के.अनु.सं.प.	9	-	-	3	-	6
		ए.ल.आयु.अनु.के.चे.	14	5	1	3	1	4
		क्षे.अनु.सं.ज.	15	9	3	-	2	1
2 .	त्रिफला सिद्ध गुग्गुलु	के.अनु.सं.मुं.	21	-	6	10	5	-
योग			125	29	27	31	11	17

(12) परिणामशूल

परिणामशूल पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा और निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टाकल में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 48 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

परिणामशूल पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	इंदुकांत घृत स्नेहन	क्षे.अनु.सं.वि.	5	1	4	-	-	-
		नि.अनु.ए.को.	13	7	1	-	1	4
		क्षे.अनु.सं. वि.	5	1	4	-	-	-
2 .	महातिक्ति घृत स्नेहन	नि.अनु.ए.को.	20	11	7	1	-	1
3.	शतावरी मधुयष्टि घन सत्व वटी	क्षे.अनु.सं.वि.	5	3	1	-	-	1
योग			48	23	17	1	1	6

(13) पक्षाघात

पक्षाघात पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, चेरुतुरुति, भुनेश्वर, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नागपुर और आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 122 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

पक्षाघात पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	स्नेहपान (क्षीरबला तैल), स्वेदन (वाष्प), विरेचक (एरण्ड तैल), संसर्जन वस्तिकर्म (योग वस्ति), दसमूल क्वाथ, एवं अनुवासन, नस्य (दशमूल बला तैल)	कें.अनु.सं.चेरु.	13	5	3	4	-	1
		के.अनु.सं.दि.	14	-	1	10	-	3
		के.अनु.सं.भु.	2	-	1	-	-	1
		क्षे.अनु.सं.ना.	14	-	8	4	1	1
2.	धनधान्यादि क्वाथ क्षीरबला तैल के साथ, अभ्यंग (क्षीरबला तैल), पत्र पटोल स्वेद (क्षीरबला तैल के साथ,) विरेचन (एरण्डतैल)	के.अनु.सं., चेरु	24	2	7	8	3	4
		के.अनु.सं., भु.	7	1	2	2	-	2
		के.अनु.सं., प.	2	-	1	1	-	-
		क्षे.अनु.सं.ना.	12	2	4	4	-	2
		आयु.अनु.ए., बं..	4	1	3	-	-	-

3.	महा वातविध्वंसन रस,धान्य आमला सेक, विरेचक, नस्य (क्षीरबला तैल), सिरोवस्ति (क्षीरबला तैल)	के.अनु.सं.,प. के.अनु.सं.,चेरु. क्षे.अनु.सं.ना.	2 5 13	- 2 01	1 3 04	1 6 03	- - 02	- 04 03
योग			122	14	38	43	6	21

(14) पंगु

पंगु पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, चेरुतुरुति,तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,नागपुर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 26 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

पंगु पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	स्नेहपान (बला तैल),स्वेदन (वाष्प), विरेचक (एरण्ड तैल), संसर्जन एवं योग वस्ति),(निरुह - दशमूल क्वाथ और अनुवासन - दशमूल बला तैल)	कें.अनु.सं.चेरु. क्षे.अनु.सं.ना.	2 8	- 1	- 2	- 2	1 2	1 1

2.	दशमूल बला क्वाथ, चन्द्रप्रभावटी के साथ, अभ्यंग (दशमूल बला तैल), मात्रा वस्ति (दशमूल बला तैल) और व्यायाम ।	के.अनु.सं., चेरु. क्षे.अनु.सं.ना.	10 6	- 1	3 2	1 3	- -	6 -
योग			26	2	7	6	3	8

(15) श्लीपद

श्लीपद पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुनेश्वर तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 123 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या और उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

श्लीपद पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	कांचनार गुग्गुलु गोक्षुरादि गुग्गुलु के साथ	कें.अनु.सं.भु. क्षे.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.वि.	10 14 35	2 2 9	6 6 12	1 5 7	- 1 5	1 - 2
2.	श्लीपदारि रस, पुनर्नवा चूर्ण क्वाथ	के.अनु.सं., भु. क्षे.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.वि.	22 10 32	4 1 13	10 4 9	1 4 8	- 1 1	7 - 1
योग			123	31	47	26	8	11

(16) तमकश्वास

तमकश्वास पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,भुनेश्वर, पटियाला, जयपुर, तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,पटना,विजयवाड़ा,और बंगलूर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 119 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

तमकश्वास पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	पिपली वर्धमान क्षीर पाक,समीर पन्नग रस	क्षे.अनु.सं.,वि. क्षे.अनु.सं.प. कें.अनु.सं.प.	2 28 01	1 - -	- 12 1	- 01 -	- 09 -	1 6 -
2 .	शिरीष त्वक क्वाथ	के.अनु.सं.,भु. कें.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.ज. क्षे.अनु.सं.बं. क्षे.अनु.सं.वि.	36 1 17 14 4	2 - 1 6 2	3 1 8 2 1	14 - 1 2 -	1 - - - -	16 - 7 4 1
3.	शोधन चिकित्सा	क्षे.अनु.सं.वि.	16	7	5	-	-	4
योग			119	19	33	18	10	39

(17) तिमिर रोग

तिमिर रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में किया गया कुल 58 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

तिमिर पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	नेत्र बिंदु एवं सप्तामृत लौह नेत्र व्यायाम के साथ	कें.अनु.सं.दि.	58	9	12	17	13	7
योग			58	9	12	17	13	7

(18) विषमज्वर

विषमज्वर पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर, ए.लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र,चेन्नई, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,नागपुर, पटना, ईटानगर तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र हस्तिनापुर में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 168 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया हैः

विषमज्वर पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	आयुष - 64 स्फटिका भस्म, गुडूची सत्व	कें.अनु.सं.ज.	20	7	9	4	-	-
		क्षे.अनु.सं.ई.	10	6	2	-	-	2
		क्षे.अनु.सं.ना.	08	4	3	-	-	1
		क्षे.अनु.के.,ह.	11	7	1	-	-	3
2.	सप्तपर्ण घन वटी	कें.अनु.सं.ज.	10	4	5	1	-	-
		क्षे.अनु.सं.ना.	12	4	7	1	-	-
		क्षे.अनु.सं.प.	21	4	10	3	4	-
		क्षे.अनु.सं.ई.	18	5	7	3	2	1

3.	पारिजात पत्र घनवटी	क्षे.अनु.सं.ना. क्षे.अनु.सं.प. ए.ल.अनु.के.आयु.चे.	8 15 35	3 2 8	3 5 3	2 5 4	- 3 4	- - 16
योग			168	54	55	23	13	23

(19) व्यानबल वैषम्य

व्यानबल वैषम्य पर निदानचिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर , कोलकाता, पटियाला, दिल्ली, ग्वालियर, मुंबई, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नागपुर, बंगलूर ईटानगर, जम्मू और जूनागढ़ तथा ए.लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, चेन्नई में किए गए । विभिन्न चिकित्सा विधियों का प्रयोग करते हुए कुल 282 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

व्यानबल वैषम्य पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणाम:

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्य गत
1.	वचा, ब्राह्मी, जटामांसी एवं अर्जुन का मिश्रण बराबर मात्रा	कें.अनु.सं. भु.	20	6	06	03	-	05
		कें.अनु.सं. गवा.	34	-	12	11	03	08
		कें.अनु.सं. मुं.	19	6	9	-	-	4
		कें.अनु.सं. दि.	15	10	3	-	-	2
		कें.अनु.सं. प..	15	1	6	4	-	4
		क्षे.अनु.सं. ना.	32	10	8	3	5	6
		क्षे.अनु.सं.ई.	12	3	4	1	3	1
		क्षे.अनु.सं.ज.	5	2	-	-	-	3
		क्षे.अनु.सं.ब.है	12	2	4	3	1	2

2.	चंद्रप्रभा वटी,श्वेत पर्पटी एवं पुनर्नवा मण्डूर विशिष्ट आहार -विहार के साथ	कें.अनु.सं. दि.	16	3	9	2	-	2
		कें.अनु.सं. भु.	10	1	2	-	-	7
		कें.अनु.सं. गवा.	8	-	5	2	01	-
		कें.अनु.सं. मुं.	22	4	12	1	-	05
		कें.अनु.सं. प..	11	1	5	2	-	3
		क्षे.अनु.सं. ना.	22	3	8	6	1	4
		क्षे.अनु.सं. ई.	13	5	3	2	1	2
		क्षे.अनु.सं.जं.	8	4	1	-	-	3
		क्षे.अनु.सं.ब.	5	2	1	-	1	1
		क्षे.अनु.सं.जू.	2	-	1	1	-	-
		ए.एल.आयु.अनु.व कें.चे.	1	-	1	-	-	-
योग			282	63	100	41	16	62

(20) कामला

कामला रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में किए गए । कुल 18 रोगियों पर अध्ययन किया गया जिसमें एकल चिकित्सा अपनाई गई । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

कामला पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	पुनर्नवा मण्डूर आरोग्यवर्धिनी फलत्रिकादि क्वाथ	कें.अनु.सं.ल.	18	6	2	-	-	10
योग			18	6	2	-	-	10

(21) अतिसार

अतिसार पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में किया गया । कुल 28 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इसमे जी.वी.के.कम्पाउण्ड द्वारा चिकित्सा की गयी । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

अतिसार पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	जी.वी.के योगिक	कें.अनु.सं.दि.	28	10	11	5	2	-
योग			28	10	11	5	2	-

(22) प्रवाहिका

प्रवाहिका पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केंद्रोय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में किए गए कुल 17 रोगियों पर अध्ययन किया गया । इसमे जी.वी.के.कम्पाउण्ड द्वारा चिकित्सा की गयी । इससे संबंधित सक्षिप्त विवरण तथा अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या तथा उनके परिणामों को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

प्रवाहिका पर आयुर्वेदिक योगों का निदानचिकित्सात्मक अध्ययन एवं परिणामः

क्र.सं.	परीक्षण औषधि	संस्थान/केंद्र एकक	कुल रोगी	परिणाम				
				उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मध्यगत
1.	जी.वी.के योगिक	कें.अनु.सं.दि.	17	5	6	3	3	-
योग			17	5	6	3	3	-

(ब) रोग समूह,रोगियों की संख्या और निदानचिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित संस्थान/केंद्र/एकक

क्र. सं.	रोग समूह	रोगी संख्या	परियोजनाएं
1.	**प्राणवह स्त्रोतस व्याधि**		
	तमक श्वास	119	कें.अनु.सं.भु., कें.अनु.सं.ज., कें.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.प. क्षे.अनु.सं.वि., क्षे.अनु.सं.बं.,
2.	**अन्नवह स्त्रोतस व्याधि**		
	परिणामशूल	48	क्षें.अनु.सं.वि., नि.चि.अनु.ए.को.
	ग्रहणी रोग	108	कें.अनु.सं.ग्वा., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.ग.,
	अतिसार	28	कें.अनु.सं.दि.
	प्रवाहिका	17	कें.अनु.सं.दि.
3.	**पुरीषवह स्त्रोतस व्याधि**		
	अर्श	439	कें.अनु.सं.ग्वा., कें.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.को, कें.अनु.सं.मुं., कें.अनु.सं.भु., कें.अनु.सं.ल.क्षे.अनु.सं.प., क्षे. अनु.सं.जं., क्षे.अनु.सं.मं., क्षे.अनु.सं.ब.क्षे.अनु.के.ह.
	भगन्दर	46	कें.अनु.सं.दि., कें.अनु.सं.को.
	कामला	18	कें.अनु.सं.ल.
4.	**मूत्रवह स्त्रोतस व्याधि**		
	मूत्राश्मरी	90	कें.अनु.सं.दि., क्षे.अनु.सं.त्रि., क्षे.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.सं.गु., क्षे. अनु.सं.जू., क्षे.अनु.सं.ई.
	मधुमेह	85	कें.अनु.सं.दि., कें.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.ई.
5.	**रस,रक्त वह स्त्रोतस व्याधि**		
	व्यानबल वैषम्य	282	कें.अनु.सं.भु., कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.दि., के.अनु.सं.ग्वा., कें.अनु.सं.मुं., क्षे.अनु.सं.ना., क्षे.अनु.सं.जं., क्षे.अनु.सं.ई., क्षे.अनु.सं.जू., क्षे.अनु.सं.बं.
6.	**मेदोवह स्त्रोतत व्याधि**		
	मेदोरोग	125	कें.अनु.सं.ल., कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.मु., ए.ल.अनु.कें. आयु.चे., क्षे.अनु.सं.ज.

7.	**वात व्याधि**		कें.अनु.सं.ग्वा., कें.अनु.सं.मुं., कें.अनु.सं.चेरु.
	आमवात	432	कें.अनु.सं.ज., के.अनु.सं.को., कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.ल.कें.अनु.सं.दि.कें.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.त्रि., क्षे.अनु.सं.म, .क्षे.अनु.सं.वि., .क्षे.अनु.सं.ई. क्षे.अनु.सं.जू.क्षे.अनु.सं.ज.क्षे.अनु.सं.ना., क्षे.अनु.सं.प.
	पक्षाघात	122	कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.चेरु., कें.अनु.सं.दि., कें.अनु.सं.भु. क्षे.अनु.सं.ना., आयु.अनु.ए.बं.
	पंगु	26	कें.अनु.सं.चेरु., क्षे.अनु.सं.ना.,
	गृध्रसी	148	कें.अनु.सं.चेरु., कें.अनु.सं.ल., क्षे.अनु.सं.गं., क्षे.अनु.सं., प., कें.अनु.सं.दि क्षे.अनु.सं.ई.
8.	**मनोवह स्त्रोतस व्याधि**		
	मनोद्वेग	53	कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.मु.क्षे.अनु.सं.बं.
	अपस्मार	3	आयु.अनु.ए.ब.
9.	**नेत्रगत व्याधि**		
	तिमिर रोग	58	कें.अनु.सं.दि.
10.	**सर्वदेहगत व्याधि**		
	किटिभ	83	कें.अनु.सं.प., कें.अनु.सं.चेरु.क्षे.अनु.सं.त्रि. क्षे.अनु.सं.ज..क्षे.अनु.कै.ह.
11.	**आगंतुज व्याधि**		
	विषमज्वर	168	कें.अनु.सं.ज., क्षे.अनु.सं.ना., क्षे.अनु.सं.ई., क्षे.अनु.सं.प., ए.ल.आयु.अनु.के.चे., क्षे.अनु.के.ह.
	श्लीपद	123	कें.अनु.सं.भु., क्षे.अनु.सं.प., क्षे.अनु.सं.वि.
	योग	2621	

(स) बहिरंग रोगी विभाग और अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट/निर्मुक्त रोगियों की संख्याः-

क्र. सं.	संस्थान/केंद्र/एकक का नाम	बहिरंग रोगी विभाग में रोग्ग							अंतरंग रोगी विभाग में रोगी				
		नये		पुराने		कुल		सकल योग	प्रविट		विमुक्त		शैय्या प्रतिशत
		पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री		पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	
1	कें.अनु.सं., दिल्ली	10847	8461	13284	8721	24131	17182	41313	113	131	112	121	24.93
2	कें.अनु.सं., भुवनेश्वर	4864	3300	3803	3203	8667	6503	15170	126	59	117	80	32.77
3	कें.अनु.सं., मुंबई	1202	1247	3937	4442	5139	5689	10828	100	67	101	67	21.21
4	कें.अनु.सं., पटियाला	3535	2643	2939	2761	6474	5404	11878	48	66	47	60	22.05
5	कें.अनु.सं., चेरुतुरुथी	4634	9514	19522	54932	24156	64446	88602	335	246	329	236	83.81
6	कें.अनु.सं., लखनऊ	3815	2550	4472	3603	8287	6153	14440	-	-	-	-	-
7	कें.अनु.सं., कोलकाता	3224	1921	4847	3455	8071	5376	13447	50	47	41	50	50.95
8	कें.अनु.सं., ग्वालियर	4020	2918	3800	2949	7820	5867	13687	30	16	30	16	12.85
9	कें.अनु.सं., जयपुर	4645	3312	5121	4542	9766	7854	17620	73	72	70	69	34.03
10	क्षे..अनु.सं., जूनागढ़	1306	838	2210	1501	3516	2339	5855	-	-	-	-	-
11	क्षे.अनु.सं.पटना	1460	1215	1103	1074	2563	2289	4852	47	2	41		21.78
12	क्षे.अनु.सं त्रिवेंद्रम	1853	3060	4982	10891	6835	13951	20786	52		47		61.00
13	क्षे.अनु.सं, नागपुर	1780	1768	3446	3320	5226	5088	10314	47	15	46	15	60.41
14	क्षे.अनु.सं., बंगलौर	1493	1074	3554	2901	5047	3975	9022	-	-	-	-	-
15	क्षे.अनु.सं., जम्मू	2485	2668	3738	4301	6223	6969	13192	-	-	-	-	-
16	क्षे.अनु.सं., मंडी	5824	6512	4146	5457	9970	11969	21939	29	32	28	32	24.50
17	क्षे.अनु.सं, गंगटोक	2052	1446	2458	1586	4510	3032	7542	-	-	-	-	-
18	क्षे.अनु.सं., गुवाहाटी	1231	1284	1228	1444	2459	2728	5187	-	-	-		-
19	क्षे.अनु.सं., विजयवाड़ा	2190	2354	6045	7264	8235	9618	17853	45	71	43	76	75.03
20	क्षे.अनु.सं., ईटानगर	3494	3980	3055	3928	6549	7908	14457	19	8	17	8	14.77
21.	क्षे.अनु.सं., हस्तिनापुर	3193	2699	3540	3379	6733	6078	12811	-	-	-	-	-
22.	ए.एल.आर.सी.ए., चे.	411	502	1239	1670	1650	2172	3822	-	-	-	-	-
23	आ.अनु.ए.ब., बंगलौर	603	469	598	305	1201	774	1975	136	51	136	50	64.60
24	नि.चि.अनु.ए.कॉटटक ल	-	-	-	-	-	-	-	71	-	73	-	25.00
25	आयु.चि.के.सफदरजंग नई दिल्ली	6338	5970	5278	5495	11616	11465	23081	-	-	-	-	-
योग		76,499	71,705	1,08,345	1,43,124	1.84,844	2,14,829	3,99,673	1,321	883	1,278	880	-

(द) स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद ने आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा पर अनुसंधान किया । इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आदिवासी लोगों के रहन - सहन की स्थिति का अध्ययन करना, उनके द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रीय औषधियों, उस क्षेत्र में पाये जाने वाले औषध पादपों की प्राप्ति, स्वास्थ्य विज्ञान संबंधी मौखिक जानकारी देना, रोगों से बचाव, उस क्षेत्र में पाये जाने वाले सामान्य औषध पादपों का प्रयोग तथा घर - घर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है । इस कार्यक्रम की अलग - अलग आदिवासी एककों को विभिन्न केंद्रीय अनुसंधान संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जैसे केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, (आयु.), नागपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), पटना, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ईटानगर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), गुवाहाटी तथा आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना कार - निकोबार एक अलग एकक के रुप में कार्य कर रहा है । प्रतिवेदन अवधि 2005 -2006 के दौरान इस कार्यक्रम में हुई प्रगति में 39 ग्राम के 32,202 जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया तथा 18162 रोगियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई । निम्नतालिका में

क्र. सं.	संस्थान/एकक का नाम	सम्मिलित गांव का नाम	सम्मिलित जनसंख्या	चिकित्सित रोगियों की संख्या			सामान्य रोग
				नये	पुराने	कुल	
1.	के.अनु.सं. (आयु.) ग्वालियर	गिरवारी अरोन चिमक, दरसेधी शिवपुरी आदिवासी पॉकेट	5302	686	210	896	काश, ज्वर, कंडु संधिशूल, उदरशूल, अतिसार,
2.	क्षे.अनु.सं. (आयु.) नागपुर	कोहपा, गुगुलदोह चारगाँव अमघाट कोध्दापुर, सुरेवाणी रेंधारी, मोहगॉव	5461	1030	916	1946	त्वकरोग, कटिशूल कृमि, अम्लपित्त, काश, ज्वर, संधिवात, अतिसार, वातव्याधि पांडु

3.	क्षे.अनु.सं. (आयु.) ईटानगर	गंगा, वतवासी, होंल्णी पाबंर, ग्वागबस्ती, अपर बलिजान, नानकीबलिजान उपर लोबंग, कोकिला तेंगबारी, चेस। होइमुखी	9630	618	304	922	त्वक रोग, उदर शूल ज्वर, कास वातव्याधि, अम्लपित्त, कटिशूल, अतिसार कृमि रोग।, प्रतिश्याय
4.	क्षे.अनु.सं. (आयु.) पटना	चता, झागड़ी, राना, डमका, डोर सकोला,	5035	793	290	1083	त्वक रोग, कास, कृमि, संधिशूल, वातव्याधि, ज्वर, उदरशूल, अतिसार, कटि शूल एवं अम्लपित्त
5.	क्षे.अनु.सं. गुवाहाटी	चंद्रपुर, बरखत गांव, लफलौंग, मरियाकूची बीरकुची,	5139	928	390	1318	अम्लपित्त, त्वकरोग, श्वेतप्रदर, कास, वातव्याधि, कटिशूल प्रवाहिका अतिसार, ज्वर
6.	आ.स्वा.र. अनु. परि. कारनिकोबार में 26.10.4 को सुनामी के पश्चात पोर्ट ब्लेयर में स्थानांतरित	रंगत, कैम्प, बिल्वे मुख्यालय	1635	938 5423	- 5636	938 11059	त्वक रोग, प्रतिश्याय, ज्वर ,अम्लपित्त, कृमि, अतिसार, मुखरोग, ग्रहणी रोग
	योग	**39**	**32,202**	**10416**	**7746**	**18162**	-

3. चिकित्सा - प्रजाति - वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम

चिकित्सा - प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषध अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण घटक है । यह निदान चिकित्सात्मक, पादप - रसायन, भेषजगुणविज्ञानीय, भेषजअभिज्ञानीय एवं औषध मानकीकरण आदि जैसी अनुसंधानिक अध्ययनों को प्रारंभ करने हेतु मौलिक सूचना एवं प्रमाणिक कच्ची औषधीय पदार्थो को सुलभ करता है । केंद्रीय/क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थानों के अंतर्गत कार्यशील अनेक सर्वेक्षण एककों द्वारा सभी पहलुओं जिसमें विभिन्न महत्वपूर्ण फाइटोजियोग्रैफिक क्षेत्र, राज्य, जनपद, दुर्गम ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्र भी सम्मिलित हैं, से उपयोगी एवं मौलिक सूचनाओं का सग्रह किया जाता है । इनके आंकड़ों को औषध वानस्पतिक मोनोग्राफों में समय - समय पर प्रकाशित किया जा रहा है । वर्तमान में केवल 8 औषध पादप सर्वेक्षण एकक ही कार्यरत है यथा - बंगलूर, गुवाहाटी, ग्वालियर, ईटानगर, झांसी, नागपुर, ताड़ीखेत एवं त्रिवेंद्रम । सभी के सहयोग से लगभग 774.25 कि.ग्रा. कच्ची औषधीय पदार्थो का संग्रह किया गया तथा 30 चिन्हित संस्थानों को 338 नमूनों की आपूर्ति की गई ।

परिषद के सर्वेक्षण एककों द्वारा प्रतिवेदन वर्ष 2005 - 2006 के मध्य निम्नलिखित कार्य किए गए ।

किए गए महत्वपूर्ण कार्यः

सर्वेक्षण एककों की संख्या	यात्राएं की गई	संग्रह किए गए प्रजातियों की संख्या	कच्ची औषधि नमूने			आपूर्ति किए गए संस्थानों की संख्या
			संग्रहीत	आपूर्ति	भार	
8	7 सर्वेक्षण 73 स्थानीय यात्राएं, औषध संग्रह हेतु और 2 बाजार सर्वेक्षण किए गए ।	591	329	338	774.25 कि.ग्रा.	30

हर्बेरियम शीट्स तैयार/निर्मित (बैक लाग के साथ)	चिन्हित हर्बेरियम शीट्स (बैक लॉग के साथ)	हर्बेरियम शीटों की प्राप्ति	संग्रहालयीय नमूनों का संग्रह	संग्रहीत लोक प्रचलित चिकित्सा दावा
5961	5977	5633	128	33

पत्र प्रकाशित/संचारित	दिया गया तकनीकी ज्ञान	प्रदर्शनी का आयोजन	संगोष्ठी/कार्यशाला में सहभागिता
7	10	3	9

वर्तमान वर्षावधि में किए गए कार्यो का विवरण निम्नानुसार हैः

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद),बंगलूर (कर्नाटक)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.),बंगलूर के अधीन सर्वेक्षण एकक कार्यरत है जिसके द्वारा दो औषध पादप सर्वेक्षण यात्रा की गयी । इस यात्रा के माध्यम से 115 वंशों एवं 59 परिवारों से संबंधित 158 पादप प्रजातियों का सग्रह किया गया । इन नमूने को प्रक्रमण,निमित्त एवं चिन्हित किया गया । 160 कि.ग्रा. संग्रहीत कच्ची औषध की आपूर्ति की गयी । संस्थान के संग्रहालय में 34 नमूने बढ़ाए गए तथा अन्य दैनिक कार्यो में - हर्बेरियम के पादपों का निर्धारण किया गया । बंगलूर बाजार का सर्वेक्षण कार्य भी किया गया साथ ही बाजारनाम,बनस्पतिनाम,प्रयोज्य अंग,अनुमानित वार्षिक मांग और मूल्यदर अंकित की गई । 50 औषध पादपों का मूलनिर्धारण किया गया । स्थानीय नाम,विक्रय भाग एवं प्रतिकिलोग्राम मूल्य को संग्रहीत किया गया ।

2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद),गुवाहाटी (असम)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद),गुवाहाटी में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा औषध संग्रह हेतु 29 यात्राएं की गई । और 90.750 कि.ग्रा. (ताजी औषध) कच्ची औषध विभिन्न संस्थानों के आपूर्ति हेतु संग्रह किया गया । इसके अतिरिक्त दो संग्रहालय नमूने और चार लोक प्रचलित औषध

दावे संग्रहित किये गये । तीन शोध पत्र प्रस्तुत किये गये और एकक द्वारा एक स्वास्थ्य मेल आयोजित किया गया ।

3. केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान ग्वालियर के सर्वेक्षण एकक द्वारा कच्ची औषध संग्रह हेतु एक स्थानीय यात्रा की गई और एकक ने 11 कि.ग्रा. औषध परिषद के विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । इसके अतिरिक्त 22 संग्रहालय नमूने एकत्रित किये गये और 260 औषध पादप नमूनों की पहचान की गई । ' ए स्टडी आफ हर्बल वेल्थ ऑफ सरगुजा ' शीर्षक नामक मोनोग्राफ को विचारक टिप्पणी के अनुसार संशोधित किया गया और बुंदेलखंड मोनोग्राफ का अंतिम भाग सम्पादन हेतु प्रक्रियाधीन है ।

4. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.),ईटानगर में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा दो सर्वेक्षण यात्राएं की गई। इन यात्राओं में 122 पादप नमूनों और 33 संग्रहालय नमूने एकत्र किए और 46 वानस्पतिक नमूनों की पहचान की गई। इसके अतिरिक्त 10 संग्रह यात्राएं की गई । आपूर्ति हेतु 30 कि.ग्रा.कच्ची औषध संग्रहीत की गई । संस्थान द्वारा 6 लोक प्रचलित दावों का संग्रह किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों 6 कार्यशालाओं/ संगोष्ठियों में सम्मिलित हुए ।

5. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.),झांसी (उत्तर प्रदेश)

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,झांसी में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा 5 स्थानीय सर्वेक्षण यात्राएं की गई तथा 242 कि.ग्रा.ताजा औषध का संग्रह किया गया । इसमें 124 कि.ग्रा.कच्ची औषध संस्थान के उद्यान से ली गई है ,वह भी सम्मिलित है । संस्थान द्वारा कुल 212 कि.ग्रा. औषध का परिषद के विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । एकक ने झांसी महोत्सव प्रदर्शनी में भी सहभागिता की ।

6. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.),नागपुर (महाराष्ट्र)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद),नागपुर में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा बुलधाना वन क्षेत्र की एक सर्वेक्षण यात्रा की गई । इन यात्राओं में 6 औषध पादप नमूनें,दो संग्रहालय नमूनें और 21 लोक प्रचलित दावे संग्रहीत किए गए । 3 संग्रह यात्राएं भी संचालित की गई तथा लगभग 21 कि.ग्रा. 10 प्रकार की कच्ची औषध का संग्रह आपूर्ति हेतु किया गया । औषध पादप मोनोग्राफ मेलघाट जिला अमरावती एवं भंडारा तथा गोदियां वन विभाग को संशोधित कर प्रकाशन हेतु परिषद को प्रस्तुत किया गया।

7. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ताड़ीखेत (उत्तरांचल)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ताड़ीखेत में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा दो सर्वेक्षण यात्राएं की गई तथा 243 औषध पादप नमूनें संस्थान के लिए संग्रहीत किए गए । 12 संग्रह यात्राएं भी की गई और 116 कि.ग्रा.भार की ताजा कच्ची औषध विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । इसके अतिरिक्त चंपावत का एक बाजार सर्वेक्षण भी किया गया । वन निगम पिथौड़ागढ़ ,टनकपुर एवं भेषज संघ,पिथौड़ागढ़ एवं चंपावत के माध्यम से कच्ची औषधियों के बाजार विवरण को रेकार्ड किया गया । संस्थान ने संस्थान के उद्यभिदालय में 5425 हर्वेरियम सीट को चिन्हित,निर्धारण एवं सूचिबद्ध किया । संस्थान के वैज्ञानिकों ने उत्तरांचल हर्बल प्रदर्शनी 2005 में आयोजित कार्यशाला /संगोष्ठी में सहभागिता की । शासकीय/गैर सरकारी कार्यालय/वनक/शोधकर्ताओं हेतु हरवेरियम प्रबंधन पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया ।

8. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (औ.अनु.),त्रिवेंद्रम (केरल)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (औ.अनु.),त्रिवेंद्रम स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा 10 सर्वेक्षण संग्रह यात्राएं की गई तथा कुल 103.5 कि.ग्रा.कच्ची औषधियों का संग्रहण किया गया तथा विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । प्रतिवेदन अवधि में 54 पादप प्रजातियों,40 वंशों और 25 परिवारों के 35 संग्रहालय नमूनें को संग्रहीत किये गये ।

परिषद मुख्यालय,नई दिल्ली में केंद्रीय पादपालय और संग्रहालय

प्रतिवेदन अवधि में केंद्रीय पादपालय और संग्रहालय का रख - रखाव किया गया । इस अनुभाग ने देश के विभिन्न भागों में प्रदर्शनियां आयोजित की । परिषद ने स्वास्थ्य मेला रायबरेली (उत्तर प्रदेश),नाडिया (पश्चिम बंगाल),रानीपेट,(तमिलनाडु),महराजगंज (उत्तर प्रदेश),पूर्ण स्वास्थ्य मेला,नई दिल्ली, पुल्लीचापुल्लम (तमिलनाडु),राष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं मल्टीमिडिया कम्पेईग, कोलकाता (पश्चित बंगाल),देहरादून (उत्तरांचल),सजीवनी वही (महाराष्ट्र),मेलानवक्कम (तमिलनाडु),पेरियाकुलम (तमिलनाडु) में सहभागिता की । आरोग्य 2006 के अंतर्गत नई दिल्ली,हैदराबाद,चेन्नई और त्रिवेन्द्रम एवं मेगा आरोग्य 2006, चित्तौड़ जनपद (आंध्रप्रदेश में)भाग लिया । इसके अतिरिक्त परिषद ने नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में आयोजित पुस्तक मेले में भी सहभागिता की ।

4. औषध पादप कृषि कार्यक्रम

आयुर्वेद एवं सिद्ध के महत्वपूर्ण औषध पादप कृषि कार्यक्रम हेतु परिषद के पास पांच औषध पादप उद्यान हैं जो पुणे (महाराष्ट्र), मंगलियावास नजदीक अजमेर (राजस्थान), ईटानगर (अरुणाचल पदेश), झांसी (उत्तर प्रदेश) एवं ताड़ीखेत (उत्तरांचल) मे स्थित है । इन औषध उद्यानों में लघु एवं बृहद स्तर पर आयुर्वेद एवं सिद्ध की कुछ महत्वपूर्ण औषध पादपों की प्रायोगिक कृषि की जाती है । इन पादपों में उष्णकटिबंधीय/उप - उष्ण कटिबंधीय एवं शीतोष्ण क्षेत्र के आयातित आकर्षक पादपों का आरोपण किया गया । संपूर्ण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न उच्चता स्तर पर औषधिपादपों के अनुकूलनीयता, वृद्धि, फूल, फल आना आदि के साथ ही परिस्थिति की अध्ययन करना है । इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रयास किया जा रहा है कि प्रायोगिक अध्ययनों की सहायता औषधि पादपों के दुर्लभ एवं संकटापन्न प्रजातियों के सफल कृषि कार्यक्रम एवं वृद्धि हेतु मौलिक आंकड़ें/ समुचित कृषि तकनीक प्रदान किया जाए ।

पुणे स्थित पादप उद्यान अन्य अनुसंधान गतिविधियो के साथ - साथ एक प्रदर्शनी/प्रतिनिधि उद्यान है । गुग्गुलु हर्बल फार्म मंगलियावास में गुग्गुलु एवं सकटापन्न गुग्गुलु प्रजाति, शुष्क-अर्द्धशुष्क क्षेत्र में पादपों की कृषि कार्यक्रम वृहत प्रायोगिक स्तर पर होती है । इस दृष्टि से पादपो की संरक्षण/पालनेयोग्य एवं तैलीय गोंद राल को सुरक्षित एवं राल को टैंपिंग हेतु उपयुक्त प्रणाली को विकसित करना । तैलीय गोंद राल आयुर्वेद में एक उच्चस्तरीय औषधि है । रानीखेत में स्थित हर्बल उद्यान में परिषद ने सफलतापूर्वक केसर को उगाया हुआ है और इसके प्रसार हेतु तकनीक विकसित किया है ।

प्रत्येक औषधि पादप उद्यान में कृषि कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार में हैः-

1. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (जवाहर लाल नेहरु आयुर्वेदिक औषध पादप उद्यान एवं पादपालय), पुणे (महाराष्ट्र)

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान पुणे का औषधि पादप उद्यान पुणे नगर की सरहद में सहयाद्री पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है । संस्थान के पास 19.5 एकड़ जमीन है । यह उद्यान दो भागों - निचले एवं उपरी में विभाजित है । उच्च उद्यान देखने में पहाड़ीनुमा सा लगता है एवं इसका फैलाव 11 एकड़ क्षेत्र में है । नीचे का उद्यान लगभग 8.5 एकड़ क्षेत्र लाईन पर है तथा विभिन्न

कृषि जलवायु अंचल से पेड़ प्रजाति एवं अन्य औषध पादप स्थित है । 382 औषधीय प्रजातियों महत्व के साथ ही कुछ अलंकरण पादप प्रजातियों का उद्यान में रख - रखाव किया गया । इनमें से 150 औषध पादप आयुर्वेदिक फार्मुलरी ऑफ इंडिया के भाग 1 एवं 2 में सम्मिलित है । राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड द्वारा अनुसंशित 32 में से लगभग 20 प्राथमिकता वाले औषध पादप प्रजातियों का उद्यान में रख - रखाव किया गया।

गाम्भरी, अर्जुन एवं गुग्गुलु जैसे 86 पादपों का वृहत स्तर पर आरोपण किया गया । पहले से आरोपित पादपों का रखरखाव एवं नियमित कार्य - बीजरोपण, सफाई, कीड़े से संरक्षण हेतु समय - समय पर खाद डालने एवं मापन का कार्य किया गया । संस्थान परिसर के नीचले भाग में स्थित प्रदर्शनीय उद्यान में वृहत संख्या में पेड़ों, झाड़ी, जड़ीबूटी, तथा आरोही लताओं का कब्जा है । जपा, निर्गुण्डी, बिल्व, आमलकी, सतावरी, ब्राह्मी, वचा, मण्डुकपर्ण्णी, कालमेघ, कुमारी आदि पादपो को समुचित ढंग से पादप सम्मलित पादप उत्पादन हेतु उद्यान में लगाया गया । परिषद के विभिन्न संस्थानों एवं विभिन्न संगठनों की आवश्यकता अनुरुप अपरिस्कृत औषधियों की आपूर्ति की गई । इसके अतिरिक्त चन्दन, सर्पगंधा, पाठा, रक्त चन्दन, गुग्गुलु एवं अशोक आदि पादप प्रजातियों के सरक्षण हेतु प्रारम्भिक कदम उठाए गए । कुछ महत्वपूर्ण औषधि पादपों का वाटिका में सुविधाजनक प्रदर्शन, विकसित करने, आसानी से चिन्हित करने तथा कुछ पादप प्रजातियों के क्षेत्रों में कृषि एवं प्रदर्शन का कार्य किया गया । प्रतिवेदन वर्ष में इस प्रकार के 10 वाटिकाओं का सीमांकन एवं रख रखाव किया गया ।

170 हर्वेरियम शीटस को समाविस्ट किया गया । उसमें से 68 प्रजातियों को तैयार कर हर्वेरियम में जोड़ा गया । वर्ष के दौरान 156 कि.ग्रा. शुष्क तथा 50 अपरिस्कृत औषधियों को संग्रहीत/प्राप्त कर आयुर्वेदिक निरुपण निर्माण हेतु रसायनिक/पादप रसायनिक जाँच के लिए केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद मुख्यालय के विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । कुछ अपरिस्कृत औषधियाँ यथा आमलकी फल, आर्गवध फल, अर्जुन फल, मदन फल, लताकरन्ज बीज आदि के औषधिय महत्व के प्रजाति से लगभग 40 कि.ग्रा. फल/बीजों की आपूर्ति एवं बीज बैंक उद्देश्य के लिए उद्यान से 23 प्रजातियों का संग्रहण किया गया । संस्थान ने विभिन्न स्रोतों से यथा - पुस्तकों की बिक्री, परिषद के विभिन्न प्रकाशन, गुग्गुलु पौधों एवं औषधीयपादपों, हरवेरियम सीट्स चिन्हित करने एवं अन्य विविध मदों के द्वारा 41,118 रुपये अर्जित किये । प्रतिवेदन अवधि में उद्यान में वृहत संख्या में लगभग 400 आगन्तुक आये । इन आगन्तुकों में देश के विभिन्न भागों के महाविद्यालयों के छात्रों तथा कुछ विदेशी आगन्तुकों में चिकित्सक, वैज्ञानिक एवं शिक्षार्थी सम्मिलित थे ।

2. गुग्गुलु औषध फार्म,मंगलियावास, अजमेर (राजस्थान)

गुग्गुलु औषध फार्म,मंगलियावास अजमेर से लगभग 26 कि.मी.दूरी पर स्थित है । इसके मुख्य गतिविधियों में औषधफार्म का संरक्षण,कृषिकरण एवं विशाल स्तर पर विभिन्न प्रायोगिक दशाओं में गुग्गुलु के अनुपातिक विकास से संबंधित व्यवहार का अवलोकन करना है । संपूर्ण फार्म का लगभग 142 एकड़ भूमि कृषिकरण उद्देश्य के लिए सुलभ है जिसमें 1/3 भूभाग कृषिकरण एवं 2/3 भूभाग औषधीय पादपों के प्राकृतिक वनस्पति हेतु है । वर्तमान में लगभग 14081 गुग्गुलु पादपों को सामूहिक प्रयोगिक स्तर पर विभिन्न खंडों में उगाया जा रहा है । इसके अतिरिक्त 67 पादपों को विस्तृत रुप से उगाया जा रहा है । कुछ अन्य पादपों यथा ग्लोरिओसा सुपर्वा, अकेसिया निलोटिका, टिनोसपॅरा कोरडिफोलिआ, असपरागस रेसिमॅरस, पोंगमिआ पिन्नटा, बोसवेलिया सेटाटा, रुस माईसूरेंसिस आदि की भी खेती की जाती है । जिसमें 49 पादप प्रजाति आयुर्वेदिक फार्मालुरी भाग 1 से है ।

कुछ अध्ययन इस प्रकार से है

(I) प्रतिवेदन वर्ष में 200 गुग्गुलु पादपों का 400 मि.ग्रा. एथिफोन उपचार के साथ टेपिंग की गई ।

(II) गुग्गुलु पुष्प का विस्तृत जीवविज्ञानीय अध्ययन

(III) गुग्गुलु के टेपिंग अध्ययन में सुधार (40 पादप)

(IV) पादपों में गोंद निःस्त्राव के प्रभावकारी तत्व

(V) गुग्गुलु में तेलीय राल उत्पादन में टेपिंग तकनीकी सुधार द्वारा वृद्धि करना ।

वर्ष के दौरान 1064 गुग्गुलु पादप खेत में आरोपित किए गए । 199 गुग्गुलु के पौधे टेपिंग के कारण सूख गए । पिछले 6-7 वर्षों के दौरान लगभग 200 पादप वन्यजीव जन्तु के आक्रमण तथा सूखे कि स्थिति में सूख गए । 5350 गुग्गुलु पौधे सीमेंट की क्यारियों में उगाए गए। 4523 पौधे प्लास्टिक की थैलियों में पैक किए गए ।

फार्म से 63.650 कि.ग्रा. गुग्गुलु गोंद, एवं 6.800 कि.ग्रा.केमत गोंद का संग्रहण किया गया। 12 कच्ची औषधि,छोटे पौधे की कटिंग, गुग्गुलु गोंद को विभिन्न संस्थान के चिकित्सालय तथा विभिन्न संगठनों को आपूर्ति की गई । गोंद पौधे,ताजा तना एवं मूल कटिंग की बिक्री से 29,320/रुपये की राशि अर्जित की गई तथा 97.050 कि.ग्रा.गुग्गुलु गोंद स्टॉक में है ।

3. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ताड़ीखेत (उत्तरांचल)

औषधि पादप उद्यान 1700 मीटर उँचाई पर स्थित है । यह सघन चीड़ के पेड़ो के वनो से घिरा हुआ है जिनमें कुछ वृक्ष है - देवदार, मायरिका, रोडोडेनड्रोन, क्यूरकस एवं झाड़ी यथा बरबेरीज, रुबुस प्रजाति क्रेटेजस प्रजाति आदि हैं । वर्तमान में उद्यान के लगभग 2.5 एकड़ में औषधि पादप एवं 1.53 एकड़ के अंतर्गत केसर का कृषि कार्यक्रम चल रहा है ।

उद्यान में 194 औषधीय पादपों का रख - रखाव किया गया । यह पादप प्रजाति मुख्यतः उत्तरांचल के उप - पर्वतशिखर, प्रकृति एवं तराई - भांबर क्षेत्र से संबंध रखते हैं । संसाधन उत्पादन कार्यक्रम की दृष्टि से पिछले दो वर्षो के दौरान क्यारियों को विकसित किया गया । लगभग 40 औषधि पादपों की विविधता संरक्षण में यथा कुटकि, पुस्करमूल, चिरांयता, सति, कूट, कलिहारी, वत्सनाभ आदि संकटापन्न दुलर्भ पादप प्रजाति उगाए गए । बीज के माध्यम से सति छोटेवृक्ष को सफलतापूर्वक समुन्नत किया गया । इस वर्ष की समूह में यह मील का पत्थर के रुप में उपलब्धि है । दूसरे वर्ष में बोने हेतु तथा संसाधन उत्पादन कार्यक्रम हेतु 28 औषधिय पादपों के 1.5 कि.ग्रा.बीज का संग्रहण किया गया ।

केसर का कृषिकरण कार्यक्रम सफलतापूर्वक किया जा रहा है । पिछले दो वर्षों की तुलना में इस वर्ष बेहतर वृद्धि हुई है । सभी घनकदों की उत्खनन एवं पुनर्रोपण के कारण यह सम्भव हुआ। 5198 पादपों को संग्रहीत किया गया । 41.71 ग्राम शुष्क केसर प्राप्त हुआ । शोध कार्य हेतु केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनसंधान परिषद, मुख्यालय, एवं कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषधि अनुसंधान संस्थान, चेन्नई को 36.24 ग्राम केसर की आपूर्ति की गई ।

लगभग 11 कि.ग्रा.कच्चे औषधि सामग्री को उद्यान से 5 मदों विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति की गई । संसाधन उत्पादन कार्यक्रम के माध्यम से उद्यान से औषधीय पादपों के बीज एवं छोटेवृक्षों की बिक्री से 3064.00 रुपये अर्जित की गई ।

विभिन्न शासकीय, गैर -शासकीय संगठनों एवं अनुसंधान संस्थानों के आगन्तुकों को औषधीय पादप कृषिकार्यक्रम के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान किया गया ।

बनौषधि वाटिका, चम्मा (टिहरी गढ़वाल)

यह वनौषधि वाटिका टिहरी जनपद के अंतर्गत चम्मा शहर में हिमालय के उत्तर पश्चिम छोर पर समुद्र तट से 1500 मीटर की उँचाई पर स्थित है । उद्यान का मुख्य उद्देश्य बीजों को संग्रहीत करना है ताकि हिमालय क्षेत्र के उप - पर्वत शिखर - पर्वत शिखर के शीतोष्ण औषधीय

पादपों को उगाया जा सके। वर्तमान में शोध अनुसंधान उद्देश्य के लिए केसर के साथ 124 औषधीय पादपों का कृषि कार्यक्रम चल रहा है । औषधीय पादपों के छोटेवृक्ष् की बिक्री से 200रुपये की राशि अर्जित की गई । इस वर्ष वाटिका में 45 औषधीय पादप उत्पन्न किए गए । 3000 केसर के घनकन्द पुनः आरोपण किया गया तथा 900 पादपों का संग्रहण किया गया जिससे 8 ग्राम शुष्क केसर की प्राप्त हुई ।

4. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान,ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश)

संस्थान का औषध पादप जो लगभग 15 एकड़ भूमि में ढालू टीले एवं खाई के रुप में स्थित है । वर्तमान में लगभग 10.5 एकड़ क्षेत्र में औषध पादपों की कृषि की जाती है । उद्यान में आयुर्वेदिक महत्व के कुल 200 पादप प्रजातियों को उगाया जा रहा है । संपूर्ण पादपों में से 118 औषधीय पादपो की प्रजातियों का उल्लेख आयुर्वेदिक फार्मूलरी भाग - 1 में किया गया है । इसमें से कुछ प्रमुख पादप हैं अर्जन, चित्रक, नागकेसर, हंसपादी, विडंग,गुडुची एवं पिप्पली के कुछ पादप उगाए जा रहे हैं । उद्यान में उच्चपर्वतीय, - उप पर्वतीय,एवं शुष्क् प्रदेश के पादप यथा मंजिष्ठा,दारु हरिद्रा,पापाण भेद,एवं तगर पहली बार उगाये गये । सर्पगंधा के 200 पादपों की तना की कटिंग एवं बीज अंकुरण से द्रोणपुष्पी के 350 पादपों,चक्रमर्द के 1500 पादपों एवं तुलसी के 45 पादपों को प्रतिरोपित किया गया ।

वर्तमान वर्ष के दौरान कूरकूमा केसिआ,सी.जेडीरिआ,राउवोलफिआ,सर्पेनटिना,स्टेविआ प्रजाति आदि पादपों का कृषि कार्यक्रम किया जा रहा है ।

100 कि.ग्रा.संग्रहीत कच्ची औषधियाँ की केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों एवं औषधि मानकीकरण एककों को आपूर्ति की गई ।

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड द्वारा प्रायोजित गुणवत्ता पादप सामग्री पर इस संस्थान के साथ एक परियोजना पर कार्य चल रहा है । इसके अंतर्गत बहुतही मूल्यवान औषध पादप एवं उनके पादप सामग्रियों हेतु कृषि तकनीकी प्रौद्योगिकी को समुन्नत किया गया ।

5. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी (उत्तर प्रदेश)

10 एकड़ भूमि में औषध पादप कृषि कार्यक्रम चलाया जा रहा है । उद्यान में लगभग 215 औषध पादप हैं । कृषि प्रायोगिक कार्यक्रम के अंतर्गत कई औषधीय पादपों यथा - आमला, नीम, गाम्भरी, सलाई, सागोन, सिरिस,अर्जुन, वरुण, विलायातिसेमल, बहेरा, खैर, जामुन, मीथा, कुटज, लिसोरा, सप्तर्पण, सैजन, गुलर, चिलबिल, ईमली, महुआ, यूकलिपटस, सफेदकिकर, गुंज, पटाला, शिवनक हर

श्रृंगार, पिप्पली, बिल्व, कनेर, कचनार, कंजी, जंगल जलेवी, निर्गुण्डी, मीथानीम, अरुलु आदि को आरोपित किया गया । गुग्गुलु, सतावरी, यस्टिमधु, सर्पगंधा, भेद, घृतकुमारी, पृस्तनापर्णी, शालपर्णी, रासना, कालमेघ इसबगोल, तुलसी, अर्कपन्नी, वसा, अनन्तमूल, बकुची, बाह्मी, मंडकपर्णी, अश्वगंधा, शंखपुष्पी, गूंजा, दंति, अर्णि, करन्ज, त्रिवृत्त, देशी अकरकरा आदि जैसे पादपों को सफलता पूर्वक उगाया गया । सम्पूर्ण पादपों में से लगभग 110 औषध पादप प्रजातियों का उल्लेख आयुर्वेदिक फार्मुलरी ऑफ इंडिया के भाग I में है, का भी रख - रखाव किया गया ।

संस्थान के उद्यान से विभिन्न पादपों के 124.0 कि.ग्रा. बजन की ताजा कच्ची औषधियों का संग्रहण किया गया । रोगाणुक भार, कीटनाशी अवशेष एवं भारी धातु आदि की जाँच हेतु सीएसएमडीआर आई ए, चेन्नई तथा आई टी आर सी लखनऊ को आपूर्ति की गई । ए.पी.सी. योजना के अंतर्गत इस आपूर्ति की माध्यम से 2450/-रुपये की राशि अर्जित की गई । आयुर्वेदिक महत्व के औषधीय पादपों के 18 प्रजातियों के बीज, छोटे वृक्ष, एवं कटिंग को संग्रहीत किया गया तथा गमले एवं क्यारियों में आरोपित किया गया । ग्रीन हाउस में 200 गमले में आयुर्वेदिक महत्व के 50 पादप प्रजातियों का प्रदर्शन के उद्देश्य हेतु रख रखाव किया जा रहा है ।

5. कस्तूरी मृग प्रजनन कार्यक्रम

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), ताड़ीखेत में परिषद कस्तूरी मृग प्रजनन कार्यक्रम का रख रखाव कर रही है । मुख्य वन्य जीव संरक्षक, उत्तर प्रदेश ने 1974 में प्रजनन एवं जंगल से कस्तूरी मृग को पकड़ने तथा कस्तूरी मृग को हानि पहुंचाए बिना अनुसंधान कार्य हेतु कस्तूरी संग्रहण की अनुमति प्रदान की । कस्तूरी एक जीवन -रक्षक औषधि है जो कई आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में प्रयोग की जाती है यथा- मृगमादासव, कस्तूरी भैरव रस, कस्तूरीमोदक, वसंत कुसुमाकर रस आदि । वर्तमान में इस कस्तूरी मृग अनुसंधान केंद्र में 18 कस्तूरी मृग है, जिनमें 11 नर एवं 7 मादा का रख - रखाव किया जा रहा है । इस वर्ष 116.11 ग्राम कस्तूरी का संग्रहण किया गया ।

हाल के वर्षो में देखा गया है कि कस्तूरी मृग अपने जीवन को शांत रुप में व्यतीत करना चाहते हैं । वे अतिसंकुल क्षेत्र को पसन्द नहीं करते । वे स्वतंत्र, स्वच्छ एवं भयरहित वातावरण को पसन्द करते हैं ।

6. भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

औषधीयों की वानस्पतिक पहचान के साथ उनके प्रतिस्थानी एवं मिलावट की स्थापना हेतु केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद की कोलकाता, पुणे, बंगलूर में स्थित भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एककों में आयुर्वेद में प्रयोग की जा रही निम्नलिखित औषधियों के अन्वेषण का कार्य विस्तृत रुप से किया जा रहा है ।

1. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), बंगलूरः

1. जयन्थी - पत्ते
2. काकमचि - सम्पूर्णपादप
3. करंज - पत्ते
4. करवल्ला - फल
5. कौजूप्पा - संपूर्ण पादप
6. मधुरिका - फल
7. मेंथी -बीज
8. सरला - काष्ठ
9. टिन्टीडिक - फल
10. लज्जालुः सम्पूर्ण पादप

2. केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), कोलकाताः

आमल्कयादिमिश्रित कैप्सूल

1. आमलकी - शुष्क, परिपक्व फल
2. अश्वगंधा - शुष्क, परिपक्व फल
3. गुडुची - तने के छोटे - टुकड़े
4. मारिच - शुष्क परिपक्व फल
5. नीम - तना छाल
6. पिप्पली - अपरिपक्व फलों के मंजरी
7. पुनर्वण - शुष्क वयसक सम्पूर्णपादप - शुथि -, शुष्क प्रकन्द,

3. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), पुणेः

1. आर्गवध - फल, गूदा
2. अशोक - तना छाल
3. अशवथ - तना छाल

4.	अश्वगंधा	- मूल
5.	अतसि	- बीज
6.	बकुचि	- फल
7.	विभितिक	- फलगूदा
8.	बिल्व	- फलगूदा (कच्चे)
9.	चन्द्रसार	- बीज
10.	घन्याक	- फल
11.	धातकि	- फूल
12.	गोक्षुरा	- फल
13.	गुडुचि	- तना

अध्ययन में औषधियों के मूल वानस्पतिक पहचान तथा वानस्पतिक विवरण तथा मुख्य विशेषता सहित पर्याय के साथ आयुर्वेदिक परिभाषिक शब्दावली का सही निर्धारण का सही विवरण आता है । इस विस्तृत कार्य में विभिन्न तथ्यों का अध्ययन जैसे औषधि भागों का आकृति विज्ञान जिसमें संवेदी गुण कोशिका एवं ऊत्कों की गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों की संरचना,कोशिका वर्णात्मक अध्ययन सम्मिलित है । चूर्ण औषधि में मिलावट का पता लगाने के लिए विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है । यह अध्ययन एकौषधीयों के लिए भेषज अभिज्ञानीय मानकों के विकास एवं उनके समुचित पहचान तथा प्रभावीकरण में उपयोगी है ।

7. पादप ऊतक संजनन

पादप ऊतक संजनन का मुख्य उद्देश्य महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषधि पादपों का गुणात्मक प्रसार एवं दुर्लभ/असुरक्षित/ संकटापन्न स्थिति का संरक्षण करना है । क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान पुणे स्थित पादप ऊतक संजनन प्रयोगशाला में परखनली द्वारा उगाए गए पादपों के प्रसार एवं दुर्लभ रसायनिक पादपों का अध्ययन तथा संकटापन्न पादपों के मानकीकरण का कार्य निरन्तर चल रहा है ।

पाँच दुर्लभ पादप ऊतक संजनन यथा - शायॅनक, प्रिश्न पर्णी, त्रिवृता, भारंगी एवं मंजिस्ठा पर परखनली द्वारा उगाए जाने वाले तकनीक प्रसार कार्य मानकीकरण के क्रम में प्रायोगिक अध्ययन किया जा रहा है । पाँच पादपों पर किए गए परखनीलय प्रसार परीक्षण उपलब्धियों का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है:-

1. शायॅनक

परखनली द्वारा उगाए गए शोयनक पादपों में कक्षवर्ती प्रयोग से शीर्ष कली एवं नोडल भाग का ऊतक संजनन के लिए एक्सप्लांट के रुप में प्रयोग कर पुनरुत्पादन किया जा रहा है । एम.एस.माध्यम पर सुदृढ़ करने के लिए बीएसी, केएन, आईएए, जीए 3 तथा पी वी पी का विभिन्न सांद्रताओं में एक्सप्लांट को संचालित किया गया । विभिन्न अंकुरण के पुनरुपादन में हरित कैलस का निर्माण देखा गया । आगामी परीक्षण प्रगति पर है ।

2. प्रिश्नपर्णी

प्रिश्नपर्णी के परखनलीय पुनरुपादन के अंतर्गत बीजपत्र, बीजपत्र गांठ एवं गांठ भाग का एक्सप्लांट के रुप में प्रयोग किया जा रहा है । परखनली में उगने वाले बीज पत्र का बीएपी, एएस केएन, आईएए एवं एनएए के साथ विभिन्न सांद्रताओं में एमएम माध्यम पर संचालित किया गया । हारमोन्स के सभी सान्द्राताओं में भाग का अनुकूल संजनन प्रत्युत्तर देखा गया । परखनली में उगने वाले जड़ अंकुरण का परीक्षण किया गया । 1/2 एमएस, एमएस, 1/2 एमएस माध्यम पर आईएए एवं आईबीए के साथ एकल एवं घटकों में परीक्षण किया गया । पादप - हारमोन्स की सभी सांद्रताओं में 100 प्रतिशित जड़ का पुनरुत्पादन देखा गया ।

3. त्रिवृता

त्रिवृता का परखनलीय पुनरुपादन परीक्षण कार्य,बीज प्रयोग,नोडल भाग का बीज पत्र गाँठ एवं बीज पत्रक का एक्सप्लांट के रुम में प्रयोग किया जा रहा है । एम एस पूरक माध्यम पर बीएपी एवं के.एन एकल के साथ पुनरुत्पादन देखा गया ।

परखनलीय में उगे हुए अंकुरण द्वारा 1/2 एम एस,एम एस सतह एवं 1/2 एम एस,पर आई एए,आई बीए तथा आईबीए के साथ एकल घटको में मूल परीक्षण किया गया । प्रारभिक स्तर में कठोरीकृत परीक्षण प्रारम्भ किया गया ।

4. भारंगी

भारंगी के परखनलीय पुनरुत्पादन परीक्षण में एमएस एवं एम एस के साथ बी.पी तथा के एन एकल पर नोडल भाग का प्रयोग किया गया । एम एस के एन माध्यम पर बहुअंकुरण पुनरुत्पादन देखा गया । परखनली में अंकुरण उगाने हेतु टीकाकरण द्वारा मूल परीक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया । 1/2 एम एस के साथ आईबीए तथा आगामी परीक्षण कार्य प्रगति में है ।

5. मंजिष्ठाः

परखनलीय पुनरुत्पादन परीक्षण में रुबिआ कार्डिफोलिया के नोडल भाग को प्रयोग कार्य के लिए प्रारम्भ किया गया । एमएस सतह एवं एम एस फोर्टीफाइड के साथ बीएपी तथा के एन एकल पर टीकाकरण किया गया । 15-20 दिनों के अन्दर एक्सप्लान्ट में सूजन देखा गया लेकिन विक्षालन के कारण एक्सप्लांट में उत्तरजीवित नहीं रहा । विक्षालन की उपेक्षा से 0.1% पीवीपी के साथ माध्यम को पूरक किया गया । आई एए,आईबीए, एन एए के साथ के एमएस माध्यम पूरक से आगे पुनरुत्पादन परीक्षण प्रयोग किया जा रहा है । 0.1% पीवीपी के साथ एन एए का परीक्षण कार्य प्रगति में है ।

8. औषध मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम

आयुर्वेदिक औषधियों में बहुल संख्या में पादप, खनिज एवं जन्तु मूल की औषधियाँ होती हैं जिन्हें प्राचीन काल से प्रयोग में लाया जा रहा है तथा चिकित्सा प्रभाव के साथ उनका गुणवत्ता नियंत्रण का भी दावा है । मानकीकरण औषधी की गुणवत्ता में समरुपता प्राप्त करनेका मानदण्ड हैं। परिषद औषध मानकीकरण एकाकों चेन्नई, कोलकाता, बंगलूर, त्रिवेंद्रम, लखनऊ तथा जामनगर के माध्यम से एकल औषधियो के साथ - साथ मिश्रित योगों के मानकीकरण तथा औषधियों को तैयार करने कार्य कर रहही है । मिश्रित योगों जिनमें विभिन्न जड़ी- बूटीय औषधियाँ/जड़ी बूटीय खनिज योग है तथा औषधियों/योगों की विभिन्न श्रेणीयों जैसे - भस्म, आसव, अरिष्ट एवं रस योग आदि का मानकीकरण बहुत कठिन कार्य हैं । मानकीकरण का मुख्य उद्देश्य वानस्पतिक औषधियों एवं मिश्रित योगों की गुणवत्ता एवं संरक्षण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा - निर्देशों के आधार पर तथा मापदण्ड के अतिरिक्त टी.एल.सी.प्रोफाइल, एच.पी.टी.एल.सी., फिंगर प्रिंटिंग, माइक्रोबिल भार तथा भारी धातु घटकों के महत्वपूर्ण मापदण्डों को फार्मेट में शामिल करने संबधी अध्ययन करना है ।

पादप मूल की 75 एकल तथा खनिज मूल की 2 औषधियों, 31 चूर्णो/क्वाथ चूर्ण, 5 आसव/अरिष्ट का मानकीकरण किया गया एवं एकल/मिश्रित योगों का टी.एल.सी./एच.पी.टी.एल.सी अध्ययन किया गया । औषधियों के नैदानिक परीक्षण तथा 27 अन्य फार्मूले निरुपणों पर मानकी - करण अध्ययन किया गया ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्विवार्षिकी कार्यक्रम ' आयुर्वेदिक योगो का मानकीकरण तथा विषाक्तता अध्ययन ' कार्यक्रम के अंतर्गत पाँच योग तैयार किए गए तथा उनकी मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.)एवं मानकीकरण अध्ययन पूरा किया गया ।' भारतीय चिकित्सा पद्धति को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रो (पी.एच.सी.)स्तर पर आरंभ करने की संभावनाएं' परियोजना के अंतर्गत 14 चयनित योगों को तैयार किया गया तथा मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.)तथा मानकों के विकास के लिए परीक्षण कार्य अंतिम चरण पर है ।

I.	**एकल औषधियों का मानकीकरणः**	
क.	**पादप मूल**	
1.	ब्राह्मी	क्षे.अनु.सं.त्रि.
2.	शेरयका	-तदैव-
3.	कंचनार	- तदैव -
4.	कृष्ण जीरक	- तदैव -
5.	हिंग	- तदैव -
6.	हिअक्लीख्म रिजेन्स	- तदैव -
7.	कुटज	- तदैव -
8.	उपकुमचिका	तदैव, ओ.मा.अनु.पं.जा., कें.अनु.सं.दि.
9.	पाइपर रिट्रोफेक्टम	- तदैव -
10.	चित्रक	तदैव, ओ.मा.अनु.पं.जा., कें.अनु.सं.दि.
11.	नीम तैल	- तदैव -
12..	वचा	तदैव, ओ.मा.अनु.पं.जा., कें.अनु.सं.दि.
13.	आर्गवद्ध	तदैव, के.श्री.आ.औ.अनु.सं.चे,
14.	जीरक	कें.अनु.सं.दि.
15.	हरितकी	तदैव, कें.अनु.सं.दि.
16.	वंश लोचन	औ.मा.अनु.प.जा.
17.	शुंठि	- तदैव -
18.	रसना	- तदैव -
19.	मधुक	- तदैव -
20.	जेग्गेरी	- तदैव -
21.	अर्जुन	- तदैव -
22.	द्राक्षा	- तदैवं -
23.	धातकी	- तदैव,-
24.	एरण्ड	- तदैव -
25.	पुनर्नवा	तदैव, के.कें.अनु.सं.दि.
26.	त्वक	तदैव, के.श्री.आ.औ.अनु.सं.चे,
27.	सरला	क्षे.अन.सं.बं.
28.	तिनडिका	- तदैव -
29.	लज्जालु	- तदैव -

30.	गुडुची	कें.अनु.सं. दि.
31.	आमलकी	- तदैव -
32.	मेंकी	- तदैव -
33.	गुड़मर	- तदैव -
34.	लोध	- तदैव -
35.	परिजात	तदैव, के.श्री.आ.औ.अनु.सं.चे,
36.	पुस्कर	- तदैव - के.श्री.आ.औ.अनु.सं.चे
37.	बेल	- तदैव -
38.	विभितक	- तदैव -
39.	यस्टिमधु	- तदैव -
40.	कमल	तदैव, कें.श्री.मू.औ.अनु.सं. चे.
41.	रक्त चन्दन	- तदैव -
42.	रसना	- तदैव -
43.	कंकोलि	- तदैव -
44.	हमासपदी	- तदैव -
45.	हरिद्रा	कें.अनु.सं.दि.
46.	शालपर्णी	- तदैव -
47.	गोजीह.	- तदैव -
48.	पिप्पलि	- तदैव -
49.	उशीर	- तदैव -
50.	कंटकारी	- तदैव -
51.	भुनिम्ब	- तदैव -
52.	अपराजिता	- तदैव -
53.	अश्वगंधा	- तदैव -
54.	गुरक्ष	- तदैव -
55.	लक्ष्मणा	- तदैव -
56.	तुलसी	- तदैव -
57.	समुद्र नारिकल	- तदैव -
58.	मुस्ता	- तदैव -
59.	रिद्धि	- तदैव -
60.	निर्गुण्डी	- तदैव -
61.	कृष्ण सरिबा	- तदैव -

62.	श्वेत सरिवा	- तदैव -
63.	हमसपदी भेद	- तदैव -
64.	इन्द्रावरुणी	- तदैव -
65.	चन्दन (श्वेत)	- तदैव -
66.	बृहति	- तदैव -
67.	क्षीरकाकोलि	- तदैव -
68.	खरजुरा	- तदैव -
69.	श्रावणी	- तदैव -
70.	लवंग	- तदैव -
71.	जेवंथि	- तदैव -
72.	वृक्षमाला	- तदैव -
73.	हरितमंजरि	- तदैव -
74.	बादाम	- तदैव -
75.	पुदीना	- तदैव -
(ब)	**खनिज मूल**	
1.	शिलाजीत	के.श्री.मू.औ.अनु.सं.चे.
2.	सैंधव लवण	- तदैव -
II.	**योगों का मानकीकरण**	
(क)	**चूर्ण /क्वाथ चूर्ण/वटी**	
1.	सितोपलादि चूर्ण	क्षे.अनु.सं.त्रि.
2.	हिंगवाष्टक चूर्ण	-तदैव -
3.	हुतभूगादि चूर्ण	- तदैव -
4.	रसनार नादि क्वाथ चूर्ण	- तदैव -
5.	त्रत्यादि चूर्ण	- तदैव -
6.	महर्षिनादि क्वाथ चूर्ण	- तदैव -
7.	विदरयादि क्वाथ चूर्ण	- तदैव -
8.	भाष्कर लवण चूर्ण	क्षे.अनु.सं.ब.
9.	श्रृगयादि चूर्ण	- तदैव -
10.	समंगादि चूर्ण	- तदैव -
11.	अमरतोत्रा क्वाथ चूर्ण	के.अनु.सं.ल

12.	अर्ध विल्व क्वाथ चूर्ण	कें.अनु.सं. ल.
13..	अष्टवर्ग क्वाथ चूर्ण	- तदैव -
14.	चतुर्भुद्र क्वाथ चूर्ण	- तदैव -
15.	छिन्नोभवादि क्वाथ चूर्ण	के.अनु.सं.ल
16.	गंधर्भभाष्तादि क्वाथ चूर्ण	के.अनु.सं.ल.
17.	चन्दनादि चूर्ण	के.अनु.सं.ल
18.	चतुर्जात चूर्ण	- तदैव -
19.	चित्रकादि चूर्ण	- तदैव -
20.	जातिफलादि चूर्ण	- तदैव -
21.	तालिसादि चूर्ण	- तदैव -
22.	त्रिकटु चूर्ण	- तदैव -
23.	त्रूत्यादि चूर्ण	- तदैव -
24.	त्रिफला चूर्ण	- तदैव -
25.	मधुमेहारी चूर्ण	- तदैव -
26.	शिरीशादि क्वाथ	सी.एस.एम.डी.आर.आई.चे.
27.	आमलक्यादि चूर्ण	कें.अनु.सं.को.
28.	अविपत्तकर चूर्ण	- तदैव -
29.	आरोग्य वर्धनी वटी/चूर्ण	- तदैव -
30.	चंदप्रभा चूर्ण/वटी	- तदैव -
31.	श्वेत पर्पटी चूर्ण	- तदैव -

ख. आसव/अरिष्ट

1.	द्राक्षारिष्ट	कै.श्री.मू.आ.औ.अनु.सं.चे.
2.	खदिरारिष्ट	- तदैव -
3.	अभयारिष्ट	के.अनु.सं.ल.
4.	अमृतारिष्ट	- तदैव -
5.	चंदनासव	- तदैव -

ग.	**अन्य योग**	
1.	वासवलेह	क्षे.अनु.सं.बं.
2.	सरसापादि प्रलेप	- तदैव -
3.	मेदोहर योग	के.अनु.सं.को.
4.	श्लीपादारी रस	- तदैव -
5.	पिप्पलादि योग	- तदैव -
6.	पिप्पली पुनर्नवा त्रिफला (कैपसूल)	- तदैव -
7.	वचा + ब्राह्मी घनसस्त्व (कैपसूल	- तदैव -
8.	हरिद्राखंड	- तदैव -
9.	आयुष - 56 (नया बैच)	- तदैव -
10.	कैंसर गज केसरी	कै.श्री.मू.आ.औ.अनु.सं.चै.
11.	आयुष - पोशक योग	- तदैव -
12.	पुनर्नवादि मण्डूर	- तदैव -
13.	परिजात पत्र चूर्ण	- तदैव -
14.	परिजात पत्र घन वटी	- तदैव -
15.	श्वास केसरी (कैप्सूल)	- तदैव -
16.	वृक्षमलयादि योग	- तदैव -
17.	तिल तैल	- तदैव -
18.	आयुष - एम.नस्य बिन्दु	- तदैव -
19.	आयुष - रसायन ए. (भारी धातु पीबी.सीडी.एवं एचजी.का संघटक)	- तदैव -
20	आयुष - रसायन बी. - तदैव -	- तदैव -
21.	आयुष - आर.पी. - तदैव -	- तदैव -
22.	आयुष - ओस्टो - तदैव -	- तदैव -
23.	आयुष -लीव - तदैव -	- तदैव -
24.	आयुष - एस.एल.(आंतरिक) - तदैव -	- तदैव -
25.	आयुष - एस.एल. लेप (वाह्य) - तदैव -	- तदैव -
26.	आयुष - मानस - तदैव -	- तदैव -
27.	आयुष - क्यू.ओ.एल.-2 - तदैव -	- तदैव -

III. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के स्तर पर भारतीय चिकित्सा पद्धति का आरंभ करने की संभावनाएं " परियोजना के लिए कच्ची औषधियाँ प्राप्त करने,एस.ओ.पी.के विकास/तथा योगों को तैयार करना तथा मानकीकरण ।

क) कच्ची औषधियों की गुणवत्ता का मूल्यांकनः-

आर.सी.एच.औषधियों को तैयार करने के लिए योगों में प्रयुक्त होने वाली 17 कच्ची औषधियों की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया गया था तथा 31 औषधियों का टी.एल.सी.प्रोफाइल डिजाइन किया गया ।

ख) योगों का मानकीकरण तैयार करनाः

केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.),कोलकाता में परिषद की फार्मेसी में तैयार की गई 6 औषधियों का एस.ओ.पी.के अनुसार विकास एवं मानकीकरण किया गया । सभी 10 आर.सी.एच.औषधियों के निरुपणों में निश्चित मापदण्ड पुनः जाँच किये गये ।

21. आयुष -ए.जी.टिकीया
22. आयुष - जी.जी. टिकीया
23. आयुष -एल.एन.डी.टिकीया
24. आयुष - वी.आर.जी. टिकीया
25. आयुष - एस.डी.एम.-टिकीया
26. आयुष - यू.टी.- लेप

IV. चिन्हित योगों का अलगावकरणः-

पादपों के नाम , संरचना एवं चिन्हित योग	
1.सांयनोडोन डेक्टीलोन 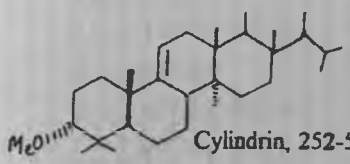 Cylindrin, 252-54°c	2. मेसुआ फेरिआ 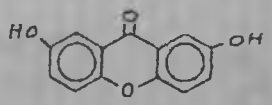 2,7-Dihydroxyxanthone, 165°c
3. अॅन्ड्रोग्राफीस पेनीकुलेटा 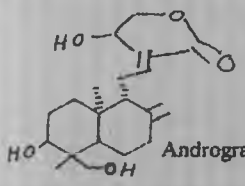 Andrographolide, 218°c	4. क्लेरोडनड्रम इनफोच्युनेटम 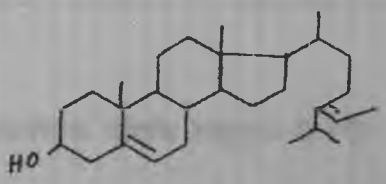 Clerosterol, 147°c
5. पिपर नायग्रम 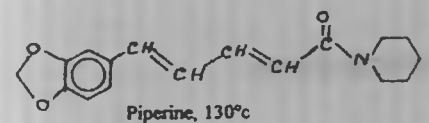 Piperine, 130°c 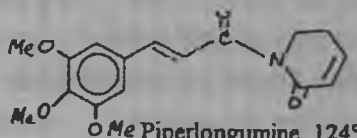 Piperlongumine, 124°c	

6. स्वेरटिआ चिराता

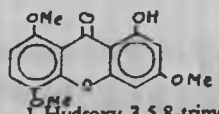

1-Hydroxy-3,5,8-trimethoxy xanthone, 203 - 204°c

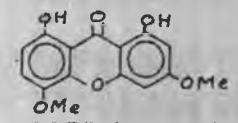

1,8-Dihydroxy-3,5-dimethoxy xanthone (Swerchirin), 185°

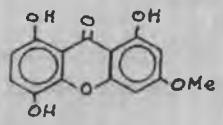

1,5,8-Trihydroxy-3-methoxy xanthone, 270-271°c

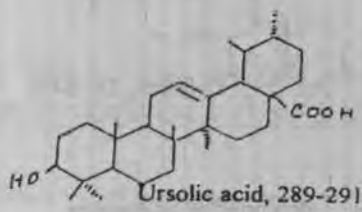

Ursolic acid, 289-291°c

V. रोग के अनुकूल औषधि अनुसंधान

निम्नलिखित आयुर्वेदिक पादपों क चिकित्सीय घनसत्व/शुद्ध योगों के पृथ्कीकरण का मूल्यांकन करना ।

अ. मधुमेह प्रतिरोधी औषधी - जम्बू केयराता

ब. उपचयन प्रतिरोधी अभिकर्ता - अम्लवेतस

स. कैंसर निवारण एवं कारसिनोजेनिक प्रतिरोधी गतिविधि-केयराता

द. प्राकृतिक मच्छरलार्वानाशी - नागकेसर

ई. जड़ी बूटीय लौह हेतु अभिकर्ता उपापचयीविकार रोग- थैलाससेमिया, एनेमिआ, आदि - गोधुम ।

VI. औषधियों का सत्व तैयार करना और भेषजगुण विज्ञानीय/निदान चिकित्सात्मक अध्ययन हेतु आपूर्ति करनाः-

1.	निम्बथिक्थम	38.520 कैप्सूल (200 मि.ग्रा.)	क्षे.अनु.सं.त्रि.
2.	नीम तैल	2 लीटर	- तदैव -
3.	सोरालिन तैल	750 मि.लि.	- तदैव -
4.	पाइपर निगरम घनसत्व	सत्व - 250 ग्रा.	- तदैव -
5.	बकोपा मोन्नरी	200 ग्रा.(अल्कोहल सत्व)	- तदैव -
6.	सोरेलिया कोरिफोलिया	बैन्जीन एवं अल्कोहल सत्व	कें.अनु.सं.दि.

9. भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

औषध अनुसंधान कार्यक्रम में भेषजगुण विज्ञान और विषाक्तता अध्ययन की महत्वपर्ण भूमिका है । यह अध्ययन जंतुओं की विभिन्न किस्मों के परीक्षण मॉडल पर आधारित है । यह निदान चिकित्सा अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध कराता है। यह अध्ययन चेरूतुरुथि, जामनगर, कोलकाता, मुंबई, पटियाला तथा त्रिवेंद्रम में स्थित भेषजगुण विज्ञानीय/विषाक्तता अनुसंधान एककों में किए जा रहे हैं । प्रतिवेदन अवधि में 25 एकल औषधियों, कूट - भेषजों तथा मिश्रित योगों का अन्वेषण किया गया तथा इन अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है:-

1. **आयुष - बी.आर.टिकिया** **कें. अनु.सं.को.**

ऊतक विज्ञानीय अध्ययन किया गया । 1500 मि.ग्रा./ कि.ग्रा. की मात्रा का नियंत्रित की अपेक्षा सामान्य ऊतक विज्ञानीय प्रभाव देखा गया ।

2. **आयुष -जी.जी.** **कें.अनु.सं.को.**

ऊतक विज्ञानीय परीक्षण किया गया, 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा का नियंत्रित की अपेक्षा सामान्य ऊतक विज्ञानीय प्रभाव देखा गया ।

3. **आयुष - एल.एन.डी.** **कें.अनु.सं.को.**

ऊतक विज्ञानीय अध्ययन पूरा किया गया । 1500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा का 15 और 30 दिनों तक चूहों पर प्रयोग किए जाने पर महत्वपूर्ण अंगों के भार में हिमेटालोजिकल तथा बायोकेमिकल पैरामिटरस में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया । ऊतक अध्ययन में भी ऊतक विज्ञानीय असमान्य प्रभाव नहीं पाया गया ।

4. **आयुष - एम.(मिश्रित आयुर्वेदिक योग)** **कें.अनु.सं.चेरु.**

चूहों पर उप - तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया । विभिन्न भाषाओं का चूहों के समूहों पर प्रयोग करने पर कोई मृत्युदर तथा निदानचिकित्सात्मक विषाक्कतता प्रभाव नहीं पाया गया । आयुष एम की विभिन्न मात्राओं का प्रयोग करने पर शरीर भार में महत्वपूर्ण वृद्धि पाई गई तथा

लसीका कोशिका अनुपात में वृद्धि पाई गई । कोई महत्वपूर्ण ऊतक विज्ञानीय बदलाव नहीं पाया गया ।

5. आयुष - मानस **कें.अनु.सं.चेरु.**

चूहों पर उप -तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया । आयुष मानस की विभिन्न मात्राओं का प्रयोग करने वाले विभिन्न समूहों में कोई मृत्युदर तथा निदानचिकित्सात्मक विषाक्तता प्रभाव नहीं पाया गया । औषधि की विभिन्न मात्राओं का प्रयोग करते हुए शरीर भार में कोई वृद्धि नहीं पाई गई । कोई महत्वपूण ऊतक विज्ञानीय बदलाव नहीं पाया गया सिवाय कभी - कभी कुछ चूहों के फेफड़ों में लिंफोसाइट का एकत्र होना पाया गया ।

6. आयुष - पी.जी. **कें.अनु.सं.को.**

विभिन्न ऊतकों पर हिस्टो पैथालोजिकल अध्ययन किया गया जैसे हृदय,यकृत वृक्क तथा अधिवृक्क आदि । नियंत्रित चूहों की तुलना में 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर सामान्य हिस्टो पैथालोंजिकल प्रभाव पाया गया ।

7. आयुष - क्यू.ओ.एल. 2 **कें.अनु.सं.चेरु.**

चूहों पर उप - तीव्र विषाक्तता प्रभाव अध्ययन किया गया । आयुष क्यू.ओ.एल.की विभिन्न मात्राओं का प्रयोग करते हुए किसी भी समूह में कोई मृत्यु तथा निदानचिकित्सात्मक विषाक्तता प्रभाव नहीं पाया गया । विभिन्न मात्राओं का प्रयोग करने पर शरीर भार में महत्वपूर्ण वृद्धि पाई गई। कोई महत्वपूर्ण हिस्टो पैथालोजिकल प्रभाव नहीं पाया गया ।

8. आयुष - एस.डी.एम. **कें.अनु.सं.को.**

हिस्टोपैथालोजिकल अध्ययन पूरा किया गया । औषधी की 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करते हुए 15 और 30 दिन तक चिकित्सा किए गए चूहों के मुख्य अंगों,हिस्टोपैथालोजिकल तथा बायो कैमिकल मानदण्डों में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया। ऊतक अध्ययन में भी कोई असमान्य प्रभाव नहीं पाया गया ।

9. आयुष - एस.एल. **कें.अनु.सं.चेरु.**

चूहों पर उप-तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया । आयुष एस.एल की विभिन्न मात्राओं का विभिन्न समूहों पर प्रयोग किए जाने पर कोई मृत्यु तथा निदानचिकित्सात्मक विषाक्तता प्रभाव नहीं पाया गया । औषधि की विभिन्न मात्रा का प्रयोग करने पर शरीर भार में कोई वृद्धि नहीं पाई गई । इससे एस.जी.ओ.टी. स्तर तथा टोटल इरेथ्रोसाइट काऊंट में अस्थाई कमी पाई गई किंतु

परीक्षण के अंत में इसे सामान्य पाया गया । कोई महत्वपूर्ण हिस्टोपैथालोजिकल परिवर्तन नहीं पाया गया केवल विस्फारण और तिल्ली के शिरानालाभ स्थान में लाल रक्तकण का संचयन पाया गया ।

10 कूट भेषज - ए.जी. भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.

उपयुक्त परीक्षण मॉडल पर कूट भेषज ए.जी.की व्रण रोगहर प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन किया गया । औषधि का कोई व्रण रोगहर प्रभाव नहीं पाया गया ।

11. कूट भेषज ए.जी.टी. भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.

उपर्युक्त कूट भेषज की व्रणहर तथा मृत व्रण उन्मूलन प्रति क्रियाओं को जानने के लिए मूल्यांकन किया गया । नियंत्रित की अपेक्षा ए.जी.टी ने व्रण को पूरी तरह ठीक होने में लगने वाले दिनों में कमी की । इसमें मृत व्रणों को ठीक करने का प्रभाव पाया गया । इसने थोड़ी सी लचीली शक्ति भी बढ़ाई ।

12. कूट औषध - एल. कें.अनु.सं.को.

रंजकहीन चूहों पर कूट भेषज एल का तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया । जिन जंतुओं की चिकित्सा औषध मात्रा 2000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. से की गई 24 घंटों के भीतर उनमें मंद,कम प्रतिक्रिया तथा 20 प्रतिशत मृत्युदर पाई गई जबकि अन्य समूहों में कोई मृत्युदर नहीं पाई गई तथा उनके व्यवहार में भी कोई परिवर्तन नहीं पाया गया ।

उप -तीव्र विषाक्तता परीक्षण के दौरान औषधि की 450 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 2 सप्ताह के भीतर 16% मुत्युदर पाई गई । नियंत्रितों की तुलना में औषधि का खून के बायोकैमिस्ट्री,हेमेटोलोजी तथा शरीर भार में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया ।

औषधि एल.की शरीरभार के अनुसार 450 मि.ग्रा. /कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करते हुए नर एवं मादा जंतुओं की चिकित्सा करने पर चूहों के ऊतकों की हिस्टोपैथालोजिकल अध्ययन करने पर नियंत्रित जंतुओं के ऊतकों की अपेक्षा सामान्य हिस्टोलोजिकल संरचना पाई गई ।

13. कूट भेषज के कें.अनु.सं.को.

कूट भेषज का तीव्र विषाक्तता अध्ययन पूरा किया गया । औषधि की 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा.मात्रा का प्रयोग करने पर 96 घंटों के भीतर मंद,कम सक्रियता तथा 10% मृत्युदर पाई गई ।

उप - तीव्र विषाक्तता अध्ययन के दौरान औषधि की 450 तथा 225 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 4 सप्ताह के भीतर 16% मृत्युदर पाई गई।

कूट भेषज के का ब्लड हेमेटोलोजी (आर. बी. सी., डब्ल्यू. बी. सी., एच. बी., पी. टी., टी.सी.,डी.सी,एम.सी.यू,एम.सी.एच.,एम.सी.एच.सी.)तथा ब्लड बायोकैमिस्ट्री (ग्लूकोज, एस.जी.ओ.टी.,एस.जी.पी.टी.,सीरम क्रिएटीनीन) तथा शरीर भार में नियंत्रितों की तुलना में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया ।

नर एवं मादा चूहों (कूट भेषज के - औषधि की 450 मि.ग्रा./कि.ग्रा.शरीर भार के अनुसार प्रयोग करके चिकित्सित) के ऊतकों का हिस्टोपैथालोजीकल चित्रण में नियंत्रित चूहों की तुलना में सामान्य स्टोलोजिकल संरचना पाई गई ।

14. कूट भेषज - एस. भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.

नर और मादा चूहों पर औषधि का जीर्ण - विषाक्तता अध्ययन किया गया । परिणाम में औषधि का कोई विषाक्त प्रभाव नहीं पाया गया ।

15. कूट भेषज - वी कें.अनु.सं.को.

तीव्र विषाक्तता जांच के दौरान सभी समूहों में 96 घंटों तक सामान्य व्यवहार पाया गया तथा कोई मृत्युदर नहीं पाई गई । नियंत्रित की तुलना में औषधि का प्रयोग करने पर स्वतः गति विषयक सक्रियता बहुत कम पाई गई ।

16. कूट भेषज - एक्स कें.अनु.सं.को.

कूट भेषज - एक्स का तीव्र विषाक्तता अध्ययन पूरा किया गया । 500 मि.ग्रा./200मि.ग्रा. औषधि मात्रा का प्रयोग करने पर 96 घंटो में सामान्य व्यवहार तथा 10% मृत्युदर पाई गई ।

उप - तीव्र जांच के दौरान औषधि की 1800 और 180 मि.ग्रा. /कि.ग्रा.मात्रा का प्रयोग करने पर चार सप्ताह में 16% मृत्युदर पाई गई ।

कूट भेषज एक्स का ब्लड हेमेटालोजी,ब्लड - बायोकैमिस्ट्री तथा हिस्टोपैथालोजी अध्ययन करने पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया ।

17. कूट भेषज - वाई **कें.अनु.सं.को.**

तीव्र विषाक्तता अध्ययन करने पर औषधि की 500 एवं 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 96 घंटों तक सामान्य की तुलना में कूट औषधि वाई का स्वतः गतिविषयक सक्रियता कम पाई गई ।

औषधि वाई का जीर्ण - विषाक्तता अध्ययन किया गया । औषधि की 450,225 और 45 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 13 सप्ताह तक सामान्य व्यवहार तथा क्रमशः 58%, 25% और 8% मृत्युदर पाई गई ।

18. दशमूल तैल **भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.**

दशमूल तैल की ओस्ट्रोजेनिक सक्रियता का मूल्यांकन किया गया । औषधि की 5 मि.ली./कि.ग्रा.मात्रा का प्रयोग किया गया । इसमें कोई ओस्ट्रोजेनिक सक्रियता नहीं पाई गई ।

19. धात्री लौह **कें.अनु.सं.को.**

चूहियों पर औषधि का तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया औषधि की 2000 और 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 24 घंटों में उदासीनता,तड़पन,कम सक्रियता तथा 10% मृत्युदर पाई गई ।

उक्त उप - तीव्र विषाक्तता जाँच के दौरान औषधि की 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर 4 सप्ताह में उदासीनता,तड़पन तथा 33 % मृत्युदर पाई गई । नियंत्रित की तुलना में धात्री लौह का शरीर भार,ब्लड हेमेटालोजी (आर.वी.सी, डब्लू.बी.सी., एच.बी.,पी.टी.,डी.सी,एम.सी.वी., एम.सी.एच., एम.सी.एच.सी), ब्लड बायोकैमिस्ट्री (ग्लुकोज, एस.जी.ओ.टी., एस.जी.पी.टी. सीरम, क्रिऐटीनीन) और हिस्टालोजी अध्ययन में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया ।

20. मानस मित्र वातक **कें.अनु.सं. चेरु.**

तीव्र विषाक्तता अध्ययन किया गया । मानसमित्र वातक एक आयुर्वेदिक मिश्रित योग का तीव्र विषाक्तता अध्ययन के दौरान कोई विषाक्त प्रभाव तथा मृत्यु नहीं पाई गई । परीक्षण के दौरान परीक्षण तथा नियंत्रित समूह के चूहों के शरीर भार तथा भोजन करने में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया ।

21. गज केसरी **कें.अनु.सं. को.**

तीव्र विषाक्तता की जांच के दौरान सभी चिकित्सित समूह में 96 घंटों तक सामान्य व्यवहार पाया गया तथा कोई मृत्युदर नहीं पाई गई । गतिविषयक सक्रियता में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं पाया गया ।

22. गाजर **क्षे.अनु.सं. त्रि.**

गाजर का हेपटोप्रोटैक्टिव प्रभाव जानने के लिए अध्ययन किया गया । कार्बन टैट्राक्लोराइड के साथ गाजर का प्रयोग करने पर चूहों में यकृत क्षति में कमी पाई गई । इस औषधि का प्रयोग किए गए चूहों में सीरम जी, ओटी तथा जी.पी.टी. स्तर में कमी और गाजर का हेपटोप्रोटैक्टिव प्रभाव पाया गया । गाजर के एंटी ऑक्सीडेंट तथा हेपटो प्रोटैक्टिव प्रभाव में आपसी संबंध का अध्ययन अभी करना है ।

23. गुग्गुलु (कोम्मीफोरा मुकुल) **क्षे.अनुं.सं.त्रि.**

गुग्गुल के संबंध में विस्तार से साहित्यिक सर्वेक्षण किया गया। पैट्रोलियम ईथर तथा ईथर, बेंजेन, एसिटोन अल्कोहल तथा जल के साथ औषधि का निष्कर्षण निरंतर किया गया । पैट्रोलियम ईथर तथा बेंजेन के अंश का प्रयोग उप-तीव्र विषाक्तता अघ्ध्यन में किया गया । अघ्ययन पूरा हो जाने के बाद उपयुक्त अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण किया जाएगा ।

24. सतपुष्पा (एनेथम सोवा कुर्ज) **के.अनु.सं.चेरू.**

भेषज गुणविज्ञानीय जांच के लिए पत्रों के क्वाथ का विभिन्न मात्राओं में प्रयोग किया गया। तीव्र विषाक्तता परीक्षण में स्विसएलबिनों माइस में शरीर भार के अनुसार 2 मि.ली/ 100 ग्रा. मात्रा का प्रयोग करने पर कोई विषाक्त प्रभाव तथा मृत्यू नहीं पाई गई । इससे चूहों में महत्वपूर्ण मूत्रल सक्रियता, शमकरोधी तथा मनोविश्लेषणरोधी प्रभाव पाया गया । परीक्षण औषधि के कारणु चुहियों में निरंतर उद्दीपन सक्रियता पाई गई।

25. विजयादिवटी **भेवि.अनु.ए.परि.क.जा.**

औषध का ओस्ट्रोजेनिक, एन्कसीओलयटिक, ग्रॉस बिहेवियर मोडिफाइंग तथा यूटरिन एन्टीस्पास्मोडिक एक्टीविटीज का अघ्ययन करने के लिए अघ्ययन किया गया ।

10. वाङ्.मय अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद के वांड.मय अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत चिकित्सीय ऐतिहासिक अध्ययन, लिप्यन्तरण तथा शास्त्रीय ग्रंथों /दुर्लभ पुस्तकों की अप्रकाशित, पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के साथ-साथ पाण्डुलिपियों को सूचीबद्व करना एवं परिषद की अनुसंधान सम्बंधी उपलब्धियों का प्रकाशन करना आदि मुख्य कार्यकम हैं । वर्तमान में यह कार्यक्रम मुख्यतः भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद तथा परिषद मुख्यालय स्थिति परिषद के वांड.मय प्रकोष्ठ द्वारा बाह्य स्त्रोतो के आधार पर भी चलाया जा रहा है। वर्ष 2005- 2006 के दौरान हैदराबाद के संस्थान ने निम्नलिखित अनुसंधान कार्यक्रम चलाएः-

1. विसूचिका पर किए जा रहे चिकित्सीय ऐतिहासिक अध्ध्यन का कार्य पूरा किया गया ।
2. अश्वत्थ् पर औषधि सूचना का संकलन किया गया ।
3. माधवकार पर जीवनी संबंधी लेख तैयार किया गया ।
4. संस्थान द्वारा जारी पत्रिका के दो अंकों खण्ड 34 एवं 35 का प्रकाशन करने के अतिरिक्त भारत में संस्कृत चिकित्सा पाण्डुलिपियों की सूची भी प्रकाशित की गई ।
5. दुलभ पुस्तकों / पाण्डुलिपियों के अधिग्रहण, सरंक्षण ,अनुवाद तथा प्रकाशन की परियोजना में निम्नलिखित अनुवाद एवं प्रकाशन कार्य हेतु प्रकिया की गई

   i) बसवराजीयम का हिदीं अनुवाद कार्य पूरा हो चुका है तथा अंग्रेजी अनुवाद प्रारभं किया गया ।
   ii) शरन्मराजीय, वैद्यक प्रयोग विज्ञानम तथा पूयमेह विज्ञानम पुस्तकों का तेलुगु से अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रारम्भ किया गया ।
   iii) वैद्य कौस्तुभम का संस्कृत (हिंदी) से अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रारंभ किया गया ।
   iv) आत्रेय संहिता का संस्कृत (हिंदी) से अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रारंभ किया गया ।

वर्तमान में संस्थान में एक संग्रहालय प्राचीन भारतीय चिकित्सा से सम्बधित है तथा दूसरा संग्रहालय आधुनिक आर्युविज्ञान विषयक है। वर्ष 2005-2006 के दौरान संस्थान के पुस्तकालय ने

आयुर्विज्ञान इतिहास तथा संबद्व विज्ञान संकायों और पद्वतियों से नामांकित 101 नए अध्येताओं को संदर्भ सेवा प्रदान की ।

संस्थान ने हैदराबाद में 11 से 13 नवम्बर, 2005 तक आयोजिक " अरोग्य मेला 2006" में भाग लिया तथा 9 से10 मार्च,2006 के दौरान आयोजित " हिस्टोरिकल एस्पैक्टस ऑफ डाइट एण्ड न्यूट्रिशनल मेडिसन इन आयुर्वेद " नामक राष्ट्रीय सगोष्ठी तथा होटल ताज कृष्णा में 31 नवम्बर से 2 दिसम्बर ,2005 तक आयोजित "इंडिया अफ्रीका एशिया एण्ड जी सी सी फार्मा एण्ड हैल्थ" संगोष्टी में भाग लिया ।

कुछ दुर्लभ पुस्तकों का अनुवाद तथा प्रकाशन प्रतिवेदन अवधि के दौरान किया गया जिसमें वैद्य मनोरमा, रस मंजूषा एवं वैद्यक संग्रह तथा योगसार का हिंदी में अनुवाद किया गया । परिषद मुख्यालय के वाड्.मय प्रकोष्ठ ने हिंदी अनुभाग के सहयोग से जिन प्राचीन आयुर्वेद की पाण्डुलिपियों तथा दुर्लभ पुस्तकों के अनुवाद कार्य को संपन्न किया उनमें अष्टांग संग्रह,अभिनव चिंतामणि शामिल हैं । परिषद ने शल्य तंत्र पुस्तक जिसमें 30 लेखकों अंशदायकों के 30 अध्याय हैं,के प्रकाशन का कार्य भी किया तथा 16 अंशदायकों से प्राप्त 16 अध्यायों के संपादन की प्रक्रिया भी पूरी की ।

प्रतिवेदन अवधि के दौरान परिषद के प्रकाशन प्रकोष्ठ ने वर्ष 2004 और 2005 से संबंधित ' आयुर्वेद एवं सिद्ध पत्रिका के खण्ड 25 (सं.1 से 4)तथा खण्ड 26 (सं.1-2)के प्रकाशन के अतिरिक्त चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका ' के 23वें और 24वें खण्ड को प्रकाशित किया । वर्ष 2005 -2006 की अवधि में रु0 1,11,139.00 (रुपये एक लाख ग्यारह हजार,एक सौ उन्तालीस)मात्र के परिषद के प्रकाशनों तथा सी.डी. रोप की बिक्री हुई ।

11. परिवार कल्याण अनुसंधान

परिषद द्वारा कार्यक्रम परियोजना 1998 - 2003, जो कि अब विस्तारित है, इसके अंतर्गत प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य (आर.सी.एच.) कार्यक्रम चलाया जा रहा है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद), दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, पटियाला, लखनऊ, जयपुर तथा त्रिवेंद्रम में अनुसंधान अध्ययन किया गया । विवरण नीचे दिया गया है ।

निदान चिकित्सात्मक अध्ययन

मुखीय तथा स्थानीय गर्भ निरोधकः-

1. **जपा कुसुम की भावना से युक्त पिप्पल्यादि योगः**

घटकः-	विडंग (एम्बलिका रिबस के बीज) - 1 भाग
	पिप्पली (पाइपर लोगम) - 1 भाग
	टंकण (प्राकृतिक बोरेक्स का शुद्ध चूर्ण) - 1 भाग
मात्रा -	1 ग्राम प्रति दिन प्रत्येक मासिक चक्र के पहले दिन से आखिरी दिन तक
अनुपान -	कांजी
अवधि -	36 मासिक चक्र

2. **नीम तैल**

मात्रा एवं अनुपान विधिः- एक मि.ली./योनि में प्रत्येक संभोग से पूर्व

अवधि - 36 मासिक चक्र

कुछ केंद्रों ने औषधि को खुशबुदार बनाने के लिए लेमन ग्रास तैल को मिलाया तथा यह प्रयोग अच्छा रहा ।

परिणामः- चालू प्रतिवेदन अवधि में औषधि की असफलता, औषधि छोड़ने तथा अन्य कारणों से गर्भधारण हो जाने पर कई महिलाओं ने चिकित्सा छोड़ दिया जिनका विवरण निम्न तालिका में दिया गया है:-

औषधि का नाम	केंद्र	रोगियो की संख्या					
		अध्ययन		चिकित्सा छोडने का कारण			
		नए	पुराने	औषधि की असफलता	औषधि का त्याग	अन्य कारण	औषधि की निरंतरता
पिप्पल्यादि योग जपा कुसम की भावना के साथ	कें.अनु.सं.को.	06	112	08	04	88	18
	के.अनु.सं.प.	02	17	-	01	7	11
	के.अनु.सं.ज.	31	13	02	-	08	34
नीम तैल	कें.अनु.सं.को.	27	168	08	04	135	48
	क्षे.अनु.सं.त्रि.	27	18	01	01	31	12
	के.अनु.सं.दि.	30	20	01	07	-	42
	कें.अनु.सं.ल.	20	20	-	06	-	34

पिप्पल्यादि योग परियोजना की वर्तमान स्थितिः-

केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद ने महिलाओं के लिए पिप्पल्यादि योग ' एक जड़ी बूटीय-खनिज औषधि विकसित की है । यह योग आयुर्वेद की शास्त्रीय ग्रंथ भावप्रकाश पर आधारित है। परिषद के आंतरिक अनुसंधान में औषधि के प्रभावकारी सिद्ध होने के बाद इसे राष्ट्रीय जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम में शामिल करने के लिए इस परियोजना को केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद तथा परिवार कल्याण विभाग,केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा इसकी गर्भनिरोधक क्षमता के आगामी मूल्यांकन के लिए संयुक्त रूप से चलाया जा रहा है ।

इस उद्देश्य के लिए प्रो.रंजित राय चौधरी,राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली की अध्यक्षता में भारतीय चिकित्सा पद्धति में गर्भनिरोध पर अनुसंधान के लिए एक विशेष समूह का गठन किया गया है निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान प्रारंभ करने से पूर्व भारत के प्रधान औषधि नियंत्रक का अनुमोदन ले लिया गया था ।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में विषाक्तता एवं भ्रूणीय विषाक्तता अध्ययन किया गया तथा पिप्पल्यादि योग का कोई विषाक्त प्रभाव नहीं पाया गया ।

प्रथम चरण का परीक्षण कार्य पूरा हो चुका है तथा द्वितीय चरण का परीक्षण कार्य प्रमुख आधुनिक अस्पतालों यथा - अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, पी.जी.आई चण्डीगढ, जिपमेर - पांडिचेरी में चल रहा है । राष्ट्रीय भेषज निर्माण शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (नाइपर), मोहाली में जैव विज्ञानीय गतिविधियो विशेषकर हारमोन संबंधी अध्ययन, औषधि की शेल्फलाइफ तथा औषधि का मानकीकरण संबंधी अध्ययन किया जा रहा है और औषधि की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए दूसरे चरण के निदान चिकित्सात्मक अध्ययन के लिए आपूर्ति की जा रही है । परीक्षण कार्य प्रगति पर है ।

निदान चिकित्सात्मक परिणामों को देखने के पश्चात औषधि को राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा तथा फार्मेसियों के माध्यम से इसे बाजार में लाया जाएगा *

शिशु एवं बाल परिचर्या

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयुष घुट्टी तथा बाल रसायन के साथ बालकास, बाल अतिसार, बालदौर्बल्य तथा शिशु परिचर्या को आबंटित किया गया है । प्रतिवेदन अवधि में किए गए अध्ययनों के परिणाम इस प्रकार हैः-

परिणामः-

रोग	केंद्र	औषधि का नाम	रोगियों की संख्या	उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	कोई परिणाम नहीं	मध्यगत
बालकास (0-5 वर्ष	के.अनु.सं.ल. के.अनु.सं.ज. के.अनु.सं.मु.	वासावलेह	34 13 03	25 06 01	05 07 -	01 - 01	03 - -	- - 01
	के.अनु.सं.ज. के.अनु.सं.मुं.	कण्टकारी अवलेह	22 01	8 -	9 01	5 -	- -	- -
बालकास (6-12 वर्ष)	के.अनु.सं.ज. के.अनु.सं.मु.	यष्टीमधु + दाडिम चूर्ण+ बनपशा	08 10	02 04	02 05	04 01	- -	- -
	के.अनु.सं.ज.	चंद्रामृत तालिसादि चूर्ण सहित	11	07	04	-	-	-

	के.अनु.सं.ज.	नारदीय लक्ष्मी विलास रस+ गोदन्ती भस्म तथा टंकण भस्म	11	8	3	-	-	-
	के.अनु.सं.ज. के.अनु.सं.मु.	वासावलेह	18 6	6 5	10 1	2 -	- -	- -
बाल दौर्बल्य	के.अनु.सं.ज.	मूंडरादि वटी मण्डूरादि अवलेह	7 7	- -	01 1	- -	00 -	6 6
बाल अतिसार	के.अनु.सं.ज. के.अनु.सं.ज	वत्सकादि घन वटी +मुस्तकारिष्ट जातिफलादि वटी+ मुस्तकारिष्ट	3 5	1 2	2 1	- 2	- -	- -
बाल परिचर्या (1-5 वर्ष)	के.अनु.सं.ज.	बाल रसायन	1	1	-	-	-	-

भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम की मुख्यधारा में

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी की राष्ट्रीय प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम की मुख्यधारा में लाने की संस्तुति की, इसके लिए राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में पहले ही कार्य योजना भी बना ली गई है । इस संस्तुति के सफल कार्यान्वयन के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग और परिवार कल्याण विभाग ने ' राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद एवं सिद्ध) को प्रारंभ करने की संभावना नामक परियोजना को प्रायोजित किया है ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान और केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के सहयोग से यह परियोजना चल रही है । प्रारंभिक रूप से यह योजना आयुर्वेद और सिद्ध औषधियों के साथ पांच राज्यों नामतःतमिलनाडू, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र (तमिलनाडू में सिद्ध औषधि तथा अन्य चार राज्यों में आयुर्वेदिक औषधि) में की शुरू की जाएगी । महिलाओं और

बच्चों से संबंधित 12 विभिन्न स्थितियों /रोगों के लिए 17 आयुर्वेद तथा 15 सिद्ध मामलों की पहचान की गई । पांच राज्यों में 2 जनपदों जिनमें चार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कवर होते है, को चुना गया है इस अध्ययन में लगभग 5 लाख कुल जनसंख्या के समावेश होने की संभावना हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य भारतीय चिकित्सा पद्धति को राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की मुख्य धारा में लाने की संभावनाओं को समझना तथा इन पद्धतियों की सेवाओं को जनता को उपलब्ध कराना और उन्हें अधिकतम लाभ पहुँचाना है । यदि 5 राज्यों में इसकी संभाव्यता पाई गई तो बाद में इसे देश के अन्य राज्यों में राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम में भी शामिल किया जाएगा ।

योगों के मानकी करण का कार्य कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेदिक औषध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई तथा केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.) कोलकाता में किया जा रहा है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.), कोलकाता तथा केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) चेन्नई में वृहद स्तर पर औषधि का निर्माण हो रहा है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.) कोलकाता तथा केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) चेन्नई में इसकी सुरक्षा संबंधी अध्ययन किया जा रहा है ।

सभी राज्यों द्वारा परियोजना के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए राज्य स्वास्थ्य कार्यप्रणाली को सूचित कर दिया गया है । चिन्हित राज्यों ने राज्य समन्वय समिति तथा जनपद परियोजना समितियों के सदस्यों को नामित कर दिया है ।

परियोजना संबंधी प्रलेख यथा - प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य हस्त पुस्तिका, प्रशिक्षण मोड्यूल तथा आई.ई.सी. सामग्री को हिंदी, अंग्रेजी, कन्नड़ तथा मराठी में मुद्रित कर लिया गया है एवं इस परियोजना को शीघ्र ही प्रारंभ किया जाएगा ।

12. सोवा - रिगपा (आमची) अनुसंधान कार्यक्रम

सोवा - रिगपा (आमची) अनुसंधान केंद्र,लेह ने सोवा - रिगपा के अनुसंधान और विकास औषधीय पादपों और खनिजों के संरक्षण और प्रलेखन,वाड्.मय अनुसंधान तथा निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान आदि का कार्य किया । प्रतिवेदन अवधि के दौरान इस केंद्र ने कई क्रियाकलाप किए । प्रतिवेदन अवधि के दौरान इस केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत सात तकनीकी लेखों को प्रकाशित किया गया ।

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधानः-

वर्ष के दौरान कुल 1479 रोगियों की चिकित्सा की गई जिनमें से 1215 नए तथा 264 पुराने रोगी थे । नियमित बहिरंग रोगी विभाग के अतिरिक्त उच्च रक्त चाप पर निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान को जारी रखा गया । दो औषधि समूहों के लिए 20 - 20 रोगियों का चयन किया गया । जिनका का विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

क्र.सं.	औषधि समूह	चिकित्सा परिणाम					
		उत्तम लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	शून्य लाभ	मृत्यु	कुल रोगी
1.	स्कूरी नेरना	4	9	5	2	-	20
2.	कोचि नथंग	2	7	6	5	-	20
योग		6	16	11	7	-	40

वाड्.मय अनुसंधान

इस वर्ष नागार्जुन के कार्य पर तिब्तन बुद्धीस्ट केनन स्टेन -ग्युर अध्याय अनुसार,पृष्ठ सं. तथा विषय आदि पर विवरणात्मक वर्गीकरण अध्ययन कार्य शुरु किया गया है । प्रतिवेदन अवधि में योगास्तक,आचार्य नागर्जुन भेसिदा अवभवसज कल्प तथा वैद्य जीव सूत्र का विस्तृत अध्ययन किया गया है ।

उपर्युक्त तीन नागार्जुन का कार्य पूरा करने के पश्चात एकक ने चंद्रा नंदन की पदार्थ चंद्रिका के वर्गीकरण का कार्य लिया किया । जिसके वर्गीकरण का कार्य पूरा किया गया जिसमे 120 अध्याय तथा 12591 पृष्ठ है ।

ट्रांस हिमालय कोल्ड डेसर्ट के औषधीय तथा सुगंधित पादपों की कृषि, संरक्षण और प्रलेखन पर कार्यक्रम

यह केंद्र राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से ट्रांस - हिमालयान के औषधि और सुगंधित पादपों की कृषि, संरक्षण तथा प्रलेखन की परियोजना चलारहा है । परियोजना का यह अंतिम वर्ष है इस परियोजना के अंतर्गत एकक ने लद्दाख के विभिन्न क्षेत्रों में चुने हुए औषधीय पादपों की कृषि के लिए नौ आमची किसानो/गैर सरकारी संगठनों को लिया तथा अधिकतर किस्मों की सफलतापूर्वक कृषि की गई । औषधि पादपों के संरक्षण के लिए कुछ जागरुकता कार्यक्रम चलाए गए । इस परियोजना के अंतर्गत एक पुस्तक तथा दो लघु पुस्तिकाओं को भी प्रकाशित किया गया ।

ट्रांस हिमालयान औषधीय पादपों के नए मॉडल हर्बल गार्डन के विकास की परियोजना

लद्दाख क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण औषध पादप पाए जाते हैं । सोवा- रिगपा अनुसंधान केंद्र, लेह ने मॉडल हर्बल गार्डन के विकास की शानदार परियोजना चलाई है । एकक ने एल. ए. एच.डी.सी., लेह तथा जनपद प्रशासन को भूमि के आवंटन हेतु अनुरोध किया है । राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, नई दिल्ली ने आठ लाख रुपये की एक किश्त उद्यान के लिए स्वीकृति की है ।

प्रदर्शनी और मेले में सहभागिता

केंद्र ने 13 से 14 अगस्त, 2005 तक फील्ड रिसर्च लेबोरेटरी (डी आर डी ओ), लेह द्वारा अपने परिसर में आयोजित वार्षिक लद्दाखी किसान जवान विज्ञान मेले में भाग लिया तथा एक तकनीकी स्टाल लगाया जिसमें सोवा - रिगपा चिकित्सा की गतिविधियों और परंपरा के बारे में प्रकाश डाला । केंद्र में 23 - 27 सितम्बर, 2005 तक आयोजित आरोग्य हैल्थ मेले में जम्मू एवं कश्मीर का प्रतिनिधित्व किया तथा आमची चिकित्सा, लद्दाख की वनस्पति और खनिज संपदा पर प्रकाश डालते हुए एक तकनीकी स्टाल लगाया । यह स्टाल मेले का मुख्य आकर्षण रहा । गण्यमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त हजारों लोगों स्टाल में आए ।

13. प्रकाशन एवं सहभागिता

I प्रकाशन

क्र. स.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	पत्रिका का नाम	प्रकाशन की तिथि
क. निदान चिकित्सात्मक और मौलिक अनुसंधान				
1.	के. भारती	मैनेजमैंट ऑफ रेनल केलकुली	आयुर्वेद लाइन 8वां अकं 405 - 407	2005
2.	के. भारती एवं अन्य	इवेल्यूएशन ऑफ निदान एण्ड सम्प्राति इन तमक श्वास (ब्रांकियल अस्थमा)	आर्यवैद्यन खण्ड-19 (सं.1) 47-50	2005
3.	के.भारती और आर.के.स्वामी	कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ हर्बो मिनरल ड्रग्स इन श्लीपद विद स्पेशल रेफरेंस टू सम्प्राप्ति विघटकास	आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसधान पत्रिका खण्ड 25(सं 1-2) 85-97,2004	2005
4.	के.भारती और आर.के.स्वानी	मैनेजमैंट ऑफ व्यान बल वैषम्य एसोशियल हाइपरटेंशन) विद इंडिजेनस ड्रग्स ए कम्पैरिटिव स्टडी	आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसधान पत्रिका, खण्ड 26(सं. 3-4) 23-34,2005	2006
5.	बी.चद्रशेखर रॉव	इफेक्ट ऑफ आमलकी (इम्बालिका ऑफसिनेलिस) चूर्ण इन पुलमोनरी टयूबरक्लोसिस एज एन एडजूवेंट थेरेपी	सचित्र आयुर्वेद	अगस्त 2005
6.	बी.चद्रशेखर रॉव	क्लीनिकल इवेल्यूएशन ऑफ समीरपन्नग रस एंड पिप्पली इन द मैनेजमेंट ऑफ आमवात (रयूमेटॉयड अर्थराइटिस)	आयुर्वेद लाइन	जुलाई -दिसंबर 2005

7.	के. गोपकुमार और के.भारती	क्लीनिकल स्टडी ऑफ निशाम्लकी चूर्ण इन इक्षुमेहा (डायबिटीज मेलिटस)	द एन्टी सेप्टिक खण्ड 102(सं.5) 270-272	2005
8.	ए.सी.कर एवं अन्य	आमवात में शुंठी,गुग्गुलु और गोदंती के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 25 (सं.3-4) 22-32, 2004	2006
9.	ए.सी.कर एवं अन्य	तमक श्वास की चिकित्सा में शिरीषत्वक क्वाथ के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 26 (सं.1-25) 52-58, 2005	2006
10.	ए.सी.कर एवं अन्य	आमवात की चिकित्सा में शमन चिकित्सा का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 26(स.1-2) 75-83, 2005	2006
11.	ए.सी.कर एवं अन्य	आमवात में शुंठी,गुग्गुलु और गोदंती के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.3-4) 80-94, 2005	2006
12.	आर. बी. नायर एवं अन्य	इफेक्ट ऑफ दशमूला तैल एज ए स्नेह द्रव्य इन गृध्रसी (सियाटिका) पेशेन्टस ऑफ पंचकर्म थैरपी विद स्पेशल रेफरेन्स टू बायोकैमिकल पैरामीटरस	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 26 (सं.3-4) 16-31, 2005	2006
13.	जी.सी.नन्दा एवं अन्य	आयुर्बला एज ए हैल्थ प्रोमोटिव-ए स्टडी ऑन स्कूल चिल्ड्रन	"एन्टी सेप्टिक " खण्ड 102(सं.11) 674-677	2005

14.	जी.सी.नन्दा एवं अन्य	एप्लाइड एसपेक्ट ऑफ मधुमेह इन आयुर्वेद	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका वर्ष 92 (अंक 6) 49-59	2005
15.	श्रीमति एस. ओटा एवं अन्य	एक्सपेरीमेंटल इवेल्यूएशन ऑफ ऑक्सीटोक्सिक एक्टीविटीज ऑफ एन इन्डीजिनस ड्रग वासा (अधतोड़ा वसिका लिन्न)	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 25 (सं.1-2)1-10, 2004	
16.	एम. एम. राव एवं अन्य	अर्श की चिकित्सा में कंकायनवटी. कासीसादि तैल वस्ति तथा त्रिफला चूर्ण के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 25 (सं.1-2) 1-10, 2004	2005
17.	एम. एम. राव एवं अन्य	इवेल्यूएशन ऑफ कम्पैरिटिव एफिकेसी ऑफ क्षार सूत्र प्रिपेयरड बाय अर्क क्षीर एण्ड स्नूही क्षीर (एज एन एडेहसिव मिडिया) विद स्टैण्डर्ड क्षारसूत्र इन द मैनेजमैंट ऑफ भगन्दर (फिस्टुला-इन-एनो)	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 25 (सं.1-2) 28-43, 2004	2005
18.	एम. एम. राव एवं अन्य	अर्श की चिकित्सा में कंकायन वटी, कासीसादि तैल वस्ति तथा त्रिफला चूर्ण के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 25 (3-4) 9-21, 2004	2006
19.	एम. एम. राव एवं अन्य	आमवात की चिकित्सा में वर्धमान पिप्पली क्षीर पाक तथा समीरपनन्ग रस के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.1-2) 1-15, 2005	2006
20.	एम. एम. राव एवं अन्य	सेरिब्रल पात्सी सिन्ड्राम मैनेजमैंट विद आयुवैदिक थैरेपी	द एन्टी सेप्टिक खण्ड 103 (स.3) 171-173	2006

21.	एल.के.शर्मा एवं अन्य	क्लिनिकल स्टडी ऑन पक्षाघात विद ए कम्बीनेशन थैरपी ऑफ एकान्गवीर रस, माष तैल एण्ड शष्टीकशाली पिण्ट स्वेद	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 25 (सं.1-2) 53-66, 2004	2005
22.	एल. के. शर्मा एवं अन्य	क्लिनिकल इवेल्यूएशन ऑफ सूरिन्जन शल्लकी योग इन द मैनेजमैंट आफ आमवात	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका खण्ड 25 (सं.3-4) 33-46, 2004	2006
23.	एल. के. शर्मा एवं अन्य	मैनेजिग ओबेसिटी थ्रू आयुर्वेदा	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, वर्ष 92, अंक 7, 56-60	2005
24.	ओ.पी.सिहं एवं अन्य	अर्श की चिकित्सा में कंकायम वटी त्रिफला चूर्ण तथा काशीसादि तैल की भूमिका	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.1-2) 59-65, 2005	2006
25.	ओ.पी.सिहं एवं अन्य	मैदोरोग की चिकित्सा में वच और कुटकी योग का निदान चिकित्सात्मक मुल्यांकन	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.3-4) 35-42, 2005	2006
26.	एस.सिहं	वन्ध्यात्व	अरोग्यधाम, ग्रीष्म ऋतु अकं, 33-36	2006
27.	एस.के.सिहं एवं अन्य	स्टडी आफ हर्बो मिनरल थैरपी इफेकट इन द केसिसि ऑफ कामला	आयुर्वेद एवं सिद्व कीअनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.1-2) 45-51, 2005	2006

28.	एन.श्रीकांत एवं अन्य	ए स्टडी आन रोल ऑफ नेत्र क्रिया कल्प (टोपिकल आकुलर थैरपीज) एण्ड इटरनैल मैडिकेशन इन मायोपिया (तिमूर हास्व दृष्टि	आयुर्वेद एवं सिद्व की अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 26 (सं.3-4) 43-53, 2005	2006
29.	एन.श्रीकांत एवं अन्य	मैनेजमैट ऑफ रेटिनाइटिस पिगमेटोसा विद आयुर्वेदिक थैरेपिज़ ए केस रिपोर्ट	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, वर्ष 92, अंक- 6, 65-70	2005
30.	के. जी. वंसत कुमार एवं अन्य	स्टडीज आन सम आफ एनिमल ओरिजन ड्रग्स एण्ड देयर एलाइड प्रेपरेश्न्स इन आयुर्वेदा	आयुर्वेद एवं सिद्व की अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 25 (सं.3-4) 1-8, 2004	2006
ख. स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान और प्रजातीय औषधियाँ				
31.	भारती एवं अन्य	स्नेहन	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, वर्ष 92, अंक -12, 68-76	2005
32.	के. भारती एवं के. गोपाकुमार	तमक श्वास की चिकित्सा में निदान और सम्प्राप्ति का मूल्यांकन	आर्यवैद्यन खण्ड 19 (अंक)47-50	2005
33.	वी.सी.दीप	संधिवात	गोबल आयुवेद	2005
34.	के.वी.देवीदास	आल एबाऊट यूअर माइन्ड	हेरिटेज अमरूथ	2005
35.	पी.के.एस.नायर	प्रतिरोधम आयुवेद शिल	मातृभूमि आरोग्य मसिक	2006
36.	ए.के.पाण्डा	सांइस एण्ड ट्रेडिशन बिहाइन्ड बोन सैटिंग्स	हेरिटेज अमरूथ , खण्ड-1,अंक 5	2005
37.	आर.शंकर एवं अन्य	अरूणाचल प्रदेश में त्वक रोगएवं उसकी आदिवासी चिकित्सा	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान	2006

			पत्रिका, खण्ड 24 अंक (1 -4) 57-63, 2003	
38.	एस. सिहं	गृध्रसी के कारण व बचाव	आरोग्यधाम, वर्षा ऋतु अंक 45-46	2005
ग. द्रव्यगुण, औषध - वानस्पति सर्वेक्षण एवं कृषि				
39.	के.बी.बिल्लौरे एवं ए.डी होले	मेनग्रोव एण्ड हलोफमइटेस - ए नेगलेक्टिड ग्रुप ऑफ मेडिसनल प्लाटस	जे.एम.ए.पी.एस, खण्ड -18 (सं.2) 328-339	2005
40.	बी.पी.धर एवं अन्य	क्वालटी ऑफ धतूरा लीवज़ःए कम्पेरेटिव स्टडी ऑन प्लाट्स ग्रेइन्ग इन पोल्यूटिड एण्ड नानपोल्यूटेड एरिया	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, खण्ड (23-अंक 1 -4) 53-56,2002	2005
41.	ए. एम. गुरव एवं अन्य	प्रोपेगेशन ऑफ गुडूची मीयरस बाय-स्टेम कटिंगस्	चिकित्सा प्रजति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 23-(अंक 1-4) 41-52,2002	2005
42.	ए. एम. गुरव एव अन्य	इफेक्ट ऑफ गिब्बरलिक एसिड ट्रीटमेंट आनॅ सीड जर्मिनेशन ऑफ अश्वगधां	चिकित्सा प्रजति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 24-(अकं 1 -4) 12-19, 2003	2006
43.	एम.एस.रावत एवं आर.शंकर	फोक मेडिसिनल प्लांट्स इन अरूणाचल प्रदेश	अरूणाचल फोरेस्ट न्यूज, खण्ड 21,2004	2005

44.	एम.एस.रावत एवं आर.शंकर	अरूणाचल प्रदेश में औषधीय पादपों के सरंक्षण की स्थिति तथा व्यावसायिक कृषि, राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के विशेष संदर्भ सहित	चिकित्सा प्रजति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 24-(अंक -4) 1-11, 2003	2006
45.	यू. आर.विश्वकर्मा एवं अन्य	वेजीटेटिव प्रोपेगेशन ऑफ डिस्मोडियम गैंगेजिकम (एल.) डी.सी. शालपर्णी	चिकित्सा प्रजति वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 24-(अंक1 -4) 110-120, 2003	2006
घ. भेषज विज्ञान तथा भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान				
46.	ए. भटटाचार्य एवं अन्य	सेकेण्डरी मेटाबॉलिट एण्ड प्रेफरेन्स ऑफ होस्ट प्लाट इयूपटोयम ओडोरेटम बाय एफिस स्पिट्राइकोला ऑफ नीलगिरि हिल्स ऑफ उड़ीसा	जे. इकोबायल खण्ड -17 (सं 1) 83 -87	2005
47.	टी.बिक्शापति एवं टी. आर. शांता	आयुर्वेद में भेषज अभिज्ञानीय की भूमिका	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, वर्ष 93, (अकं -2) , 79-87	2006
48.	ए. एम. गुरव एवं अन्य	नागकेसर के तने और पत्र का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका, खंड 24(स.1-4) 27 - 41 ,2003	2006
49.	जी. सी.जोशी	उतरांचल की कुछ कीटनाशक वनस्पतियॉ (हिंदी)	सचित्र आयुर्वेद अकं 5, 357-58	2005

50.	जी. सी.जोशी एवं के सी तिवारी	स्टडी ऑन गम्बासु -ए सेलिस्टियल ड्रग कुफ्रोम कुमायूँ हिमालय	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका, खण्ड - 24 (सं.1-4) 121-126, 2003	2006
51.	ए.के.मगंल एवं एम.एन.दास	फार्माकॉगनोस्टिक स्टडी ऑफ मेलालेनका ल्यूकोडेन्ड्रोम	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 23 (सं.1-4) 11-19, 2002	2005
52.	जेड मेरी एवं अन्य	फार्माकाग्नोस्टिकल स्टडीज ऑन रिझोम ऑफ करकुमा लोन्गा लिन्न एण्ड फ्रूट ऑफ एम्बालिका ऑफिसिनेलिस गेयरटन-पार्ट 1	आर्यवैधन खण्ड 28 (सं.4)-224	2005
53.	बी.पदमाजा एवं अन्य	फार्माकाग्नोसी ऑफ सुशवी	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 24 (सं.1-4) 42-56, 2003	2006
54.	ए.सरस्वती एवं विजयलक्ष्मी, आर	माइक्रोस्कापियल इक्जामिनेशन ऑफ द स्टेम ऑफ कोम्बिफेरा विट्टी	ज.इंडियन मेडिसन होम्यो. पत्रिका 27-31, 2003	2005
55.	टी.आर.शान्ता एवं अन्य	फार्माकाग्नोस्टीकल एण्ड प्रिलिमनरी फायटो कैमिकल स्टडी ऑन द लीफ ऑफ बसेला अल्बा	जे ए एम ए पी एल खण्ड - 27 (सं. 1) 30-38	2005
56.	एम वी साठे एवं जी वी आर जोसफ	फार्माकाग्नोस्टिक स्टडी ऑन द लीवस ऑफ अन्कोल	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका,खंड (स.1-4) 77-85, 2002	2005

ड. रासायनिक एवं भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान				
57.	टी विकक्षापति एवं जे के पट्टन शेट्टी	इम्पोर्टेंस एण्ड स्कोप ऑफ स्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ ड्रग्स इन इंडियन मेडिसन	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका, वर्ष 92, अक्ं -12, 63-67	2005
58.	पी सी जोशी एवं अन्य	प्रिलिमनरी स्टडीज (इन विटरो) ऑन एन्टीकोगुलेट एक्टीविटीज ऑफ नेचुरली अकरिगं बिसकोमरिनस्	आर्यवैद्यन खण्ड 18 सं. 1, 2004	2005
59.	वी मथुरम एवं ए.सरस्वती	रोल ऑफ एच पी टी एल सी इन स्टैन्डर्डाइजेशन ऑफ रॉ ड्रग्स	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका, खण्ड - 23 (सं.1-4) 100-109, 2002	2005
60.	टी विकक्षापति एवं जे के पट्टन शेट्टी	भारतीय औषधियों के मानकीकरण का महत्व एवं कार्य क्षेत्र	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका खण्ड 92 (सं.12) 63-65, 2002	2005
61.	ए.सरस्वती एवं अन्य	स्टैन्डर्डाइजेशन स्टडी ऑन आयुष घुट्टी	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 23 (सं.1-4) 20-24, 2002	2005
62.	ए.सरस्वती	स्टैन्डर्डाइजेशन स्टडीज ऑन टू आयुवेदिक ड्रग्स	चिकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 23 (सं.1-4) 86-99, 2002	2005
63.	ए.सरस्वती	क्वालिटी कंट्रोल एण्ड स्टैन्डर्डाइजेशन ऑफ मेटेलिक एण्ड मिनरल प्रेपेरेशन्स ऑफ आयुर्वेदा एण्ड सिद्वा	सचित्र आयुर्वेद, 205-209	2005

64.	के. जी. वंसत कुमार एवं अन्य	स्टैन्डर्डाइजेशन स्टडीज ऑन अर्जुनारिष्ट	चकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 24 (सं.1-4) 97-102, 2003	2006
65.	बी विजयलक्ष्मी एवं अन्य	स्टैन्डर्डाइजेशन ऑफ मेघ्यरसायन यूज्ड इन द मैनेजमैटं ऑफ मनोद्वेग	चकित्सा प्रजाति वानस्पतिक अनुंसधान पत्रिका खण्ड - 24 (सं.1-4) 20 -26, 2003	2006
च. वाड्.मय एवं विविध				
66.	सुलोचना भटट एवं जी.एस. लव्हेकर	आयुर्वेदिक एप्रोच टू पथ्य एन एप्रइजल	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.)	2006
67.	बी के भट्टनागर एवं पी वी वी प्रसाद	कौटिन्य अर्थशास्त्र में संदर्भित औषधीय पादप	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 34 (सं.2) 147 - 156,2005	2005
68.	ए नारायण एवं वी सुभोषे	इवोल्यूशन ऑफ सर्जरी-सुश्रुत इनोवेटिव स्किलस	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 34 (सं.1) 1 7-39, 2004	2005
69.	ए नारायण एवं वी सुभोषे	सुश्रुत कन्ट्रीबयूशन टू सर्जरी विद स्पेशल रेफरेन्स टू प्लास्टिक सर्जरी	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 34 (सं.1) 121-136, 2004	2005

70.	ए नारायण एवं अन्य	हिस्टोरिकल पर्सपैक्टिवस ऑफ यूनानी मेडिसन विद रेफरेन्स टू मुसलिम रेनस इन इंडिया	भारतीयआयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका, खण्ड - 34 (सं.2) 147-167, 2004	2005
71.	ए नारायण	हिस्ट्री ऑफ मैनुस्क्रिनप्टॉलोजी स्टडी ऑफ मेडिकल मैनुस्क्रिप्टॉलोजी	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका, खण्ड - 35 (सं.1) 61-76, 2005	2006
72.	ए नारायण एवं वी सुभोष	स्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ आयुर्वेदिक फार्मुलेशन्स - ए सांइटिफिक रिव्य	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.2) 61-76, 2004	2006
73.	ए नारायण एवं जी एस लव्हेकर	आयुर्वेद ग्लीन्ड थ्रू बुद्विज्म	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.2) 131-146 , 2005	2006
74.	एम एम पाधी एवं अन्य	उड़ीसा से उपलब्ध पॉडुलिपियों से महात्वपूर्ण आयुर्वेद के ग्रंथ (चिकित्साल वर्णव)	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.1) 33-40, 2005	2006
75.	एम एम पाधी एवं अन्य	सम एक्सपलोरेटिव इन्फोर्मेशन रिगार्डिंग ज्वारातिभीर भास्कर एण्ड इट्ज आथर कायस्थ चामुन्डा	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका, खण्ड - 35 (सं.2) 93-99, 2005	2006

76.	जी पी प्रसाद एवं अन्य	भिषक सुधारनवम - एन अनसएक्सप्लोरड प्रिशियस अन्ध्रसमप्रदाय आयुर्वेद ग्रंथ	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.1)77-82 , 2005	2006
77.	पी वी वी प्रसाद	बायोग्राफी ऑफ कश्यप एण्ड हिज कंट्रीब्यूशन टू कौमारभृत्य	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.2)101-112 , 2005	2006
78.	पी वी वी प्रसाद	हैजा का चिकित्सीय - ऐतिहासिक अध्ययन	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.1)1 -20, 2005	2006
79.	पी के जे पी सुभक्ता एवं ए नारायण	बायोग्राफी ऑफ वंगसेन - हिज कंट्रीब्यूशन	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका, खण्ड - (सं.2) 137 - 146, 2004	2006
80.	पी के जे पी सुभक्ता	शारंगधर - हिज कंट्रीब्यूशन इन आयुवैदिक लिटरेचर	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.1) 47-60 2005	2006
81.	बी सुभोष एवं अन्य	बेसिक प्रिंसिपल ऑफ फार्मास्युटिकल साइंस इन आयुर्वेदा	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका खण्ड - 35 (सं.2) 83-92, 2005	2006
82.	बी सुभोष एवं अन्य	बायोग्राफी ऑफ माधवकार	भारतीय आयुविज्ञान इतिहास संस्थान	2006

			पत्रिका खण्ड - 35 (सं.2)113-130, 2005	
83.	पी बंसल	मल्टीपल च्वायस क्वश्चन बैंक इन मेडिकल बायोकैमिस्ट्री	केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद के लिए तैयार की गई एक पुस्तक	2006
84.	के बी बिल्लौरे एवं अन्य	डाटाबेस ऑन मेडिसनल प्लांट्स यूज्ड इन आयुर्वेद खण्ड -VII	केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्व अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तक	2005
85.	पी गुरमेत एवं ओ पी चौरसिया	स्टेटस एवं कन्सर्वेशन ऑफ ट्रांस हिमालयन मेडिसिनल प्लांट	हिमालयन मेडिसिनल एण्ड सरोमैटिक प्लांटस, बैलेसिंग यूज एण्ड कंजर्वेशन, वाईथॉमस एवं अन्य द्वारा संपादित/ नेपाल सरकार, वन एवं मिटटी संरक्षण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित	2005
86.	जी एस लेव्हेकर एवं अन्य	पैरामीटरस् फॉर क्वालिटी एसेस्मेंट ऑफ आयुर्वेद एण्ड सिद्व ड्रग्स		2005
87.	एमएस रावत एवं आर शंकर	हर्बल पोटेशियल ऑफ अरूणाचल मेडिसिनल प्लांट्स विज -ए-विज फॉरेस्ट मैनेंजमैट इन अरूणाचल प्रदेश । स्कोप ऑफ आयुवेदिक मेडिसन मैनुफेक्चरिगं पड्डर्म इन अरूणाचल प्रदेश	आयुर्वेद एण्ड ड्रग्स फॉर ऑल संपादक रमाशंकर, हिमालयन प्रकाशन	2006

II. सहभागिता

क्र. स.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	संगोष्ठी / सम्मेलन/कार्यशाला का नाम
क. नैदानिक और मौलिक अनुसंधान			
1.	बी दास एवं अन्य	कंपैरिटिव क्लीनिकल स्टडी ऑफ पलिएटिव थैरेपी विद शुण्ठी गुग्गुलु गोदन्ती एण्ड प्युरीफिकेटरी	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सितंबर, 2005.
2.	के बी देवीदास	क्रॉनिक डिसएबिलिटी एण्ड आयुर्वेदिक मैनेजमैंट	आयुर्वेदिक एजुकेशन रिसर्च एण्ड ड्रग स्टेन्डर्डाईजेशन-ए- ग्लोबल पस्पैक्टिव पर गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय में दिनांक 5 से 7 जनवरी,2006 तक आयोजित पाचवाँ अंतराष्ट्रीय सम्मेलन
3.	के गोपकुमार एवं के भारती	क्लिनिकल इवेल्युएशन ऑफ प्रोफायलेटिक यूज ऑफ इदुंकांत धृत इन मलेरिया	दिंनांक 11-13 नवम्बर,2005 तक नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन

4.	के गोपाकुमार एवं के भारती	इंसीडेंस ऑफ डिफरेंट डिजीज़ विद रेफरेंस टू काल संप्राप्ति इन जेरिएट्रिक केसिस	ए ल आयु अनु के चेन्नई में 19-23 अगस्त, 2005 तक आयोजित " मैनेजमैंट ऑफ जेरिएट्रिक" पर संगोष्ठी
5.	के गोपाकुमार एवं के भारती	द मैनेजमैंट ऑफ जेरिएट्रिक डिसआर्डर एकॉडिग टू आयुर्वेद एवं सिद्व	-तदैव-
6.	ए डी जाधव	रोल ऑफ ब्राहमी, वचा,जटामांसी एण्ड अर्जुन ऑन व्यान बल वैष्म्य (हाइपरटेंशन)	आयुविज्ञान संस्थान, यू वाराणसी तथा यूनिवर्सिटी ऑफ कन्नेक्टीकट स्कूल ऑफ मेडिसन, यू एस ए द्वारा क्रॉमिक डिजीज़ एण्ड इटज मैनेजमैंट बॉयकंप्लीमेंटरी एण्ड ऑल्टरनेटिव मेडिसन पर आयोजित द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन
7.	ए डी जाधव	इफैक्ट ऑफ शुण्ठी गोदन्ती ऑन आमवत (रयूमेटॉयड अर्थराइटिस)	-तदैव-
8.	के वी काले	क्लिनिकल इवेल्युएशन ऑफ ए हर्बो-मिनरल कंपाऊड इन द मैनेजमैंट ऑफ ब्यपनबल वैषम्य	-तदैव-
9.	ए सी कर	द रेलिवेंस ऑफ प्रमाण इन क्लीनिकल प्रैक्टिस	कृष्ण् गोपाल आयुर्वेद भवन की हीरक जयंती स्मारिका
10.	एस कुमार एवं अन्य	वचादि चूर्ण का उच्च रक्तचाप पर निदान चिकित्सात्मक अध्ययन	पंजाब अकादमी द्वारा 7-9/2/2006 तक पटियाला में आयोजित 9वैं पंजाब विज्ञान महासम्मेलन
11.	एच एम एल एवं अन्य	कामला रोग में विरेचन कर्म की उपदियता	पचंकान - 2006 राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान द्वारा 18-20/32006 तक जयपुर में अभिनव उन्नति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
12	बी आर मीणा एवं अन्य	पक्षाघात की चिकित्सा में पंचकर्म पद्वति के समान्य सिद्वान्त	तदैव

13.	डा. (श्रीमति) आर मेहरा	वेदना स्थापन फिस्सर इन एनो	आयुर्वेदिक विशेषज्ञों का 22वां राष्ट्रीय सम्मेलन एवं वेदना स्थापक द्रव्य पर संगोष्ठी
14.	आर बी नायर एवं अन्य	हेप्टाट्रोपैक्टिव इफैक्ट ऑफ कैरेट इन कार्बन टेट्रा - क्लोरायड ट्रीटिड इन रैटस	त्रिवेंद्रम में 4-5 दिसंबर ,2005 तक आयोजित औषध पादपों र पाँचवा राष्ट्रीय सम्मेलन
15.	जी सी नंदा एवं अन्य	मधुमेह में जामुन करेला धनवटी का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सिंतंबर,2005.
16.	जी पी प्रसाद	श्लीपद के जीर्ण मामलों में कांचनार गुग्गुलु के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक मूल्याकंन	गुजरात आयुर्वेद वि विद्यालय द्वारा जामनगर में 5-7 जनवरी, 2006 को आयुर्वेद पर आयोजित पांचवा अंतराष्ट्रीय सम्मेलन
17.	एम एम राव तथा अन्य	कंपैरिटिव थैरेप्युटिक इवेल्युएशन एफीकेसी ऑफ शमन चिकित्सा - शोधनचिकित्सा (वमन कर्म) इन द मैनेजमैंट ऑफ आमवत	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सिंतंबर,2005.
18.	एस शर्मा एवं अन्य	अर्श की चिकित्सा में चरकाक्त बस्ति का प्रभाव - एक अध्ययन	पंजाब अकादमी द्वारा 7-9/2/2006 तक पटियाला में आयोजित 9वैं पंजाब विज्ञान महासम्मेलन
19.	ओ पी सिंह एवं अन्य	गृध्रसी की चिकित्सा में हिंगु त्रिगुण तैल का निदान चिकित्सात्मक मुल्यांकन	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सिंतंबर,2005.

20.	आर सिंह एवं अन्य	वचा कुटकी योग का मेदो रोग की चिकित्सा में निदान चिकित्सात्मक मूल्याकन	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सितंबर, 2005.
21.	आर सिंह एवं अन्य	ब्राहमी और वचा के मध्य रसायन के सयुक्त प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन	आयुर्वेद और सिद्व में वृद्वावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु अनु केंद्र में 19-20 अगस्त,2005 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
22.	एस सिंह	इम्पैक्ट ऑफ के वी कैपसूल ऑन ओबेसिटी	ड्रग डिवेलपमेंट मेडिसिनल प्लंटास इशु एण्ड प्रोबलमस 2005 पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
23.	एस के सिंह एवं एम प्रसाद	गुदरोग की चिकित्सा में पूर्व कर्म (स्नेहन, स्वेदना) का चिकित्सीय अध्ययन	पचंकान - 2006 राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान द्वारा 18-20/32006 तक जयपुर में अभिनव उन्नति पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
24.	बी. एन. श्रीधर एवं टी विक्षापति	प्रारंभिक उच्चरक्तचाप (व्यानबल वैषम्य) में वचादि योग का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन	आई एस स एच एण्ड इटंरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिंनाक 23-25 सितंबर,2005.
25.	एन श्री कांत	पचंकर्म एण्ड नेत्र क्रियाकल्प (आयुर्वेदिक आकुलर प्रोसीज़र) एन एप्राइजल ऑफ प्रैक्टिकल एक्सपीरियेसिज	भारतीय चिकित्सा पद्वति एवं होम्यो के आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार द्वारा करोल बाग नई दिल्ली में 4-4-2005 को आयोजित पंचकर्म पुनाभिविन्यास कार्यक्रम
26.	एन श्री कांत एवं अन्य	आयुर्वेदिक मैनेजमैंट ऑफ मैंटल डिसआर्डस ,एन एप्राइजल ऑफ सम सी सी आर एस रिसर्च कंट्रीब्यूशन	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा 31-3-2006 को मानस विकारों पर आयोजित आयुर्वेदिक वैज्ञानिक संगोष्ठी

27.	एन श्री कांत एवं अन्य	बाहमी (बकोपा मोन्नीऐरा) ए वन्डर एण्ड सेफ हर्ब टू इम्प्रूव मैमोरी एण्ड कोगनिटिव फंक्शनस्	-तदैव -
28.	एन श्री कांत एवं अन्य	आयुर्वेदिक एप्रोच टू द मैनेजमैट ऑफ एज रिलेटिड ऑकुलर डिजीज - एन एप्राइजल ऑफ सम क्लीनिकल स्टडीज़	आयुर्वेद और सिद्व में वृद्वावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु अनु केंद्र में 19-20 अगस्त, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
29.	एन श्री कांत एवं जी. एस. लव्हेकर	आयुर्वेदिक मेडिकल एण्ड पैरा-सर्जिकल एप्रोचिस इन द मैनेजमैट ऑफ क्रॉमिक सिम्पल ग्लुकोमा, एन एप्राइजल ऑफ क्लीनिकल स्टडी	चेन्नई में 11-13 नवंबर, 2005 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेदिक सम्मेलन
ख - स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान और प्रजातीय - औषधियां			
30.	एम वी आचार्य	प्रिवेटिव कार्डियालोजी - एन इटीग्रेटिड एप्रोच	तिलक आयुर्वेद महाविद्यालय, पुणे द्वारा 15-16 अक्तूबर, 2005 को आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन
31.	अनुपम एवं जे हाजरा	डायबिटीज मैनेजमैट ऑफ डायबिटीज मेलिट्स	आर जी एम काकीनाड़ा में 4-5 मार्च, 2006 को आयोजित"एप्लाइड एस्पैक्ट ऑफ आयुर्वेद इन मड़िम इरा " पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
32.	जी बाबू	तमक श्वास पर रसायन चिकित्सा की भूमिका	मै. टी वी आर मैमोरियल आयुर्वेदीय संरक्षण संस्था वारंगल द्वारा 10-12 /2/2006 तक आयोजित आयुर्वेद एवं एलौपैथी पर समाकलन- जन स्वास्थ्य आवश्यकता "पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
33.	जी बाबू	आहार और पौष्टिकता आयुर्वेद में अवधारणा	भा. आयु.इति संस्थान,हैदराबाद द्वारा 9-10/3/2006 तक आहार और पोषण औषधियों के आयुर्वेद में एतिहासिक पहलु " राष्ट्रीय संगोष्ठी

34.	एल डी बारिक	मधुमेह और इसकी वानस्पतिक चिकित्सा	आर जी एम काकीनाड़ा में 4-5 मार्च, 2006 को आयोजित " एप्लाइड एस्पैक्ट ऑफ आयुर्वेद इन मड़िम इरा " पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
35.	एस भटट एवं अन्य	महिलाओं में आयु वे संबधित स्वास्थ्य समस्याओं की चिकित्सा में आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश	आयुर्वेद और सिद्व में वृद्वावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु अनु केंद्र में 19-20 अगस्त, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
36.	जी वी दिवेद्वी एवं अन्य	औषघ पादप तथा जरा व्याधि की चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाले इसके योग	आयुर्वेद और सिद्व में वृद्वावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु अनु केंद्र में 19-20 अगस्त, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
37.	के गोपाकुमार	आयुर्वेद के अनुसार जरा व्याधि की चिकित्सा	आयुर्वेद और सिद्व में वृद्वावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु अनु केंद्र में 19-20 अगस्त, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
38.	पी गुरमेट	लद्दाख् में जनसवास्थ्य के लिए सोवा-रिगपा (आमची औषधी)	इंटरेक्टिव वर्कशाप ऑन हाई आल्टीट्यूड हैल्थ रिलेटिड ईशुज एण्ड हाई आल्टीट्यूड मेडिसन परआल्टीट्यूड मेडिसन रिसर्च सैटर (डी आर डी ओ) तथा आर्मी जनरल हॉस्पिटल द्वारा 2005 में आयोजित इंटरेक्टिव वर्कशाप
39.	पी गुरमेट	आमची मेडिसन एन इंपोर्टेट पार्ट ऑफ लद्दाख कल्चर एण्ड इट्ज डिवेलपमेंट बाय 2020	लद्दाखी कल्चर एण्ड इट्ज प्रेजेंटेशन इन कन्टेमरेरी सोसायटी पर कल्चरल एकेडमी लेह द्वारा 15-2-2006 को आयोजित
40.	पी गुरमेट	सोवा रिगपा (आमची तिबतम मेडिसिन) में आवधारणा एवं आहार नियम	भा. आयु.इति संस्थान,हैदराबाद द्वारा 9-10/3/2006 तक आहार और पोषण औषधियों के आयुर्वेद में एतिहासिक पहलु " राष्ट्रीय संगोष्ठी
41	ए.सी.कर	आयुर्वेदिक औषधियों की	दिनांक 23-24/07/2005 को आयोजित

		मूल्यांकन विधि का अध्ययन ।	आयुर्वेदिक औषधियों के मानकीकरण के मानदण्डों पर राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाही।
42	एस.प्रकाश एवं अन्य	रोल ऑफ ट्रेडिशनल मेडिसिन इन सोशिओ-इक्नॉमिक डिवलेपमेंट ऑफ ट्राइवल वूमन ऑफ अरुणाचल प्रदेश ।	ईटानगर में 24-25/02/2006 को आयोजित सगोष्ठी इंपैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑन द सोशिओ-इक्नॉमिक डिवेलपमेंट ऑफ वूमन ऑफ नार्थ-ईस्ट ।
43	जी.पी. प्रसाद	मधुमेह में आयुर्वेदिक आहार की भूमिका-आयुर्वेदिक उपागम तथा आधुनिक सह-संबंध	भा.आयु. इति. संस्थान, हैदराबाद द्वारा 9-10/3/2006 तक आहार और पोषण औषधियों के आयुर्वेद में एतिहासिक पहलू पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ।
44	रेवती	रोल ऑफ रसायन ड्रग्स एज हैल्थ प्रोमोटस फ्राम हेमेटालॉजिकल एण्ड बायोकैमिकल पर्सपैक्टिव	आयुर्वेद और सिद्ध में वृद्धावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु.अनु.केंद्र, चेन्नई में 19-20/8/05 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
45	ए.सरस्वती	स्वास्थ्य रक्षा में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति की भूमिका	कराची में 10-19/02/2006 तक कराची में आयोजित पाकिस्तान के लोगों के लाभ के लिए प्राकृतिक उत्पादों-औषधियों, औषध निर्माण विज्ञान और पोषण विज्ञान पर अंतराष्ट्रीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण ।
46	आर. शंकर एवं एस. प्रकाश	रोल ऑफ आयुर्वेदिक रिसोर्सिज इन सोशिओ इक्नॉमिक डिवलेपमेंट आफ वूमन इन नार्थ ईस्ट	ईटानगर में 24-25/02/2006 को आयोजित सगोष्ठी, इंपैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑन द सोशिओ-इक्नॉमिक डिवेलपमेंट ऑफ वूमन ऑफ नार्थ-ईस्ट ।
47	ओ.पी.सिंह एवं अन्य	कसैप्ट ऑफ स्किन एजिंग एण्ड रसायन इन आयुर्वेदा	आयुर्वेद और सिद्ध में वृद्धावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु.अनु.केंद्र, चेन्नई में 19-20/8/05 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ।

48	एन. श्रीकांत एवं जी.एस. लक्हेकर	आयुर्वेद में अनुसंधान और तकनीकी मूल्यांकन की वैज्ञानिक मान्यता	आई.आई.टी., नई दिल्ली मै 11-12/02/2006 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी प्राचीन चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिक मान्यता और तकनीकी मूल्यांकन
49	एन.श्रीकांत	फोकस ऑन केस रिपोर्टस इन एच.आई.वी./एड्स	के.हो.अनु.परि., नई दिल्ली में 7/02/06 को आयोजित कार्यशाला वर्ल्ड एडस फाऊंडेशन ट्रेन द ट्रेनर कोलेबोरेटिव प्रोजैक्ट ऑफ कैलिफोर्निया लॉस एन्जलस (यू.एस.ए), सीसीआरएएस एण्ड सीसीआरएच् ऑन डिलिवरी ऑफ मॉडलः एचआईवी प्रिवेंशन एण्ड प्रोमोशन प्रोग्राम फॉर आयुर्वेद एण्ड होम्योपैथी फिजिशियन इन इंडिया
50	एन.श्रीकांत	एच.आई.वी./एडसः ए केस रिव्यू	-तदैव-, 27/02/2006
51	एन.श्रीकांत	रोल ऑफ आयुवेदा इन एचआईवी/एड्स प्रॉब्लमस एण्ड स्कोप	-तदैव-, 10/02/2006
52	एन.श्रीकांत एवं जी.एस. लक्हेकर	रोल ऑफ आयुष-सीटी आई ड्राप्स इन प्रिवेंटिंग कैटरेक्टः एक्शन प्लान फॉर कोलेबोरेटिव प्रोजैक्ट ऑफ सीसीएमबी	सैंटर फॉर सैल्युलर एंड मोलिक्युलर बायलॉजी, हैदराबाद में 16/08/2005 को आयोजित ब्रेन स्ट्रीर्मिंग सेशन में ।
53	एन.श्रीकांत एवं अन्य	विद्यालय के बच्चों के लिए आयुर्वेदिक पोषण विज्ञान का विकासः एन.आई.एन के सहयोग से कार्य योजना	-तदैव-
54	के. श्रीनिवास	मानसिक स्वास्थ्य के उन्नयन में मेध्य रसायन विधि	आयुर्वेद और सिद्ध में वृद्धावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए ल आयु.अनु.केंद्र, चेन्नई में 19-20/8/05 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ।

ग- द्रव्यगुण, औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण और कृषिः			
55	के.भारती	आयुर्वेदिक ग्रंथो में वर्णित द्रव्य संग्रहण विशेष संदर्भ सहित	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प. औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं. चैन्नै में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
56	के.भारती एवं के. गोपकुमार	आयुर्वेदिक ग्रंथो में संदर्भित द्रव्य संग्रहण	-तदैव-
57	पी.गुरमीत	लद्दाख हिमालय में वानस्पतिक संपदा और औषधीय पादपों का संरक्षण	वन विभाग तथा एस.एम.पी.वी., हरियाणा द्वारा 15-16/02/2006 तक आयोजित औषधीय पादपों का संरक्षण एवं कृषि पर राष्ट्रीय कार्यशाला ।
58	एस.प्रकाश एवं आर. शंकर	शिफिटंग स्ट्रेटजी फॉर मेडिसिनल प्लांट्स क्लटीवेशन इन अरुणाचल प्रदेश	राज्य भूमि प्रयोग बोर्ड विभाग अरुणाचल प्रदेश सरकार क्षरा ईटानगर में 16-17/2/2006 तक आयोजित 'लैंड रिसोर्सिज मैनेजमेंट इन अरुणाचल प्रदेश' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
59	आर.शंकर	अरुणाचल प्रदेश में औषधी पादपों की कृषि द्वारा बंजर भूमि का प्रबंधन	-तदैव-
घ - भेषज निर्माण तथा भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधानः			
60	जी.वी. द्विवेदी	स्वर्ण माक्षिक भस्म निर्माण	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर में 23-24/7/05 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के मानकीकरण के लिए मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला
61	एम.एम.राव	प्रभावकारी क्षारसूत्र के निर्माण की एक नइ तकनीक का मूल्यांकन, भगन्दर रोग में इसके प्रयोग के विशेष संदर्भ सहित	-तदैव-

62	एस. वेंकटेश्वरलु	वृक्ष आयुर्वेद विज-ए-विज प्लांट बायोटैक्नॉलोजी	आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा का समकालीन जन स्वास्थ्य रक्षा में वर्तमान आवश्यकता पर मैस. टी.वी.आर. मैमोरियल आयुर्वेदिक संरक्षण संस्थान द्वारा 10-12/2/2006 तक वारंगल में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
ड. रासायनिक और भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधानः			
63	पी.बंसल एवं अन्य	अंटार्टिका में कूट आयुर्वेदिक पौषक रसायन उत्पाद का एन्टीऑक्सीडेंट क्रियाकलापों का पहला निदान चिकित्सात्मक परीक्षण ।	पंजाब एकेडमी ऑफ सांइस द्वारा 7-9/02/06 तक पटियाला में आयोजित नौवाँ पंजाब विज्ञान सम्मेलन
64	ए.भट्टाचार्य एवं अन्य	बायो-एफीकेसी एण्ड टॉक्सीसिटी ऑफ पार्टेरसिया कोरटाटा एक्सटेक्ट एण्ड इटज् मॉलीक्युलर इम्पलीकेशन ऑन द फिजियालोजी ऑफ एस.लिदुय	ढाका बंगलादेश में 9-11/12/05 तक आयोजित तीसरा अंतर्राष्ट्रीय वानस्पतिक सम्मेलन ।
65	ए.भट्टाचार्य एवं अन्य	इंसैक्टीसाइड एफिकेसी ऑफ कुसकुटा चिनेन्सिस ऑन स्टोर्ड प्रोडैक्ट इंसैक्टस्	विश्वभारती शांतिनिकेतन में 20-21/3/06 तक आयोजित पर्यावरणात्मक पेयजल तथा जन स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
66	के. गोपकुमार	मानकीकरण आयुर्वेदिक औषध उद्योग की प्रमुख समस्या	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प. औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ. अनु.सं. चैन्नै में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
67	जी.एस. लव्हेकर एवं ए. अग्रवाल	भस्मों का मानकीकरण (खनिज/धातु योग)	भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक अकादमी, नई दिल्ली में 3-4/3/2006 तक आयोजित भा.चि.प. के वानस्पतिक धातु योगः सुरक्षा और गुणवत्ता मानकीकरण पर राष्ट्रीय विचार विमर्श(चर्चा)

68	के.वी.काले	पोटली कल्पना विधि एवम् इसके मानकीकरण की आवश्यकता	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर तथा फार्मेसी विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर द्वारा 23-24/7/05 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के लिए मानकीकरण के मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला ।
69	टी.महेश्वर	कुपीपक्वा रसायन का मानकीकरण	-तदैव-
70	एन.के. मालवीय एवं आर.जी. रेड्डी	क्षार सूत्र निर्माण के मानकीकरण और वर्तमान विकास	-तदैव-
71	एल.के. मालवीय एवं आर. जी. रेड्डी	अपामार्ग क्षार का मानकीकरण	-तदैव-
72	एस.मंडल एवं अन्य	हॉयपोग्लयसिमिक एक्टीविटी ऑफ द एक्टिव कॉन्स्टीट्यूएट ऑफ 3 आयुर्वेदिक प्लांट्स एस.चिराता, एस.कुमिनी एण्ड सी इन्फोर्टुनेरम	आ.जी.एम.ए.सी.एण्ड एच. काकीनाड़ा में 4-5/3/06 तक आयोजित एप्लाइट एस्पैक्ट ऑफ आयुर्वेद इन मार्डन इरा पर रष्ट्रीय संगोष्ठी
73	एस.मंडल एवं अन्य	आईसोलेशन ऑफ ए न्यू जेन्थोन एण्ड एन एक्टिव ऑयल फ्रेक्शन पजेजिंग मॉसकिटो रिप्लेंट एण्ड लारवीसिडल प्रापटी फ्राम द फ्लॉवर ऑफ मेसुआ फेर्रा	हैदराबाद में जनवरी,2004 को आयोजित 93वाँ भारतीय विज्ञान सम्मेलन
74	टी.महेश्वर	अभ्रक भस्म के संदर्भ सहित रसौषधियों के लिए मानकीकरण तकनीक	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प.औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं. चैन्नै में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

75	वी.मथुरम	अकरेंस ऑफ अर्जुनॉलिक एसिड इन रुटस ऑफ चिन्नी (एकलयफा फ्रुटीकोसा)	-तदैव-
76	जी.सी.नंदा एवं अन्य	मरिच्यादि तैल का मानकीकरण एक अध्ययन	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर में 23-24/7/2005 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के मानीकरण के लिए मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला
77	के.के. पाण्डेय	आयुर्वेदिक विधि से धातुभस्म का मानकीकरण	-तदैव-
78	आर. राजशेखरन	ए.स्टडी ऑन क्युक्करन सम्मत्व (इंडिगोफेरा ओबलोंगी फोलिया) एन्टीइंफ्लेमेटरी एण्ड एनलजेसिक एक्टीविटी	हैदराबाद में 16-17/2/06 तक आयुर्वेदिक मेडिकेयर एज एविडेंस बेसड मेडिसिन पर राष्ट्रीय सम्मेलन
79	ए.सरस्वती	आयुर्वेदिक औषधियों की विश्लेषणात्मक विधियाँ एवं मानदंड ।	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर में 23-24/7/2005 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के मानीकरण के लिए मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला
80	ए.सरस्वती	भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के माननीकरण पर वैज्ञानिक द्रष्टिकोण ।	श्रीरामचंद्र मेडीकल काकोंन, चैन्नई में विश्व स्वास्थ्य संघठन् के अनुरुप मानकीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 28/05/2005.
81	ए.सरस्वती	कच्ची एवं शुद्ध पादप औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प.औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं. चैन्नै में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी.
82	ए.सरस्वती एवं आर. वी.पी. चंद्रन	लिपिड कांस्टीट्यूएट ऑफ पेरिस्ट्रोफ बायलायकुलेटा	-तदैव-
83	आर.सिंह एवं ए.	रोल ऑफ प्रिपरेटिव एच.पी.एल.सी.इन	-तदैव-

	सरस्वती	आइसोलेशन ऑफ मार्कर कंपाऊड	
84	ए.सरस्वती	बायोफ्लेबोनॉयड एण्ड देयर थेराप्युटिक इंपोर्टेंस	सी.एल.बैद मेथा फाऊंडेशन फॉर फार्मासयुटिकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च द्वारा 20-22/10/05 तक आयोजित औषधीय पादपों से विकसित औषधियों पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन
85	ए.सरस्वती	रोल ऑफ माडर्न एनालयटिकल टैक्नीकस इस क्वालिटी कंट्रोल ऑफ आइ.एस.एम. ड्रग्स	वाराणसी में 16-18/12/2005 तक आयोजित रोल ऑफ रिसेंट एडवांसिस इन आयुर्वेदा ड्रग स्टैण्डर्डाइजेशन पर राष्ट्रीय परिसंवाद ।
86	श्रीमती एस.सिहं	स्टेण्डर्डाइजेशन ऑफ कुक्कुतंड त्वक भस्म एण्ड इट्ज रोल इन द मैनेजमेंट ऑफ अर्थराइटिस एण्ड ऑस्टियोपोरोसिस	आई.एस.ए.एच. एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, दिनांक 23-25 सितंबर, 2005
87	श्रीमती एस.सिहं	कुछ चूर्णो का मानकीकरण रसायन विश्लेषण पर आधारित एक आयुर्वेदिक वानस्पतिक योग	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर में 23-24/7/2005 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के मानीकरण के लिए मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला
88	एन. श्रीकांत एवं अन्य	स्टेण्डर्डाइजेशन ऑफ आयुर्वेदिक आथ्थालमिक फार्मुलेशन विद स्पेशल रेफरेस टू सम बायलोजिकल पैरामीटर्स-एन स्प्राइजल ऑफ एक्सपैरीमेंटल स्टडीज	-तदैव-
89	टी.एस.पी. श्रीनिवासन एवं अन्य	इवेल्युएशन ऑफ हेपटोप्रोटैक्टिव एक्टीविटी ऑफ इथनॉलिक एण्ड एक्युअस एक्सट्रैक्ट ऑफ साईट्रस आरंटीफोलिया फ्रूट्स एगेस्ट एफलेटोक्सिन-बी इंडयुज्ड लीवर डेमेज	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प. औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ. अनु.सं. चैन्नै में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

90	आर.के. तिवारी एवं अन्य	जरा व्याधि में प्रयुक्त किए जाने वाले कुछ औषध पादपों का मानकीकरण	आयुर्वेद और सिद्ध में वृद्धावस्था के विकारों की चिकित्सा पर ए.एल.आइ.सी.ए., चैन्नई में 19-20/8/05 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ।
91	आर.के. तिवारी एवं अन्य	मधुमेह की चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाले कुछ आयुर्वेदिक पादपों का मानकीकरण	आई.एस.ए.एच. एण्ड इंटरनेशनल सेमिनार ऑन क्रॉनिक डिजीज़ एण्ड इट्ज मैनेजमैंट बाय कंप्लीमेंटरी एण्ड आल्टरनेटिव मेडिसिन का द्वितीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 23-25 सितंबर, 2005
92	एस.एन. उपाध्याय एवं अन्य	आयुर्वेदिक वानस्पतिक औषधियों की सुरक्षा एवं प्रभावकारिता का मूल्यांकन एक पुनरवलोकन	-तदैव-
93	जी. वेंकटेरवरलु	एक्सपायरी पीरियड एण्ड प्रिजरवेटिव टैक्नीकस ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स	क्षे.अनु.सं.(आयु.), नागपुर में 23-24/7/2005 तक आयोजित आयुर्वेदिक औषधियों के मानीकरण के लिए मानदण्ड पर राष्ट्रीय कार्यशाला ।
94	जी. वेंकटेरवरलु	वानस्पतिक औषधियों के विषाक्तता अध्ययन के लिए दिशा निर्देश	मानकीकरण में आधुनिक परिदृश्य और भा.चि.प. औषधियों भी अच्छी निर्माण प्रक्रियाओं पर कै.श्री.मू.आयु.औ.अनु.सं. चैन्ने में 7-8/7/2005 तक आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ।
च. वाङ्.मय एवं विविधः			
95	डॉ.जी.एस .लक्हेकर एवं ए. नारायण	ईशु इंवाल्वड इन द कोलैबोरेटिव रिसर्च इन आयुर्वेदा	एन.टी.आर. यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइस, विजयवाड़ा में 19-21/2005 तक आयोजित 'प्रोमोशन ऑफ रिसर्च इन इस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ साईसं' पर आयोजित कुलपतियों/निदेशकों का गोलमेज सम्मेलन ।
96	ए. नारायण	मालन्यूट्रीशन एण्ड चाइल्ड हैल्थ केयर	ग्रामीण आयुर्वेद महाविद्यालय द्वारा अकोला (महाराष्ट्र राज्य) में आयोजित 'रोल ऑफ

			आयुर्वेदा इन मैनेजमेंट ऑफ मालन्यूट्रीशन इन मदर एण्ड चाइल्ड ऑफ ट्राइबल एरियाँ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
97	ए नारायण	आई.ई.सी ऑन आयुर्वेद	आई.एस.ई.आर.बी.ई. द्वारा हैदराबाद में 16-17/02/2006 तक आयोजित 'आयुर्वेदिक मेडिसिन एज स्विडेंस वेसड मेडिसिन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
98	ए. नारायण	रोल ऑफ सी.सी.आर.ए.एस. विद स्पेशल रेफरेंस टू स्टडी ऑफ मेडिकल मैनुस्क्रिप्टस	एफआरएलएचटी. कैंपस, बंगलौर में 5-6/10/2005 तक आयोजित 'सेविगं इंडियाज मेडिकल मैनुस्क्रिप्टसं पर संगोष्ठी
99	ए. नारायण	ए-स्टडी ऑन अनुक्ता द्रव्यास ऑन आयुर्वेदिक फिलॉस्फी	बंगलौर में 16-17/10/2005 तक आयोजित भेषज पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
100	पी.वी.वी. प्रसाद	डाइट एण्ड डाइरिटिकस इन आयुर्वेदा एण्ड नॉन मेडिकल लिटरेचर सिन्स एंसिपन्ट टाइम्स	भा.आयु. इति. संस्थान, हैदराबाद द्वारा 9-10/3/2006 तक आहार और पोषण औषधियों के आयुर्वेद में एतिहासिक पहलु पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, (सीसीआरएएस) तथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन (आइ.सी.एम.आर)
101	के.डी.शर्मा एवं आर. एस. यादव	आयुर्वेदिक पुस्तकों का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने में पाण्डुलिपियों का महत्व।	राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, सांस्कृतिक विभाग, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में 1-8-05 से 10-09-05 तक पाण्डुलिपि विज्ञान तथा प्राचीन शिला त्योंण पर आयोजित कार्यशाला ।
102	एन. श्रीकांत एवं जी. एस. लक्ष्केकर	कंसैप्ट ऑफ इम्युनॉलोजी एण्ड इम्युनोफार्माकॉलोजी विद स्पैशल रेफरेंस टू आयुर्वेदिक डाइटिक्स-मेडिको-हिस्टोरिकल एण्ड एप्लाइड एसपैक्ट ।	भा.आयु. इति. संस्थान, हैदराबाद द्वारा 9-10/3/2006 तक आहार और पोषण औषधियों के आयुर्वेद में एतिहासिक पहलू पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ।
103	वी. सुभोषे	क्रिटिकल रिव्यू ऑफ क्षाब एन इम्पोटेंट प्रेपेरेशन इन आयुर्वेद ।	चैन्नै में 20-10/2005 तक आयोजित ड्रग डिवेलपमेंट फ्राम प्लांटस-ईशुज एण्ड प्रॉब्लमस पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ।

ब. सिद्ध

ख - तकनीकी प्रतिवदेन सिद्ध

1. स्थानों/एककों के लिए प्रयुत्तर संकेताक्षर

क्र.सं.	स्थापना वर्ष	संस्थान/एकक	संकेताक्षर
1.	1970	केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	कें.अनु.सं.चे.
2.	1979	क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी	क्षे.अनु.सं.पा.
3.	1980	निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टै	नि.चि.अनु.सं.प.
4.	1986	निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, त्रिवेंद्रम	नि.चि.अनु.सं.त्रि.
5.	1979	औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक, चेन्नई	औ.मा.अनु.ए.चे.
6.	1979	औषधि अनुसंधान योजना (एम.डी.) चेन्नई	औ.अनु.यो.चे.
7.	1982	औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक , बंगलूर	औ.मा.अनु.ए.ब.
8.	1981	औषधि मानकीकरण अनुसंधान एकक , त्रिवेंद्रम	औ.मा.अनु.ए.त्रि.
9.	1971	औषधि पादप सर्वेक्षण एकक, पलायमकोट्टई	औ.पा.सर्वे.ए.प.
10.	1979	वांगमय अनुसंधान तथा प्रलेखन विभाग, चेन्नई	वा.अनु.प्र.वि.चे.

2. निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान

चयनित नैदानिक दशाओं पर सिद्ध चिकित्सा के नैदानिक अनुसंधान कार्यक्रम को चलाया जाता है। प्रतिवेदन वर्ष में कलंजगपदई (सोर्चासिस), पुत्रुनोई (कैंसर), वातशुलाई,करप्पम यांकलनोई (फाईलेरियासिस) नीरझिबु (डायबिटीज मेलिट्स), मंजल कामलाई (इंफेक्टिव हेपेटाइसिस),संधू वात शूलाई (रयूमेटॉयड अर्थराईटिस),वेनकुट्टम (ल्यूकोडर्मा) इनुम्बुमुरिव चिकिचई (बोन सैटिंग),इरइप्पुनोई (बी अस्थमा) आदि पर अध्ययन किया गया

कलंजग पदई (सोर्यासिस)

कलंजग पदई एक कष्टकारी त्वक् रोग पर केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा अध्ययन किया गया । परिक्षण के लिए चयनित सभी 154 रोगियों को कोडिक औषध 777 तैल की 10 मि.ग्रा.की मात्रा को दूध के साथ दिन में दो बार दिया गया । सहायक चिकित्सा के रूप में परंगीपट्टई चूर्णाम 500 मि.ग्रा,इलथी चूर्णम 500 मि.ग्रा.संगपर्थ 100 मि. ग्रा. की मात्रा का अनुमान कराया गया रोगियों को शरीर के प्रभावित हिस्सों पर 777 तैल का लेप करने की सलाह दी गई । चिकित्सा के परिणाम इस प्रकार हैं:-

कलंजपदई (सोर्यासिस) पर 777 तैल के निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

औषधि	कुल रोगी	पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	कोई लाभ नही	मध्यगत
777 तैल	154	111	23	2	-	18

वातशूलाई

इस रोग की दशा का वर्णन सिद्ध की पुस्तकों में वात रोगांगल के अंतर्गत वर्णित है । क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान पांडिचेरी द्वारा वात शूलाई के रोगियों पर आयवीरा चेन्दूरम एवं पेचागन चार के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया । परीक्षण औषधि आयवीरा चेन्दूरम की 120 मि.ग्रा. की मात्रा का शहद के साथ विभाजित मत्राओं में प्रयोग किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 98 रोगियों पर अध्ययन किया गया । 98 रोगियों में से 46 रोगियों को पूर्ण लाभ 30 को विशेष लाभ,3को मध्यम लाभ हुआ तथा 19 को इस चिकित्सा को कोई लाभ नहीं हुआ ।

करप्पन

इस रोग की दशाओं पर निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक त्रिवेन्द्रम द्वारा अध्ययन किया गया । पारेंगीपट्टई चूर्ण,संगु पर्पय,इदीवल्लाथी मेझुगुं,पुंगा तैलम का दो समूहों पर 500 मि.ग्रा.,130 मि.ग्रा. तथा 3 ग्राम की मात्रा का क्रमशः दिन में दो बार प्रयोग किया गया । चिकित्सा के परिणाम इस प्रकार हैं:-

करप्पन पर सिद्ध औषधि योगों के निदान - चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

औषधि	कुल रोगी	पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	कोई लाभ नही	मध्यगत
परंगी पट्टई चूर्णम सुंगुपर्पम करप्पन तैलम जी -1	11	7	2	-	-	2
इदिवल्लथी मेझुगु पुंगा तैलम जी -2	7	2	3	1	-	1
योग	18	9	5	1	-	3

निक्कलनोई (फिलारियासिस)

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, त्रिवेंद्रम द्वारा लिंग चेंदूरम,थैलम्पू मिथिराई/निलवेम्बु कुडीनीर तथा कक्कट्टनवीर कर्कम तथा इनके योग का यनिक्कलनोई रोग की नैदानिक दशाओं पर अध्ययन किया गया । यह अध्ययन तीन समूहों में रोगाणु संवाहक एवं रोगभिव्यक्त दोनों प्रकार के यनक्कलनोई रोगियों पर बहिरंग रोगी विभाग के स्तर पर किए गए । प्रतिवेदन अवधि के दौरान 1 रोगी को पूर्ण लाभ हुआ ।

थुवात शूलाई

सिद्ध साहित्य में वर्णित 80 वातरोगों में से संथु वात शूलाई एक है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान,चेन्नई के अंतर्गत संथुवात शूलाई की चिकित्सा में अरूमुगा चेन्दूरम,अय कामथ चेनदूरम,विषमुत्ति तैलय, महाबीरा मेझुग की प्रभाका मूल्यांकन अध्ययन किया गया । परिक्षण के लिए चुने गए सभी 60 रोगियों को 200 मि.ग्रा. की मात्रा का खजूर गुड़ के साथ दिन में दो बार अनुपात कराया गया । परीक्षण परिणाम इस प्रकार हैः-

संथूवात शूलाई पर सिद्ध योगों के निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

औषधि	कुल रोगी	पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	कोई लाभ नही	मध्यगत
महावीरा मेझुगु	37	9	6	8	0	14
अरुमुगाचेन्दूरम अया कंथा चेन्दूरम, विषमुत्ती थैलम	3	3	-	-	-	-
योग	40	12	6	8	0	14

इलुम्बु मुरिवुचिकिचाई (अस्थि जोड़ना)

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (सिद्ध) द्वारा इस रोग की दशा का अध्ययन किया गया । ओडिवु मुरिवु थिरूमनी तैलम्, सिवप्पु कुक्केल तैलम् औषधियों के प्रभाव मूल्यांकन हेतु अध्ययन किया गया। 22 रोगियों पर अध्ययन किया गया जिनमें से 17 रोगियों को पूर्ण लाभ हुआ तथा 5 रोगी चिकित्सा छोड़कर चले गए ।

इरयप्पुनोई (तमक श्वास)

इरयप्पुनोई सिद्ध चिकित्सा ग्रंथों में वर्णित श्वास रोगों में से एक है । निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक,त्रिवेंद्रम द्वारा अमई ओडुपर्पम औषधि की प्रभावकारिता का अध्ययन किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 7 रोगियों पर अध्ययन किया गया । 7 रोगियों में से 5 रोगियों को पूर्णलाभ, 1 रोगी को मध्यम लाभ हुआ तथा 1 रोगी को इस चिकित्सा से कोई लाभ नहीं हुआ ।

वेनपदई (ल्यूकोडर्मा)

सिद्ध साहित्य में वर्णित त्वक रोगों में से वेनपदई एक रोग है । केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, चेन्नई और क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी में अया बृंगराज कर्पम, नाग पर्पम तथा कूट भेषज

जी.आई.तथा ए. बी. कर्पम औषधियों पर अध्ययन किया गया । प्रतिवेदन अवधि में 52 रोगियों पर अध्ययन किया गया । प्रभावित स्थान पर केवल कुछ धब्बे पुनः पाये गए इसके अतिरिक्त अन्य कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया चिकित्सा के परिणाम इस प्रकार है -

वेनपदई(ल्यूकोडर्मा) पर सिद्व योगों का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

औषधि	कुल रोगी	पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	कोई लाभ नहीं	मध्यगत
जी.2	36	3	4	20	-	9
ए.बी.कर्पम	10	4	2	1	3	-
नाग पर्पम	6	3	1	2	-	-
योग	52	10	7	23	3	9

नीरझिबु (डायबिटिज मेलिट्स)

सिद्व चिकित्सा ग्रंथ नीरनोई गल में नीरझिबु को एक सामान्यतः चयापचयी विकार के रूप में वर्णित किया गया है। केंद्रों अनुसंधान संस्थान, चेन्नई तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी में कूट भेषज डी - 2 और एन एक्स का प्रभाव अध्ययन किया गया । 191 रोगियों पर अध्ययन किया गया । चिकित्सा परिणाम इस प्रकार हैः

नीरझिबु (डायबिटिज मेलिट्स) पर सिद्व योगों के निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

औषधि	कुल रोगी	पूर्ण लाभ	विशेष लाभ	मध्यम लाभ	कोई लाभ नहीं	मध्यगत
डी.2	180	30	10	15	25	100
एन.एक्स	11	3	2	-	4	2
योग	191	33	12	15	29	102

बहिरंग रोगी विभाग / अंतरगं रोगी विभाग ही उपस्थिति पर एक नजर

क्र.स.	संस्थान / एकक	नए	पुराने	योग	अंतरंग रोगी विभाग में उपस्थित रोगियों की सं.	चिकित्सा विमुक्त रोगियों की सं.
1.	के.आयु.अनु.सं.चेन्नई	9475	24422	33897	198	198
2.	क्षे.अनु.सं.पांडिचेरी	4959	13426	18385	103	101
3.	नि.चि.अनु.ए.पलायम.	280	7232	7512	44	44
4.	नि.चि.अनु.ए.त्रिवेंद्रम	728	1632	2360	-	-
	योग	15,442	46,712	62,154	345	343

3. प्रजाति औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम

औषधियों के उपार्जन के लिए तथा अनुसंधान के उद्देश्य से औषधियों की आपूर्ति हेतु वन क्षेत्रों के सर्वेक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है । यह कार्य गवर्नमेंट सिद्व मेडिकल कॉलेज, पलायमकोट्टई में कार्यरत औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एकक द्वारा किया जा रहा है । इस एकक की स्थापना वर्ष 1971 में हुई थी ।

यह एकक तमिलनाडु के वन क्षेत्रों से विशेषकर सिद्व चिकित्सा पद्धति में प्रयोग की जाने वाली औषधियों की उपलब्धता की खोज में सक्रिय रहा है । इस अध्ययन के अंतर्गत वास्तविक औषधियों की पहचान, गुणवता और मात्रा का विश्लेषण उनके विकल्प एवं अपमिश्रण् आदि सम्मिलित हैं ।

प्रतिवेदन अवधि के दौरान इस सर्वेक्षण एकक द्वारा कोयम्बटूर, तिरूनल्वेली तथा कन्याकुमारी एवं आसपास के वन क्षेत्रों के 9 संग्रह दौरे किए गए तथा अन्य एककों की औषध पादपों की आपूर्ति करने के लिए संग्रह दौरों में 411 नमूने का संग्रह किया गया तथा ये 59 परिवारों, 16 वंशों से संबंधित थे । दौरों के दौरान 186 नमूनों का भी संग्रह किया गया तथा उद्भिदालय में सम्मिलित किए गए ।

111 उद्भिदालय नमूनों की पहचान की गई तथा उद् भिदालय पत्रकों तैयार किए गए । उद्भिदालय में सम्मिलित किए गए नमूनों में निम्नलिखित कुछ नमूने महत्वपूर्ण थे तथा सिद्व चिकित्सा पद्धति में उन पादपों का बृहद प्रयोग किया जाता है ।

क्र. स.	वानस्पतिक नाम	तमिल नाम
1.	फिकुस डल्होजी मिक	परसियल
2.	सिसस कुडरंगुलेरिस	पिरंडई
3.	कसिका यूनिफलोरा मिल	सीमइ थागरई
4.	जसमीनुम अजोरिकम एल.	कट्टुमल्लइ
5.	गलिनसोगा परविफ्लोरा कार	-
6.	एडनन्थेरा पवोनिन लिन्न	अनइकुंतरी

7.	आर्टिमिसिया एस. पी.	मरूगु
8.	बेम्बुसा अरून्डीनेसिया (रिट्ज) रॉक्सब.	मूनकिल
9.	ट्रिनथेना ट्रिक्युटरा पोट्टल एक्स. विल्लड.	सिरू सरनरई
10.	मेलिना स्प.	-
11.	थकिगोनम बाइफलोरम (एल.)बेबी	-
12.	लगेरस्टोमिया इंडिका	वेन्थेक्कु
13.	कोसटस प्लीकाटा	इंसुलिन चेदी
14.	थोट्टीया सुकुक्युयीसा (लिन्न) दिन्नाथा	कुरवन कन्दमूली
15.	फिकस गुटाटा (विगट) कुर्ज	कोड़ी अथथी
16.	बुदुला क्रेनुलेटा रॉक्स्ाब.	मुलवेन्नई
17.	डियोस्पाइरिस एबेनम कोइन	वक्कनई
18.	डिक्लेलपिस हमिलटोनी विगट एण्ड अर्न.	मलई नन्नरई
19.	डियोस्कोरिया वल्लीची	कच्ची
20.	अरूणडीनेरिया ग्रामिनीफोलिया	
21.	सिन्नमोमुम वेरूम प्रेस	करूवा
22.	सायथिया निलगिरेनसिस हालट्टुम	पेरनी
23.	उटलेरिया सलिसिफोलिया पोकोल्ड एक्स हूक	मलई नन्नरई
24.	लुडवीगिया पेरन्नीस एल.	नीर किरम्बु
25.	पोलिग्ला रोसमारिनीफोलिया विगट एण्ड अर्न	ननगई
26.	स्ट्रोबिलन्थेस एस पी	कुरिन्जी
27.	बाऊहिनया रेसिमोसा लेम	अथी
28.	सियम्पलोकास ओलिगेड्रा बेड्ड	पचोंथीपरट्टई
29.	अल्लोफायल्लस सेर्रटस (रोक्सब) कुर्ज	अमलई
30.	स्पीन्डस एमरजीनेटस वाहल	पूवन्थी
31.	स्कुलोपिया सरूनुलेटा (विगट एण्ड अर्न) क्लोस	चारलु
32.	बार्लेरिया मोन्टाना नीस	
33.	सिरोपेगिया जुनसिया रॉक्सब	पुलीपिरेन्डई
34.	वर्मानिया कोनिजोयडिस डब्ल्यू डब्ल्यू स्मिथ	-
35.	अटलांटिया मोनफायला (1) कोर्रिया	कुरून्थु
36.	केसियेरिया कोरियेसिया थयु	कोडिची

37.	पेनिसेटम टायफोयडिस	कम्बु
38.	सोनेरिला क्लारकइ कॉग्न	-
39.	सिनामोमम वेरम प्रेसल	इलावंगम्
40.	अथ्स्टेसिया ट्रावनकोरिका बेड्ड	-
41	इंडिगोफेरा कैस्सिओडेस रॉट	-
42.	कोन्नरूस मोनोकार्पस एल.	-
43.	एलिओकार्पस वेनुसुटुस बेड्ड	कटटुथिरच्चाई
44.	क्नेमा एट्टेनुएटा	वार्ब् चोरपथीरी
45.	एक्साकम पिडेनकुलेटुम एल.	-
46.	होमालियम जायलनिकम एल.	-
47.	पोऊजोलजिया विगटी बेन्न	-
48.	सायथिया नेलधरेन्स	-
49.	वल्लारिस सोलानसिया (रोथ्) कुंटज	-
50.	अम्मी मेजस	-
51	फिकस माईक्रोकार्पा एल. एफ.	-
52.	विस्कम आर्टिकुलेटम बर्न	-
53.	फिकस आरनोटियाना मिया	कालारासु
54.	टर्मिनेलिया अर्जुना डबल्यू एण्ड ए	मरूथम
55.	इनिकोस्टेम्मा/एक्सीलारा रायनल	वैल्लारूगु

पादपों के 54 विभिन्न भागों का संग्रह किया गया तथा एकक के संग्रहालय में संग्रहीत किये गए जिससे संग्रहालय नमूनों की संख्या बढ़कर 881 हो गई ।

दौरों के दौरान औषधीय पादपों के विभिन्न भागों का 250 कि.ग्रा. संग्रह किया गया तथा एकक द्वारा संरक्षित रखा गया । इस संग्रह मे से 51.250 कि.ग्रा सूखे पादप भागों को परिषद की विभिन्न एककों को भेजा गया ।

एकक ने पैरों के दर्द, एक्जीमा तथा आंत रोग, अधसीसी, सिर चकराना, बालों की वृद्वि, पीलीया, यकृत रोग, मांस पेशियों की क्षीणता, खुजली, मधुमेह, आमतिसार, ल्यूकोडर्मा आदि के लिए उपयोगी 16 लोकप्रचलित चिकित्सीय दावों को प्रतिवेदित किया है ।

4. भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन को केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), चेन्नई के भेषज अभिज्ञानीय विंग के माध्यम से चलाया जा रहा है । प्रतिवेदन अवधि के दौरान निम्नलिखित औषधियों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन किया गयाः-

क्र.सं.	औषधि का नाम	
1.	निरमुल्लि	हायग्रोफिला एयूरिकुलार हाईन (सम्पूर्ण पादप)
2.	आलम विझुथु	फिक्स बेनगा मेनसिस एल.
3.	कोट्टई करनतई	फेरेनथस इंडिकस एल सम्पूर्ण पादप
4.	अमनामुइलई	रिसिनस एल (पत्ते)
5.	इलवु	सीबा पेनतन्द्रा (एम) (तनाछाल)
6.	थन्निखीलन किजरंगु	असपरगासरेसमूस विल्ड
7.	तिप्पिलि	पाइपर लोंगम एल.(फल)
8.	वालमिलकु	पाइपर क्यूबेबा (फल)
9.	वगई	अलरिज्जीआ लेब्बेक एल.विल्ड (पत्ते)
10.	थुथुवलई	सोलनम् त्रिलोबतम (सम्पूर्ण पादप चूर्ण)

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद)बंगलूर के मानकीकरण विभाग द्वारा निम्नलिखित सिद्ध की तैयार औषधियाँ भौतिक रसायनिक अध्ययन किया गया । भेषजअभिज्ञानीय,भौतिक रसायनिक एवं टीएलसी तथा प्राणी अवभव पर भौतिक रसायनिक अध्ययन भी किया गया ।

I .तैयार औषधियाँ (सिद्ध)

भौतिक रसायनिक अध्ययन

1. पंचालवण पर्पम
2. पेरान्दापर्पम संख्या -2
3. रुमुखाचेंदुरम
4. चन्दामरुथा चेन्दुरम
5. कस्थुरिकारिप्पु
6. तलका चेन्दुरम

II . एकल औषधिः

भेषज अभिज्ञानीय एवं रसायन

(अ) पादप अवभव

भेषजअभिज्ञानीय - रसायनिक एवं टीएलसी अध्ययन

1. पेरान्डे - सिसिस् क्यूवाड्रनग्यूलेरिअस (तना)
2. थुम्बई - ल्यूकस असपेरा (पत्ते)
3. क्रांथई इलई - फेरानथस इंडिकस् (पत्ते)
4. करिथुम्बई - एनिसमलेस मालाबेरिका (पत्ते)
5. उथ्थमणि - परगुलेरिआ डेमिआ (सम्पूर्ण यादव)
6. मुरुंगापट्टई - मोरिंगा पेट्रीगोसपर्मा (तना, छाल)

(ब) प्राणी अभ्यब

भौतिक - रसायनिक अध्ययन

1. कोलिमुट्टई 2.कोलिमुट्टई पेनकारु 3. कोलिमुट्टईओडु
4. कोलिमुट्टई मंजालकारु 5. पसुचानम 6. पसुनिर
7. चनिप्पल

साहित्यिक सर्वेक्षण

1. मिलगरनई - तोडडालिआ एसुआतुकालम्
2. अमानककु - रिसिनस् कॉम्यूनिस.एल.
3. कोट्टई करनतई -फेरानथ सइंडिकस एल.

संग्रहण/अभिनिर्धारण

भेषजनिर्माण/विभाग में उनके प्रमाणीकरण हेतु निरुपण में मिश्रित औषधियों का अभिनिर्धारण किया गया । इसके अतिरिकत विश्लेषणात्मक/भेषजगुणविज्ञानीय/नैदानिक अध्ययन हेतु निम्नलिखित पादपों का संग्रहण एवं अभिनिर्धारण किया गयाः-

1. अवारई
2. इमबुरल
3. विस्पु करनथई
4. कुप्पाइमेनि

5. थुलासि
6. वल्लारुगु
7. अबुरि
8. नीर ब्राह्मी
10. ओथिन पटिटई
11. थागरई
12. सिनथिल
13. इशवरा मुलि
14. कंनड काथ्री
15. मरुथम पट्पई
16. नाथैसूरि
17. पिरानडई

उदभिदालय

सिद्ध चिकित्सा में प्रयुक्त किए जाने वाले 111 पादपों का उदभिदालय हेतु संग्रहण पहचान की गई तथा उदभिदालय पत्रकों में उन्हें आरुहित किया गया तथा उदभिदालय में उनका रखरखाव किया गया ।

संग्रहालय

150 कच्ची औषधियों का रखरखाव किया जा रहा है तथा एक छोटे से संग्रहालय जिसमें सिद्ध औषधियों के 175 औषध नमूनें हैं,का भी रखरखाव किया जा रहा है ।

5. भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम चेन्नई स्थित केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) को भेषज गुण विज्ञानीय अनुभाग द्वारा चलाया जा रहा है । निम्नलिखित एकल औषधियों/मिश्रित योगों पर उनकी कार्मुकता तथा उनके विषाक्तता प्रभाव को जानने के लिए अध्ययन किया गया:-

क्र.सं.	आवंटित औषधि	निर्धारित लक्ष्य	किए गए अध्ययन	टिप्पणी
1.	वीएस 1. अल्कोहल (सतव)	विषाक्तता एवं गाठियां प्रतिरोधी अध्ययन	चूहे में दर्द -पीड़ीत जाँच	औषधि में पीड़ाहर गतिविधि देखा गया ।
2.	बी.एस.(चूर्णम)	तदैव	तदैव	तदैव
3.	वी एस 3	तदैव	चूहे में तीक्षण विषाक्कता गर्म	चूहा -चूहे में गैर - विषाक्तता औषधि में पीड़ाहर गतिविधि देखा गया ।
4.	नेल्लिवत्रथ	विषाक्तता एवं यकृत संबंधी	चूहे में गर्म फीट पीड़ाहार अध्ययन	प्रारम्भिक स्तर पर पीड़ा हर प्रभाव देखा गया ।
5.	महावीर मझहु	विषाक्तता एवं गठिया प्रतरोधी अध्ययन	तीक्षण विषाक्तता	चूहा एवं चूहियाँ में गैर विषाक्तता
6.	आयुष भार पी	विषाक्तता अध्ययन	श्वेत चूहा पर उपन्तीक्षण अध्ययन	नेदानिक,जीव - रसायनिक हेमे हो थोजिकल, कृति विज्ञान के अधीन चूहा में विभिन्न अनुपान स्तर पर मिश्रित जाँच में कोई विनिटर्टस्टि अपसामान्य नही देखा गया ।
7.	आयुष ओस्टो	विषाक्तता अध्ययन	श्वेत चूहा पर उपन्तीक्षण अध्ययन चिरकालिक विषाक्तता अध्ययन	तदैव - यह प्रगति में है

8.	आयुष लिव	विषाक्तता अध्ययन	श्वेत चूहा उप-लीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन	तदैव
9.	आयुष रसायन	विषाक्तता अध्ययन	श्वेत चूहा उप-लीक्ष्ण विषाक्तता अध्ययन	यह प्रगति में है
10.	आयुष रसायन ब	तदैव	तदैव	
11.	अन्नाभेदी चैट्टम	तदैव	तदैव	नैदानिक,जीव - रसायनिक हेमे हो थोजिकल, कृति विज्ञान के अधीन चूहा में विभिन्न अनुपान स्तर पर मिश्रित जाँच में कोई विनिट्टर्स्टि अपसामान्य नहीं देखा गया ।

पीड़ाहारी अध्ययनः-

एड्डीस हॉट प्लेट थर्मल स्टीमूलस अध्ययन में 180 मिनट में अधिकत्तम 321 पीराहारी स्कोर देखा गया तथा महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया ।

एड्डीस हॉट प्लेट थर्मल स्टीमूलस करने पर 90 मिनट में अधिकत्तम 311 पीराहारी स्कोर देखा गया तथा महत्वपूर्ण पाया गया ।

बी.एस.1 औषधि की अलकोहल सत्व का चूहों में महत्वपूर्ण पीराहारी क्षमता पाई गई *

6. भेषज निर्माण / मानकीकरण् अनुसंधान कार्यक्रम

चिकित्सीय प्रभावकारिता के लिए प्रमाणिक औषधि योगों एंव वास्तविक एकौषधियों की प्राप्ति के लिए औषध मानकीकरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । सिद्व फार्मुलरी भाग - 1 एवं उन योगों में मिश्रित एकौषधियों के अध्ययन के लिए परिषद द्वारा मानकीकरण का कार्य किया जा रहा है । यह अध्ययन औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक,केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्व) चेन्नई को सौंपा गया है ।

कार्यक्रम के अंतर्गत एकल औषधि योग का अध्ययन,योगों के निर्माण हेतु प्रयुक्त औषध, निर्माण प्रक्रिया के साथ साथ अनके विश्लेषणात्मक मानक तैयार करने पर किया जाता है ।

एकल औषधियों की सूची जिनमें पादप रासायनिक अध्ययन किया गया है (विश्लेषित अध्ययन)

मानकीकरण

I कच्ची औषधियॉ

1. करेइ किझंगु
2. आकासगरूडन
3. कोट्टई करन्डई
4. अलमविझुदु
5. थेतरन्कोट्टई
6. पूवासुकई
7. कथनकोडि

II मानकीकरण (तैयार औषधी)

1. टुकरूप्पु
2. कस्थुरीकरूप्पु

3. थझम्पूमथिरई
4. लिंग चेन्दूरम I
5. लिंग चेन्दूरम II
6. लिंगम्
7. लिंग कट्टु
8. अन्नभेदी चेन्दूरम
9. वी एस -1

III. एच पी टी एल सी (फिंगर प्रिंटिंग)

1. ष्णुचक्रम
2. पडिगलिंगम् I, II और III
3. थालीसादि चूर्णम I और II
4. मयीलिरगदी चूर्णम्
5. मयना तैलम I और II
6. अमुक्करा चूर्णम्

एकल औषधि

1. कोट्टई करन्डई
2. कोरईकिझन्गु
3. वेम्बुपट्टई
4. कुडसपलइपट्टई
5. आकासगरूडन
6. इमबुनल मार्कर एलाइजरिन सहित

IV पादप - रसायन

1. बोर्रेरिया हिस्पिडा (नथईचूरी)
2. टर्मिनेलिया अर्जुना (मरूडमपट्टई)

7. भेषज निर्माण

केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) , चेन्नई में सिद्ध साहित्य में दिए गए विवरण के अनुसार औषधियों का निर्माण किया जाता है तथा परिषद के अंतर्गत कार्यरत सिद्ध चिकित्सा संस्थानों /एककों के लिए परीक्षण औषधियों का चयन किया जाता है ।

भेषज निर्माण के लिए कच्ची औषधियों की आपूर्ति प्रजाति वानस्पतिक सर्वेक्षण् परियोजनाओं तथा स्थानीय बाजार से की जाती है । तत्पश्चात संग्रहीत औषधियों की पहचान सिद्ध चिकित्सा क्षेत्र तथा भेषज अभिज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा की जाती है ताकि उनकी विशुद्वता / प्रमाणिकता का निर्धारण किया जा सके ।

फार्मेसी में औषधियों को तैयार करने के लिए शास्त्रों में वर्णित विधि का सख्ती से अनुपालन किया जाता है अनुसंधान और सामान्य प्रयोग के लिए आवश्यक फार्मेसी में विभिन्न प्रकार की औषधियॉ - यथा पर्पम, चेन्दूरम,चूर्णम, थैलम,नेई पर्पम,इन्नई,कल्कम आदि तैयार की जाती हैं । प्रतिवेदन अवधि के दौरान 1671.5 कि.ग्रा. चेन्दूरम,चूर्णम,पर्पम आदि तथा 2324.5 लीटर तैल आधारित औषधियॉ तैयार की गई ।

प्रतिवेदन अवधि के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित संस्थानों /एककों को तैयार औषधियों की आपूर्ति की गईः-

क्र.स.	संस्थान/एकक	औषधि कि.ग्रा.	औषधि (लीटर)
1.	के.आयु.सि.अनु.परि., नई दिल्ली	0.500	0.500
2.	नि. चि. अनु. एकक (सिद्व) पलायमकोट्टाई	4.000	50.000
	योग	4.500	50.000

8. वाङ्.मय अनुसंधान

सिद्व चिकित्सा पद्वति में वागंमय अनुसंधान कर कार्य वाडगमय अनुसंधान और प्रलेख विभाग,चेन्नई द्वारा किया जाता है । प्रतिवेदन अवधि में निम्नलिखित कार्य किए गए -

1. क।गनार कदइक्कन्दम - 1000
2. संगमुनी विष्ठा वैद्यम - 100 (अंग्रेजी और हिन्दी संस्करण)
3. सिद्व मरूथवा इलिया वझक्कु मुरइगल - (पाचवां संशोधित संस्करण्)

9. प्रकाशन एवं सहभागिता (सिद्ध)

I. प्रकाशन

क्र.स.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	पत्रिका का नाम	प्रकाशन
1.	के. अनबरसी एवं अन्य	इफैक्ट ऑफ बकोसाइड-ए ऑन मैम्बरेंस बाऊंड ए एटी पासेस इन द ब्रेन ऑफ रेट्स एक्सपोजड टू सिगरेट समोक	जे. मोल. टॉक्सिकोल, खण्ड-19 (स. 1) -59-65	2005
2.	के. अनबरसी एवं अन्य	किंएटाइन आइसो एन्जायम पैटर्नस् अपॉन क्रॉमिक एक्सपोजर टू सिगरेट स्मोक प्रोटैकिटव इफैक्ट ऑफ बकोसाइस	वसकुलर फार्माकोल खण्ड-4 (स. 2) -57-61	2005
3.	के. अनबरसी एवं अन्य	इफैक्ट ऑफ बकोसाइड-ए ब्रेन एटी ऑक्सीडेंट स्टेट्स इन सिगरेट स्मोक एक्सपोजड रेट्स	लाइफ साईंस खण्ड-28 1378-84	2006
4.	एस. इट्टी एवंअन्य	5,3 डिहाइड्राक्सी 3,7,4,5 टेट्रामेथोक्सी फले वोन	एक्टा क्रिस्टलोग्राफी सैक्शन -इ, खण्ड - 61 846-48	2005
5.	मनोन्मनी एवं अन्य	इफैक्ट ऑफ टर्मिनेलिया अर्जुना ऑनाद एंटींऑक्सीडेंट डिफेंस सिस्टम इन एल्लोसेन इडयूज्ड डायबिटिज इन	बायोमेडिसन, खण्ड -22,52-61,2002	2005

		रेटस		
6.	के.पंडीकादेवी एवं अन्य	प्रोटेक्टिव इफैक्ट ऑफ प्रेमना टोमेन्टोसा एक्सट्रैक्ट ऑन एक्टामेनोफन इंडयूज्ड मायटोको ड्रियल डिसफंक्शन इन रेट्स	मोल. सैल. बायो कैम. खण्ड -272, 171-177	2005
7.	एम.वी.वी.प्रसाद एवं अन्य	हेपटोप्रोटेक्टिव एक्टीविटी ऑफ डिस्मोडियम गंगेशनम्	एशियन जो.चैम-खण्ड17, 2 847-49	2005
8.	सी.संतोष कुमारी एवं अन्य	लिपिड लोवरिंग एक्टिविटी ऑफ एक्लिप्टिक प्रोस्ट्रेटा इन एक्सपैरिमेंटल हायपरलिपिडेमिया	एथनोफॉर्माकॉल. खण्ड - 105,332-335	2006
9.	एस.डी.शण्मुग कुमार एवं अन्य	एर्टीमाइको बैक्टीरियल प्रोपर्टीज ऑफ लीफ एक्सट्रैक्ट ऑफ पिथेयुलोबियम डुलु	इंडियन ड्रग्स खण्ड 42 (6) 392-96	2005
10.	एस.डी.शण्मुग कुमार एवं अन्य	फार्माकॉग्नोस्टिक इंवैस्टीगेशनस ऑन लीफ एक्सट्रेक्ट ऑफ पिथेसिलोबियम डुलुस -ए प्रोमिसिंग एंटीटुबेरूलर ड्रग्स रिसेंट ट्रेंडस इन प्लांट साईंस	एड.पुल्लीहा रिजेंसी पब्लिकेशन,नई दिल्ली 2005	2005
11.	ए.उमा.देवी एवं अन्य	फायटोकैमिकल इंवैस्टीगेशनस इन द लीवस ऑफ फ्लेविरिया त्रिने रविया	नेट प्रोड. साईस, खण्ड-11(स.1) ,13 -15	2005
12.	एस.उस्मान अली एवं अन्य	कंट्रीब्यूशन टू द बोटैनिकल अडंरस्टैण्डिंग ऑफ पूचन्दिरा पट्टइ - ए - प्लांट ड्रग्स् ऑफ सिद्व	जे. इकान. टैक्सॉन. बोट. खण्ड 29, 372-374	2005

		मेडिसन		
13.	एस. वसंथा एवं अन्य	स्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ इवोल्वुलुस अल्सीनॉयडस	कन्वर्जेंस खण्ड-7, 1-4	2005

II. सहभागिता

क्र.स.	लेखक का नाम	लेख का शीर्षक	संगोष्ठी का नाम
1.	वी.एम.चेल्लादुरइ एडमासोरन सुब्रामण्यम	हर्बस युज्ड इन द वर्म थैरपी	सी सी आर ए एस और विवेकानदं केंद्र द्वारा 12-13/8/2005 तक कन्याकुमारी में आयोजित " वर्म थैरपी " पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
2.	एम.एस.लक्ष्मी माधवी एवं अन्य	एफिकेसी ऑफ सिद्व एक्युटा इन वूंड हीलिंग	सी आर आई, चेन्नई में 30-1-2006 को ग्लोबल रिपोजिशानिंग ऑफ इंडियन लैदर प्रोडेक्ट
3.	एम.पदमासोरण सुब्रामण्यम एवं वी चेलादुरई	ए स्टडी ऑफ नेचुनल डायस	सैटजेवियर कॉलेज, पलायमकोट्टई में 8-10/12/2005 तक आयोजित " बायोप्रोस्पैक्टस ऑफ बायोरिसिज "
4.	सी.रमेश एवं अन्य	स्टैण्डर्डाजेशन ऑफ नागपर्पम ए हर्बो मैटेलिक फार्मुलेशन	स्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ मैटेलिक एण्ड मिनरल सिद्व प्रेपेरेशन्स रोल ऑफ माडर्न इर्स्ट्रूमेंटस 2/2006
5.	ए.सरस्वती एवं एल एस मर्सी	एंटीबैक्टीरियल एक्टीविटी ऑफ कुन्कीलिया पर्पम	कै. श्री.अनु.स.,चेन्नई में 7-8/7/2005 तक आयोजित " मार्डन विस्टास ऑन स्टैण्डडाइजेशन एण्ड जी एम पी ऑफ आई एस एम ड्रग्स पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
6.	एस.डी.शण्मुग कुमार एवं अन्य	इन विटरो एसैसी. ऑफ एंटीफंगल एण्ड एंटीट्यूबरकुलर पौटैशियलस ऑफ द लीफ एक्सट्रैक्ट ऑफ पिथेसिलोबियम डुल्स	बी एस आई, देहरादून में 24-26 /10/2005 तक आयोजित " इंडियन बोटेनिकल सोसायटी की 28वीं संगोष्ठी "

7.	टी सुमती एवं अन्य	इन्हेबिटरी इफैक्ट ऑफ बकोपा मोनिएराऑन मोरफाइनइंडयूज्ड फार्माकॉलोजिमल स्टडी इन गाईस	कै. श्री औ.अनु.स., चेन्नई में 7-8/7/2005 तक आयोजित " मार्डन विस्टास ऑन स्टैण्डडाइजेशन एण्ड जी एम पी ऑफ आई एस एम ड्रग्स पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
8.	जी अजीवनन एवं ए सरस्वती	एक्स आर एफ एण्ड एक्स आर डी एनलायासिस ऑफ चिंतामाणि चेंदूरम	स्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ मैटेलिक एण्ड मिनरल सिद्व प्रेपेरेशन्स रोल ऑफ माडर्न इर्स्ट्रूमेंटस 2/2006
9.	एस.उमादेवी एवं अन्य	फायटो-कैमिकल इंवैस्टिगेशन ऑफ द लीवस् ऑफ फलेविरिया ट्रीनेटिसिया	कै. श्री औ.अनु.स., चेन्नई में 7-8/7/2005 तक आयोजित " मार्डन विस्टास ऑन स्टैण्डडाइजेशन एण्ड जी एम पी ऑफ आई एस एम ड्रग्स पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
10.	एस. वसंथा एवं अन्य	स्टैण्डर्डाजेशन स्टडी ऑन नन्दुक्कल पर्पम	कै.अनु.स.सि, चेन्नई में 11.12/2/2006 तक आयोजितस्टैण्डर्डाइजेशन ऑफ मैटेलिक एण्ड मिनरल सिद्व प्रेपेरेशन्स रोल ऑफ माडर्न इंर्स्ट्रूमेंटस " पर कार्यशाला
11.	जी वेलुचामी	थैलमस यूनीक ऑन सिद्व सिस्टम एन एप्राइजल	एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय कायम्बटूर में 2006 को आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फेंस ऑन ग्लोबलाइजेशन ऑफ ट्रेडिशनल कंप्लीमेंट्री एण्ड आल्टरनेटिव सिस्टम ऑफ मेडिसिन

IV. आभार

शासी निकाय, वित्त समिति एवं वैज्ञानिक परामदात्री समितियों के सदस्यों द्वारा की गई सेवाओं का परिषद निदेशक अत्यंत प्रशंसा करते हुए परिषद के कार्य संचालन में इन सभी के बहुमूल्य योगदान, मार्ग दर्शन एवं निरंतर सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते है ।

परिषद निदेशक विभिन्न पद्धतियों एवं संबद्ध विभागों के उन सभी वैज्ञानिकों, विद्धानों, विश्वविद्यालयों और सरकारी ऐजेंसी का जो इस परिषद से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंद्ध रहे हैं तथा मुख्यालय सहित सभी परियोजनाओं के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी प्रतिवेदन अवधि के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यन्वित करने में दिये गये सहयोग के लिए धन्यवाद करते है ।

परिषद, आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का उनके निरतंर समर्थन, सहायक दृष्टिकोण तथा सहयोग के लिए धन्यवाद करती है, जिसने परिषद को अनुंसधान के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को बढ़ाने में सहयोग दिया तथा आशा करती है कि आयुर्वेद एवं सिद्व चिकित्सा पद्धति के संपूर्ण विकास के लिए भविष्य में भी निरंतर समर्थन एवं सहयोग मिलता रहेगा ।

परिषद अपने उपनिदेशक (तक), कार्यक्रम अधिकारियों, सांख्यिकी अधिकारी, नोडल अधिकारी तथा अनुसंधान अधिकारी आयुर्वेद का वार्षिक प्रतिवेदन को तैयार करने में सतत सहयोग देने के लिए आभार प्रकट करती है । वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी रूपांतर तैयार करने के लिए परिषद अपने राजभाषा विभाग का भी धन्यवाद करती है ।

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN AYURVEDA AND SIDDHA

ANNUAL PROGRESS REPORT

2005-2006

अंग्रेजी रूपान्तर

(ENGLISH VERSION)

CONTENTS

Sl. No.	Subject	Page No.
I.	**Preface**	1–4
II.	**Administrative Report**	5–17
III.	**Technical Report**	
A.	**AYURVEDA**	
1.	Abbreviations used for Institutes/Centres/ Units	18–19
2.	Clinical Research Programme	20
	(a) Clinical Therapeutic Trials	20–38
	(b) Statement showing disease groups, number of patients studied and participating projects during 2005-06.	38-39
	(c) Statement of the patients attended at OPD and admitted/ discharged in the IPD during 2005-06.	39–40
	(d) Health Care Research Programme	40-42
3.	Medico-Ethno-Botanical Survey Programme	43-46
4.	Cultivation of Medicinal Plants	47–51
5.	Musk Deer Breeding Programme	52
6.	Pharmacognosy Research Studies	53–54
7.	Plant Tissue Culture	55–56
8.	Drug Standardization Research Programme	57–64

Sl. No.	Subject	Page No.
9.	Pharmacological Research Programme	65–69
10.	Literary Research Programme	70–71
11.	Family Welfare Research Programme	72–75
12.	Sowa-Rigpa (Amchi) Research Programme	76--77
13.	Publications/Participations	78–96
B.	**Siddha**	
1.	Abbreviations used for Institutes/Units	97
2.	Clinical Research Programme	98–101
3.	Medico-Botanical Research Programme	102–104
4.	Pharmacognosy Research Programme	105–107
5.	Pharmacology Research Programme	108–109
6.	Pharmaceutical/Standardization Research Programme	110–111
7.	Pharmacy	112
8.	Literary Research Programme	113
9.	Publications/Participations	114–116
IV.	**Acknowledgement**	117

I. PREFACE

Central Council for Research in Ayurveda and Siddha an autonomous body under Department of AYUSH, Union Ministry of Health and Family Welfare is an apex national body in India for undertaking, co-coordinating, aiding, formulating, development and promoting research on scientific lines in Ayurveda and Siddha. The activities are carried out through 38 Institutes/Centres/Units located all over India and also through some collaborative studies with various Indian systems of medicine institutions, hospitals and also premier modern institutes. The Council is also financing suitable research studies of Ayurveda, Siddha and allied sciences. The emphasis is on finding effective and low cost remedies for various diseases through systematic research. The research activities of the Council include Clinical and fundamental research, Drug research, Literary Research and Family Welfare Research. Now, the Council has also stepped into the field of nutraceuticals and cosmaceutical research.

CLINICAL RESEARCH PROGRAMME:

During the reporting period, 22 clinical conditions studied in Ayurveda include: Amavata (Rheumatoid arthritis), Apasmar (Epilepsy), Arsha (Piles), Bhagandara (Fistula-in-ano), Grahani Roga (Malabsorption syndrome), Gridhrasi (Sciatica), Kitibha (Psoriasis), Madhumeha (Diabetes mellitus), Manodvega (Anxiety neurosis), Mutrasmari (Urinary calculi), Medoroga (Lipid disorders), Parinama shula (Duodenal ulcer), Pakshaghata (Hemiplegia), Pangu (Paraplegia), Slipada (Filariasis), Tamaka Swasa (Bronchial asthma), Timir Roga (Error of refraction), Visamajvara (Malaria), Vyanabala Vaishmaya (Hypertension), Kamala (Jaundice), Atisara (Diarrhoea) and Pravahika (Dysentery).

Under Siddha system of medicine, 9 clinical conditions studied are: Kalanjaga Padai (Psoriasis), Vatha soolai (Arthritis), Karappan (skin diseases), Yanaikkal Noi (Filariasis), Santhu Vath Soolai (Rheumatoid arthritis), Enumbu Murivu Chikichai (Bone setting), Eraippu Noi (Bronchial asthma), Venpadai (Leucoderma) and Neerezhivu (Diabetes mellitus).

Medical aid to 4,63,306 patients through Out Patient Department and 2549 patients at In-door Patient Department were provided, 2621 cases were studied on 22 clinical conditions in Ayurveda while in Siddha system, 586 cases were taken up at different Institutes/ Centres/ Units of the Council during the reporting period.

HEALTH CARE RESEARCH PROGRAMME:

Health Care Research studies being carried out by the Council includes Tribal Health Care Research Programme. It is modulated to have rural bias so that benefit of the research programme can reach to the grass-root level. Under this programme, a team of physicians visit each and every house in the selected/adopted villages/tribal pockets and provide incidental medical aid besides collecting data pertaining to frequency of prevalence diseases, food habits with regards to various seasons, socio-economic status, availability of natural resources, standard of living and the types of treatment available to the rural/tribal folk. During the visit, the physicians also try to educate the rural /tribal folk about the ways and means of healthy living and the therapeutic usefulness of the herbs available. During the period under report, a population of 32,202 individuals pertaining to 39 villages have been covered and incidental medical aid provided to 18,162 patients.

DRUG RESEARCH PROGRAMME:

Medico-Ethno-Botanical Survey, Cultivation of Medicinal Plants, Musk Deer Breeding, Pharmacognosy, Plant Tissue .Culture, Drug Standardization and Pharmacological/Toxicological Research Programmes are under the Drug Research Programme. Under Medico-Ethno-Botanical Survey Programme 13 Survey tours (Ay. -7, Siddha-6), 76 local tours (Ay. -73, Siddha-3) and 4 market surveys (Ay.2, Siddha-2) were conducted and 1002 plant species (Ay.-591, Siddha-411), 329 raw drugs besides 131 museum samples (Ay.126, Siddha-5) were collected. The Survey units have also maintained their Herbarium and Museums. Approx.382 medicinal plant species along with 14081 guggulu plants are presently growing in different medicinal plant gardens. 1024.25 kg. of raw drugs (Ay.774.25 kg., Siddha 250 kg.) (dry and fresh) were collected from the different gardens and requisite quantity was supplied to different institute for research purposes. Pharmacognostical studies on 47 drugs (Ay-31, Siddha-16) and Pharmacological/ Toxicological studies on 36 drugs (Ay-25, Siddha-11) used in Ayurveda and Siddha systems of medicine have been carried out.

Under Drug Standardization Research Programme, 82 single plant origin (Ayurveda-75, Siddha-7), 2 mineral origin drugs, 40 compound preparations (Ay.-31, Siddha-9), 5 Asava/Arista, 270 other formulations required for clinical trials have been standardized. TLC/HPTLC studies have also been incorporated in addition to determination of heavy metal and pesticide residue in certain formulations.

Under the WHO Biennium programme "Standardization and toxicity studies of Ayurvedic Formulations", five formulations have been prepared and their standard operating procedure (SOP) and standardization studies have been completed. Under the project "Feasibility of introducing ISM at PHC Level" preparation and testing of 14 selected formulations is at final stage for development of Standard Operational procedure (SOP) and Standards.

A Musk Deer Breeding Farm is also being maintained by the Council at Mehroori in Kumaon hills and there are 18 animals at the end of reporting period.

LITERARY RESEARCH PROGRAMME:

Medico-historical studies, collection and compilation of references relating to drugs and diseases from classical treatises, lexicographic works, contemporary literature and publications of Ayurveda, Siddha and modern sciences were continued further under the Literary Research Programme. The Council is bringing out, "Journal of Research in Ayurveda & Siddha", "Bulletin of Medico-Ethno-Botanical Research", "Bulletin of Indian Institute of History of Medicine" besides the "News Letter". During the reporting period backlog of JRAS and BMEBR has been cleared.

The Publication Division of the Council's Hqrs. Office published the VIIth Vol. of the "Database on Medicinal Plants used in Ayurveda" and also another book "Parameters for quality assessment of Ayurveda and Siddha Drugs" besides reprinting IInd and IIIrd volumes of the Data base on Medicinal Plants used in Ayurveda as well as reprinting four monograph/booklets namely Common Healing Herbs, Samanya Roga Hara Vanaspati, an Ayurvedic Home remedies in Hindi and English and Siddha Vaidhya Saral Upchar Pranali.

Some of the rare works that have been translated and published during the period include Vaidya Manorma, Rasa Manjusha & Vaidhyak Samgaraha and translation of Yoga Sara in Hindi. The Literary Cell of the Council's Hqrs. in association with Hindi Unit initiated translation work of ancient manuscripts and rare works of Ayurveda, which include Ashtang Samgraha, Abhinav Chintamani. The Council also undertook the publication of the textbook of Shalya Tantra comprising about 30 chapters by 30 contributors/authors and processed the editing of the 16 chapters received from 16 contributors.

FAMILY WELFARE RESEARCH PROGRAMME:

Clinical and Pharmacological research studies carried out so far in the field of Family Welfare Research Programme resulted in the development of Pippalyadi Yoga, an oral contraceptive and 'Neem oil' as spermicidal agent. 143 new cases were studied besides 368 old cases carried forward from the previous year for clinical evaluation of contraceptive agents – Pippalyadi Yoga and Neem oil. Under Reproductive and Child Health programme, Balakasa, Bala Daurbalya, Balatisar and Shishu and Bala Paricharya (Neonatal and childcare) were taken up, total 160 cases were studied.

SEMINARS, CONFERENCES & WORKSHOPS:

Under the auspicious of World Health Organization, the Council has successfully organized a two days Seminar on Integrated Medicine (Ayurveda and Siddha)-Scope and Challenges on 25 to 26th May, 2005 at New Delhi. A five days Training Programme on 'Statistical Methods in Clinical Trials' was organized by the Council from 26 to 30.9.2005 at New Delhi. A two days Workshop on Bio-statistics and Research Methodology (WHO Biennium 2004-05) was organized by the Council on 23 to 24th December, 2005 at AYUSH auditorium, New Delhi. Again, Council organized a three days National Workshop on "Medical (Scientific and Technical) writing" sponsored by Commission for Scientific and Technical Terminology, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India on 21 to 23rd March, 2006 at New Delhi. Council's Research Institutes also organized as well as participated in 20 other seminars/ workshops/Melas etc. Research scientists of the Council have participated in a no. of National and International Seminars/Conferences/Workshops and Training Programmes.

(G.S.LAVEKAR)
Director
and Member – Secretary
Governing Body, CCRAS

Dated:03-8-2006

II. ADMINISTRATIVE REPORT

The Central Council for Research in Ayurveda and Siddha is a Society Registered on 30th March, 1978 under Societies Registration Act XXI of 1860. During the period under report ending 31st March, 2006 the members of the society and Governing Body of the Council were as under:-

President:	..	Dr. Anbumani Rama Doss Union Minister of Health & F.W.
Vice-President:	..	Dr. P.N.V. Kurup
Official Members:		
1. Secretary (AYUSH)	..	Smt. Uma Pillai (Upto 31-01-2006)
	..	Sh. Vijay Singh (w.e.f. 01-02-2006)
2. Joint Secretary(AYUSH)	..	Sh. Tara Dutt (upto 15-6-2005)
	..	Sh. Shiv Basant (w.e.f.15-06-2005)
3. Joint Secretary(FA)	..	Sh. Arun Sharma
Non-Official Members:	1.	Dr. (Ms.) P.V. Tewari
	2.	Dr. P.K. Warrior
	3.	Vd. D.K. Triguna
	4.	Vd. Balendu Prakash
	5.	Dr. Anil Kapoor
	6.	Dr. P.C. Bhattacharya
	7.	Dr. G. Thiagarajan
	8.	Dr. I. Chelladurai
	9.	Dr. S.K. Gupta
	10.	Dr. G.T. Panse
	11.	Dr. M.Sanjappa
	12.	Dr. D. Nagaraja

Director, NIA, Jaipur	Dr. B.L. Gaur
Director, NIS, Chennai	Vacant
Member-Secretary, Director, CCRAS	Dr. G.S. Lavekar

During the period under report meeting of the Governing Body was held once.

FINANACE COMMITTEE

The Standing Finance Committee consisted of the following:-

1.	Sh. Tara Dutt (upto 15-06-2005) J.S. (AYUSH)	Chairman
	Sh. Shiv Basant (w.e.f.15-6-2005) J.S. (AYUSH)	Chairman
2.	Dr. Sanjiv Misra A.S.(F.A.)	Member
3.	Vd. D.K. Triguna	Member
4.	Dr. G.Veluchamy	Member
5.	Director, CCRAS	Member-Secretary.

During the period under report, the Standing Finance Committee met two times and considered and approved proposals related to financial matters.

Representation of Scheduled Caste/Scheduled Tribe in the Council services and Welfare measures for SC/ST.

The Council is following the orders and guidelines issued from time to time by the Government of India in respect of reservation and representation of SC/ST in the services of the Council. The recruitment/promotion is done according to the roster points. The Council is having a total strength of employees in different groups on 1-1-2006 as under:-

Group	Number of employees	SC Employees	% age of total employees	ST Employees	% age of total
A	203	29	14.29%	10	4.93%
B	59	10	16.95%	1	1.69%
C	598	99	16.56%	33	5.52%
D	568	212	37.32%	60	10.56%
Total	1428	350	24.51%	104	7.28%

The Council is having one Tribal Health Care Research Project (Ay.), which has been located in a tribal pocket. The programme launched by this project envisages great scope not only to understand the local health problems and interdependent issues but also to identify and apply/advise the methods and measures suitable to surmount them. Besides some of the Research Institutes/Centres/Units are also located in rural areas and through OPD/IPD of these Institutes/Centres and under Community Health Care Research Programme, medical relief and health benefit have been extended to a large number of SC/ST population. The budget of the Council stipulated specific allocations for SC/ST component plans.

SCIENTIFIC ADVISORY COMMITTEE (AY.)

During the period under report, the Scientific Advisory Committee (Ayurveda) consisted of the following: -

1.	Dr. Kanubhai Govindji Mavani	Chairman
2.	Dr. K. Raghunathan	Member
3.	Dr.S.S. Savrikar	Member
4.	Dr. Tashi Yangphel Tashigang	Member
5.	Dr.(Mrs.) Malati G. Chauhan	Member
6.	Dr. S.K. Sharma	Member
7.	Dr. Adhisaya Raj	Member
8.	Dr. K. Sankaran	Member
9.	Mr. Subhash Laxmanrao Govindwar	Member
10.	Dr. Arvind Pandey	Member
11.	Dr. B.L. Gaur	Member
12.	Director, Dr.A.L.R.C.A, Chennai	Member
13.	Dr. G.S. Lavekar	Member-Secretary

During the period under report, the Scientific Advisory Committee (Ay.) met twice.

SCIENTIFIC ADVISORY COMMITTEE (SIDDHA)

During the period under report, the Scientific Advisory Committee (Siddha) consisted of the following:-

1.	Dr. C.N. Deivanayagam	Chairman
2.	Dr. M.A. Kumar	Member
3.	Dr. V. Arunachalam	Member
4.	Dr. Jeyaprakash Narayanan	Member
5.	Dr. V.R. Seshadri	Member
6.	Dr. Sellamuthu	Member
7.	Prof. G. Ganapathi	Member
8.	Dr.G. Anbuganapathi	Member
9.	Director, National Institute of Siddha, Chennai	Vacant
10.	Dr.G. Veluchamy, Director, Central Research Institute, Chennai.	Member
11.	Dr. G.S. Lavekar, Director, CCRAS	Member-Secretary

Organisational Network of CCRAS

There are 10 Central Research Institute, 15 Regional Research Institutes, one Regional Research Centre, one Tribal Health Care Research Project, one Research Centre on Tibetan Medicine (Amchi), one Medicinal Plants Garden in Siddha System of Medicines at Mettur under direct supervision of Central Research Institute (Siddha), Chennai; Indian Institute of History of Medicine-Hyderabad; ALRCA and CSMDRIA, Chennai; Ayurvedic Research Unit-Bangalore; CRU(Ay.)-Kotakkal and RCH/FWRP, Ahmedabad; DSRP-Jamnagar, CRU & SMPU (Siddha) – Palayamkottai and LRDD-Chennai.

BUDGET PROVISION

The following Table shows the budgetary provision made for the Council at a glance.

Scheme	B.E. 2005-2006 (Rs. in lakhs)	Funds Released 2005-2006 (Rs. In lakhs)	Actual Expenditure 2005-2006 (Rs. in lakhs)
Plan	1250.00	1249.99	1371.15
Non-Plan	2756.00	2573.90	2839.29

The Accounts of the Council for the year 2005-06 has been audited by the DGACR.

Official Language Implementation Committee

The Council is having an official Language Implementation Committee under the Chairmanship of the Director, CCRAS to rview the position regarding implementation of official language act/policy/rules, orders, programmes etc. and to suggest measures for increasing the pace of Hindi in the Council. During the period under report, the Committee met on 7th June 2005 and 19th Dec., 2005.

Seminar/Conference/Workshop

1. National Seminar on Modern Vistas in Standardization and GMP of ISM Drugs

A two days Seminar on "Modern Vistas in Standardization and Good Manufacturing Practice of Indian System of Medicine Drugs" was conducted by Captain Srinivas Murti Drug Research Institute for Ayurveda (CCRAS) on 7th & 8th July, 2005 at Vijay Park Hotel, Chennai.

Mrs. Pillai, Secretary, ISM, Govt. of India inaugurated the function and stressed about the standardization of Indian drugs. Mr. M.F. Farooqui, State Special Commissioner of Indian Medicine was also present. Dr. G.S. Lavekar, Director, CCRAS, New Delhi delivered the welcome speech and keynote address.

During the welcome & keynote address Dr. Lavekar said that though India has an edge over China in traditional knowledge on herbal medicines, the share of exports of herbal products was much smaller in comparison due to lack of standardization. The keynote address given by him inspired the Chennai staff to contribute much work in the field cf research.

Many Ayurvedic physicians from all over the country attended the Seminar and presented their research papers.

The Seminar was attended by over 100 delegates from all over the country. It provided a platform for scientists, academicians, industrialists, researchers and students. 50 Research papers in various scientific sessions were presented and discussions were held about the presentation.

2. Maditssia Ayush-2005

The Council participated through Central Research Institute (Siddha), Chennai in Maditssia Ayush-2005 exhibition held from 22nd to 24th July, 2005 at Madurai. This exhibition was designed to highlight the salient features of AYUSH.

In the exhibition a stall was arranged by CRI (S) in such a manner that common people would understand the features of the systems. The stall gained the attention of the people by distributing pamphlets, brochures and leaflets both in Tamil and English.

Six types of books on Siddha medicines were made available to the public. About 195 books were sold out. The English editions of "Data base on Medicinal Plants used in Ayurveda, Vol. I-III" were appreciated by everyone. Charts and Raw drugs were also exhibited to intimate the knowledge of the public. More then 25,000 visitors visited the stall and were impressed. The public demanded for the sale of publication and charts related to medicines.

3. National Workshop on Parameters for Standardization of Ayurvedic Drugs

A National Workshop on Parameters for Standardization of Ayurvedic Drugs was organized at Nagpur on 23-24th July,2005. The Workshop was organized by the Regional Research Institute (Ayurveda), Nagpur in collaboration with the Deptt. of Pharmaceuticals Sciences, Nagpur. The Dept. of AYUSH sponsored the Workshop.

Hon'ble Minister of Nagpur, Shri Satish Chaturvedi inaugurated the ceremony. Dr. G.S.Lavekar, Director, CCRAS, New Delhi was the President for the function and Dr. D.N.Khone, Dy. Director of Ayurveda, Deptt. of Medical Education, Mumbai was the Guest of Honour.

The Workshop was concluded on 24th July 2005. The closing ceremony was presided over by Dr. Ved Prakash Mishra, Chairperson, MCI. The chief guest for the function was Dr. Anand Omprakash, Director, School of Pharmaceutical Sciences, Gwalior. The Guest of Honour was Dr. R.B. Songawa, Joint Director, Deptt. of ISM, Bhopal.

4. Seminar of policy maker on "Sexual Reproductive Health & Right"

A Seminar of policy maker on "Sexual Reproductive Health & Right" was held on 31st December, 2005 at Hotel 'Sishmo, Bhubaneshwar organized by Family Planning Association of

India, Bhubaneshwar Branch. Seminar was inaugurated by Dr. B.K.Das, Director (Family Welfare) Govt. of Orissa. Seminar was focused on 'Population growth, myth & misconception', 'Pre-sex selection & Pre-elimination of girl child' & 'translating sexual & reproductive rights in reality'. Dr. Aneeta Chaudhary, Medical Officer of Family Planning Association of India, Bhubaneshwar proposed a vote of thanks at the end of Seminar.

5. Herbal Trade Fair Confluence - 2005

'Herbal Trade Fair Confluence-2005' was organized by NGO "Sambandh" in collaboration with NABARD, OTELP and ACTION AID from 17th to 23rd November, 2005 at Adivasi Exhibition Ground,Unit-1, Bhubaneshwar. It was inaugurated by Mr. Arbind Behera, Commissioner-cum-Secretary, R.D.Deptt., Govt. of Orissa. There was sale of Medicinal Plant Products, raising consciousness among traditional Vaidyas for cultivation of Medicinal Plants, activities through self help groups and health check-up as well as supply of medicines. Mr. Ballabh Majhi, Minister of State for SC & ST Welfare Deptt.,Govt. of India attended the valedictory ceremony.

6. Medical Camp at 30th Kalachakra Festival

Regional Research Institute (Ayurveda), Vijayawada installed a stall & organized free medical checkup camp in 30th Kalachakra Festival held at Amaravati, Guntur District, Andhra Pradesh from 5th to 16th Jan.,2006. They also exhibited Council's activities & publications. Stall was inaugurated by Smt. Vijaylaxmi, District Collector, Guntur.

Sri Kanna Lakshminarayana, Honorable State Minister for Co-operative visited the stall and appreciated the organization. More then 3000 pilgrims visited the stall. Majority of pilgrims & patients were Buddhists, Saints, Monks & Foreigners.

7. Medical Camp at Guntur

Regional Research Institute (Ayurveda), Vijayawada organized two days free Ayurvedic medical camp at Chinna Jeeyar Ashram, Seetanagaram, Guntur District on 17th December, 2005. Patients suffering from Sandhivata, Vatavyadhi, Twakroga, Pratisyaya, Dourbalya, Udarsula, Kasa, Katisula etc. were provided free Ayurvedic medicines & treatment. According to organizers 376 patients availed the facilities of camp. They also distributed pamphlets & brochures about Institute & Ayurveda for propagation & feedback of patients.

8. Medical Camp at Pedana Village (A.P.)

Regional Research Institute (Ayurveda), Vijayawada organized a free medical treatment camp for Filariasis patients at Municipal office of Pedana Village, District-Krishna, Andhra Pradesh

from 21st to 22nd December, 2005. M.N.O.'s & P.H.C. Doctors were also involved in this camp. During the camp, team of Doctors alongwith Paramedical staff and local M.N.O.'s visited all endemic areas of this village door to door. Provided free Ayurvedic medicines & investigations to villagers. According the camp report the reason for enormously spreading of this disease is majority of the villagers are weavers, who stays more time in weaving pit which is dark with lot of mosquitoes. Several patients were also provided treatment in the camp. 177 filarial patients provided treatment during camp.

9. Arogya -2005 at RRI, Trivandrum

Regional Research Institute (Drug Research),Trivandrum set up a stall for exhibition during Arogya-2005 which was conducted at Chandra Sekharan Nair Stadium from 24th to 27th December 2005. Hon'ble Chief Minister of Kerala, Sh. Ooman Chandy inaugurated the exhibition & Seminar on Arogya-2005 on 25th December 2005. Sh.M.Vijayakumar, ex. Speaker and CPM District Secretary inaugurated the exhibition hall.

In the exhibition stall free consultation and treatment was also provided to patients who visited stall. A small sales counter was also there for CCRAS Publications. The importance of the medicinal plants and their use as home remedies were also explained to the visitors. Malayalam pamphlets regarding common disease and publications of Council were distributed during the exhibition for publicity. There was good rush in the stall during the exhibition and all visitors appreciated the good work and arrangement of Institute.

10. A Seminar on "The Management of Geriatric Disorders (Jaravyadhi)"

Dr. A. Lakshmipati Research Centre for Ayurveda, Chennai organized a two days Seminar on "The Management of Geriatric Disorders (Jaravyadhi)" from 19th to 20th August, 2005. It was sponsored by Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India.

Dr. K. D. Sharma. Deputy Director (Tech.), CCRAS said in his welcome address that Ayurveda & Siddha system has special expertise in treating problem of Geriatric. Dr. C. N. Deivanayagam, Former Director, Govt. Hospital for Thoracic Medicine said in his Presidential address that while the modern medicine had failed in treating properly the concept of ageing, the Ayurvedic system which highlights life style changes can make about into condition like osteoporosis and arthritis.

Seminar was divided into seven sessions on issues including Infection and Immunity in old age, Geriatric in Ayurveda and prevention of Geriatric problems. Inaugurating the Seminar Mrs. Sheela Ran Chunkath, advocated return to organic non-pesticides polluted food forms. Around 200

scientists from across the country belonging the various system of medicine, participated in the seminar.

11. An Exhibition during 57th Plenary session of All India Ayurvedic Congress

Central Research Institute (Ayurveda), Jaipur organized an exhibition during 57th Plenary session of All India Ayurvedic Congress at Birla Auditorium, Jaipur from 27th to 28th Sept., 2005. In the exhibition they exhibited Council's publications, Guggulu plants, charts & other materials. During the exhibition Sh. B. S. Shekhavat, Hon'ble Vice-President of India, Sh. Ashok Gahlot, Former Chief Minister of Rajasthan, Dr. S. K. Sharma, Advisor, Department of AYUSH, Govt. of India, "Padmashree" Vd. Devendra Triguna visited the stall. During exhibition about 2000 Ayurvedic physicians and general persons from all over the country visited the stall.

12. Arogya-2005 at Hyderabad

'Arogya-2005' held at People Plaza, Neck lace Road, Hyderabad from 10th to 13th November, 2005. The event was inaugurated by Dr. Ambumani Rama Doss, Honorable Union Minister of Health & Family Welfare, Govt of India by lighting the lamp. Dr. Y.S.Rajashekhar Reddy, the Honorable Chief Minister of Andhra Pradesh, Mrs. Panabaka Lakshmi, the Honorable Union Minister of State for Health & Family Welfare also lighted the lamp to mark the auspicious inauguration of 'Arogya-2005'. Smt. Uma Pillai, IAS, Secretary, Department of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India, delivered the welcome address to guests in the event. Dr. Rama Doss, addressed the dignitaries of the event. Council also participated in the event. Display of Ayurvedic drugs & live medicinal plants, display & sale of Council publications were main attraction of Council Pavilion. Council also installed touch screen & circuit T.V. for ready access to various aspects. Dr. G.S. Lavekar, Director, CCRAS was also there to represent the Council.

13. Sanjivani -2006 at Vashi

'Sanjivani-2006'was held at Modern College Ground, Vashi, Navi Mumbai from 12th to 15th January, 2006. This event was organized by Times Wellness and Axion, it was promoted by Prajapati Construction and sponsored by 'Yoga Vidya Pranic Healing'. 'Sanjivani-2006' was inaugurated by Sh. Suvidh Sanghvi, District Governor, Lions Club International. This exhibition was the combined presentation of Ayurveda, Homoeopathy, Naturopathy, Unani, Acupressure, Acupuncture, Suzoke, Reflexology, Magnet therapy, Crystal therapy, Pyramid therapy, Aroma therapy, Pranayam, Dhyanyoga etc. medical systems.

Central Research Institute (Ayurveda.), Mumbai also installed a stall for Central Council for Research in Ayurveda & Siddha. Special attraction for the Councils stall was the exhibition of

Council's publication for propagation & sale. During exhibition Council sold out publication for Rs.11,566/-. During exhibition Institute's physicians also provided free health checkup & consultancy on Ayurveda for the visitors.

14. Health Mela at Pullichapullam

A Health Mela on Ayurveda was held on 27th February,2006 at Pullichapallum, Vanur Taluk, Villuipuram District,Tamilnadu. The Mela was inaugurated by Dr. Anbumani Rama Doss, Honorable Union Minister of Health & Family Welfare. During the occasion, RRI (S), Pondicherry, installed a stall for Council. In the stall Council's activities have been displayed in the posters and explained to the visitors. Live medicinal plants were also kept in the stall and their uses were explained to the visitors and patients. Council publications were also exhibited. Medical advises & the significance of Siddha aspects just as diet, rural health, prevention of diseases, Yoga practices and Family planning were explained to the patients. A total no. of 147 patients benefited the treatment for their ailments.

15. 5th International Seminar on Ayurveda

5th International Seminar on Ayurveda was held on 5th to 7th January, 2006 at Gujarat Ayurved University, Jamnagar. During the Seminar Regional Research Institute (Ayurveda), Junagarh participated in the exhibition. Exhibition was inaugurated on 5th January 2006. Prof. R.H.Singh, Vice-Chancellor, Rajasthan Ayurveda University, Jodhpur, Prof. S.S. Savarikar, Vice-Chancellor, Gujarat Ayurved University, Jamnagar and other dignitaries visited all the stalls of exhibition. All the dignitaries who visited the Institutes stall were welcomed by Dr. R.N. Acharya, R.O.-Incharge and explained about activities of the Council.

During exhibition many scientists, scholars, delegates including foreign delegates and interested persons visited the stall and appreciated the activities.

16. Multi -Media Campaign at Chennai

Multi-Media Campaign held at Meenambakkam, Chennai from 5th to 8th January,2006. Dr.A.Lakshipati Research Centre for Ayurveda, Chennai installed a stall during Multi-Media Campaign for the propagation of Council's activities & publications. During the Campaign, Council's publications, raw drugs, posters, charts and medicinal plants were exhibited. Brochures on Medoroga, Vyanabala Vaishmya and Citizen's Charter, activities of CCRAS/ALRCA were distributed free of cost to the public. Centre conducted free Ayurvedic consultations for the public. Total 539 patients were benefited by this Campaign. During this period centre also organized an interaction session on 'AIDS awareness' with the help of NGOs on open dias for the public inaugurated by Defence Ministry.

17. Health Mela at Ranipet

A Health Mela was conducted at Ranipet, Arkonam Parliamentary Constituency, Tamilnadu from 11th to 13th February, 2006. Central Research Institute (Siddha), Chennai also participated in the event. Institute installed a stall for the display of Council/Institutions activities and raw drugs. A free Medical Camp was also conducted. During the Mela a total number of 236 patients were treated. Medicines were dispensed free of cost. Council publications were also displayed for the sale and total amount of Rs. 2649/- worth of books were sold. They also distributed pamphlets & brochures for the propagation of Council's activities about the RCH medicines & life style disorders for the public information. Mr.R.Velu, Hon'ble Minister of State for Railway and District Collector of Arcot visited the stall and appreciated the activities of Council. A total number of 169 visitors visited the stall.

18. A Workshop on Role of Media in Rashtriya Grameen Swashya Mission

Regional Research Institute (Ayurveda), Patna and Deptt. of AYUSH, Union Ministry of Health & F.W. organized one day Workshop on Role of Media in Rashtriya Grameen Swasthya Mission on 8th February, 2006. During Workshop institute arranged an Exhibition of medicinal plants of Bihar & their utilization, and also arranged poster exhibition on food nutrition related to health. Sh. Chandra Mohan Rai, Minister, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of Bihar, Sh. Arjun Rai, Minister, Ministry of Information & Public Relation, Govt. of Bihar visited exhibition with the other delegates. During the event a report was presented on activities of Institution for tribal villagers.

19. Multi -Media Campaign held at Periyakulam

Multi-Media Campaign held at Periyakulam, Chennai from 28th to 31st January 2006. Dr.A.Lakshipati Research Centre for Ayurveda, Chennai installed a stall during Multi-Media Campaign for the propagation of Council's activities & publications. During the Campaign, Council's publication, raw drugs, posters, charts and medicinal plants were exhibited. Hon'ble Union Minister, Sh. Dayanidhi Maran, Ministry of Communications & Information Technology, Hon'ble Union Minister Shri Prakash Jaiswal, Union Minister of State, Home Ministry; Hon'ble Minister Sh. S.Raghupati, Union Minister of State, Home Ministry; Hon'ble Minister Smt.P. Lakshmi, Union Minister of State, Department of Health & Family Welfare and Sh. J.M. Aron,M.P. visited the stall of Council & appreciated the activities of Council. Smt.Lakshmi, evinced keen interest and enquired about the free Ayurvedic medical advice and free dispensing of medicine to the people/patients. Centre conducted free Ayurvedic consultations for the public. Total 597 patients were benefited by this campaign.

20. Book Fair at Aurangabad

National Book Trust & Marathi Prakashak Parishad organized a Book Fair in Zilla Parishad Ground, Aurangabad from 2nd to 11th Dec.,2005. It was inaugurated by Mr. Prabhakar Shrotriya, Director, Gyanpeeth. He said that literature culture is establishing unity in country, many writers, poets and literature lovers attended this function was example. During the inaugural function Sh. Arun Bhorkar Head of Deptt. N.B.T., Sh. Subeer Dutta, Dy.Director N.B.T. & Chief organizers of Mela, famous Hindi writer Uday Prakash, Dr. Nagnath Kottapalle, Vice-Chancellor Marathwada Vidyapeeth, Sh. Arun Kulkarni, Chief of Marathi Prakashan Mandir etc. were present on the stage. A lot of famous publishers installed their stall in the Book Fair. Publishers came from Delhi, Rajasthan, Maharashtra, Uttar Pradesh, Gujarat, Andhra Pradesh, Karnataka, etc. During this period. Organizers also arranged various cultural programmes for the visitors. People also gave grant for the fair during the period. R.R.A. P. C.R.I.(Ay.) Mumbai also installed a stall for the Council's publications. During the period Council's publications for Rs.2980/- were sold.

21. Training programme on "Statistical Methods in Clinical Trials"

The Council has successfully organized a five days Training Programme on "Statistical Methods in Clinical Trials" from 26th to 30th September, 2005 at AYUSH Auditorium, CCRAS HQrs., New Delhi for researchers, statisticians and officers of various institutes & research Councils of Deptt. of AYUSH.

Around 26 scientists participated in the training programme. All the resource persons, experts, observers and participants, appreciated the efforts of the Council in conducting this unique training programme and interactive session for the betterment of Ayurveda & Siddha.

22. Workshop on Bio-Statistics and Research Methodology

Under the auspicious of World Health Organization, the Council has successfully organized a two days Workshop on Bio-statistics and Research Methodology on 23rd to 24th December, 2005 at AYUSH Auditorium, CCRAS HQrs., New Delhi for researchers and academicians of national institutes & research Councils of Deptt. of AYUSH.

The Workshop was attended by about 60 participants of various disciplines viz. 35 from Ayurveda, 5-Siddha, 9-Homoeopathy, 3-Unani, 3-Yoga & Naturopathy, 3-Bio-statistics and 2 from Psychiatry & Social work representing NIA, Jaipur, NIS, Chennai, Institute of Post-Graduate Training and Research, Gujarat Ayurved University, Jamnagar, CCRUM, New Delhi, CCRH, New Delhi, CCRYN, New Delhi and CCRAS, New Delhi. The eminent Resource persons from different reputed National Institutes.

All the resource persons, experts and participants appreciated the efforts of the Council in conducting this unique interactive training programme to Scientists and Academicians of AYUSH Department under one platform.

23. National workshop on "Medical (Scientific & Technical) Writing"

The Council has successfully organized a three days National Workshop on "Medical (Scientific & Technical) Writing" sponsored by Commission for Scientific & Technical Terminology, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India on 21st to 23rd March, 2006 at AYUSH Auditorium, CCRAS HQrs., New Delhi for researchers and academicians of national institutes & research Councils of Deptt. of AYUSH.

The Workshop was attended by 150 participants of various disciplines viz. Ayurveda, Siddha, Unani, Homoeopathy, Yoga & Naturopathy from CCRUM, CCRH,CCRYN, CCRAS and different units of CCRAS situated in different states of India,N.I.A., Jaipur, N.I.S.,Chennai &N.I.U.M., Bangalore. The eminent Resource persons from different reputed national institutes viz. National Institutes of Science Communication and Information Resources (NISCAIR), New Delhi, Gujarat Ayurved University, Jamnagar, CSTT, Delhi & Govt. Ayurvedic Collage, Hyderabad were made resourceful deliberations during the event.

24. National Seminar on Integrated Medicine (Ayurveda & Siddha) - Scope and Challanges

Under the auspicious of World Health Organization, the Council has successfully organized a two days Seminar on Integrated Medicine (Ayurveda & Siddha)-Scope and Challenges on 25th to 26th May, 2005 at India International Centre, New Delhi.

The event was inaugurated by Mrs. Uma Pillai, Secretary, Deptt. of AYUSH. Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India, New Delhi and Dr.P.N.V.Kurup, Vice- President, Governing Body of CCRAS Chaired the inaugural session.

The event was conducted in 3 technical sessions on Basic Research, Clinical and Applied research and standardization, quality control, pharmacology and allied disciplines, besides this, a panel discussion on the Role of integrated approaches for ISM & H Drug development and an interactive session with pharmaceutical industry were convened.

All the resource persons, expert's observers and participants, representatives from pharmaceutical industries appreciated the efforts of the Council in conducting this unique seminar and interactive session for the betterment of Ayurveda & Siddha.

III. TECHNICAL REPORT

A. AYURVEDA

1. ABBREVIATIONS USED FOR INSTITUTES/CENTRES/UNITS

Sl. No	Institutes/Centres/Units	Abbreviations
1	Central Research Institute (Ay.), New Delhi	CRID
2	Central Research Institute (Ay.), Bhubaneshwar	CRIBh
3	Central Research Institute (Ay.), Mumbai	CRIM
4	Central Research Institute (Ay.), Patiala	CRIP
5	Central Research Institute (Ay.), Cheruthuruthy	CRICh
6	Central Research Institute (Ay.), Kolkata	CRIK
7	Central Research Institute (Ay.), Lucknow	CRIL
8	Central Research Institute (Ay.), Gwalior	CRIG
9	Central Research Institute (Ay.), Jaipur	CRIJ
10	Regional Research Institute (Ay.), Patna	RRIP
11	Regional Research Institute (Ay.), Junagarh	RRiJu
12	Regional Research Institute (D.R.), Trivandrum	RRIT
13	Regional Research Institute (Ay.), Itanagar	RRII
14	Regional Research Institute (Ay.), Gangtok	RRIG
15	Regional Research Institute (Ay.), Guwahati	RRIGu
16	Regional Research Institute (Ay.), Mandi	RRIM
17	Regional Research Institute (Ay.), Jammu	RRIJ
18	Regional Research Institute (Ay.), Jhansi	RRIJh
19	Regional Research Institute (Ay.), Nagpur	RRIN
20	Regional Research Institute (Ay.), Vijayawada	RRIV
21	Regional Research Institute (Ay.), Bangalore	RRIB
22	Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet	RRITa
23	Regional Research Institute (Ay.), Pune	RRIPu

24	Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad	IIHMH
25	Captain Srinivasa Murthy Drug Research Institute for Ayurveda, Chennai	CSMDRIAC
26	Dr.A. Laxmipati Research Centre for Ayurveda, VHS, Chennai	ALRCAC
27	Regional Research Centre (Ay.), Hastinapur	RRCH
28	Ayurveda Research Unit, NIMHANS, Bangalore	ARUB
29	Clinical Research Unit (Ay.), Kottakal	CRUK
30	Clinical Research Unit under F.W.R.P., Ahmedabad	CRUFA
31	Pharmacological Research Unit under FWRP, Jamnagar	PhRUFJ
32	Tribal Health Care Research Project, Port Blair	THCRPP
33	Drug Standardisation Research Project, Jamnagar	DSRPJ
34	Sowa-Rigpa (Amchi) Research Centre, Leh	SRRCL
35	Ayurveda Chikitsa Kendra,Safdarjung Hospital, N. Delhi	ACKS

2. CLINICAL RESEARCH PROGRAMME

The Clinical Research Programme under the Council can be categorized into two i.e. Clinical Evaluation of selected therapies in clinical conditions and Tribal Health Care Research Programmes.

The therapeutic application is the main objective of any bio-medical research. Thus, it is considered prominent among the different types of medical research, its importance is further heightened with respect to Ayurveda because it is largely based on clinical observations.

The Clinical Research studies on Amavata (Rheumatoid arthritis), Apasmara (Epilepsy), Arsha (Piles), Bhagandara (Fistula-in-ano), Grahani Roga (Malabsorption syndrome), Gridhrasi (Sciatica), Kitibha (Psoriasis), Madhumeha (Diabetes mellitus), Manodvega (Anxiety neurosis), Medoroga (Lipid disorders), Mutrasmari (Urinary calculi), Pakshaghata (Hemiplegia), Pangu (Paraplegia), Parinamasula (Duodenal ulcer), Slipada (Filariasis), Tamaka Swasa (Bronchial asthma), Timira Roga (Error of refraction),Visama-jvara (Malaria) and Vyanabala Vaishamya (Hypertension). Kamala and Madhumeha continued from the previous Programme Projection have been conducted during the reporting period 2005-2006. Beside this two diseases were carried out as Pilot study i.e. Atisara & Pravahika with G.V.K. compound. Total 2,621 cases were studied on said diseases/conditions at IPD and OPD level. The hospitals functioning under the Council provided medical aid to 3,99,673 patients at OPD level. Total 2,204 patients were admitted in IPD and 2,158 patients were discharge. The detail of therapies, participating Institutes/Centres/Units, total number of cases studied and the results are given as under:

(a) Clinical Therapeutic Trials

AMAVATA (Rheumatoid arthritis)

Clinical trials on Amavata (Rheumatoid arthritis) were conducted at CRIs: Mumbai, Gwalior, Jaipur, Cheruthuruthy, Kolkata, Patiala, Lucknow, Delhi, & Bhubaneshwar; RRIs: Mandi, Trivandrum, Vijaywada, Nagpur, Jammu, Junagadh, Patna and Itanagar A total number of 432 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: AMAVATA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pippali	CRIM	6	1	4	1	-	-
	Vardhamana	CRIG	12	-	3	1	-	8
	Ksheera Paka	RRIM	11	-	4	6	-	1
	Samira	RRIT	11	-	-	5	2	4
	Pannagarasa	RRIV	18	3	8	5	1	1
2.	Combination of	CRIG	28	-	7	11	1	9
	Shunthi Guggulu	CRIM	14	1	12	1	-	
	and Godanti	CRID	36	2	8	6	2	18
		CRIL	19	9	4	1	-	5
		CRIJ	19	8	5	3	-	3
		CRIBh	24	11	7	1	2	3
		CRIP	8	-	1	1	-	6
		CRIK	13	-	8	4	1	-
		RRIM	10	-	5	3	-	2
		RRIT	13	1	3	6	-	3
		RRIV	15	1	7	5	1	1
		RRIJu	3	-	1	-	2	-
		RRII	22	4	6	3	2	7
		RRIP	17	-	9	2	6	-
		RRIJ	13	2	5	1	-	5
3.	Suranjana and	CRIJ	18	3	1	3	-	11
	Shallaki	CRIP	2	-	1	-	1	-
		RRIN	11	-	4	6	-	1

4.	Panchakarma therapy Group-I Deepana-Pacana (Balaguducyadi kwatha Snehapana with Indukanta ghrita Svedana Vamana	CRIK CRIP CRICh	23 1 4	6 - 2	7 1 1	3 - -	1 - -	6 - 1
5.	Group-II Snehapana with Indukanta ghrita Swedana Vamana Samsarjana. Balaguduchyadi Kwath	CRICh CRIK CRIBh	13 10 20	3 3 13	7 6 4	2 1 2	- - -	1 - 1
6.	Group-III The above course without Panchakarma using Panchakola Churna as Prakshepa and Patra Pinda Sweda	CRICh RRIN	11 7	3 -	7 1	- 5	- -	1 1
Total			432	76	147	88	22	99

APASMARA (Epilepsy)

Clinical trials on Apasmara (Epilepsy) was conducted at ARU, Bangalore. A total number of 3 cases have been studied. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: APASMARA

S. No.	Therapy	Instt./Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Brahmyadiyoga	ARUB	3	-	2	1	-	-
Total			3	-	2	1	-	-

ARSHA (Piles)

Clinical trials on Arsha (Piles) were conducted at CRIs: Gwalior, Kolkata, New Delhi, Mumbai, Bhubaneshwar & Lucknow; RRIs: Patna, Jammu, Mandi & Bangalore and RRC, Hastinapur. A total number of 439 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: ARSHA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kankayan Vati, Triphala Churna at bed time+ Kashishadi Taila locally	CRIL	30	4	2	7	-	17
		CRIG	43	1	6	19	2	15
		CRIK	92	16	24	20	32	-
		CRID	20	15	3	2	-	-
		CRIM	47	28	10	7	-	2
		RRCH	10	-	5	1	-	4
		RRIP	21	3	7	6	5	-
		RRIJ	8	7	-	-	-	1
		RRIM	10	-	5	1	2	2
		RRIB	14	3	6	1	1	3

2.	Kankayan Vati + Kravyadi Rasa Abhyarishta and Jatyadi Taila locally.	CRIG CRIK RRIJ RRIM CRIM	29 7 7 12 30	1 1 6 - 11	8 2 - 8 13	9 3 - 2 4	- 1 - - 1	11 - 1 2 1
3.	Kravyadirasa, Kasishadi Taila, Triphala	CRIK CRIBh RRIB	42 6 11	9 - 3	10 1 4	23 4 1	- - -	- 1 3
Total			439	108	114	110	44	63

BHAGANDARA (Fistula-in-ano)

Clinical trial on Bhagandara (Fistula-in-ano) was conducted at CRIs: Delhi and Kolkata. A total number of 46 cases have been studied adopting Kshara sutra karma. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: BHAGANDARA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kshara sutra karma	CRID CRIK	20 26	15 5	3 4	2 14	- 3	- -
Total			46	20	7	16	3	-

GRAHANI ROGA (Malabsorption syndrome)

Clinical trials on Grahani Roga (Malabsorption syndrome) were conducted at CRI, Gwalior; RRIs: Patna & Gangtok. A total number of 108 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: GRAHANI ROGA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Panchamrita Parpati Kalpa with milk	CRIG	14	5	3	1	-	5
2.	Bilwa	CRIG	19	5	5	2	1	6
	Majjachurna	RRIP	21	8	6	5	2	-
	Takrarishta	RRIG	54	14	24	2	4	10
Total			108	32	38	10	7	21

GRIDHRASI (Sciatica)

Clinical trials on Gridhrasi (Sciatica) were conducted at CRIs: Cheruthuruthy, Delhi and Lucknow; RRIs: Itanagar, Patna and Gangtok. A total number of 148 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: GRIDHRASI

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop Out
1.	Hingu Triguna Taila	CRICh	20	5	7	5	3	
		CRID	15	4	7	3	-	1
		CRIL	4	2	1	-	-	1
		RRII	2	-	-	1	1	-
		RRIP	29	1	11	12	5	-

2.	Pancakarma Chikitsa: Snehapana (Dashmoola Bala Taila), Sveda (Vashpa) Virechana, Samsarjana and Vasti (Vaitharana)	CRICh RRII	21 4	10 -	5 -	3 2	- -	3 2
3.	Hingutriguna Taila and Yograj Guggulu	RRIG	53	5	18	8	3	19
Total			148	27	49	34	12	26

KITIBHA (Psoriasis)

Clinical trials on Kitibha (Psoriasis) were conducted at CRIs: Patiala & Cheruthuruthy; RRIs: Trivandrum & Jammu and RRC, Hastinapur. A total number of 83 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: KITIBHA

S. No.	Therapy	Instt./Centre Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Arogyawardhani, Kaishore Guggulu and Chakramarda Taila local application	CRIP RRIJ RRIT RRCH	7 7 10 5	- - - 4	3 2 4 -	1 2 2 -	- - - -	3 3 4 1

2.	Panchanimba Lauha churna Kamadudha Rasa and Haridra Khanda	RRIJ RRCH	3 8	- -	3 3	- 1	- -	- 4
3.	Snehapana (Mahatikta Ghrita) Svedana (Mridu) Vamana (Mild), Samsarjana Rasayana (Bhallataka) Prayoga	CRICh CRIP	5 10	- -	3 -	- 2	- -	2 8
4.	Panchanimba Lauha Churna, Kamadudha Rasa and Haridra Khanda	RRIT	28	-	16	4	-	8
Total			83	4	34	12	-	33

MADHUMEHA (Diabetes mellitus)

Clinical trials on Madhumeha (Diabetes mellitus) were conducted at CRIs: Delhi & Bhubaneshwar and RRI, Itanagar. A total number of 85 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studies together with the results. .

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MADHUMEHA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop Out
1.	Tulsipatra, Bilva Patra, Nimba, Kalimirch	CRID	16	2	7	4	-	3
2.	Karela, Jamun seed Ghanasatwa	CRIBh CRID RRII	30 18 19	2 11 2	- 3 4	2 1 2	- - -	26 3 11
3.	Leaves of Bilva, Neem, Tulsi, Kalimarich, Gansatvavati alongwith Meditation & Yoga	RRII	2	-	-	1	-	1
Total			85	17	14	10	-	44

MANODVEGA (Anxiety neurosis)

Clinical trial on Manodvega (Anxiety neurosis) were conducted at CRIs: Patiala & Mumbai; RRI, Bangalore. A total number of 53 cases have been studied. The following Table summarizes the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MANODVEGA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Medhya Rasayana (Vaca, Brahmi Ghana Satwa in equal parts)	CRIP	10	-	2	2	-	6
		CRIM	35	1	27	6	-	1
		RRIB	8	-	8	-	-	-
Total			53	1	37	8	-	7

MUTRASMARI (Urinary calculi)

Clinical trials on Mutrasmari were conducted at CRI, Delhi; RRIs: Trivandrum, Jammu, Guwahati , Junagadh & Itanagar. A total number of 90 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MUTRASMARI

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pashana Bheda, Goksuru Kwatha, Ghana Satva	CRID	17	2	7	4	3	1
		RRIJ	8	2	1	3	1	1
		RRII	10	6	3	1	-	-
		RRIT	1	-	-	1	-	-
2.	Palash Kshar	CRID	20	5	7	4	3	1
		RRIJ	3	1	2	-	-	-
		RRIJu	5	2	-	1	-	2
		RRII	13	8	2	-	1	2
		RRIGu	5	-	2	-	-	3
		RRIT	8	-	1	1	-	6
Total			90	26	25	15	8	16

MEDOROGA (Lipid disorders)

Clinical trials on Medoroga (Lipid disorders) were conducted at CRIs: Lucknow, Patiala & Mumbai; ALRCA, Chennai; RRI, Jammu. A total number of 125 cases have been studied adopting different therapeutic approach. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: MEDOROGA

S. No	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Vaca & Katuki in equal parts	CRIL CRIM CRIP ALRCAC RRIJ	36 30 9 14 15	14 1 - 5 9	5 12 - 1 3	4 11 3 3 -	- 3 - 1 2	13 3 6 4 1
2.	Triphala Siddha Guggulu	CRIM	21	-	6	10	5	-
Total			125	29	27	31	11	27

PARINAMA SHULA (Duodenal ulcer)

Clinical trials on Parinamsula (Duodenal ulcer) were conducted at RRI, Vijayawada & CRU, Kottakal. A total number of 48 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON : PARINAMA SHULA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Indukanta Ghrita Snehana	RRIV	5	1	4	-	-	-
		CRUK	13	7	1	-	1	4
2.	Mahatikta Ghrita Snehana	CRUK	20	11	7	1	-	1
		RRIV	5	1	4	-	-	-
3.	Satavari Madhuyasti Ghana Satwa vati	RRIV	5	3	1	-	-	1
Total			48	23	17	1	1	6

PAKSHAGHATA (Hemiplegia)

Clinical trials on Pakshaghata (Hemiplegia) were conducted at CRIs: Cheruthuruthy, Delhi, Patiala & Bhubaneshwar; RRI, Nagpur & ARU, Bangalore. A total number of 122 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PAKSHAGHATA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Snehapana(Ksheerbala Taila), Svedana (Vashpa), Virecana (Eranda Taila), Samsarjana, Vastikarma (Yogavasti), Dasmoola Kwatha for Nirooha & Ksheerabala Taila for Anuvasana; Nasya (Ksheerbala Taila).	CRICh	13	5	3	4	-	1
		CRID	14	-	1	10	-	3
		CRIBh	2	-	1	-	-	1
		RRIN	14	-	8	4	1	1
2.	Dhanadanyanadi Kwatha with Ksheerbala Taila; Abhyanga (Ksheerbala Taila); Patrapotala Sveda with Ksheerbala Taila Virechana (Eranda Taila).	CRICh	24	2	7	8	3	4
		CRIBh	7	1	2	2	-	2
		CRIP	2	-	1	1	-	
		RRIN	12	2	4	4	-	2
		ARUB	4	1	3	-	-	-

3.	Maha Vatavidhwansana Rasa, Dhanyamla Seka Virechana, Nashya (Ksheerbala Taila), Sirovasti (Ksheerbala Taila).	CRIP CRICh RRIN	2 15 13	- 2 1	1 3 4	1 6 3	- - 2	- 4 3
Total			122	14	38	43	6	21

PANGU (Paraplegia)

Clinical trials on Pangu (Paraplegia) were conducted at CRI, Cheruthuruthy & RRI, Nagpur. A total number of 26 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PANGU

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Snehapana (Dasmoola Bala Taila), Svedana (Vashpa), Virechana (Eranda Taila) Samsarjana and Yoga vasti (Nirooha-Dashmoola Kwatha and Anuvasana-Dashmoola Bala Taila)	CRICh RRIN	2 8	- 1	- 2	- 2	1 2	1 1
2.	Dashmoola Bala Kwatha alongwith Chandraprabha Vati Abhyanga (Dashmoola Bala Taila), Matra Vasti (Dashmoola Bala taila) and Physiotherapy	CRICh RRIN	10 6	- 1	3 2	1 3	- -	6 -
Total			26	2	7	6	3	8

SLIPADA (Filariasis)

Clinical trials on Slipada (Filariasis) were conducted at CRI, Bhubaneshwar; RRIs: Patna & Vijayawada. A total number of 123 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: SLIPADA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Kanchanar guggulu with Gokshuradi guggulu	CRIBh RRIP RRIV	10 14 35	2 2 9	6 6 12	1 5 7	- 1 5	1 - 2
2.	Slipadari Rasa, Punarnava churna kwath	CRIBh RRIP RRIV	22 10 32	4 1 13	10 4 9	1 4 8	- 1 1	7 - 1
Total			123	31	47	26	8	11

TAMAKA SWASA (Bronchial asthma)

Clinical trials on Tamaka Swasa (Bronchial asthma) were conducted at CRI, Bhubaneshwar, Patiala & Jaipur; RRIs: Patna, Vijayawada & Bangalore. A total number of 119 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: TAMAKA SWASA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Pippli	RRIV	2	1	-	-	-	1
	Vardhamana	RRIP	28	-	12	1	9	6
	Ksheera Paka, Samira Pannaga Rasa	CRIP	1	-	1	-	-	-
2.	Shirisa Twak Kwatha	CRI Bh	36	2	3	14	1	16
		CRIJ	17	1	8	1	-	7
		CRIP	1	-	1	-	-	-
		RRIB	14	6	2	2	-	4
		RRIV	4	2	1	-	-	1
3.	Shodhan Chikitsa	RRIV	16	7	5	-	-	4
Total			119	19	33	18	10	39

TIMIRA ROGA (Error of refraction)

Clinical trial on Timira (Error of refraction) was conducted at CRI, Delhi. A total number of 58 cases have been studied. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: TIMIR ROGA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Netra Bindu and Saptamrita Lauha alongwith Eye exercise.	CRID	58	9	12	17	13	7
Total			58	9	12	17	13	7

VISAMA JVARA (Malaria)

Clinical trial on Visamajvara (Malaria) were conducted at CRI,Jaipur; ALRCA, Chennai, RRIs: Nagpur, Patna & Itanagar; RRC, Hastinapur. A total number of 168 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON VISAMA JVARA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Ayush-64.	CRIJ	20	7	9	4	-	-
	Sphatik	RRII	10	6	2	-	-	2
	Bhasma,	RRIN	8	4	3	-	-	1
	Guduchi	RRCH	11	7	1	-	-	3
	Satva							
2.	SaptaparnG	CRIJ	10	4	5	1	-	-
	hanavati	RRIN	12	4	7	1	-	-
		RRIP	21	4	10	3	4	-
		RRII	18	5	7	3	2	1
3.	Parijata	RRIN	8	3	3	2	-	-
	Patra	RRIP	15	2	5	5	3	-
	Ghanavati	ALRCAC	35	8	3	4	4	16
Total			168	54	55	23	13	23

VYANABALA VAISHMAYA (Hypertension)

Clinical trial on Vyanabala Vaishmaya (Hypertension) were conducted at CRIs: Bhubaneshwar, Kolkata, Patiala, Delhi, Gwalior, Mumbai; RRIs: Nagpur, Bangalore, Itanagar, Jammu & Junagarh; ALRCA, Chennai. A total number of 282 cases have been studied adopting different therapeutic approaches. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: VYANABALA VAISHMAYA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Combination of Vaca, Brahmi, Jatamansi and Arjuna equal parts	CRIBh	20	6	6	3	-	5
		CRIG	34	-	12	11	3	8
		CRIM	19	6	9	-	-	4
		CRID	15	10	3	-	-	2
		CRIP	15	1	6	4	-	4
		RRIN	32	10	8	3	5	6
		RRII	12	3	4	1	3	1
		RRIJ	5	2	-	-	-	3
		RRIB	12	2	4	3	1	2
2.	Chandra Prabha Vati Sveta Parpati and Punarnava Mandura with specific Ahar-Vihar	CRID	16	3	9	2	-	2
		CRIBh	10	1	2	-	-	7
		CRIG	8	-	5	2	1	-
		CRIM	22	4	12	1	-	5
		CRIP	11	1	5	2	-	3
		RRIN	22	3	8	6	1	4
		RRII	13	5	3	2	1	2
		RRIJ	8	4	1	-	-	3
		RRIB	5	2	1	-	1	1
		RRIJu	2	-	1	1	-	-
		ALRCAC	1	-	1	-	-	-
Total			282	63	100	41	16	62

KAMALA (Jaundice)

Clinical Trial on Kamala (Jaundice) was conducted at CRI, Lucknow. A total number of 18 cases have been studied adopting single therapeutic approach. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: KAMALA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	Punarnava Mandur Arogyavardhani, Phalatrikadi Kwath	CRIL	18	6	2	-	-	10
Total			18	6	2	-	-	10

ATISARA (Diarrhoea)

Clinical Trial on Atisara (Diarrhoea) were conducted at CRI, Delhi. A total number of 28 cases have been studied adopting GVK compound. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: ATISARA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	GVK compound	CRID	28	10	11	5	2	-
Total			28	10	11	5	2	-

PRAVAHIKA (Dysentery)

Clinical Trial on Pravahika (Dysentery) were conducted at CRI, Delhi. A total number of 17 cases have been studied adopting GVK compound. The following Table summaries the details related to the line of approach and the number of cases studied together with the results.

RESULTS OF CLINICAL STUDIES OF AYURVEDIC PREPARATION ON: PRAVAHIKA

S. No.	Therapy	Instt./ Centre/ Unit	Total cases	Results				
				Good resp.	Fair resp.	Poor resp.	No resp.	Drop out
1.	GVK compound	CRID	17	5	6	3	3	-
Total			17	5	6	3	3	-

b) Statement Showing Disease, number of patients and participating Instt./ Centre/Unit under Clinical Research

Sl. No.	Disease	Patients Nos.	Participating Instt./ Centre/Unit
1.	**Prana Vaha Srotas Vyadhi**		
	Tamaka Swasa	119	CRIBh,CRIJ, CRIP, RRIP,RRIV,RRIB.
2.	**Annavaha Srotas Vyadhi**		
	Parinamasula	48	RRIV, CRUK.
	Grahani Roga	108	CRIG, RRIP, RRIG.
	Atisara	28	CRID.
	Pravahika	17	CRID.
3.	**Purish Vaha Srotas Vyadhi**		
	Arsha	439	CRIG, CRIK, CRID, CRIM, CRIBh, CRIL, RRIP, RRIJ, RRIM, RRIB, RRCH.
	Bhagandara	46	CRID, CRIK.
	Kamala	18	CRIL.
4.	**Mutra Vaha Srotas Vyadhi**		
	Mutrasmari	90	CRID, RRIT, RRIJ, RRIGu, RRIJu, RRII.
	Madhumeha	85	CRID, CRIBh, RRII.
5.	**Rasa, Rakta, Vaha, Srotas Vyadhi**		
	Vyanbala Vaishamya	282	CRIBh, CRIP, CRID, CRIG, CRIM, RRIN, RRII, ALRCAC, RRIJ, RRIJu, RRIB.
6.	**Medo Vaha Srotas Vyadhi**		
	Medo Roga	125	CRIL, CRIP, CRIM, ALRCAC, RRIJ.
7.	**Vata Vyadhi**		
	Amavata	432	CRIG, CRIM, CRICh, CRIJ, CRIK, CRIP, CRIL, CRID, CRIBh, RRIT, RRIM, RRIV, RRII,

	Pakshaghata Pangu Gridhrasi	 122 26 148	RRIJu, RRIJ, RRIN, RRIP. CRIP, CRICh, CRID, CRIBh, RRIN, ARUB. CRICh, RRIN. CRID, CRICh, CRIL, RRIG, RRIP, RRII.
8.	**Manovaha Srotas Vyadhi** Manodvega Apasmara	 53 3	 CRIM, CRIP, RRIB. ARUB.
9.	**Netragata Vyadhi** Timira Roga	 58	 CRID
10.	**Sarvadayagata Vyadhi** Kitibha	 83	 CRIP, CRICh, RRIT, RRIJ, RRCH
11.	**Agantuja Vyadhi** Visamjvara Slipada	 168 123	 CRIJ, RRIN, RRII, ALRCAC, RRIP, RRCH CRIBh, RRIP, RRIV
	Total	**2621**	

c) Statement Showing Number of Patients Attended at OPD and I.P.D.

Sl. No.	Name of Institute/ Centre/Unit	O.P.D. Patients							I.P.D. Patients				
		New		Old		Total		Grand Total	Admitted		Discharged		Bed occup-ancy %
		M	F	M	F	M	F		M	F	M	F	
1	CRI, New Delhi	10847	8461	13284	8721	24131	17182	41313	113	131	112	121	24 93
2	CRI, Bhubaneshwar	4864	3300	3803	3203	8667	6503	15170	126	59	117	80	32 77
3	CRI, Mumbai	1202	1247	3937	4442	5139	5689	10828	100	67	101	67	21.21
4	CRI, Patiala	3535	2643	2939	2761	6474	5404	11878	48	66	47	60	22 05
5	CRI.Cheruthurut hy	4634	9514	19522	54932	24156	64446	88602	335	246	329	236	83 81
6	CRI, Lucknow	3815	2550	4472	3603	8287	6153	14440			-	-	
7	CRI, Kolkata	3224	1921	4847	3455	8071	5376	13447	50	47	41	50	50.95
8	CRI, Gwalior	4020	2918	3800	2949	7820	5867	13687	30	16	30	16	12 85
9	CRI Jaipur	4645	3312	5121	4542	9766	7854	17620	73	72	70	69	34 03

10	RRI, Junagarh	1306	838	2210	1501	3516	2339	5855	-	-	-	-	-
11	RRI, Patna	1460	1215	1103	1074	2563	2289	4852	47	2	41		21.78
12	RRI, Trivandrum	1853	3060	4982	10891	6835	13951	20786	52	-	47	-	61.00
13	RRI,Nagpur	1780	1768	3446	3320	5226	5088	10314	47	15	46	15	60.41
14	RRI, Bangalore	1493	1074	3554	2901	5047	3975	9022	-	-	-	-	-
15	RRI, Jammu	2485	2668	3738	4301	6223	6969	13192	-	-	-	-	-
16	RRI,Mandi	5824	6512	4146	5457	9970	11969	21939	29	32	28	32	24.50
17	RRI, Gangtok	2052	1446	2458	1586	4510	3032	7542	-	-	-	-	-
18	RRI, Guwahati	1231	1284	1228	1444	2459	2728	5187	-	-	-		-
19	RRI, Vijayawada	2190	2354	6045	7264	8235	9618	17853	45	71	43	76	75.03
20	RRI, Itanagar	3494	3980	3055	3928	6549	7908	14457	19	8	17	8	14.77
21	RRC, Hastinapur	3193	2699	3540	3379	6733	6078	12811	-	-	-	-	-
22	ALRCA, Chennai	411	502	1239	1670	1650	2172	3822	-	-	-	-	-
23	ARU, Bangalore	603	469	598	305	1201	774	1975	136	51	136	50	64.60
24	CRU, Kottakal	-	-	-	-	-	-	-	71	-	73	-	25.00
25	ACK Safdarjung	6338	5970	5278	5495	11616	11465	23081	-	-	-	-	-
Total		76,499	71,705	1,08,345	1,43,124	1,84,844	2,14,829	3,99,673	1,321	883	1,278	880	-

(d) HEALTH CARE RESEARCH PROGRAMME

Tribal Health Care Research Programme

This programme has been initiated with the aim to study living conditions of tribal people, folk medicines used by them, occurrence of medicinal plants in the area, propagation of knowledge about hygienes, prevention of diseases, use of common medicinal plants in the area and to extend medical aid at their door steps. This programme has been continued further by Tribal Units which were merged with the different CRI and RRI viz. CRI, Gwalior, RRI,Patna, RRI,Itanagar, RRI,Guwahatiand THCRP, Port- Blair is a separate unit. The progress made during the year 2005-2006, 39 villages consisting of population 32,202 individuals have been covered and incidental medical aid extended to 18,162 patients. The details of villages covered ,population covered, Number of patients attended and diseases prevalence in the region were shown against the institutes in the Table is given below:

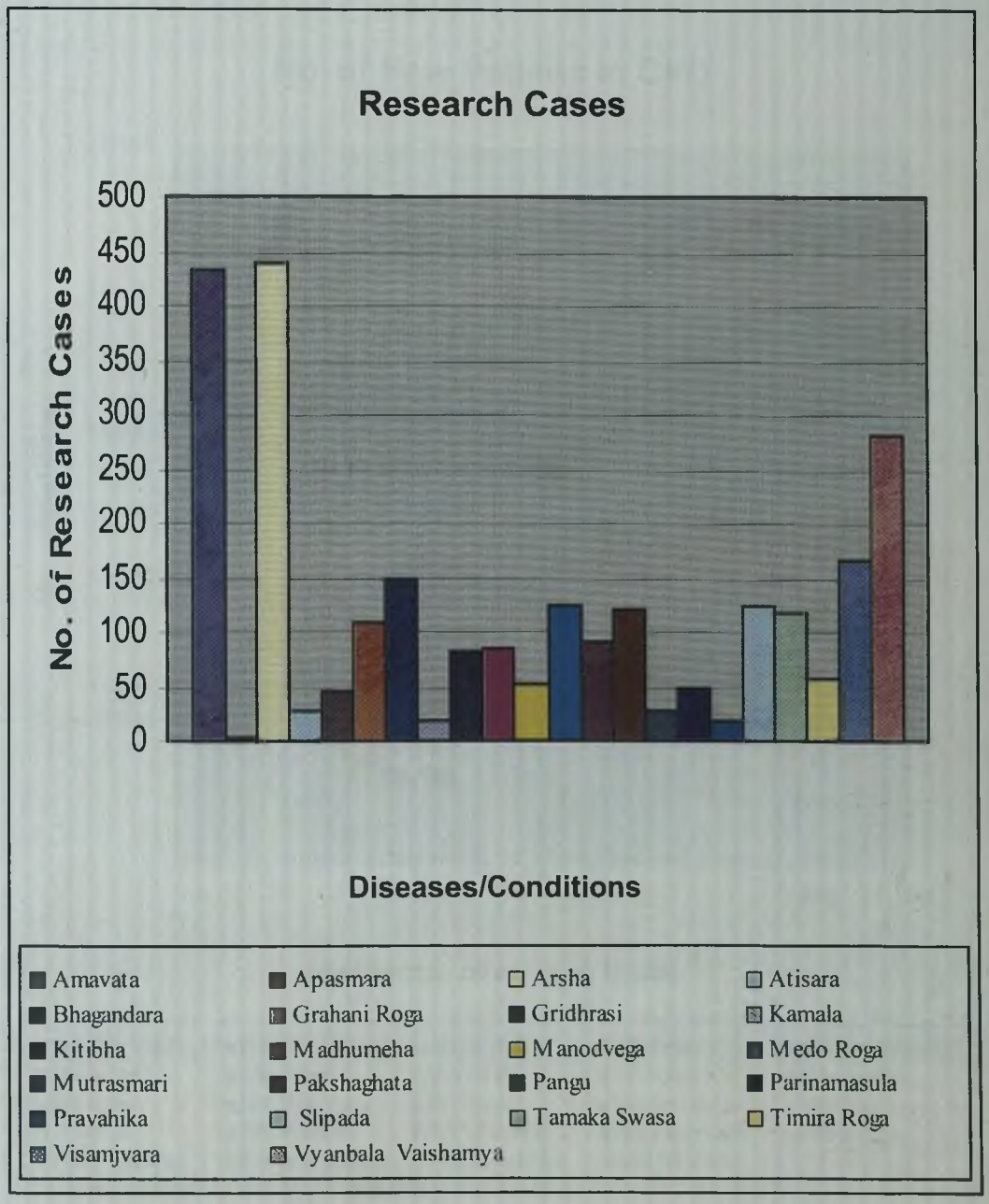
Research Cases
No. of Research Cases
500
450
400
350
300
250
200
150
100
50
0
Diseases/Conditions
Amavata
Apasmara
Arsha
Atisara
Bhagandara
Grahani Roga
Gridhrasi
Kamala
Kitibha
Madhumeha
Manodvega
Medo Roga
Mutrasmari
Pakshaghata
Pangu
Parinamasula
Pravahika
Slipada
Tamaka Swasa
Timira Roga
Visamjvara
Vyanbala Vaishamya

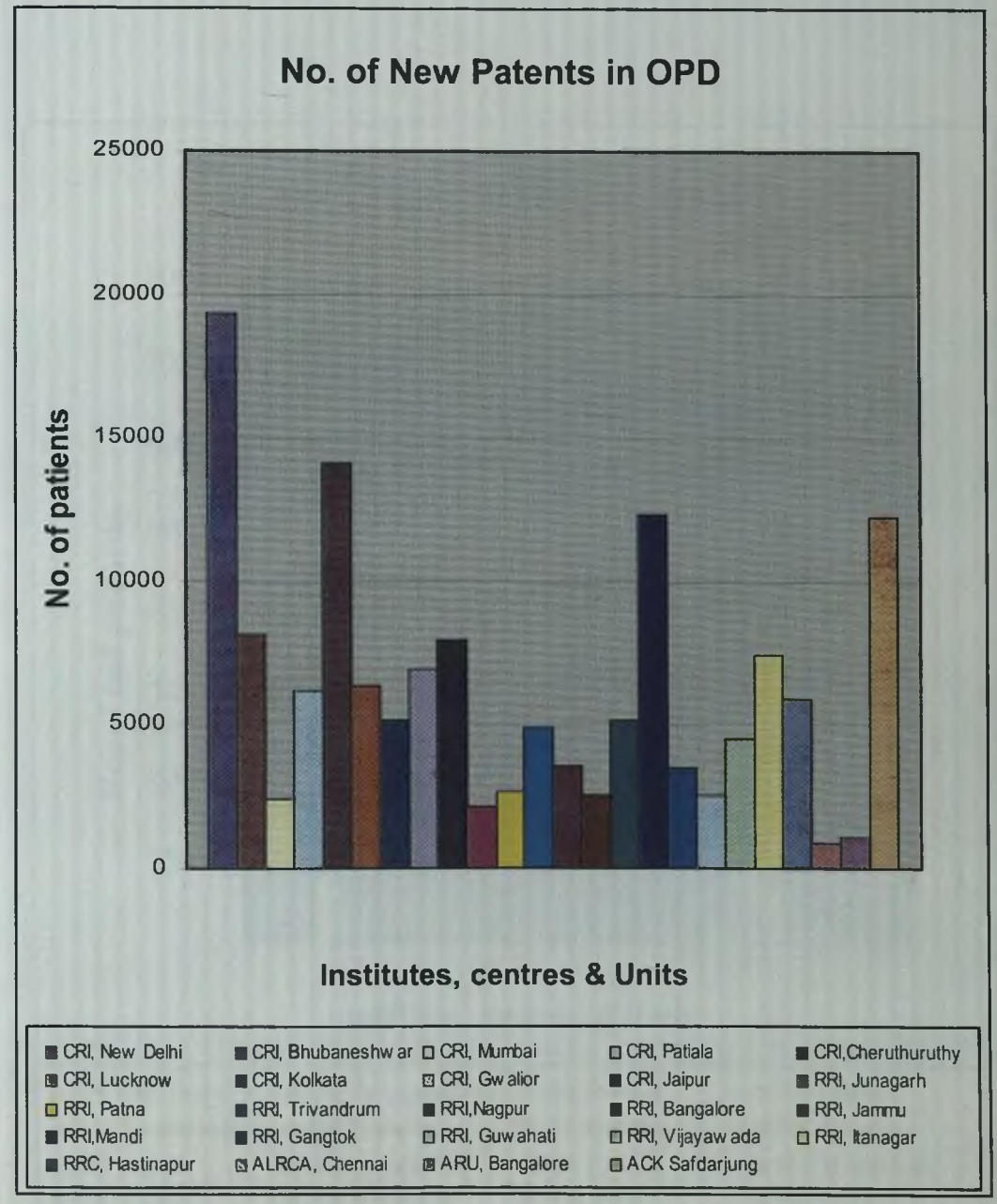
No. of New Patents in OPD
25000
20000
15000
10000
5000
0
No. of patients
Institutes, centres & Units
CRI, New Delhi
CRI, Bhubaneshwar
CRI, Mumbai
CRI, Patiala
CRI,Cheruthuruthy
CRI, Lucknow
CRI, Kolkata
CRI, Gwalior
CRI, Jaipur
RRI, Junagarh
RRI, Patna
RRI, Trivandrum
RRI,Nagpur
RRI, Bangalore
RRI, Jammu
RRI,Mandi
RRI, Gangtok
RRI, Guwahati
RRI, Vijayawada
RRI, Itanagar
RRC, Hastinapur
ALRCA, Chennai
ARU, Bangalore
ACK Safdarjung

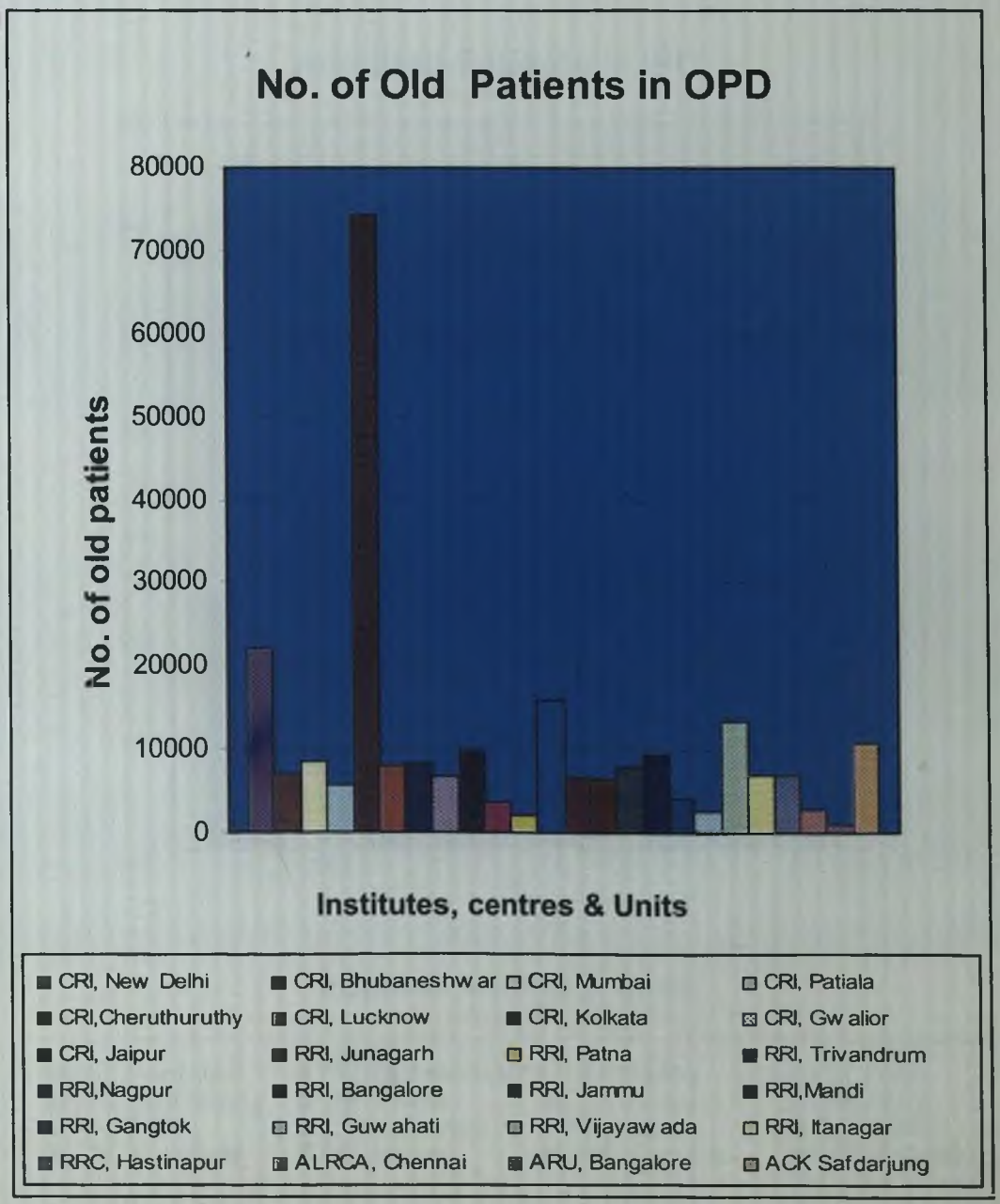
No. of Old Patients in OPD
80000
70000
60000
50000
40000
30000
20000
10000
0
No. of old patients
Institutes, centres & Units
CRI, New Delhi
CRI, Bhubaneshwar
CRI, Mumbai
CRI, Patiala
CRI,Cheruthuruthy
CRI, Lucknow
CRI, Kolkata
CRI, Gwalior
CRI, Jaipur
RRI, Junagarh
RRI, Patna
RRI, Trivandrum
RRI,Nagpur
RRI, Bangalore
RRI, Jammu
RRI,Mandi
RRI, Gangtok
RRI, Guwahati
RRI, Vijayawada
RRI, Itanagar
RRC, Hastinapur
ALRCA, Chennai
ARU, Bangalore
ACK Safdarjung

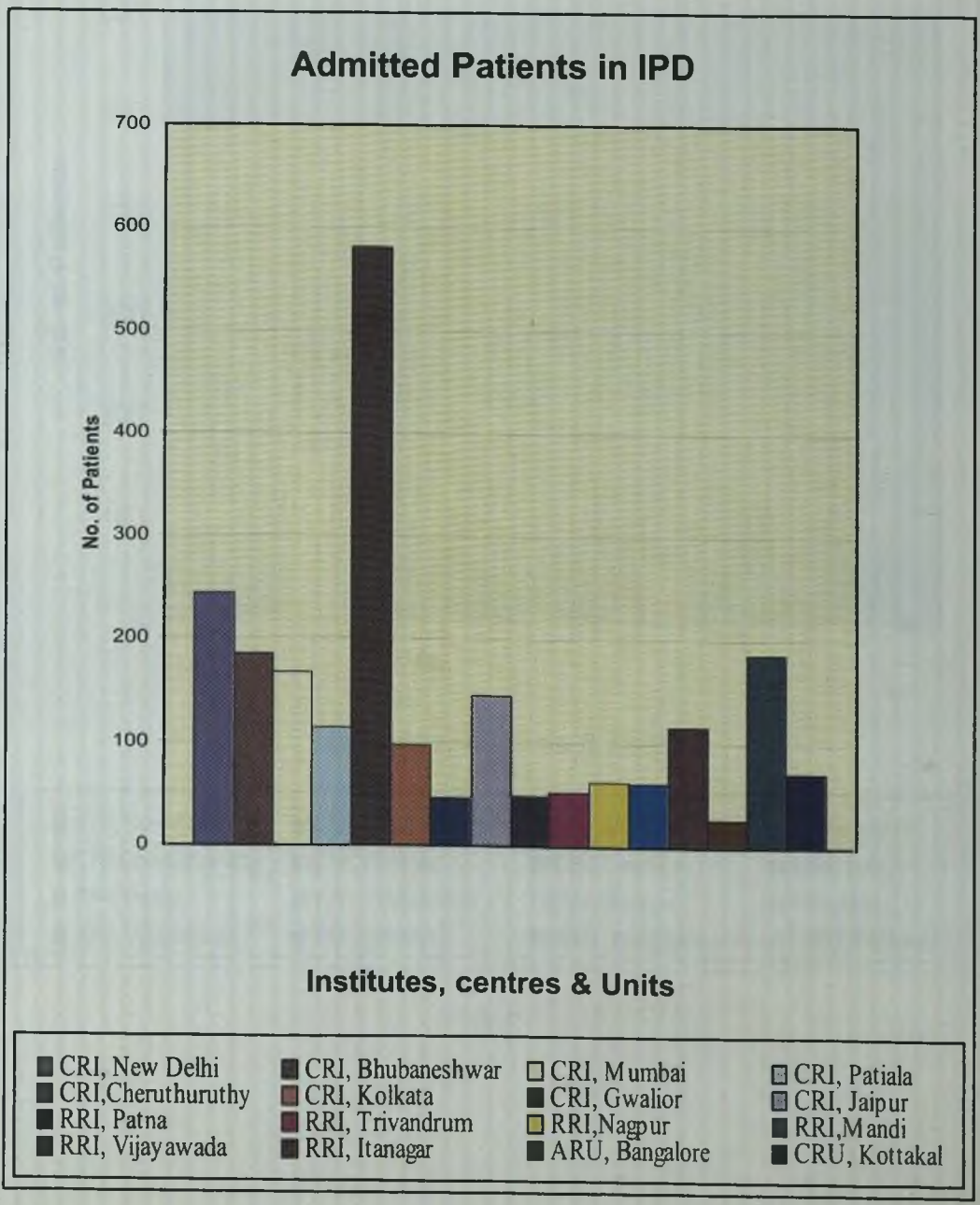
Admitted Patients in IPD
700
600
500
400
300
200
100
0
No. of Patients
Institutes, centres & Units
CRI, New Delhi
CRI,Cheruthuruthy
RRI, Patna
RRI, Vijayawada
CRI, Bhubaneshwar
CRI, Kolkata
RRI, Trivandrum
RRI, Itanagar
CRI, Mumbai
CRI, Gwalior
RRI,Nagpur
ARU, Bangalore
CRI, Patiala
CRI, Jaipur
RRI,Mandi
CRU, Kottakal

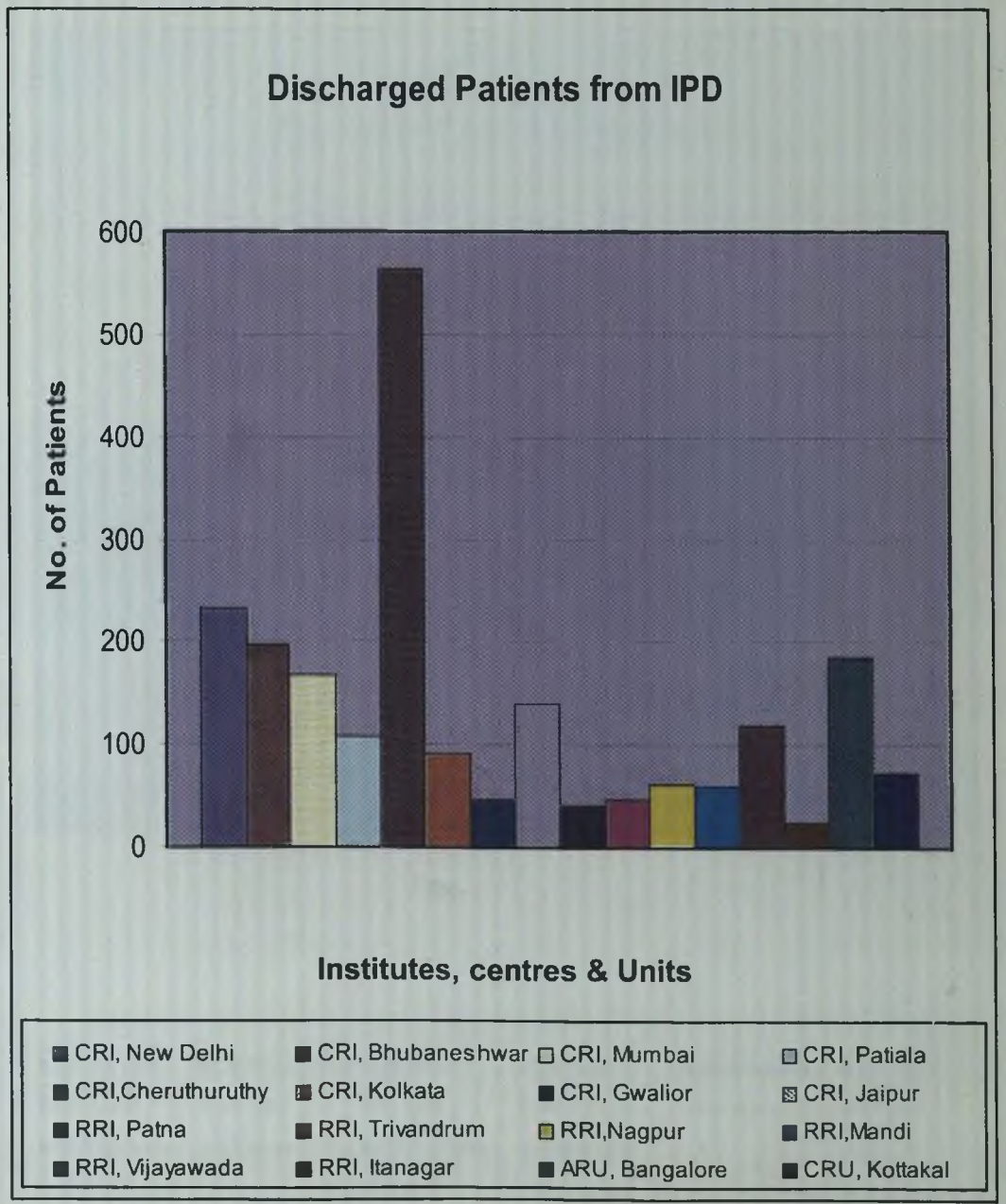
Discharged Patients from IPD
600
500
400
300
200
100
0
No. of Patients
Institutes, centres & Units
CRI, New Delhi
CRI, Bhubaneshwar
CRI, Mumbai
CRI, Patiala
CRI,Cheruthuruthy
CRI, Kolkata
CRI, Gwalior
CRI, Jaipur
RRI, Patna
RRI, Trivandrum
RRI,Nagpur
RRI,Mandi
RRI, Vijayawada
RRI, Itanagar
ARU, Bangalore
CRU, Kottakal

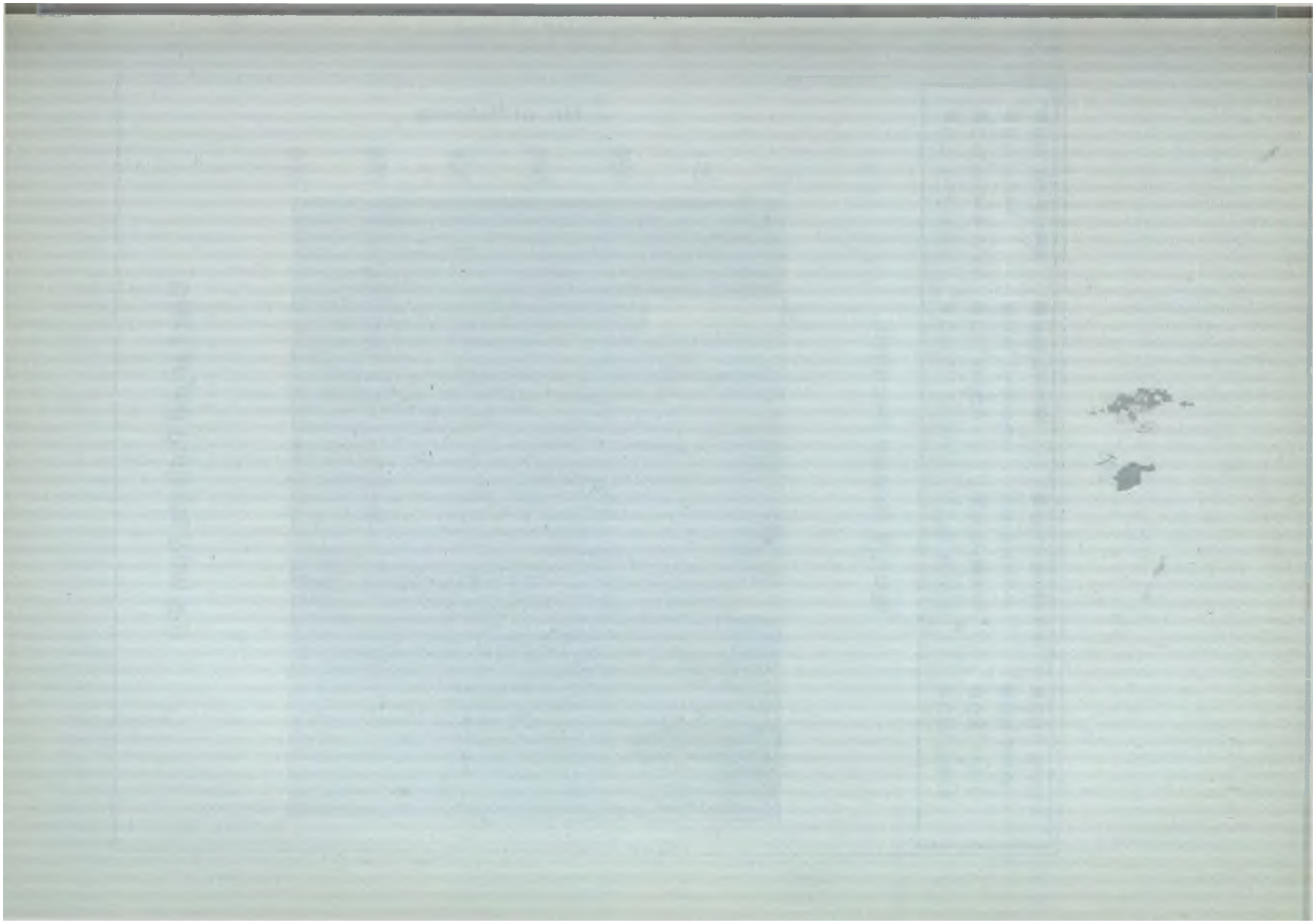

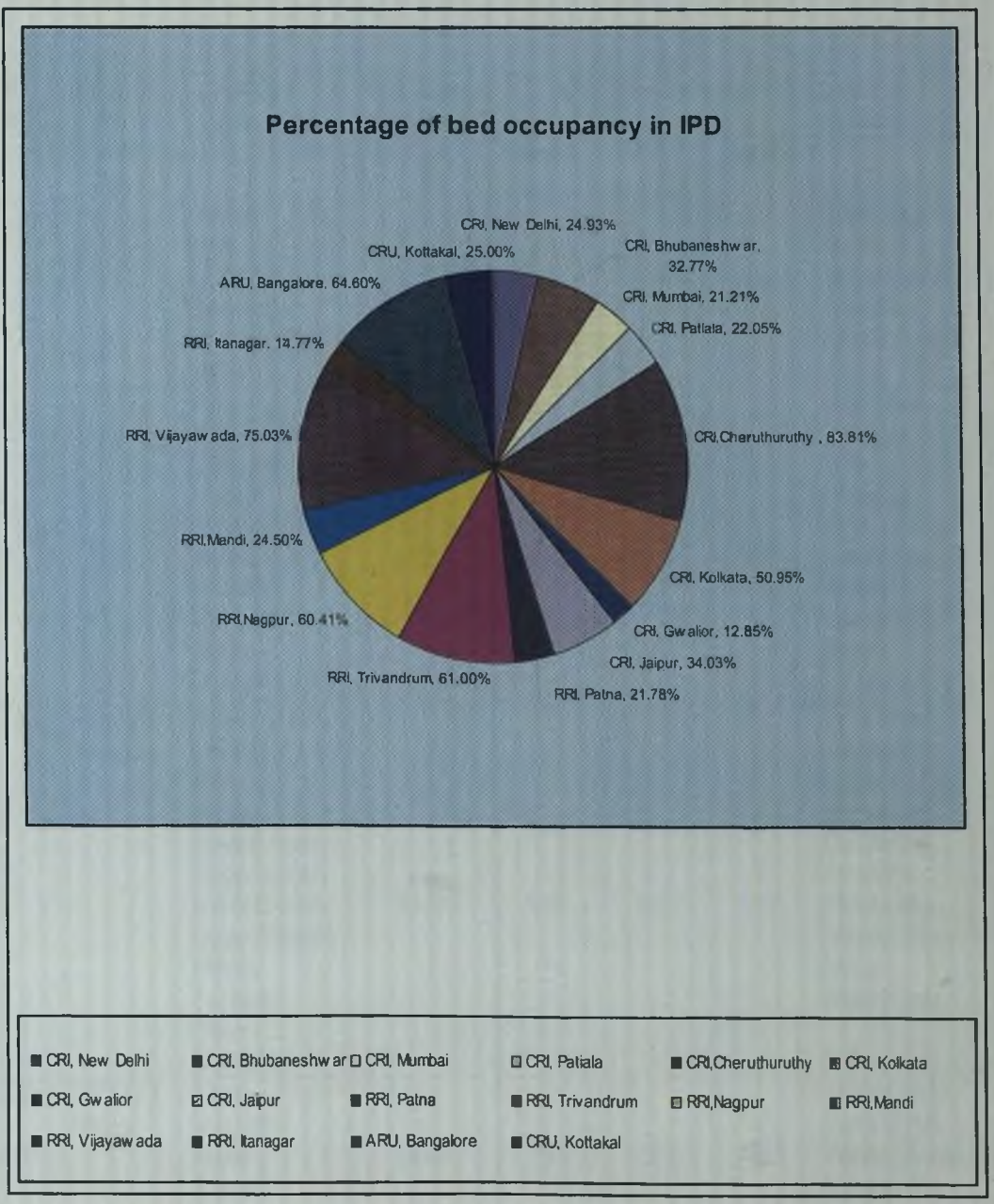
Percentage of bed occupancy in IPD
CRI, New Delhi, 24.93%
CRI, Bhubaneshwar, 32.77%
CRI, Mumbai, 21.21%
CRI, Patiala, 22.05%
CRI,Cheruthuruthy , 83.81%
CRI, Kolkata, 50.95%
CRI, Gwalior, 12.85%
CRI, Jaipur, 34.03%
RRI, Patna, 21.78%
RRI, Trivandrum, 61.00%
RRI,Nagpur, 60.41%
RRI,Mandi, 24.50%
RRI, Vijayawada, 75.03%
RRI, Itanagar, 14.77%
ARU, Bangalore, 64.60%
CRU, Kottakal, 25.00%
CRI, New Delhi
CRI, Bhubaneshwar
CRI, Mumbai
CRI, Patiala
CRI,Cheruthuruthy
CRI, Kolkata
CRI, Gwalior
CRI, Jaipur
RRI, Patna
RRI, Trivandrum
RRI,Nagpur
RRI,Mandi
RRI, Vijayawada
RRI, Itanagar
ARU, Bangalore
CRU, Kottakal

Sl. No.	Name of the Instt./ Unit	Village covered	Population covered	No. of patients attended			Common diseases
				New	Old	Total	
1	CRI(Ay.), Gwalior	Girwari Aron Chimak Dursendhi Shivpuri tribal pocket	5302	686	210	896	Kasa, Jwara, Kandu, Shandishoola, Udarsula, Atisara, Vrana
2.	RRI(Ay.), Nagpur	Kohda Gugguldoh Chargaon Amghat Kohdapur Surevani Pendhari Mohgaonjangli Belda Ghat pendhari	5461	1030	916	1946	Tvak Roga, Katishula, Krimi, Amlapitta, Kasa, Jvara, Sandhivata, Atisara, Vatavyadhi, Pandu
3.	RRI(Ay.), Itanagar	Ganga Vatvasti Holongi Pabar Gwang basti Upper balijan Nanki Balijan Upper Tobong Kokila Tengbari Chesa Doimukh	9630	618	304	922	Tvak Roga, Udarashoola, Jvara, Kasa, Vat vyadhi, Daurbalya, Amlapitta, Katishoola, Atisara, Krimi Roga, Pratishyaya,
4.	RRI(Ay.), Patna	Chata Jhagrahi Rana Damaka Dorsakola	5035	793	290	1083	Twaka Roga, Kasa, Krimi, Sandhishoola. Vatavyadhi, Jwara, Udarsoola,

							Atisara, Katishool, Amlapitta,
5	RRI, Guwahati	Chandrapur Barkhat gaon Luflong Mariakuchi Birkuchi	5139	928	390	1318	Amlapitta, Tvak Roga, Swetapradara, Kasa, Vatavyadhi, Katisula, Daurbalya, Pravahika, Atisara, Jwara
6.	THCRP, Car Nicobar (Shifted to Port-Blair after Tsunami 26.12.04)	Rangat CampbellBay *HQ	1635 -	938 5423	- 5636	938 11059	Twak Roga, Pratisaya, Jwara, Amlapitta, Krimi, Atisara, Mukhroga, Grahaniroga.
Total		39	32,202	10,416	7,746	18,162	

3. MEDICO-ETHNO-BOTANICAL SURVEY PROGRAMME

Medico-Ethno- Botanical Survey is an important component of drug research, which provides basic information/data and authentic raw drug materials for initiating research studies like clinical/ phytochemical / pharmacological / pharmacognostical / drug standardisation etc. Various survey units functioning at the Central / Regional Research Institutes have collected useful basic informations on all aspects covering various important phyto-geographic regions, states and districts including inaccessible rural and tribal areas. These data have been published in the medico-botanical monographs from time to time.

Presently 8 Survey of Medicinal Plants Units at Bangalore, Guwahati, Gwalior, Itanagar, Jhansi, Nagpur, Tarikhet and Trivandrum are functional and altogether collected about 774.25 Kg. of raw drug material and supplied 328 samples to 30 identified Institutions.

Following is the work done at a glance during the year 2005-2006 by the Survey Units of the Council:

Important Work carried out:

No. of Survey Units	Tours conducted	No. of Plant species collected	Raw Drug Samples			No. of Institutions where supplied
			Collected	Supplied	Weight	
8	7 survey, 73 local tours for collection of drugs and 2 market surveys	591	329	338	774.25 kg	30

Herbarium sheets mounted/prepared (including backlog)	Herbarium sheets identified (Including backlog)	Herbarium sheets accessioned	Museum specimen collected	Folk Medical Claims collected
5961	5977	5633	128	33

Paper Published/ Communicated	Technical Know- how imparted	Exhibition Arranged	Participation in Seminar/Workshop
7	10	3	9

The details of work carried out during the current year is as follows:

1. Regional Research Institute (Ay.), Bangalore (Karnataka)

The Survey Unit functioning under RRI (Ay.), Bangalore, has conducted two survey of medicinal plants tour collecting 158 species, belonging to 115 genera and 59 families. These specimens have been processed, mounted and identified.3 collection tours were also undertaken and 160kg. of raw drug was collected for supply. 34 museum samples were added to the museum of the Institute and other routine work like treatment of herbarium specimen, processing and mounting, nomenclature updating etc. were also undertaken. Market survey of Bangalore market was undertaken alongwith trade name, botanical name, part, approximate annual demand and rates have been recorded. 50 Medicinal plants were also assessed. Technical assistance has been provided to various institutions.

2. Regional Research Institute (Ay.), Guwahati (Assam)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Guwahati has undertaken 29 collection tours and collected 90.750kg (fresh weight). of raw drugs for supply to different institutions. Besides this 2 museum samples and 4 folklore claimes were also collected. 3 research papers were presented and one health mela was also organized by the Unit.

3. Central Research Institute (Ay.), Gwalior (Madhya Pradesh)

The Survey Unit at CRIA, Gwalior, has conducted one local tour for collection of raw drugs and collected 11kg. of raw drugs and supplied to different institutes of the Council. Besides this 22 museum samples have been collected and 260 herbarium specimens were identified. The monograph entitled "A Study of Herbal Wealth of Sarguja" has been revised and submitted to the Council for publication. The final part of Bundelkhand monograph is under editing.

4. Regional Research Institute (Ay.), Itanagar (Arunachal Pradesh)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Itanagar has undertaken 2 survey tours and collected 122 plant specimens and 33 museum samples.46 herbarium specimens were identified during the reporting period. Besides this, 10 collection tours were undertaken collecting 30 kg. of

raw drug for supply. Unit has also collected six folk claims. The scientist of the Institute attended six workshops / seminars.

5. Regional Research Institute (Ay.), Jhansi (Uttar Pradesh)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Jhansi has undertaken 5 local survey tours and collected 242 kg. including 124 kg of raw drugs from institutes garden. The Institute has supplied a total of 212 kg. drugs to various Institutes of the Council. The Unit has also participated in exhibition "Jhansi Mahotsava".

6. Regional Research Institute (Ay.), Nagpur (Maharashtra)

The Survey Unit located at RRI (Ay.), Nagpur, conducted one survey tour of Buldhana forest division collecting 6 plants species, 2 museum samples and 21folkclaims. 3 Collection tours were also conducted and 10 types of raw drug weighting 21 kg. were collected for supply. Monograph on Medicinal plants of Melghat distt. Amaravati and Bhandara & Gondia forest divisions were revised and submitted to the Council for publication.

7. Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet (Uttaranchal)

The Survey Unit, RRI (Ay.), Tarikhet has undertaken 2 survey tours collecting 243 plant species for herbarium of the institute.12 collection tours were also undertaken and collected 116 kg of raw drugs for supply to different Institutes. Besides this one market survey of Champawat has been carried out. The details of marketing of raw drugs through forest corporations Pithoragarh & Tanakpur and Bhesaj Sangh, Pithoragarh & Champawat have also been recorded. The institute has identified, accessioned and indexed 5425 herbarium sheets in the Institute's herbarium. The scientists of the Institute attended one workshop / seminars and participated in Uttranchal herbal Expo-2005.One training programme on herbarium management was imparted to Govt./NGO's/foresters/Researchers.

8. Regional Research Institute (Drug Research), Trivandrum (Kerala)

The Survey Unit located at RRI, Trivandrum has conducted10 collection tours collecting 103.5 kg. for supply to different institutes. During these tours 54 plant species belonging to 40 genera and 25 families and 35 museum samples were collected.

9. Central Herbarium and Museum at CCRAS's Hqrs.Office, New Delhi

During the reporting period Central Herbarium and Museum was maintained. This section has been arranging exhibitions in different parts of the country. Council participated in Swasthya and Health Mela at Rae Bareli (U.P.), Nadia (W.B), Ranipet (T.N.), Maharajgunj (U.P); Perfect Health Mela (New Delhi), Pullichapullam (T.N); National Expo and Multimedia Campagin at Kolkatta (W.B.), Dehradun (Uttaranchal), Sajivani, Vahi (M.S.), Melnamabakkam (T.N.), Periyakkullam (T.N.); Arogya-2006 at New Delhi, Hyderabad, Chennai and Thiruvanathapuram and Mega Arogya-2006 at Chittor distt. (A.P.). Besides these Council has also participated in book fair at Aurangabad (Maharastra) organized by National Book Trust, New Delhi.

4. CULTIVATION OF MEDICINAL PLANTS

The Council has taken up cultivation of important medicinal plants of Ayurveda and Siddha at the five herbal gardens located at Pune (Maharastra), Mangliawas (Rajasthan), Tarikhet (Uttaranchal), Jhansi (Uttar Pradesh) and Itanagar (Arunachal Pradesh) on large/semi large/small scale experimental cultivation. These species under cultivation in these gardens comprised of arid/semi-arid/tropical/subtropical and temperate regions. Some exotics have also been grown. The medicinal plants being cultivated under this programme are primarily with an objective to study adaptability, growth, pathogenesis, flowering, fruiting and to assess the yield at different regions in bio-edaphic conditions. Efforts are also being made with the help of experimental studies too provide basic data/suitable agro-techniques for the successful cultivation and growth of rare and endangered species of the medicinal plants.

The medicinal plants garden at Pune is a demonstrative/representative garden together with other research activities. At the Guggulu Herbal Farm, Mangliawas: Guggulu an endangered species *Commiphora wightii* (Arn.) Bhandari, a plant of arid and semi-arid region has been cultivated on large experimental scale with a view to conserve/domesticate and procure of the oleo-gum-resin evolving safe, suitable methods for tapping gum. The oleo-gum-resin is a drug of high repute in Ayurveda. In the herbal garden located at Ranikhet, the Council has successfully domesticated Saffron (Kumkum) and evolved techniques for its propagation.

A brief resume of the work carried out under the cultivation programme at each of the cultivation center is provided here under: -

1. Regional Research Institute (Ay.) (Jawaharlal Nehru Ayurvedic Medicinal Plants Garden and Herbarium), Pune (Maharastra)

The medicinal plant garden of Regional Research Institute (Ay.), Pune is located in the outskirts of Pune city along lower out spurs of Sahyadri ranges and the garden has 19.5 acres of land and is divided into two portion i.e. upper & lower garden. The upper garden overlooking hill slopes, stretches in an area of 11 acres. In this portion of the garden tree species are planted, beside monoculture of a number of medicinal herbs/trees and other species have been taken up. In the lower garden, which is about 8.5 acres, has both tree species and other medicinal herbs from different agroclimatic zones. Total 382 species of medicinal importance alongwith few ornamental species are maintained in the garden, out of which 150 species mentioned in the Ayurvedic Formulary of India, Part I & II. About 20 prioritized medicinal plant species out of 32 recommended by National Medicinal Plants Board have also been maintained.

Large scale plantation of *Gmelina arborea* L. (Gambhari), *Terminalia arjuna* W. & A. (Arjun) and 86 guggulu plants were planted earlier are maintained and routine work related to weeding, cleaning, manuring and measures are being taken up from time to time, for insects, pests protection. The demonstrative garden which occupies the lower portion of the Institute premises possess large number of trees, shrubs, herbs and climbers. Plants of Japa (*Hibiscus rosa-sinensis* Linn.), Nirgundi (*Vitex negundo* Linn.), Bilva (*Aegle marmelos* Corr.), Amalaki (*Phyllanthus emblica* Linn.), Shatavari (*Asparagus racemosus* Willd.), Brahmi (*Bacopa monnieri* (Linn.) Pennell), Vacha (*Acorus calamus* Linn.), Mandukaparni (*Centella asiatica* (L.) Urban), Kalmegha (*Andrographis paniculata* Nees), Kumari (*Aloe barbadensis* Mill.) etc. have been planted in the garden with a view to generate planting material / bulk raw drugs comparatively on moderate scale to meet the requirement of different organizations and different units of the Council. Besides this steps were taken for *ex situ* conservation of threatened species like Chandana, Sarpagandha, Patha, Rakta Chandana, Guggulu, and Ashoka etc. With a view to facilitate demonstration, educate and easy identification of some important medicinal plants, monoculture of some species areas have been demonstrated and designed as "Vatikas". 10 such Vatikas have been demarcated and maintained during the reporting year.

170 herbarium sheets comprising of 68 species have been prepared and added in the herbarium.

During the year 156 kg dried genuine 50 crude drugs were collected/procured and supplied to various Units, Institutes/H.Q. CCRAS for chemical/ phytochemical testing and for preparation of Ayurvedic formulations. Some of the crude drugs collected and supplied includes Amalaki (*Phyllanthus emblica* Linn.)-Fruit; Aragwadh (*Cassia fistula* Linn.)-Fruit, Arjuna (*Terminalia arjuna* W. & A.)-Fruit, Madana (*Randia dumentorum*)-fruit, Latakaranja (*Caesalpinia crista* Linn.)-Seed etc. and about 40 kg fruits/seeds, drugs belonging to 23 species of medicinal importance were collected from the garden for supply purpose and seed bank.

The Institute earned Rs.41, 118/- from various sources by i.e. the sale of books, different publications of the Council, Guggulu seedlings, medicinal plants, Herbarium sheets identification and other miscellaneous items.

The garden received about 400 visitors during the period, particularly students from various colleges from different parts of the country and also some visitors from abroad including physicians, scientists and academicians.

2. Guggulu Herbal Farm, Mangliawas, Ajmer (Rajasthan):

The Guggulu Herbal Farm, Mangliawas is situated about 26 km. from Ajmer. The main activities of the Herbal Farm is the conservation, cultivation and propagation of Guggulu {*Commiphora wightii* (Arn.) Bhand.} on large scale and observing its growth behaviour under different experimental conditions. The entire farm consists of about 142 acres of land, out of these

about 1/3rd land in under cultivation and 2/3rd is occupied by the natural flora of medicinal plants. At present there are about 14081 Guggulu plants growing on mass experimental scale in different blocks. Besides Guggulu 67 plant species are growing in the farm such as *Gloriosa superba, Acacia nilotica, Tinospora cordifolia, Asparagus racemosus, Pongamia pinnata, Boswelia serrata, Rhus mysoorensis, Tribulus terestris, Tephrosia purpurea* etc. and among them 49 plant species are from Ayurvedic formulary part-I.

Studies such as (i) Guggulu (200 plants) tapped with treatment of 400 mg. of ethephone, (ii) Detailed flower biological study of Guggulu, (iii) Improved tapping studies of Guggulu (40 plants), (iv) Factors affecting gum exudation in the plants, (V) Enhancement of oleoresin production in Guggulu (30 plants) by improved tapping techniques were also undertaken.

During the year 1064 Guggulu plant were planted in the Field, and 199 Guggulu plants dried due to tapping. During last six to seven years about 200 plants dried and wild animal (Blue Bulls) attack due to termite and severe drought condition. 5350 Guggulu seedlings were germinated in cemented nursery beds, 4523 seedlings were packed in plastic bags.

63.650 Kg. Guggulu gum and 6.800 kg of kemat (*Acacia senegal* Willd.) gum was collected from the farm, 12 items of raw drugs / saplings / cuttings and Guggulu gum were supplied to various institutes and hospital of the Institute to various organizations and sum of Rs. 29,320/- was collected by sale of seedlings, fresh stem and root cuttings. Presently 97.050 Kg. of Guggulu gum is in stock.

3. Regional Research Institute (Ay.), Tarikhet (Uttaranchal):

The medicinal plants garden is situated at an altitude of 1700 m; it is surrounded by thick pine forest having some trees of Deodar, Myrica, Rhododendron, Quercus and shrubs like Berberis, Rubus sp., Crataegus sp. etc. The Garden is presently having about 2.5 acres under medicinal plant and about 1.53 acre under saffron cultivation.

194 medicinal plants are being maintained in the garden. These species mainly belong to sub-alpine, temperate and Tarai-Bhabar region of Uttaranchal. Keeping in view the resource generation programme, a Nursery was developed during last 2 years. About 40 medicinal plants species are being grown through seeds. To conserve the diversity of medicinal plants, endangered, rare and threatened species are also being reared viz. Kutki, Puskarmool, Chiraita, Sati, Koot, Kalihari, Vatsnabh, etc. Sapling of Sati (Kapoorkachari) have been successfully raised through seed. This is one of the milestone achievements of this year. 1.5 kg. seed of 28 medicinal plants has been collected for sowing next year and for resource generation programme.

The cultivation of Saffron is also being carried out successfully. Better growth was

observed this year as compared to last 2 years. It was due to digging all the corms and replanting these in scientific manner. 5198 flowers were collected. 41.71 gm. dry saffron was obtained. 36.24 gm saffron was supplied to CCRAS, HQ. and CSMDRIA, Chennai for research work.

About 11 kg. raw drug material comprising 5 items were supplied from Garden to different research institutions. Total Rs. 3064.00 were generated through sale of seed and saplings of the medicinal plants from the garden.

Guidance was also provided in the field of medicinal plants cultivation to various visitors belonging to different Govt., Non-Govt. organization and research Institutes.

Van Aushadhi Vatika, Chamma (Tehri Garhwal)

The Vanaushadhi Vatika is located in Chamma town of District Tehri-Garhwal at 1500 m.a.s.l. on Northwest aspect of Garhwal Himalaya. The main aim of the garden is to collect seeds as well as to grow medicinal plants of temperate, sub-alpine and alpine regions of Himalaya. At present 124 medicinal plants species along with saffron are being cultivated for research purpose. Rs. 200 were earned through sale of medicinal plant saplings. This year 45 medicinal plants were introduced in the Vatika. 3000 corms of saffron were replanted and 900 flowers were collected from which 8 gm. (dry) saffron was obtained.

4. Regional Research Institute, Itanagar (Arunachal Pradesh):

The medicinal plant garden of the Institute occupies about 15 acres of land consisting of steep slopes and ditches. About 10.5 acres of land is presently devoted to cultivation of medicinal plants. A total of 200 species of plants of Ayurvedic importance are growing in the garden. The entire plantation also represents 118 species of medicinal plants mentioned in Ayurvedic Formulary of India, Part-I. Some of the plants are Arjuna (*Terminalia arjuna*), Chitrak (*Plumbage zeylanica*), Nagkeshara (*Mesua ferrea*), Hanspadi (*Adiantum lunulatum*), Vidanga (*Embelia ribes*), Guduchi (*Tinospara cordifolia*) and Pippali (*Piper longum*) etc. are growing in different beds under experimental cultivation.

Medicinal plants i.e. Manjishtha (*Rubia cordifolia*), Daru Haridra (*Berberis aristata*), Pashan Bheda (*Berginea ligulata*) and Tagara (*Valeriana hardwickii*) of alpine/ sub-alpine/ and arid zones are introduced in the garden. Stem cutting of Sarpagandha (*Rauvolfia serpintina*) (200 plants) and by seed germination, 350 plants of Dronapushpi (*Leucas lavendulaefolia*), 1500 plants of Chakramarda (*Cassia tora*) and 45 plants of Tulsi (*Ocimum sanctum*) were also transplanted.

During current year plants of *Curcuma casea*, *C. zedoaria*, *Rauvolfia serpentina*, *Stevia sp.* were cultivated.

100 kg. raw drugs were collected and supplied to OPD of the Institute and Drug Standardisation Units of CCRAS.

One project on Quality Planting Materials sponsored by National Madicinal Plants Board is running with this Institute, under which very specific and valuable medicinal plants and their plants materials are being raised for specific agro technique technology.

5. Regional Research Institute (Ay.), Jhansi (Uttar Pradesh):

The cultivation of medicinal plants programme is confined to about 10 acres of land and the garden has about 215 medicinal plants. Several medicinal plants such as Amala, Neem, Gambhari, Salai, Sagon, Sirisa, Arjun, Varun, Bilayati, Semal, Behera, Khair, Jammun, Meetha, Kutaj, Lisora, Saptaparan, Saijan, Gular, Chilbil, Imali, Mahua, Eucalyptus, Safed Kikar, Gunj, Patala, Shivnak, Harsingar, Pippal, Bilwa, Kaner, Kachnar, Kanji, Jangal-Jalevi, Nirgundi, Meetaneem, Arulu etc. have been planted under experimental programme and the medicinal plant like Guggulu, Satavari, Yastimadhu, Sarpagandha. Bhed, Ghritkumari, Pris-naparni, Salparni, Rasana, Kalmegh, Isabgol, Tulsi, Arkpatri, Vasa, Anantmool, Bakuchi, Brahmi, Mandukparni, Aswagandha, Shankpuspi, Gunja, Danti, Arni, Latakaranj, Trvrit, Desi Akarkara were successfully grown. The entire plantation include about 110 medicinal species mentioned in Ayurvedic Formulary of India, Part-I were also maintained.

124.0 Kg. of the fresh weight of raw drugs of various plants have been collected from the Institute garden. Authentic samples of 32 plant species (1.0 Kg. each) were supplied to CSMDRIA Chennai and ITRC, Lucknow for examination of microbial load, pesticide residues and heavy metal, etc. under Central scheme of A.P.C. and amount of Rs. 2450/- was generated through this supply. Seeds, saplings and cuttings of 18 species of medicinal plants of Ayurvedic importance have been collected and planted in pots/beds. A green house with 200 potted plants of 50 species of important Ayurvedic medicinal plants is maintaining for demonstration purpose.

5. MUSK DEER BREEDING PROGRAMME

The Council is maintaining a Musk Deer Breeding Farm at RRI (Ay.), Tarikhet. The Chief Wild Life Warden, U.P. in 1974, permitted to capture of musk deer from wild for breeding of animals and collection of musk for research purposes without sacrificing the animal. Musk is a life saving drug used in many Ayurvedic formulations viz. Mrigamadasav, Kasturi Bhairava Rasa, Kasturi Modak, Vasant Kusumakar Rasa etc.

During the period under report, 18 animals (11 male and 7 female) were maintained. This year 116.11 gm. musk was collected.

After the observation in recent years, it was found that the musk deer like to spend their life quietly. They did not like congested areas. They like a free, clean and fearless environments.

6. PHARMACOGNOSY RESEARCH STUDIES

For establishing the Botanical identity of the drug along with their substitutes and adulterants the Pharmacognostical Research Units located at Bangalore Kolkata and Pune have taken up the Pharmacognostical investigations of the following drugs widely used in Ayurveda:-

1. Regional Research Institute (Ay.), Bangalore:

(a) Jayanthi (*Sesbania grandiflora*): Leaf.
(b) Kakamachi (*Solanum nigrum*): Whole plant.
(c) Karanja (*Pongamia pinnata*): Leaf.
(d) Karavalla (*Momordica charantia*): Fruit.
(e) Kozuppa (*Portulaca oleraca*): Whole plant.
(f) Lajjalu, Samangi (*Mimosa pudica*): Whole plant.
(g) Madhurika (*Foeniculum vulgare*): Fruit.
(h) Methi (*Trigonella foenum* greecum): Seed.
(i) Sarala (*Pinus roxburghii*): Wood.
(j) Tintidika (*Rhus parviflora*): Fruit.

2. Central Research Institute (Ay.), Kolkata:

Amalakyadi Compound Capsules
(a) Amlaki (*Emblika officinalis* Gaertn.): Dried, mature fruits.
(b) Ashwagandha (*Withania somnifera* Dunal.): Dried, mature fruits.
(c) Guduchi [*Tinospora cordifolia* (Wild.) Miers.] : Small pieces of stem.
(d) Marica (*Piper nigram* Linn.): Dried, mature fruits.
(e) Nimba (*Azadiracta indica* A.Juss.): Stem bark.
(f) Pippali (*Piper longum* Linn.): Dried, immature catkin like fruits.
(g) Punamava (*Boerhavia diffusia* linn.): Dried, mature whole plant.
(h) Shunthi (*Zingiber officinale* Rosc.): Dried, mature rhizomes.

3. Regional Research Institute (Ay.), Pune:

(a) Aragwadha (*Cassia fistula* Linn.): Fruit pulp.
(b) Ashoka (*Saraca asoca* Linn.): Stem bark.
(c) Ashvatha (*Ficus religiosa* Linn.): Stem bark.
(d) Ashwagandha (*Withania somnifera* Dunal.): Root.
(e) Atasi (*Linnum usitatissimum* Linn.): Seed.
(f) Bakuchi (*Psorela corylifolia* Linn.): Fruit.
(g) Bibhitaka (*Terminalia belerica* Roxb.): Fruit pulp.

(h) Bilva (*Aegle marmelos* Corr.): Fruit pulp (Unripe).
(i) Chandrasure (*Lepidium sativum* Linn.): Seed.
(j) Dhanyaka (*Coriandrum sativum* Linn.): Fruit.
(k) Dhataki [*Woodfordia fruticosa* (L.) kurz.] Flower.
(l) Gokshura (*Tribulus terrestris* Linn.): Fruit.
(m) Guduchi (*Tinospora cordifolia* Miers.): Stem.

The studies covered details of the drugs in respect of the origin, botanical identification and correct determination of Ayurvedic nomenclature including synonym together with properties, botanical description and diagnostic characters. This comprehensive task includes study of powder drugs and different facets, such as morphology of drug parts including the sensory characters, cell and thin layer chromatographic studies. The analytical studies of the powdered drug which is considered to be of immense help in detection of adulterants was also carried out. These studies are useful in evolving the pharmacopoeial standards for single drugs besides helping in their proper identity/authenticity.

7. PLANT TISSUE CULTURE

Aim of Plant Tissue Culture studies are to propagate multiply and conserve the rare/vulnerable/endangered and important Ayurvedic Medicinal Plants. The Plant Tissue Culture Laboratory at RRI(Ay.) (JNAMPG&H), Pune continued to standardize *in vitro* propagation technique and phytochemical studies of rare, endangered plants.

Experimental studies on plant tissue culture of five rare, endangered, important Ayurvedic medicinal plants, viz. Shyonaka (*Oroxylum indicum* (L.) Vent.), Prishniparni (*Uraria picta* (Jacq.) Desv), Trivrita (*Operculina turpethum* L. Silva Manso), Bharanagi (*Clerodendrum serratum* (Linn.) Moon) and Manjistha (*Rubia cordifolia* Linn.) were conducted in order to standardize the *in vitro* propagation techniques. The *in vitro* propagatrion trials conducted on five plants with achievements are given below:

1. Shyonaka [*Oroxylum indicum* (L.) Vent.]:

In vitro trials of Oroxylum indicum were conducted using axillary, apical bud and nodal segments as explants. Explants were inoculated on MS medium fortified with BAP, Kn, IAA, GA_3 and PVP in different concentrations. Regeneration of multiple shoots, formation of green callus was observed. Further trials are in progress.

2. Prishniparni [*Uraria picta* (Jacq.) Desv.] :

Regeneration trials of *Uraria picta* were conducted using in vitro grown nodal segments, cotyledonary nodes and cotyledons as explants.

In vitro grown cotyledons were inoculated on MS medium supplemented with BAP, AS, Kn, IAA and NAA in varying concentrations. Cotyledons, cotyledonary nodes and nodal segment cultures showed positive response in almost all concentrations of hormones tried. Rooting trials were conducted by inoculating *in vitro* grown shoots on ½ MS, MS plain and ½ MS fortified with IAA and IBA singly and in combinations.

100% rooting was observed in all concentrations of phytohormones tried. Complete *in vitro* grown plants were successfully hardened with 70-80% survival response.

3. Trivrita [*Operculina turpethum* L. Silva Manso]:

In vitro regeneration trials of *Operculina turpethum* were carried out using seeds, nodal segments, cotyledonary nodes and cotyledons as explants. Regeneration was observed on MS medium supplemented with BAP and Kn singly. Rooting trials were carried out by inoculating *in vitro* grown shoots on ½ MS, MS plain and ½ MS combined with IAA, IBA and NAA singly. Preliminary hardening trials have been initiated.

4. Bharangi [*Clerodendrum serratum* (Linn.) Moon]:

In vitro regeneration trials of *Clerodendrum serratum* were carried out using nodal segments on MS plain and MS fortified with BAP and Kn singly. Multiple shoot regeneration was observed on MS+Kn medium. Rooting trials were initiated by inoculating *in vitro* grown shoots ½ MS with IBA and further trials are in progress.

5. Manjistha [*Rubia cordifolia* Linn.]:

In vitro regeneration trials of *Rubia cordifolia* using nodal sectors have been initiated. Explants were inoculated on MS plain and MS fortified with BAP and Kn singly. Within 15-20 days swelling of explant was observed but due to leaching the explants did not survive. To avoid leaching, the medium was supplemented with 0.1% PVP. Further regeneration trials using MS medium supplemented with IAA, IBA, NAA along with 0.1% PVP are in progress.

8. DRUG STANDARDIZATION RESEARCH PROGRAMME

Ayurvedic drugs consist of large number of drugs of plants, mineral and animal origin, being used from ancient times and having their potential therapeutic claims with their quality control. Standardization is a measure to achieve uniform quality drug. The Council has taken up the task of laying down standardization of single as well as compound formulations and the method of manufacture through its Drug Standardization Units located at Chennai, Kolkata, Bangalore, Trivandrum, Lucknow and Jamnagar. Standardization of compound formulations having multiherbal drugs/herbo-mineral components and various classes of drug/formulations like Bhasmas, Asava, Arista and Rasa Yogas etc. is very difficult task. The standardization aim is to undertake studies on quality and safety of herbal drugs and compound formulations as per WHO guidelines and for the purpose some of the important parameters incorporated in the format are TLC profile, HPTLC finger printing, determination of microbial load and heavy metal contents besides other parameters.

75 single plant origin and 2 mineral origin drugs, 31 Churna/ Kwatha Churna ,5 Asava/ Arista and 27 other formulation required for clinical trials have been standardized .Then TLC/ HPTLC studies have also been incorporated in addition to determination of heavy metal and pesticide residue in certain formulations.

Under the WHO biennium programme "Standardization and toxicity studies of Ayurvedic Formulations", five formulations have been prepared and their standard operating procedure (SOP) and standardization studies have been completed. Under the project "Feasibility of Introducing ISM at PHC Level" preparation and testing of 14 selected formulations is at final stage for development of Standard Operational Procedure (SOP) and Standards.

I Standardization of Single Drugs

A. Plant Origin

1.	Brahmi	Bacopa monnieri	RRIT
2.	Saireyaka	Barleria prionitis	-do-
3.	Kancanara	Bauhinia racemosa	-do-
4.	Krisna-Jiraka	Carvi carum	-do-
5.	Hingu	Ferula foetida	-do-
6.		Heacleum rigens	-do-

7.	Kutaja	Holarrhena antidysenterica	-do-
8.	Upakumchika	Nigella sativa	-do-
9.		Piper retrofactum	-do-
10.	Chitraka	Plumbago zeylanica	-do-
11.	Neem oil	Azadirachta indica	-do
12.	Vaca	Acoruscalamus	do,CSMDRIAC
13.	Aragvada	Cassia fistula	-do-
14.	Jiraka	Cuminum cyminum	-do-
15.	Haritaki	Terminalia chebula	do,CRID
16.	Vansalocana	Bambusa bambos	DSRPJ
17.	Sunthi	Zingiber officinale	-do-
18.	Rasna	Pluchea lanceolata	-do-
19.	Madhuka	Madhuca indica	-do-
20.	Jaggery	Saccharum officanarum	-do-
21.	Arjuna	Terminalia arjuna	-do-
22.	Draksha	Vitis vinifera	-do-
23.	Dhataki	Woodfordia fruticosa	-do-
24.	Eranda	Ricinus communis	-do-
25.	Punarnava	Boerhavia diffusa	-do-
26.	Twaka	Cinnamomum zeylanicum	–do-
27.	Sarala	Pinus roxburghii	RRIB
28.	Tintidika	Rhus parviflora	-do-
29.	Lajjalu	Mimosa pudica	-do-
30.	Guduchi	Tinospora cordifolia	CRID
31.	Amlaki	Emblica officinalis	-do-
32.	Methi	Trigonella foenum graeam	do-
33.	Gurmar	Gymnema sylvestre	-do-
34.	Lodhra	Symplocos spicata	-do-
35.	Parijata	Nyctanthas arbor-tristis	-do-
36.	Puskar	Inula racemosa -	do, CSMDRIAC
37.	Bel	Aegle marmelos	-do-
38.	Bibhitaka	Terminalia bellirica	-do-
39.	Yashti madhu	Glycyrrhiza glabra	-do-
40.	Kamala	Nelumbo nucifera	CSMDRIAC
41.	Rakta-chandana	Pterocarpus santalinus	-do-
42	Rasna	Alpinia calcureta	-do-

43.	Kakoli	Lilium polyphyllum	-do-
44.	Hamaspadi	Adiantum lunulantum	-do-
45.	Haridra	Curcuma longa	-do
46.	Salaparni	Desmodium gangeticum	-do
47.	Gojivha	Elephantopus scaber	-do-
48	Pippali	Pipper longum	-do-
49.	Ushir	Veteveria zizanioides	-do-
50.	.Kantakari	Solanum xanthocarpus	-do-
51.	Bhunimba	Andrographis paniculata	-do-
52.	Aparajita	Clitorea ternatea	-do-
53.	Ashwagandha	Withania somnifera	-do-
54.	Guraksha	Aerva lanata	-do
55.	Lakshamana	Ipomoea Sp.	-do-
56.	Tulsi	Ocimum sanctum	-do-
57.	Samudra Narikal	Lodoicea maldivica	-do-
58.	Musta	Cyperus rotundus	-do-
59.	Riddhi	Habenaria intermedia	-do-
60.	Nirgundi	Vitex negundo	-do-
61.	Krishna sariba	Cryptolepis buchanani	-do-
62.	Svet Sariba	Decalepis harmiltonii	-do-
63.	Hamsapadi-Bheda	Desmodium triflorum	-do-
64.	Indravaruni	Citrullus colocynthis	-do-
65.	Chandana(Sveta)	Santatum album	-do-
66.	Brihati	Solanum sp-	-do-
67.	Ksheerakakoli	Fritillaria royles	-do-
68.	Kharjura	Phoenix sylvestris	-do-
69.	Sravani	Sphaeranthus indicus	-do-
70.	Lavanga	Syzygium aromaticum	-do-
71.	Jevanthi	Holostemma adakodien	-do-
72.	Vrsksamala	Garcinia indica	-do-
73.	Haritmanjari	Acalypha indica	-do-
74.	Badam	Prunus amygdalus	-do-
75.	Pudina	Mentha arvensis	-do-

B. Mineral Origin

1.	Silajit	Black Bitumen	CSMDRIAC
2.	Saindava Lavana	Rock salt	-do-

II. Standardisation of compound formulations

A. Churna/Kvatha Churna/Vati

1.	Sitopaladi churna		RRIT
2.	Hingvastava churna		-do-
3.	Hutabhugadi churna		-do-
4.	Rasnairandadi	Kvatha churna	-do-
5.	Tryantyadi	-do-	-do-
6.	Maharasnadi	-do-	-do-
7.	Vidaryadi	-do-	-do-
8.	Bhaskar Lavana	Churna	RRIB
9.	Srngyadi	-do-	-do-
10.	Samangadi	-do-	-do-
11.	Amrtottara	Kvatha churna	CRIL
12.	Ardhabilva	-do-	-do-
13.	Ashtavarga	-do-	-do-
14.	Chaturbhadra	-do-	-do-
15.	Chhinnodbhavadi	-do-	-do-
16.	Gandarbhastadi	-do-	-do-
17.	Chandanadi	Churna	-do-
18.	Chaturjata	-do-	-do-
19.	Chitrakadi	-do-	-do-
20.	Jatiphaladi	-do-	-do-
21.	Talisadi	-do-	-do-
22.	Trikatu	-do-	-do-
23.	Trutyadi	-do-	-do-
24.	Triphala	-do-	-do-
25.	Madhumehari	-do-	-do-
26.	Shirishadi	Kvatha	CSMDRIAC
27.	Amlakyadi	Churna	CRIK
28.	Avipattikara	-do-	-do-

29.	Arogyabardhini Churna /Vati		-do-
30.	Chandraprava	-do-	-do-
31.	Swetparpati	-do-	-do-
B.	**Asava/Arista**		
1.	Abhayarista		CRIL
2.	Amritarista		-do-
3.	Chandanasava		-do-
4.	Draksharista		CSMDRIAC
5.	Kadirarista		-do-
C.	**Other Formulations**		
1.	Vasavalehya		RRIB
2.	Sarsapadi Prelap		-do-
3.	Medohara Yoga		CRIK
4.	Sleepadari Rasa		-do-
5.	Pippalyadi Yoga		-do-
6.	Pippali+Punaranava + Triphala(Cap.)		-do-
7.	Vaca+Brahmi Ghanasatva (Cap.)		-do-
8.	Haridra Khanda		-do-
9.	Ayush-56 (new Batches)		-do-
10.	Cancer Gaja Kesari		CSMDRIAC
11.	Ayush –Poshak Yoga		-do-
12.	Punarnavadi Mandur		-do-
13.	Parijata Patra Powder		-do-
14.	Parijata Patra Ghanvati		-do-
15.	Swas kesari (cap.)		-do-
16.	Vrikshamalyadi Yoga		-do-
17.	Tila Taila		
18.	Ayush-M Nasal drops		-do-
19.	Ayush –Rasayana A (also contents of heavy metals Pb, Cd & Hg)		-do-
20.	Ayush-Rasayana B	(-do-)	-do-
21.	Ayush-RP	(-do-)	-do-
22.	Ayush - Osto	(-do-)	-do-
23.	Ayush-LIV	(-do-)	-do-

24.	Ayush-SL (internal)	(-do-)	-do-
25.	Ayush-SL Lepa (external)	(-do-)	-do-
26.	Ayush-Manas	(-do-)	-do-
27.	Ayush-QOL-2	(-do-)	-do-

III. **Procurement of Raw Drugs/Development of SOP/Preparation and standardization of formulations for the project "Feasibility of introducing ISM at PHC Level".**

a) **Quality assessment of raw drugs**: For preparation of RCH drugs quality assessment of 17 raw drugs used in the formulation, have been done and TLC profile of 31 single drugs have been designed.

b) **Preparation of standardization of formulations**: Following 6 RCH formulations were prepared again by the Council's pharmacy at CRI(Ay.), Kolkata as per SOP developed and standardized. Certain parameters have also been recheked in all the 10 RCH formulations.

1. Ayush – AG Tablet
2. Ayush – GG Tablet
3. Ayush-LND Tablet
4. Ayush-VRG Tablet
5. Ayush-SDM Tablet
6. Ayush-UT-Ointment

IV. Isolation of Marker Compounds:

Name of the Plant Structure, name and M.P. of the compound	
1. Cynodon dactylon	**2 .Mesua ferrea**
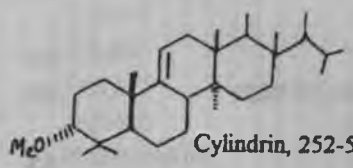 Cylindrin, 252-54°c	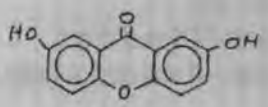 2,7-Dihydroxyxanthone, 165°c

3. Andrographis paniculata

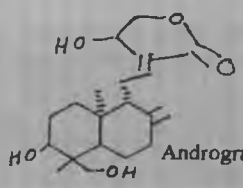

Andrographolide, 218°c

4. Clerodendrum infortunatum

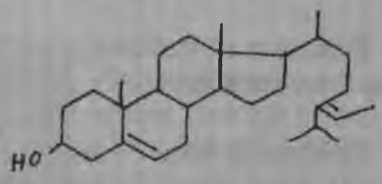

Clerosterol, 147°c

5. Piper nigrum

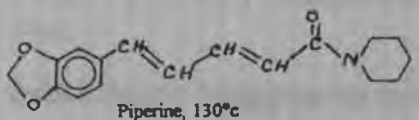

Piperine, 130°c

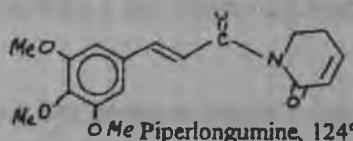

Piperlongumine, 124°c

6. Swertia chirata

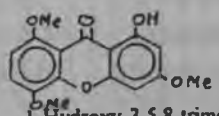

1-Hydroxy-3,5,8-trimethoxy xanthone, 203 - 204°c

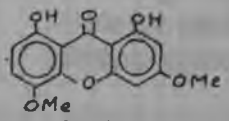

1,8-Dihydroxy-3,5-dimethoxy xanthone (Swerchirin), 185°

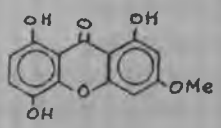

1,5,8-Trihydroxy-3-methoxy xanthone, 270-271°c

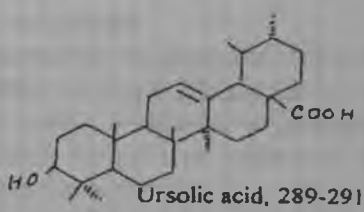

Ursolic acid, 289-291°c

V. **Disease oriented Drug Research:**

Evaluation of medicinal property of the extract/isolated pure compound of the following Ayurvedic plants:

a) Anti-diabetic drugs - Jambu (Eugenia jambolana) & Kairata (Swertia chirayita).
b) Antioxidant agent - Amlavetasa (Garcinia pedunculata)
c) Cancer preventive and anticarcinogenic activity - Kairata (Swertia chirayita).
d) Natural Mosquito larvicide - Nagkesar (Mesua ferrae).
e) Herbal iron chelating agent for the ironmetabolic disorders e.g. Thalassaemia, hemolytic anemia etc.- Godhum (Tritium aestivum).

VI **Drug's Extract prepared and supplied for pharmacological clinical studies:**

(a.)	Nimbathiktham	38,520 Cap.-(200 mg.)	RRIT
(b)	Neem oil	2 Lit.	-do-
(c)	Psoralin oil	750 ml.	-do-
(d)	Piper nigrum-Ghansatva	250 gm.	-do-
(e)	Bacopa monnieri	200 gm. (alcohol extract)	-do-
(f)	Psoralea corylifolia	Benzene & ethanol extracts	CRID

9. PHARMACOLOGICAL RESEARCH PROGRAMME

Pharmacological and Toxicological studies constitute a very vital part in Drug Research Programme. These studies are based on experimental models in different species of animals. This provides vital information for pursuing clinical studies. These studies are carried out by various Pharmacological/Toxicological Research Units located at Cheruthuruthy, Jamnagar, Kolkata, Mumbai, Patiala and Trivandrum. During the reporting period, 25 single drugs, coded drugs and compound formulations have been investigated and a brief resume of these studies is as given below:

1. Ayush –BR Tablets **CRIK**

Histopathological studies were carried out. 1500 mg./kg. dose showed normal histological picture in comparison to control.

2. Ayush –GG **CRIK**

Histopathological screening was completed 1000 mg./kg dose showed normal histological picture in comparison to control.

3. Ayush –LND **CRIK**

Histopathological studies were completed. There is no change in weight of vital organ, haematological and biochemical parameters in rat treated with the drug at 1500mg./kg., *p.o.* for 15 and 30 days. The histological characters also show no abnormal features in tissues studied.

4. Ayush-M (Compound Ayurvedic preparation) **CRICh**

Sub-acute toxicity study in rats was carried out. No death and clinical signs of toxicity were observed in any of the groups which received the drug in different doses. Ayush-M caused significant increase in body weight in different doses. An increase in prothrombine time was observed in the groups which received Ayush-M alongwith an increase in the lymphocyte percentage. No significant histopathological changes were observed.

5. Ayush-Manas **CRICh**

Sub-acute toxicity studies was carried out in rats. No death and clinical signs of toxicity were observed in any of the group which received Ayush Manas in different doses. The drug was devoid of any significant increase in body weight in different doses. No significant histopathological

changes were observed except for collection of lymphocyte in lungs and foci of necrosis in hepatocytes occasionally in some rats.

6. Ayush-PG **CRIK**

The histopathological studies were carried out in different tissues viz. heart, liver, spleen, kidney and adrenal. 1000mg./kg. dose showed normal histological picture in comparison to control.

7. Ayush –QOL 2 **CRICh**

Sub-acute toxicity study in rats was carried out. No death and clinical signs of toxicity were observed in any of the groups which received Ayush-QOL 2 in different doses. It caused significant increase in body weight in different doses. No significant histopathological changes were observed.

8. Ayush-SDM **CRIK**

Histopathological studies were completed. There is no change in weight of vital organ, haematological and biochemical parameters in rat treated with the drug at 500mg./kg., *p.o.* for 15 and 30 days. The histological characters also shows no abnormal features in tissues studied.

9. Ayush-SL **CRICh**

Sub-acute toxicity studies was carried out in rats. No death and clinical signs of toxicity were observed in any of the groups which received Ayush-SL in different doses. The drug was devoid of any significant increase in body weight in different doses. It caused temporary decrease in the SGOT level and total erythrocyte count, but was normal at the end of the experiment. No significant histopathological changes were observed except for dilation and red blood cell accumulation in sinusoidal spaces of spleen.

10. Coded Drug – AG **PhRUFJ**

Wounds healing (excision wound and dead space wound) activity of the coded drug AG was evaluated in suitable experimental models. The drug had no influence on the contraction of wound healing.

11. Coded Drug – AGT **PhRUFJ**

The above mentioned coded drug was also evaluated for its wound healing activity in excision and dead space wounds. AGT reduced the days required for complete healing in comparison to control group in case of excision wounds. It has wound healing promoting property in dead space wounds by increasing the granulation tissue formation. It also moderately increased tensile strength.

12. Coded Drug –L **CRIK**

Acute toxicity study of coded drug L was carried out on albino mice. The animal treated with 2000 mg./kg. dose showed dull, less active and 20% mortality within 24 hours, while other groups showed no mortality and no change in the behavioural activities.

During sub-acute toxicity screening 450 mg./kg. dose showed 16% mortality within 2 weeks. The drug shows no significant effect in blood biochemistry, haematology and body weight of vital organ in comparison to control.

The histopathological picture of rat tissue treated with "L" at the dose of 450 mg./kg., body weight in case of male and female shows normal histological structures in comparison to control animal tissue.

13. Coded Drug-K **CRIK**

The acute toxicity studies on coded drug-k were completed. 2000mg./kg dose showed dull, less active and 10% mortality recorded within 96 hours.

During sub-acute toxicity studies 450 & 225 mg./kg. dose showed 16% mortality within four weeks. Coded drug-K shows no significant effect in blood haematology (RBC, WBC, Hb, PT, TC,DC,MCU,MCH, MCHC) and blood biochemistry (glucose, SGOT, SGPT, serum creatinine) and body weight in comparison to control.

The histological picture of rat tissue (treated with coded drug 'K' at the dose of 450 mg./kg. body weight) in both male and female shows normal histological structure in comparison to control animal tissue.

14. Coded Drug – S **PhRUFJ**

The drug was subjected to chronic toxicity study in rats of either sex. The result shows that the drug has no toxic effects.

15. Coded Drug – V **CRIK**

During acute toxicity screening normal behaviour and no mortality was recorded upto 96 hours in all groups. The drug shows insignificant spontaneous locomotor activity in comparison to control.

16. Coded Drug – X **CRIK**

Acute toxicity studies of the coded drug-X were completed. 500 & 200 mg./kg. showed normal behaviour and 10% mortality recorded within 96 hours.

During sub-acute toxicity screening 1800 & 180 mg./kg. showed 16% mortality recorded within 4 weeks.

Code X shows no significant effect in the blood haematology, blood biochemistry and

histopathological studies.

17. Coded Drug – Y **CRIK**

During acute toxicity screening 500 & 200 mg./kg. Showed normal behaviour and 10% mortality recorded upto 96 hours. Code Y shows insignificant spontaneous locomotor activity in comparison to control.

Chronic toxicity study of the drug –Y was carried out in rats. 450, 225 & 45 mg./kg. dose showed normal behaviour and mortality was recorded as 58%, 25% & 8% respectively within 13 weeks.

18. Dashmoola Taila **PhRUFJ**

The Taila was evaluated for oestrogenic activity. It was administered in the dose of 5 ml./kg., *p.v.* It did nod exhibit oestrogenic activity.

19. Dhatri Lauha **CRIK**

Acute toxicity study of the drug was carried out on mice. The drug in 2000 and 1000 mg./kg. dose showed dull, writhing, less active and 10% mortality recorded within 24 hours.

During sub-acute toxicity screening 500mg./kg.dose showed dull writhing and 33% mortality within 4 weeks. Dhatri Lauha showed no significant effect in comparison to control with respect to body weight, blood haematology (RBC, WBC, Hb, PT, TC, DC, MCV, MCH, MCHC), blood biochemistry (glucose, SGOT, SGPT, serum creatinine) and in histological studies.

20. Manas Mitra Vataka **CRICh**

Acute toxicity study was carried out. Manasa Mitra Vataka, a compound Ayurvedic formulation did not produce any signs of toxicity and death in mice during acute toxicity study. Significant differences were not observed between the test and control groups with respect to body weight and feed intake during the course of the experiment.

Sub-acute toxicity study is in progress.

21. Gaja Keshari **CRIK**

During acute toxicity screening, it showed normal behaviour and no mortality recorded upto 96 hour with respect to all treated group. No significant change on locomotor activity observed.

22. Gajar (Daucus carota Linn.) **RRIT**

Hepatoprotective study of carrot is concluded. Administration of carrot with carbon tetrachloride was found to minimise the liver damage induced by CCl_4 in rats. Low serum GOT and GPT levels in drug administered rats are indicative of hepatoprotective effect of carrot. Correlation between antioxidant effect of carrot and its hepatoprotective effect is to be established.

23. Guggulu (Commiphora mukul) **RRIT**

Literature survey was done in details regarding Guggulu. Extraction of drug was carried out with petroleum-ether, ether, benzene, acetone, alcohol and water successively. Petroleum-ether and benzene fractions were used for the sub-acute toxicity study. Four groups of 8 animals were used in the screening. The drugs were given for 6 week's time. The results of the above study are to be analysed after completion of the study.

24. Satapuspa (Anethum sowa Kurz.) **CRICh**

Decoction of leaves in different doses was used for pharmacological screening. No signs of toxicity and death were observed upto dose of 2 ml./100gm., body weight in Swiss albino mice as revealed by acute toxicity test. It showed significant diuretic activity in rats, antidepressant and antipsychotic activities in mice. The test drug caused stimulation of spontaneous motor activity in mice. The test drug further found to possess significant analgesic activity. Mild analgesic activity was seen in rats by slight increase in threshold tail flick response, whereas marked analgesic activity was observed in mice as evident by significant decrease in number of acetic acid induced writhings and prolongation of lick and jump response time intervals.

25. Vijayadi Vati **PhRUFJ**

The drug was evaluated for oestrogenic, anxiolytic, gross behaviour modifying and uterine anti-spasmodic activities. The drug did not exhibits oestrogenic activity at the dose level 65mg./kg., *p.o.* in mice and 50 mg./kg. in rats. It was devoid of anxiolytic, sedation and anti-spasmodic activities.

10. LITERARY RESEARCH PROGRAMME

The Council's literary research programme in Ayurveda broadly relates to medico historical studies, transcription and publication of classical treatises/ rare works, unpublished manuscripts as well as their documentation in the form of manuscripts inventory besides publication of the Council's research findings. Presently, this programme is being carried out mainly at the Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad as also by way of out sourcing through the Hqrs. Literary Cell, New Delhi. The Institute at Hyderabad undertook the following Research Programme during the year 2005-06:

1. Medico-Historical study on Visuchika undertaken earlier was completed.
2. Drug information on Aswattha compiled.
3. Biographical notes on Madhavkara prepared.
4. Published two volumes of the Institute's Bulletin i.e. volumes 34 & 35 besides publishing Catalogue of the Sanskrit Medical manuscripts in India.
5. In regard to project Acquisition, Preservation, Translation and publication of rare out of print books/manuscripts the following works were processed for their translation and publication.

    i) Hindi translation of Basavarajeeyam completed and English translation initiated.
    ii) English translation of Sharabharajeeyam, Vaidyaka Prayoga Vignanam and Puyameha Vignanam from Telugu undertaken.
    iii) English translation of Vaidya Kaustubham from Sanskrit (Hindi) initiated.
    iv) Translation of Atreya Samhita from Sanskrit (Hindi) to English initiated

The Institute presently having one museum on Ancient Medicine and another on modern medicine was enriched the same. The Institute's Library during 2005-06 acquired 140 new books on History of Medicine and allied sciences and provided referral services to 101 new scholars enrolled from different faculties and disciplines.

The Institute participated in the Arogya 2005 held at Hyderabad during 11th to 13th November,2005 besides National Seminar on Historical Aspects of Diet and Nutritional medicine in Ayurveda" held during 9th – 10th March,2006 besides participating in India-Africa Asian & GCC Pharma & Health Conference", held during 31st November-2nd December,2005 at Hotel Taj Krishna, Hyderabad.

The Publication Division of the Council's Hqrs. office published the VIIth Vol. of the "Data base on Medicinal plants used in Ayurveda" and also another book "Parameters for quality assessment of Ayurveda and Siddha Drugs" besides reprinting IInd and IIIrd volumes of the Data base on Medicinal Plants used in Ayurveda, as well as reprinting four monograph/booklets namely Common Healing Herbs, Samanya Roga Hara Vanaspati, an Ayurvedic Home remedies in Hindi and English and Siddha Vaidhya Saral Upchar Pranali.

Some of the rare works that have been translated and published during the period include Vaidya Manorma, Rasa Manjusha & Vaidhyak Samgaraha and translation of Yoga Sara in Hindi. The Literary Cell of the Council's Hqrs. in association with Hindi Unit initiated translation work of ancient manuscripts and rare works of Ayurveda, which include Ashtang Samgraha, Abhinav Chintamani. The Council also undertook the publication of the text book of Shalya Tantra comprising about 30 chapters by 30 contributors /authors and processed the editing of the 16 chapters received from 16 contributors.

During the period under report, the Publication Wing published Vol.25th (N0.1 to 4) and Vol.26th (No.1 to 2) of the Journal of Research in Ayurveda and Siddha relating to the Calendar years 2004 and 2005 besides 23rd and 24th volumes of the Bulletin of Medico-Ethno-Botanical Research.

The Council's publications and C.D. ROMs worth Rs.1,11,139-00 (Rs. One lakh eleven thousand one hundred and thirty nine only) were sold during the year 2005-2006.

11. FAMILY WELFARE RESEARCH PROGRAMME

The Council has taken up the Reproductive and Child Health (RCH) Programme under the Programme Projection for the year 1998-2003 which is extended till date. During the reporting period, the research studies under RCH programme were conducted at Central Research Institutes (Ayurveda) of Delhi, Mumbai, Kolkata, Patiala, Lucknow, Jaipur and at R.R.I. (D.R.),Trivandrum. The details are as follows:

CLINICAL STUDIES:

Oral and Local Ayurvedic contraceptives:

1. Pippalyadi Yoga with Bhavana of Japa Kusuma:

Ingredients: - Vidanga (seeds of *Embelia ribes*) –1 part
Pippali (seeds of *Piper longum*) –1 part
Tankana (purified powder of natural Borax) –1 part
(Triturated with the flowers of China rose)

Dose: - 1 gm. Per day from Day 1 to last day of each menstrual cycle.
Vehicle: - Kanji
Duration: - 36 menstrual cycle.

2. Neem Oil:
Dose & method of administration: - One ml/vagina before each coitus.
Duration: - 36 menstrual cycle.
Some centres used lemon grass oil for deodorizing the drug and the compliance was better.

Results:

Number of drop outs on account of pregnancy due to drug failure, drug omission and other reasons recorded during the current reporting period are shown in Tabular form as under:

Name of the drug	Centre	Number of cases						
		Studied			Dropped out due to			Continuing the drug
		Total	New	Old	Drug Failure	Drug Omission	Other reasons	
Pippalyadi Yoga with	CRIK	118	6	112	8	4	88	18
	CRIP	19	2	17	-	1	7	11

Bhavana of Japakusuma	CRIJ	44	31	13	2		8	34
Neem Oil	CRIK	195	27	168	8	04	135	48
	RRIT	45	27	18	1	01	31	12
	CRID	50	30	20	1	07	-	42
	CRIL	40	20	20	-	06	-	34

Current Status of Pippalyadi Yoga Project:

The CCRAS is developing a Herbo- mineral female oral contraceptive *Pippalyadi Yoga*. The formulation is based on an Ayurvedic classical text *Bhav Prakash*. After the formulation has been found to be effective in the Intra Mural Research of the Council, the project has now been taken up jointly by CCRAS and the Deptt. of Family Welfare, Union Ministry of Health & Family Welfare for further evaluation of its anti-fertility potential for inclusion in the National Population Control Programme.

For this purpose an Expert Group for Anti-fertility Research in Indian System of Medicine has been constituted under the Chairmanship of Prof.Ranjit Roy Chaudhury, Emeritus Scientist, National Institute of Immunology, New Delhi. The approval of Drug Controller General of India was taken before initiation of the Clinical trials.

The toxicological and preliminary terratogenic studies have been carried out at National Instititute of Immunology, New Delhi, and no toxicological effects have been reported with Pippalyadi Yoga.

The Phase-I clinical trial is already over and the medicine is found to be safe. The Phase-II trial is in progress at three premier modern hospitals i.e. AIIMS, New Delhi, PGI, Chandigarh, JIPMER, Pondicherry. The National Institute of Pharmaceutical Education and Research (NIPER), Mohali is conducting the Biological activities in particular hormonal studies, shelf life of the drug, standardization of the drug and has supplied the medicine ensuring the quality of drugs for phase II clinical studies. The trial is under progress.

Later on considering the clinical results, the drug will be included in the National Family Welfare Programme and commercialized through Pharmaceuticals.

Shishu and Bala Paricharya (Neonatal and child care):

Under this programme, Balakasa, Balatisar, Baladaurbalya and Childcare with Ayush Ghutti and Bala Rasayana were allotted. Results of the studies carried out during the reporting period are as follows:

Results:

Disease	Centre	Name of the Drug	No. of Cases	Results				
				Good	Fair	Poor	No change	LAMA
Bala Kasa (0-5Yrs.)	CRIL	Vasavaleha	34	25	5	1	3	-
	CRIJ		13	6	7	-	-	-
	CRIM		3	1	-	1		1
	CRIJ	Kantakari Avaleha	22	8	9	5	-	-
	CRIM		1	-	1	-	-	-
Bala Kasa (6-12Yrs.)	CRIJ	Yastimadhu+Dadim Churna + Banapsha	8	2	2	4	-	-
			10	4	5	1	-	-
	CRIM	Chandramrit Rasa alongwith Talisadi churna	11	7	4	-	-	-
	CRIJ	Nardiya Lakshmi Vilas Rasa + Godanti Bhasma and Tankana Bhasma	11	8	3	-	-	-
	CRIJ	Vasavaleha	18	6	7	-	-	-
	CRIM		6	5	1			
Baladaurbalya	CRIJ	Manduradi Vati	7	-	1	-	-	6
		Manduradi Avleha	7	-	1	-	-	6
Balatisar	CRIJ	Vatsakadi Ghana vati+ Mustakarista	3	1	2	-	-	
	CRIJ	Jatiphaladi Vati+Mustakarista	5	2	1	2	-	5
Child Care (1-5 Yrs.)		Bal Rasayan	1	1	-	-	-	-

Mainstreaming of ISM into National Family Welfare Programme

The National Population Policy-2000 recommends the mainstreaming of ISM & H in the National RCH Programme for which the action plan has also been framed in NPP-2000 itself. For the successful implementation of the recommendation, the Department of Indian Systems of Medicine & Homoeopathy and Department of Family Welfare, Union Ministry of Health & Family Welfare have sponsored a project entitled "Feasibility of Introducing Indian Systems of Medicine (Ayurveda & Siddha) in the National 'Reproductive and Child Health' Programme at the Primary Health Care (PHC) Level".

ICMR and CCRAS are collaborating in this project. Initially, it will start with Ayurveda and Siddha medicines in five states namely, Tamil Nadu, Rajasthan, Himachal Pradesh, Karnataka and Maharashtra (Tamil Nadu for Siddha intervention and other four states for Ayurveda). 17 Ayurveda and 15 Siddha interventions have been identified for 12 different conditions/diseases related to women and child. Two Districts covering four PHCs have been selected in five states. The study is expected to cover a total population of around 5 lacs.

The main purpose of the project is to understand the scope for mainstreaming of ISM in the National RCH Programme and make available the services from the system to the people and benefit them the maximum. If it is found to be feasible in 5 states, later on it will be included in other states of the country in national family welfare programme.

The Standardisation studies of the formulations have been carried out by CSMDRIA, Chennai & CRIA, Kolkata and the preparation in large scale is going on at CRIA, Kolkota, CRI (Siddha), Chennai. The safety studies are being conducted at CRI (Ay.), Kolkata and CRI (Siddha), Chennai.

All States have been communicated and sensitization of state health functionaries has been done for the successful implementation of the project. The identified states have nominated the members of State Coordination Committee and District Project Committees.

The Project Documents i.e. RCH Handbook, RCH Training Modules and IEC materials got printed in Hindi, English,Tamil, Kannada and Marathi & the project will be launched soon.

12. SOWA-RIGPA (AMCHI) RESEARCH PROGRAMME

Sowa – Rigpa (Amchi) Research Centre, Leh does work for research and development of Sowa-Rigpa, conservation and documentation of medicinal plants and mineral, literary research and clinical research etc. Various activates have been also conducted during the reporting year by this Centre. Total seven technical papers have been published and presented by the scientists of this Centre during the reporting period.

Clinical Research: During the year total 1479 patients were treated out of them 1215 was new and 264 were old. Besides regular OPD clinic, Clinical research on Hypertension has been continued during this year, 20 each cases for both the drugs has been selected out of which the result of both the case is as under:

S.No.	Drug Group	RESULT OF TREATMENT					
		Good Response	Fair Response	Poor Response	No Response	Death	Total
1.	Skuru Nerna	4	9	5	2	-	20
2.	Kochi nathang	2	7	6	5	-	20
Total		6	16	11	7	-	40

Literary Research -This year the Centre started the detailed classification study of works of Nagarjuna in Tibetan Buddhist cannon Stan-Gyur chapter wise, page no. of pages and contents etc. The detail study of Yogasataka, Acharya Nagarjuna Bhasida Avabhbsaja Kalpa and Vaidya Jiva sutra is completed during the reporting time.

After completion of above three works of Nagarjuna, Centre has taken up the classification work of Padartha Chandrika of Chandranandan, completed 120 the classification work which contains 120 chapters and 12591 pages.

Cultivation conservation and documentation program of Medicinal and aromatic plants of Trans-Himalayan cold Desert.

This Centre has been running a project for cultivation, conservation and documentation programme of Medicinal and aromatic plants of Trans-Himalayas with financial support from National Medicinal Plants Board, Centre N. Delhi. This is the final year of this project, under this

project adopted nine Amchi farmers/NGO's for cultivation of selected medicinal plants in different locality of Ladakh and remains successful with most of the species. Few awareness programmes have been also conducted for conservation of medicinal plants. One book and two booklets have been also published under this project.

Project for development of new model herbal garden for Trans-Himalayan medicinal plants:

Ladakh region has good number of valuable medicinal plants, Sowa-Rigpa Research Centre, Leh has therefore taken an ambitious project to develop a model herbal garden in Leh. Unit has requested the LAHDC, Leh and district administration for allotment of land. National Medicinal Plants Board, New Delhi has sanctioned an amount of Rs. Eight lacs as installment for garden.

Participation in Exhibitions and Mela:

Centre has participated in the Annual Ladakhi Kisan Jawan Vigayan Mela 13th and 14th August,2005, organized by Field Research Laboratory (DRDO), Leh in its compound and put up a technical stall highlighting activities and traditional Sowa-Rigpa medicine. Centre has also represented Jammu and Kashmir State in the Arogya Health Mela held on 23-27 September, 2005 and put up a technical stall highlighting the activities. Amchi Medicine and herbal and mineral Wealth of Ladakh. The stall draw major attraction in the Mela, thousands of visitors along with dignitaries have visited the stall.

13. PUBLICATIONS & PARTICIPATIONS

I. Publications

No	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Journal	Date of Publication
		A. Clinical and Basic Research		
1.	Bharathi,K.	Management of Renal Caluli	Ayurvedline, 8th issue:405-407	2005
2.	Bharathi,K. et al.	Evaluation of Nidana and Samprapathi in Tamaka Swasa (Bronchial asthma).	Aryavaidyan,Vol.19 (No.1):47-50	2005
3.	Bharathi,K. & Swamy,R.K.	Comparative study of herbomineral drugs in Slipada with special reference to Samprapti Vighatakas.	J.R.A.S., Vol.25(No.1-2): 85-97,2004	2005
4.	Bharathi,K. & Swamy,R.K.	Management of Vyanabala Vaisamya (Essential hypertension) with indigenous drugs: A comparative study.	J.R.A.S., Vol.26(No.3-4): 23-34,2005	2006
5.	Chandrasekhara Rao, B	Effect of Amalaki (Emblica officinalis) Churna in pulmonary tuberculosis as an adjuvant therapy.	Sachitra Ayurveda,	Aug.2005
6.	Chandrasekhara Rao,B	Clinical evaluation of Sameerpannag Rasa and Pippali in the management of Amavata (Rheumatoid arthiritis)	Ayurvedline,	July-Dec. 2005
7.	Gopakumar,K. and Bharathi,K.	Clinical study on Nishaamalaki curna in Ikshumeha (Diabetes mellitus).	The Antiseptic, Vol.102(No.5): 270-272	2005
8.	Kar,A.C. et al.	A clinical study on the effect of Sunthi, Guggulu and Godanti on Amavata (Rheumatoid arthritis)	J.R.A.S.,Vol., 25 (No.3-4): 22-32,2004	2006
9.	Kar,A.C. et al.	A clinical trial on the efficacy of Shirisa Twak Kwath in the management of Tamaka Swasa	J.R.A.S. Vol.26 (No.1-2): 52-58,2005	2006
10.	Kar,A.C. et al.	Clinical evaluation of Shamana Chikitsa in the management of Amavata (Rheumatoid arthritis).	J.R.A.S.,Vol.26 (No.1-2): 75-83,2005	2006
11.	Kar, A. C. et al.	A clinical evaluation of efficacy of Sunthi Guggulu and Godanti in the	J.R.A.S.Vol.26(No.3-4):80-94,2005	2006

		management of Amavata (Rheumatoid arthritis).		
12.	Nair,R.B. et al.	Effect of Dasamoolabala Taila as a Snehadravya in Gridhrasi (sciatica) patients of Panchkarma therapy with special reference to biochemical parameters.	J.R.A.S.Vol.26(No.1-2): 16-31,2005	2006
13.	Nanda, G.C. et al.	Ayurbala as a health promotive-A study on school children.	The Antiseptic, Vol.102(No.11):674-677	2005
14.	Nanda,G.C. & Pathak,N.N.	Applied aspects of Madhumeha in Ayurveda.	Ayurveda Mahesamalan Patrika, year 92 (Ank-6):49-59.	2005
15.	Ota,S.(Mrs.) et al.	Experimental evaluation of oxytocic activity of an indigenous drug Vasa (Adhatoda vasica Linn.)	JRAS,Vol.25(No.3-4):57-63,2004	2006
16.	Rao,M.M. et al.	A clinical study on the effect of Kravyadi Rasa, Kaseesadi Taila Vasti and Triphala Churna in the management of Arshas (Haemorrhoides)).	J.R.A.S,Vol.25(No.1-2):1-10,2004	2005
17.	Rao,M.M. et al.	Evaluation of comparative efficacy of Kshar sutra prepared by Arka Ksheera and Snuhi ksheera (as an adhesive media) with standard Ksharasutra in the management of Bhagandara (Fistula-in-ano).	J.R.A.S,Vol.25(No.1-2):28-43,2004	2005
18.	Rao,M.M. et al.	A clinical study on the effect of Kankayan Vati, Kaseesadi Taila Vasti and Triphala Churna in the management of Arsha (Hemorrhoids)	JRAS Vol. 25 (No.3-4):9-21,2004.	2006
19.	Rao,M.M. et al.	A clinical evaluation of efficacy of Pipali Vardhamana Ksheerapaka and Sameera Pannaga Rasa in the management of Amavata (Rheumatoid arthritis).	JRAS, Vol.26 (No.1-2) 1-15,2005	2006
20.	Rao,M.M. et al.	Cerebral palsy syndrome: Management with Ayurvedic therapy.	The Antiseptic,Vol.103 (No.3):171-173	2006
21.	Sharma L.K et al.	A clinical study on Pakshaghata (Hemiplegia) with a combination therapy of Ekangaveera Rasa,Masha Taila and Shashtikalshali Pinda	J.R.A.S. Vol.25 (No.1-2): 53-66,2004	2005

		Sweda.		
22.	Sharma L.K. et al.	Clinical evaluation of Surinjan Shallaki Yoga in the management of Amavata (Rheumatoid arthritis).	JRAS,Vol.25 (No.3-4) 33-46,2004	2006
23.	Sharma L.K. et al.	Managing obesity through Ayurveda.	Ayurveda Maha Sammelan Patrika,Year 92(Ank-7),56-60	2005
24.	Singh O.P. et al.	Role of Kankayan Vati,Triphala Churna and Kashishadi Taila in the management of Arsha (Ano-rectal piles).	J.R.A.S.,Vol.26(No.1-2): 59-65,2005	2006
25.	Singh,R.et al.	Clinical evaluation of Vacha and Kutaki Yoga in the management of Medoroga (Obesity).	J.R.A.S., Vol.26 (No.3-4): 35-42,2005	2006
26.	Singh, S.	Vandhyatva (infertility)	Arogyadham,Grisma Rita Ank:33-36	2006
27.	Singh, S.K. et al.	Study of herbo-mineral therapy effect in the cases of Kamala (Jaundice).	J.R.A.S.,Vol.26 (No.1-2): 45-51,2005	2006
28.	Srikant, N. et al.	A clinical study on role of Netra Kriya Kalpas (Topical ocular therapies) and internal medication in myopia (Timur-Hraswa Drishti).	J.R.A.S., Vol.26 (No.3-4): 43-53,2005	2006
29.	Srikanth, N. et al.	Management of Retinitis pigmentosa (Hraswayadya) with Ayurvedic therapies –A case report.	Ayurveda Mahasammelana Patrika,year 92 (Ank 6): 65-70	2005
30.	Vasanthakumar, K.G. et al.	Studies on some of animal origin drugs and their allied preparations in Ayurvedas.	J.R.A.S.,Vol.25(No.3-4):1-8,2004	2006
		B. Health Care Research and Ethno-medicine		
31.	Bharti et al.	Snehana	Ayurveda Mahasammelan Patrika,Varsh 92,Ank-12:68-76.	2005
32.	Bharti, K. & Gopakumar,K	Evaluation of Nidan & Samprapti in case of Tamakaswasa (Bronchial asthma).	Aryavaidyan,Vol.19 (No.1): 47-50	2005
33.	Deep,V.C.	Sandhivata	Gobal Ayurveda,	2005
34.	Devidas,K.V.	All about your mind.	Heritage Amruth,	April, 2005
35.	Nair,P.K.S.	Prathirodham Ayurvedathil	Mathrubhumi Arogyamasika	2006
36.	Panda,A.K.	Science and Tradition behind bone	Heritage Amruth, Vol.	2005

		setting	1, Issue-5	
37.	Shankar, R.et al.	Skin diseases in Arunachal Pradesh and its tribal cure.	B.M.E.B.R.,Vol.24 (No.1-4): 57-63,2003	2006
38.	Singh,S.	Gridhrasi Ke Karan Va Bachava	Arogyadham, Varsha Ritu Ank: 45-46	2005
C. Dravya-Guna,Medico-Botanical Survey & Cultivation				
39.	Billore,K.V. and Hole, A.D.	Mangroves and Halophytes-A neglected group of medicinal plants.	J.M.A.P.S. Vol.18 (No.2) 328-339	2005
40.	Dhar,B.P.et al.	Quality of Dhatura leaves: A comparative study on plants growing in polluted and non-polluted area.	B.M.E.B.R.,Vol.23 (No.1-4):53-56,2002	2005
41.	Gurav,A.M. et al.	Propagation of Guduchi (Tinospora cordifolia (Willd.) Miers by stem cuttings.	B.M.E.B.R. Vol.23 (No.1-4):41-52,2002	2005
42.	Gurav, A.M. et al.	Effect of Gibberlic acid treatment on seed germination of Ashwagandha (Withania somnifera Dunal).	B.M.E.B.R., Vol.24 (No.1-4):12-19,2003	2006
43.	Rawat, M.S. & Shankar, R.	Folk medicinal plants in Arunachal Pradesh.	Arunchal Forest News;Vol.21,2004	2005
44.	Rawat,M.S. & Shankar,R.	Distribution status of medicinal plants conservation and commercial cultivation in Arunachal Pradesh with special reference to National Medicinal Plants Board.	B.M.E.B.R. Vol.24 (No.1-4):1-11,2003	2006
45.	Vishwakarma,U. R. et al.	Vegetative propogation of Desmodium gangeticum (L) DC.-Shalparni.	B.M.E.B.R. Vol.24 (No.1-4):110-120,2003	2006
D. Pharmaceutical and Pharmacognostical Research				
46.	Bhattacharya,A. et al.	Secondary metabolite and preference of host plant Eupatorium odoratum by Aphis spitraecola of Nilagiri hills of Orissa.	J.Ecobiol.,Vol.17(1):83-87	2005
47.	Bikshapathi,T& Shanta,T.R.	Role of pharmacognosy in Ayurveda.	Ayurveda Maha-Sammalan Patrika,Vol.93 (No.2):79-87.	2006.
48.	Gurav, A.M. et al.	Pharmacognostic study of Nagkeshar (Mesua ferrea Linn.) stembark and leaf.	B.M.E.B.R.,Vol.24 (No.1-4):27-41,2003	2006
49.	Joshi,G.C.	Uttranchal Ke Kuchh Keet Nashak Vanaspatiyan (Hindi)	Sachitra Ayurveda Ank 5:357-58	2005
50.	Joshi,G.C. & Tewari,K.C.	Studies on 'Gambasu' –a celestial drug from Kumun Himalaya.	B.M.E.B.R.,Vol.24 (No.1-4):121-	2006

			126,2003	
51.	Mangal,A.K. & Das,M.N.	Pharmacognostic studies of Melalenca leucodendron.	B.M.E.B.R.,Vol.23(No.1-4):11-19,2002	2005
52.	Mary, Z.et al.	Pharmacognostical studies on rhizome of Curcuuma longa Linn. and fruit of Emblica officinalis Gaertn.-Part I	Aryavaidyan, Vol.28 No.4):218-224	2005
53.	Padmaja,B.et al.	Pharmacognosy of Sushavi (Calycopteris floribunda Lam.)	B.M.E.B.R.,Vol.24(No.1-4):42-56,2003	2006
54.	Saraswathy A. & VijayalakshmiR.	Microscopical examination of the stem of Commiphora wightii.	J. Indian Med. Home, 27-31,2003	2005
55.	Shanta,T.R. et al.	Pharmacognostical and preliminary Phyto-chemical studies on the leaf of Basella alba (Basellacese)	J.A.M.A.P.S.,Vol.27 (No.1) : 30-38	2005
56.	Sathe, M.V. and Joseph,G.V.R.	Pharmacognostic studies on the leaves of Ankol (Alangium salvifolium Linn.)	B.M.E.B.R.,Vol.23(No.1-4):77-85,2002	2005
		E. Chemical and Pharmacological Research		
57.	Bikshapathi,T & Pattanshetty,J.K	Importance and scope of standardization of drugs in Indian medicine.	Ayurveda Mahasammelan Patrika,Year 92 (Ank 12) :63-67	2005
58.	Joshi,P.C. et al.	Preliminary studies (in vitro) on anticoagulant activity of naturally occurring Bis-coumarins.	Arya Vaidyan, Vol.18 (No.1), 2004	2005
59.	Mathuram,V.& Saraswathy,A	Role of HPTLC in standardization of raw drugs.	B.M.E.B.R.,Vol.23(No.1-4):100-109,2002	2005
60	Pattan shetty, J.K. and Bikshapathi,T.	Importance and scope of standardization of drugs in Indian medicine.	Ayurveda Mahasammelan Patrika,Vol.92 No.12);63-65	2005
61.	Saraswathy,A.et al.	Standardisation studies on Ayush Ghutti.	B.M.E.B.R.,Vol.23(No.1-4):20-34,2002	2005
62.	Saraswati,A.	Standardization studies on two Ayurvedic drugs.	B.M.E.B.R.,Vol.23(No.1-4):86-99,2002	2005
63.	Saraswati,A.	Quality control and standardization of metallic and mineral preparations of Ayurveda and Siddha.	Sachitra Ayurveda, 205-209,	Sep, 2005
64.	Vasanthakumar K.G. et al.	Standardization studies on Arjunarishta	B.M.E.B.R.,Vol.24(No.1-4):97-102,2003	2006
65.	Vijayalakshmi B.et al.	Standardisation of Medhyarasayana used in the Management of Manodvega.	B.M.E.B.R.,Vol.24(No.1-4):20-26,2003	2006

E. Literary & Miscellaneous				
66.	Bhat, S. & Lavekar,G.S.	Ayurvedic approach to Pathya (Ideal diet planning)-An appraisal.	Bull. Ind. Instt. Hist. Med.,Vol.35(No.2):147-156,2005	2006
67.	Bhatnagar, V. K. Prasad, P. V. V.	Medicinal plants referred in Kautila's Arthasastra	Bull. Ind. Inst. Hist. Med. Vol.34 (No.1):1-16,2004.	2005
68.	Narayana,A. & Subhose,V.	Evolution of surgery-Susruta's innovative skills.	Bull. Ind. Instt.Hist.Med., Vol. 34(No.1); 17-39,2004	2005
69.	Narayana,A. & Subhose,V.	Susruta's contribution to surgery with special reference to plastic surgery.	Bull. Ind. Instt.Hist.Med. Vol.34 (No.2): 121-136,2004	2005
70.	Narayana,A. et al.	Historical perspectives of Unani medicine with reference to Muslim reigns in India.	Bull. Ind. Instt.Hist.Med., Vol.34 (No.2): 147-167,2004	2005
71	Narayana,A.	History of manuscript logy study of medical manuscriptology.	Bull. Ind. Instt. Hist.Med., Vol.35 (No.1): 61-76,2005	2006
72.	Narayan,A & Subhose,V.	Standardisation of Ayurvedic formulations: A scientific review.	Bull. Ind. Instt.Hist. Med. Vol.35(No.1): 21-32,2005	2006
73.	Narayan,A & Lavekar, G.S.	Ayurveda gleaned through Buddhism	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol.35 (No.2): 131-146,2005	2006
74.	Padhi,M.M.et al.	Important Ayurveda Literature from the manuscripts available from Orissa (Cikitsarnava).	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol.35 (No.1)33-40,2005	2006
75.	Padhi,M.M.et al.	Some explorative information regarding Jwaratimirabhaskara and its author Kayastha Chamunda.	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol.35 (No.2):93-99,2005	2006
76.	Prasad,G.P. et al.	Bhisaksudharnavam-An unexplored precious Andhrasampradaya Ayurveda Grantha.	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol.35 (No.1): 77-82,2005	2006
77.	Prasad,P.V.V.	Medico-historical study of Visuchika (cholera).	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol.35 (No.1):1-20,2005	2006
78.	Prasad,P.V.V	Biography of Kashyapa and his contribution to Kaumarabhritya (Paediatrics)	Bull. Ind. Inst. Hist. Med.,.Vol.35(No2): 101-112,2005	2006

79.	Subhaktha,P.K.J .P. and Narayana A	Biography of Vangasana-His contribution	Bull. Ind. Inst. Hist. Med.,Vol.34(No2): 137-146,2004	2005
80.	Subhaktha,P.K.J .P.	Sarangadhara: His contribution in Ayurvedic literature	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol. 35 (No1) : 47-60,2005	2006
81.	Subhose,V.et al.	Basic principles of Pharmaceutical science in Ayurveda.	Bull. Ind. Inst. Hist. Med., Vol. 35(No2): 83-92,2005	2006
82.	Subhose,V.et al.	Biography of Madhavakara.	Bull.Ind. Inst. Hist. Med., Vol. 35 (No2): 113-130,2005	2006
		G. Books/monographs		
83.	Bansal,P.	Multiple choice question Bank in medical Biochemistry-	A Book prepared for CCRAS	2006
84.	Billore,K.V.etal.	Database on medicinal Plants used in Ayurveda,Vol.VII	Published by CCRAS	2005
85.	Gurmet,P. & Chaurasia,O.P.	Status and conservation of trans-Himalayan Medicinal Plants	Himalayan medicinal and aromatic plants, balancing use and conservation, edited by Y.Thomas et al. Published by His Majesty's Govt. of Nepal, Ministry of Forest and Soil conservation.	2005
86.	Lavekar G.S. et al.	Parameters for quality assessment of Ayurveda and Siddha drugs.	Published by CCRAS	2005
87.	Rawat M.S. & Shankar,R.	Herbal potential of Arunachal medicinal Plants vis-a-vis forest management in Arunachal Pradesh. Scope of Ayurvedic medicine manufacturing firm in Arunachal Pradesh.	Ayurveda and Drugs for all, Editor Rama Shankar, Himalayan Publisher.	2006

(II) PARTICIPATIONS

SL. No.	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Conference/Seminars/ Workshop and date of participation.
A. Clinical and Basic Research			
1.	Das, B. et al.	Comparative Clinical study of Palliative therapy with Shunti guggulu Godanti and purificatory therapy with Indukanta ghrta-Swedan and Vamana in the management of Rheumatoid arthritis	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on chronic diseases and its management by complementary and Alternative medicine. Sept. 23-25, 2005.
2.	Devidas, K.V.	Chronic disability and Ayurvedic management	5th International Seminar on Ayurvedic education Research & Drug standardization-A global perspective held at G. A. U. Jamnagar 5-7/1/2006.
3.	Gopakumar, K. & Bharathi, K.	Clinical evaluation of prophylactic use of Indukantha ghritha in malaria	2nd International Ayurvedic Congress held at New Delhi, 11-13/11/2005
4.	Gopakumar, K. & Bharathi, K.	Incidence of different diseases with reference to Kalasamprapthi in Geriatric cases.	Seminar on management of Geriatric, ALRCA, Chennai,19-23/8/2005
5.	Gopakumar, K. & Bharathi, K.	The management of geriatric disorder according to Ayurveda & Siddha	-do-
6.	Jadhav, A.D.	Role of Brahmi, Vacha, Jatamansi and Arjuna on Vyanbala Vaishmya (Hypertension)	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on chronic disease and its management by complementary and Alternative Medicine, Deptt. of Medicinal Chemistry, IMS, BHU Varanasi and University of Connecticut, School of Medicine,USA,23-25/9/05.
7.	Jadhav, A.D.	Effect of Sunthi Godanti on Amavata (Rheumatoid arthritis)	-do-
8.	Kale, K.V.	Clinical evaluation of a Herbo-mineral compound in the management of Vyanbal Vaishamya	-do-

		(Hypertension).	
9.	Kar, A. C.	The relevance of Pramana in clinical practice.	Diamond Jubilee Souvenir-Krishna Gopal Ayurveda Bhawan, February-2006.
10	Kumar S.et al.	A Clinical study of Vachadi churn on hypertension.	9th Punjab Science Congress organized by Punjab Academy of Sciences held at Patiala 7-9/2/2006.
11	Meena, H.M.L. et al.	Kamla Roga Mein Virechana Karma ki Upadeyata.	Panch- Con: 2006-National Seminar on recent advances in Panchkarma,organized by NIA, Jaipur, 18-20/3/2006
12	Meena, B.R. et al.	General Principle of Panchakarma Therapy in the management of Pakshaghata.	-do-
13	Mehra. R. Dr (Mrs.)	Vedana Sthapan Fissure-in-Ano.	22nd National Conference of Ayurvedic specialists & Seminar on Vedanasthapak Dravyas, 6-7/2/2006.
14	Nair, R.B. *et al.*	Hepatoprotective effect of carrot *(Daucus carota)* in Carbon tetra-chloride treated in rats.	5th National Congress on Medicinal plants held at Trivandrum, 4-5/12/2005.
15	Nanda, G. C. *et al.*	Clinical trial of Jamun Karala,Ghanvati in Madhumeha.	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on chronic diseases and its management by complimentary and alternative medicine, 23-25/9/2005.
16	Prasad, G.P.	Clinical assessment of the effect of Kanchanara Guggulu and Gokshuradi Guggulu in chronic cases of Sleepada (Filariasis).	5th International Seminar on Ayurveda organized by Gujarat Ayurved University, Jamnagar 5-7/1/2006.
17	Rao, M. M. *et al.*	Comparative therapeutic evaluation of the efficacy of Samana Chikitsa- v- Shodhana Chikitsa (Vamana karma) in the management of Amavata.	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on Chronic diseases and its management by complimentary and alternative medicine, 23-25/9/2005
18.	Sharma, S. *et al.*	Effect of Charkokta Basti in Arsha-a study	9th Punjab Science Congress organized by Punjab Academy of Sciences held at Patiala 7-9/2/2006
19.	Singh, O.P. *et al.*	Clinical evaluation of Hingu Triguna Taila in the management of Gridhasi	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on chronic disease and its management by

		(Sciatica).	complementary and Alternative Medicine, Deptt. of Medicinal Chemistry, IMS, BHU Varanasi and University of Connecticut, School of Medicine,USA,23-25/9/05.
20	Singh, R. et al.	Clinical evaluation of Vacha Kutaki Yoga in the management of Medoroga (obesity).	-do-
21.	Singh,R.et al.	Clinical evaluation of combined effect of Medhya Rasayan Brahmi and Vacha.	National Seminar on Management of geriatric disorders in Ayurveda & Siddha, held at ALRCA,Chennai,19-20/8/05.
22.	Singh, S.	Impact of K.V.Capsules on obesity.	International Conference on Drug Development from medicinal plants issues and problems, 2005.
23.	Singh S.K. and Prasad,M.	Guda Roga Ki Chikitsa Mein Purvakarma (Snahan, Swedan) ka Chikitsikiya Adhyayana.	Panch-Con. : 2006 –National Seminar on recent advances in Panchkarma, organized by NIA,Jaipur,-18-20/3/2006.
24.	Sridhar, B. N. & Bikshapati, T.	Clinical evaluation of Vachadi Yoga in primary hypertension (VyanabhalaVasshamya).	2nd International Conference on Chronic diseases & its management by complimentary and alternative medicine held at Varanasi, 23-25/9/2005.
25.	Srikanth,N.	Panchkarma and Netrakriyakalpas (Ayurvedic ocular procedures) –An appraisal of practical experiences.	Panchkarma Reorientation Programme for Ayurvedic physicians,Deptt. of ISM&H, Govt. of NCT of Delhi, Karol Bagh, New Delhi,4-4-2005
26.	Srikanth, N. et al.	Ayurvedic management of mental disorders: An appraisal of some CCRAS research contributions.	Ayurvedic Scientific Seminar on Mental disorders organized by Rashtriya Ayurveda Vidyapeeth, New Delhi,30-31/3/2006.
27.	Srikanth, N. et al.	Brahmi (Bacopa monniera)- A wonder and safe herb to improve memory and cognitive functions.	-do-
28.	Srikant,N. & Lavekar,G.S.	Ayurvedic approach to the management of age related ocular diseases-An appraisal of some clinical studies.	National Seminar on Management of geriatric disorders in Ayurveda & Siddha, held at ALRCA,Chennai,19-20/8/05.

29.	Srikanth,N. & Lavekar, G.S.	Ayurvedic medical and para-surgical approaches in the management of chronic simple glaucoma: An appraisal of clinical study.	International Ayurveda Congress, Chennai 11-13/11/2005.
B. Health Care Research and Ethno-Medicine			
30.	Acharya,M.V.	Preventive cardiology-An integrated approach.	National conference organized by Tilak Ayurveda Mahavidyalaya, Pune 15-16/10/2005.
31.	Anupam & Hazra, J.	Dietic management of Diabetes mellitus.	National Seminar on applied aspects of Ayurveda in modern era held at R. G. M. A. C. & H., Kakinada, 4-5/3/2006
32	Babu, G.	Role of Rasayana therapy on Tamaka Swasa (Bronchial asthma)	National Seminar on integration of Ayurveda & Allopathy: Present Need of Public Healthcare organized by M/s. TVR Memorial Ayurvediya Samrakshana Samstha held at Warangal, 10-12/2/2006.
33	Babu,G.	Concept of Diet and Nutrition in Ayurveda.	National Seminar on Historical aspects of diet & Nutritional medicine in Ayurveda, organized by Indian Institute of History of Medicine, Hyderabad, 9-10/3/2006.
34	Barik,L.D.	Madhumeha & its herbal therapy	National Seminar on applied aspects of Ayurveda in modern era held at R.G.M. A. C.& H, Kakinada, 4-5/3/3006.
35	Bhat, S.et al.	A Focus on Ayurvedic approach to the management of age related health problems in woman.	National Seminar on Management of Geriatric disorders in Ayurveda & Siddha held at ALRCA, Chennai 19-20/8/2005.
36.	Dwivedi,G.V. et al.	Medicinal plants and its formulation used in the management of geriatric disorders (Jara Vyadhi)	-do-
37.	Gopakumar,K.	Management of geriatric disorders (Jaravyadhi) according to Ayurveda.	-do-
38	Gurmet, P.	Sowa- Rigpa (Amchi medicine)	Interactive workshop on high altitude

		for public health in Ladakh.	health related issues and high altitude medicine, organized by High Altitude Medical Research Centre (DRDO) and 153 Army General Hospital, 2005.
39.	Gurmet, P.	Amchi medicine an important part of Ladakh culture and its development by 2020.	Ladakhi Culture and its presentation in contemporary society organized by Cultural Academy, Leh, 15-1-2006.
40.	Gurmet,P.	Concept and dietary rules in Sowa –rigpa (Amchi - Tibetan medicine)	National Seminar on Historical aspects of Diet & Nutritional medicine in Ayurveda organized by IIHM and NIN, Hyderabad,9-10/3/2006.
41.	Kar,A.C.	A study on the method of evaluation of Ayurveda drugs.	Proceedings on National workshop on Parameters for standardization of Ayurvedic Drugs 23-24/7/2005.
42.	Prakash,S.et al.	Role of traditional medicines in socio-economic development of tribal women of Arunachal Pradesh.	Seminar on Impact of Globalization on the socio-economic Development of women of North-East held at Itanagar,24-25/2/2006.
43.	Prasad,G.P.	Role of Ayurvedic diet in diabetes mellitus (Madhumeha)-An ayurvedic approach and modern correlation.	National Seminar on Historical aspects of Diet and Nutritional Medicine in Ayurveda, organized by Indian Institute of History of Medicine, & NIN, Hyderabad, 9-10/3/2006.
44.	Revathi.	Role of Rasayana Drugs as health promoters from hematological and biochemical perspective.	National Seminar on Management of Geriatric disorders (Jaravyadhi) in Ayurveda & Siddha held at ALRCA, Chennai, 19-20/8/2006.
45.	Saraswathy, A.	Role of Traditional System of medicine –Health Care.	International Workshop-cum-Training course on Natural Products-Drugs, Pharmaceuticals and Nutraceutical for the benefit of mankind of Pakistan held at Karachi, 10-19/2/2006.
46.	Shankar,R & Prakash, S.	Globalization of Ayurvedic resources in socio-economic development of women in North-East.	Seminar on Impact of Globalization on the socio-economic Development of women of North-East held at Itanagar, 24-25/2/2006.
47.	Singh,O.P. et al.	Concept of skin aging and Rasayana in Ayurveda	Seminar on the Management of Geriatric disorders (Jaravyadi) in

			Ayurveda & Siddha held at ALRCA,Chennai,19-20/8/2006.
48	Srikanth,N. & Lavekar, G.S.	Scientific Validation of Research and Technical evaluation in Ayurveda	National Seminar on Scientific Validation and Technical evaluation of ancient medical systems held at IIT, New Delhi, 11-12/2/2006.
49.	Srikanth,N.	Focus on case reports in HIV/AIDS	World AIDS Foundation Train the trainer collaborative project of University of California Los Angles (USA), CCRAS and CCRH on delivery of model: HIV prevention and promotion programme for Ayurveda & Homoeopathy Physicians in India-workshop held at CCRH, New Delhi, 7/2/2006.
50	Srikanth,N.	HIV/AIDS : A case review.	-do-, 27/2/2006
51.	Srikanth,N.	Role of Ayurveda in HIV /AIDS problems and scope	-do-, 10/2/2006
52.	Srikanth, N.& Lavekar, G. S.	Role of Ayush-CT eye drops in preventing cataract: Action plan for collaborative project of CCMB.	Brain storming session held at Centre for Cellular and Molecular Biology Hyderabad 16/8/2005.
53.	Srikanth, N. et al.	Development of Ayurvedic Nutraceuticals for school going children: Action plan for collaboration of NIN.	-do-
54.	Srinivas, K. (Mrs.)	Medhya Rasayana therapy in promoting mental health.	National Seminar on Management of Geriatric disorders (Jaravyadhi) in Ayurveda and Siddha held at ALRCA, Chennai 19-20/8/2005.
C. Dravya-Guna, Medico-Botanical Survey & Cultivation			
55.	Bharathi,K.	Drug collection with special reference to Ayurvedic classics.	National Seminar on modern vistas in standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai,7-8/7/2005.
56.	Bharthi,K. and Gopakumar, K.	Dravya Samgrahan (Drug collection) with reference to Ayurvedic classics.	-do-
57.	Gurmeet, P.	Herbal wealth and conservation	National Workshop on conservation

		of medicinal plants in Ladakh Himalayas.	and cultivation of medicinal plants, organized by Forest Deptt. & SMPB, Haryana, 15-16/2/2006.
58.	Prakash, S. & Shankar, R.	Shifting strategy for medicinal plants cultivation in Arunachal Pradesh.	National Seminar on Land Resource Management for sustainable Development in Arunachal Pradesh organized by Deptt. of State Land use Board, Govt. of Arunachal Pradesh held at Itanagar 16-17/2/2006.
59.	Shankar, R	Westland management through medicinal plants cultivation in Arunachal Pradesh.	-do-
D. Pharmaceutical and Pharmacognostical Research			
60.	Dwivedi, G.V.	Swarna Mukshika Bhasma Nirman	National Workshop on Parameters for standardization of Ayurvedic Drugs held at RRI (Ay.), Nagpur,23-24/7/2005.
61.	Rao, M. M. et al.	Evaluation of a new technique in the manufacture of an effective Kshar Sutra with special reference to its application in cases of Bhagandara.	-do-
62.	Venkateswarlu,S.	Vrikshayurveda vis-a-vis plant biotechnology.	National Seminar on Integration of Ayurveda and Allopathy: Present need of Public Health Care organized by M/s.T.V.R. Memorial Ayurvediya Samrakashana Samstha, held at Warangal, A.P.,10-12/2/2006
E. Chemical and Pharmacological Research			
63.	Bansal,P.et al.	Antioxidant activity of coded Ayurvedic Neutraceutical Rasayana product in First Ayurvedic clinical trial at Antarctica.	9th Punjab Science Congress organized by Punjab Academy of Sciences, held at Patiala, 7-9/2/2006.
64.	Bhattacharya, A.et al.	Bio-efficacy and toxicity of Portersia coartata leaf extract & its molecular implication on the physiology of S. litura.	3rd International Botanical Conference held at Dhaka (Bangladesh), 9-11/12/2005.

65.	Bhattacharya, A. et al.	Insecticidal efficacy of Cuscuta chinensis on stored product insects.	National Seminar on Environmental drinking water and public health held at Vishva Bharati,Santiniketan,20-21/3/2006.
66.	Gopakumar,K.	Standardization-the major problem of Ayurvedic drug industry.	National Seminar on 'Modern Vistas in Standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA,Chennai,7-8/7/2005.
67.	Lavekar,G.S. and Agarwal, A	Standardization of Bhasmas (mineral/ metallic preparations).	National Consultation on herbo-metallic preparations of Indian systems of Medicines: safety and quality standardization held at Indian National Science Academy, New Delhi, 3-4/3/2006.
68.	Kale,K.V.	Potali Kalpana Vidhi Avum Iske Manakikaran Ki Avashyakata.	National Workshop on parameters for standardization of Ayurvedic drugs, organized by RRI(Ay.) Nagpur and Deptt. of Pharmacy, Nagpur University, Nagpur, 23-24/7/2005.
69.	Maheswar,T.	Standardization of Kupipakwa rasayanas	-do-
70.	Malviya,N.K. and Reddy,R.G.	The standardization and recent advances on Ksharasutra preparation.	-do-
71.	Malviya, N.K. and Reddy, R.G.	Standardization of Apamarga Kshara.	-do-
72.	Mandal, S.et al.	Hypoglycemic activity of the active constituents of 3 Ayurvedic plants-S. Chirata,S.cumini & C. infortunatum	National Seminar on applied aspects of Ayurveda in modern era held at R. G. M. A. C. & H., Kakinada, 4-5/3/2006
73.	Mandal,S.et al.	Isolation of a new xanthone and an active oil fraction possessing mosquito repellent and larvicidal property .from the flowers of Mesua ferrea.	93rd Indian Science Congress held at Hyderabad,January,2006.
74.	Maheswar,T.	Standardization techniques for Rasauhadhies with reference to Abhraka Bhasma	National Seminar on Modern Vistas in standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA,Chennai,7-8/7/2005.
75.	Mathuram,V. et al.	Occurrence of arjunolic acid in	-do-

		roots of Chinni (Acalypha fruticosa).	
76.	Nanda,G.C. et al.	Standardization of Marichyadi Taila-A study.	National Workshop on parameters for standardization of Ayurvedic drugs held at RRI (Ay.),Nagpur,23-24/7/2005.
77.	Pandey, K.K.	Ayurvedic Vidhee Se Dhatu Bhasma ka Manakikaran	-do-
78.	Rajaseskaran, R.	A study on Kuthukkaran sammatv (Indigofera oblongifolia)-Anti-inflammatory and analgesic activity.	National Conference on Ayurvedic Medicare as Evidence based medicine held at Hyderabad, 16-17/2/2006.
79.	Saraswathy,A.	Analytical methods and parameters for quality assessment of Ayurvedic drugs.	National workshop on Parameters for standardization of Ayurvedic Drugs held at RRI(Ay.) Nagpur, 23-24/7/2005
80.	Saraswathy,A.	Focus on the scientific approaches for standardiation of ISM drugs.	National workshop on standardization of Traditional Indian medicine for global acceptance as per WHO guidelines held at Sri Ram Chandra Medical College,Chennai,28/5/2005.
81.	Saraswathy,A.	Comparative study in the raw and purified drugs of plant origin-A selective study.	National seminar on modern vistas in standarization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai, 7-8/7/2005.
82.	Saraswathy,A. & Chandran, R.V.P.	Lipid constituents of Peristrophe bycalyculata.	-do-
83.	Singh,R.and Saraswathy,A.	Role of preparative HPLC in isolation of marker compounds.	-do-
84.	Saraswathy,A.	Bioflavanoids and their therapeutic importance.	International conference on Drug Development from Medicinal Plants organized by C.L. Baid Metha Foundation for Pharmaceutical Education and Research 20-22/10/2005.
85.	Saraswathy,A.	Role of modern analytical techniques in quality control of ISM drugs.	National symposium on the Role of Recent Advances in Ayurveda Drug Standardization held at Varanasi, 16-18/12/2005.
86.	Singh,S.(Smt.) et al	Standardization of Kukkutand Tvak Bhasma and its role in the	2nd International Conference of ISAH and International Seminar on chronic

		management of Arthritis and osteoporosis.	diseases and its management by complementary and Alternative Medicine organized by ISM, BHU, Varanasi and University of Connecticut school of Medicine, USA, 23-25/9/2005
87.	Singh,S.(Smt.) et al.	Stanardization of some Churnas. An Ayurvedic herbal formulation on the basis of chemical analysis.	National workshop on Parameters for Standardization of Ayurvedic Drugs held at RRI(Ay.),Nagpur 23-24/7/2005.
88.	Srikanth,N. et al.	Standardization of Ayurvedic ophthalmic formulations with special reference to some biological parameters-An appraisal of experimental studies.	-do-
89.	Srinivasan,T.S.P. et al.	Evaluation of hepatoprotective activity of ethanolic and aqueous extracts of Citrus aurantifolia fruits against Aflatoxin-B induced liver damage.	National Seminar on modern vistas in standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai, 7-8/7/2005.
90.	Tiwari,R.K. et al.	Standardization of some medicinal plants used in geriatric disorders (Jara Vyadhi).	National Seminar on the Management of Geriatric disorders (Jara Vyadhi) in Ayurvedic & Siddha held at ALRCA, Chennai,19-20/8/2005.
91.	Tiwari,R.K. et al.	Standardization of some Medicinal Plants used in the Management of Diabetes mellitus (Madhumeha).	2nd International Conference of ISAH and on chronic diseases and its management by complementary and Alternative Medicine organized by ISM, BHU, Varanasi and University of Connecticut school of Medicine, USA, 23-25/9/2005.
92.	Upadhyay,S.N. et al.	A review on evaluation of safety and efficacy of Ayurvedic herbal drugs.	-do-
93.	Venkatateshwarlu,G.	Expiry period and preservative techniques of Ayurvedic drugs.	National Workshop on parameters for standardization of Ayurvedic Drugs organized by RRI(Ay.) Nagpur and Deptt of Pharmacy, Nagpur University Nagpur 23-24/7/2005

94.	Venkatateshwarlu,G.	Guidelines for toxicological studies of herbal drugs.	National Seminar on modern Vistas in standardization and GMP of ISM drugs, organized by CSMDRIA, Chennai, 7-8/7/2005.
E. Literary & Miscellaneous			
95.	Lavekar,G.S. & Narayan,A.	Issues involved in the collaborative research in Ayurveda.	Roundtable conference of Vice-Chancellors/ Directors on promotion of Research in Institutions of Health Science held at NTR University of Health Sciences, Vijayawada 19-21/10/2005.
96.	Narayan,A.	Malnutrition and child health-care.	National Seminar on Role of Ayurveda in Management of Malnutrition in mother and child of tribal area organized by Gramin Ayurveda Mahavidyalaya held at Akola (Maharashtra state).
97.	Narayan, A.	IEC on Ayurveda.	National conference on Ayurvedic medicine as evidence based medicine organized by –I S.E.R.V.E. held at Hyderabad, 16-17/2/2006.
98.	Narayan,A.	Role of CCRAS with special reference to study of medical manuscripts.	Seminar on saving India's Medical manuscripts held at FRLHT Campus, Bangalore, 5-6/10/2005.
99.	Narayan,A.	A study on Anukta Dravyas on Ayurvedic philosophy.	National Seminar-Bhashaja 2005 held at Bangalore, 16-17/6/2005.
100.	Prasad,P.V.V.	Diet and dietetics in Ayurveda and non-medical literature since ancient times.	National Seminar on Historical aspects of Diet & Nutritional medicine in Ayurveda organized by Indian Institute of History of Medicine (CCRAS) & National Institute of Nutrition (ICMR), Hyderabad, 9-10/3/2006.
101	Sharma, K.D. & Yadava, R.S.	Value of manuscripts in the preparation of critical edition of Ayurvedic texts.	Workshop on Manuscriptology and Paleography organized by the National Mission for Manuscripts, Deptt. of Culture, Govt. of India, held at New Delhi, 1-8-2005 to 10.9.2005.
102.	Srikanth,N.& Lavekar,G.S.	Concept of immunology and immuno-pharmacoglogy with	National Seminar on Historical aspects of Diet and Nutritional

		special reference to Ayurvedic dietetics-Medico-historical and applied aspects.	Medicine in Ayurveda organized by IIHM (CCRAS) & National Institute of Nutrition (ICMR), Hyderabad,9-10/3/2006.
103.	Subhose,V.	Critical review of Kshara (Alkaline/ caustic): An important preparation in Ayurveda.	International Conference on Drug Development from plants-issues and problems held at Chennai,20-22/10/2005.

B. SIDDHA

1. Abbreviations Used for Institutes/Units

S.No.	Year of Estt.	Institute/Unit	Abbreviation
1.	1970	Central Research Institute, Chennai	CRISC
2.	1979	Regional Research Institute, Pondicherry	RRISP
3.	1980	Clinical Research Unit, Palayamkottai	CRUSP
4.	1986	Clinical Research Unit, Trivandrum	CRUST
5.	1979	Drug Research Scheme (MD) Chennai	DRS(MD)SC
6.	1979	Drug Standardisation Research Unit,Chennai	DSRUSC
7.	1982	Drug Standardardisation Research Unit, Bangalore	DSRUSB
8.	1981	Drug Standardisation Research Unit,Trivandrum	DSRUST
9.	1971	Survey of Medicinal Plants Unit Palayamkottai	SMPUSP
10.	1979	Literary Research and Documentation Department, Chennai	LRDDSC

2. CLINICAL RESEARCH PROGRAMME

The Clinical Research Programme in Siddha medicine is being carried out on selected clinical conditions by the Institutes/Units functioning under the Council. During the reporting year 2005-06, the clinical conditions such as Kalanjagapadai (Psoriasis), Putrunoi (Cancer), Vatha soolai, Karappam, Yanaikkalnoi (Filarisis), Neerezhivu (Diabetes mellitus),Manjal Kamalai (Infective hepatitis), Santhu Vathasoolai (Rheumatoid arthritis), Venkuttam (Leucoderma),Enumbu murivu chikichai (Bone setting), Eraippunoi (B.asthma) were studied. Total 586 cases were studied on above said diseases/ conditions at OPD/IPD level.

KALANJAGA PADAI (Psoriasis)

Kalanjaga padai, a dreadful skin disorder has been taken up for clinical study by the Central Research Institute, Chennai. The coded drug 777 oil was administered at the dose of 10 mg. with milk two times a day to all the 154 cases selected for trial. Parangipattai choornam 500 mg., Elathi choornam 500 mg. Sanguparpam 100 mg. were administered as support therapy. The patients were also advised to apply 777 oil externally on the affected part of the body. The results of the treatment are as under:

Results Of Clinical/Therapeutic Trial Of 777 Oil On Kalanjaga Padai

Drug	Total cases	Good response	Fair response	Poor response	No response	LAMA
777 oil	154	111	23	2	–	18

VATHA SOOLAI

This disease condition has been described in the Siddha texts under "Vatharogangal". The study is to evaluate the efficacy of Ayaveera Chendooram and Pechangan charu in the cases of Vathasoolai has been taken up by the Regional Research Institute, Pondicherry. The trial drug Ayaveera chendooram at the dose of 130 mg. alongwith honey was administered in two divided doses. 101 cases were taken up for study during the reporting year. Out of the 101cases, 69 cases got good response, 23 cases got fair response, 1 case got poor response and 8 cases were LAMA

KARAPPAN

The study on this clinical condition carried out at the Clinical Research Unit,Trivandrum. The efficacy of the drugs Parangipattai choornam, Sangu Parpam, Idivallathi Mezhugu, Punga Thailam were studied in two groups of at doses of 500 mg. 130 mg. and 3 gm. Respectively two times a day. The results of the treatment are as under:

Results of Clinical/therapeutic Trial of Siddha Preparations on Karappan

Therapy	Total cases	Good response	Fair response	Poor response	No response	LAMA
Parangipattai choomam Sanguparpam Karappan Thailam G-1	11	7	2	-	-	2
Idivallathi Mezhugu PungaThailamG-2	7	2	3	1	-	1
Total	18	9	5	1	-	3

Yanaikkal Noi (Filariasis)

The effect of Linga Chendooram, Thalampoo Mathirai / Nilavembu Kudineer and Kakkattanver Karkam and their combinations were studied on Yanaikkalnoi at the Clinical Research Unit, Trivandrum. The study was carried out in three groups, in both carrier and manifested cases of Yanaikkal noi at Out Patient level. During the reporting year 1 case showed good response.

Santhu Vatha Soolai (Rheumatoid arthritis)

Santhu Vata Soolai is described in Siddha literature, as one of the 80 Vatharoganal. A study to evaluate the effect of Arumuga Chenduram, Aya Kantha Chenduram, Visha Mutti Thailam, Mahaveera Mezhugu in the management of Santhu Vatha Soolai has been taken up at Central Research Institute, Chennai and CRU(S), Trivandram. 200 mg. two times a day followed by palm jaggery was administered to all the 40 cases studied. The results of the treatment are mentioned below:

Results of Clinical/therapeutic Trial of Siddha Preparations on Santhu Vathasoolai

Therapy	Total cases	Good response	Fair response	Poor response	No response	LAMA
Mahavera Mezhugu	37	9	6	8	0	14
Arumuga Chenduram, Aya kantha Chenduram, Visha Mutti Thailam,	3	3	-	-	-	-
Total	40	12	6	8	0	14

Enumbu Murivu Chikichai(Bone setting)

This disease condition has been taken up by Clinical Research Unit(Siddha), Trivandrum. The study has undertaken to assess the effect of Odivu Murivu Thirumeni Thailam, Sivappu Kukkail Thailam. 22 cases were studied. Out of which 17 cases showed good response and 5 were LAMA

Eraippu Noi (Bronchial asthma)

Eraippu Noi is one of the respiratory diseases described in Siddha literature. The efficacy of the drug Amai Oduparpam were studied at the Clinical Research Unit, Trivandrum. 7 cases were studied during this year. Out of 7 cases, 5 cases showed fair response, 1case showed poor response and 1 was LAMA.

Venpadai (Leucoderma)

Venpadai Noi is one of the skin diseases described in Siddha texts. The efficacy of the drugs Aya Bringaraja Karpam, Naga Parpam and coded drugs G1 and A.B. Karpam were taken up for study at CRI, Chennai and RRI, Pondicherry. 52 cases were studied during the reporting year. It is observed only few spots of regimentation cn the affected area, except this no other significant response is recorded. The results of the treatment are given under:

Results of clinical/Therapeutic trial of Siddha Preparation of Venpadai

Therapy	Total cases	Good response	Fair response	Poor response	No response	LAMA
G-2	36	3	4	20	-	9
A.B.Karpam	10	4	2	1	3	-
Naga parpam	6	3	1	2	-	-
Total	52	10	7	23	3	9

Neerezhivu (Diabetes mellitus)

Neerezhivu is one of the commonest metabolic disorder described in Siddha texts under Neemoigal. The study has been undertaken to assess the efficacy of coded drug D2 and NX at CRI, Chennai and RRI, Pondicherry respectively. 191 cases were taken up for study. The results of the treatment are given below:

Results of Clinical/therapeutic trial of Siddha preparation on Neerezhivu

Therapy	Total cases	Good response	Fair response	Poor response	No response	LAMA
D2	180	30	10	15	25	100
NX	11	3	2	-	4	2
Total	191	33	12	15	29	102

Table showing number of Patients Attended at Out patients/In Patients Deptt.

S. No.	Instt./Unit	New	Old	Total	No. of patients Admitted in IPD	No. of patients Discharged
1.	CRI,Chennai	9475	24422	33897	198	198
2.	RRI,Pondicherry	4959	13426	18385	103	101
3.	CRU,Palayamkottai	280	7232	7512	44	44
4.	CRU,Trivandrum	728	1632	2360	-	-
	Total	**15,442**	**46,712**	**62,154**	**345**	**343**

3. MEDICO-ETHNO-BOTANICAL SURVEY PROGRAMME

Survey of forest areas for procuring drugs and arranging the supply of required materials for Research purposes occupies an important place. Medico-Botanical Survey Unit functioning at the Govt. Siddha Medical College, Palayamkottai has taken up this task. This Unit was established in 1971.

The Unit is engaged in exploring the availability of medicinal plants especially used in Siddha medicine, in the forest areas of Tamil Nadu. The study includes identifications, quantitative and qualitative analysis of the genuine drugs their substitute/adulterants etc.

During the reporting year, the Survey Unit conducted 9 collection/survey tours in and around Coimbatore, Tirunelveli and Kanyakumari forest areas and also for collecting the medicinal plants to supply to other Units, 411 specimens were collected during these collection tours and they belong to 59 families 166 genera. 186 specimens were also collected during tours and added to the herbarium.

111 herbarium specimens were identified and mounted on the Herbarium sheets. Out of the Herbarium specimens added to the herbarium the following are some of the important and widely used plants in Siddha medicine.

Sl.No.	Botanical Name	Tamil Name
1.	Ficus dalhousiae Miq	Percial
2.	Cissus quadrangularis	Pirandai
3.	Cassica uniflora Mill	Seemai Thagarai
4.	Jasminum azoricum L.	Kattumullai
5.	Galinsoga parviflora Car	
6.	Adenanthera pavonina Linn	Aanaikuntri
7.	Artemisia sp	Marugu
8.	Bambusa arundinacea (Retz) Roxb.	Moonkil
9.	Trianthena triquetra Pottl.Ex.Wilid	Siru saranarai
10.	Gmelina sp	
11.	Thecagonum biflorum (L) Baby	
12.	Lagerstomia indica L.	Venthekku
13.	Costus plicata	Insulin chedi
14.	Thottea sukuqyisa (Linn)Dingtha	Kuravan kandamooli
15.	Ficus guttata (Wight)Kurz.	Kodi aththi
16.	Brudula crenulata Roxb.	Mulvengai
17.	Diospyris ebenum Koen.	Vakkanai

18.	Decalelpis hamiltonii Wight & Arn.	Malai nannari
19.	Dioscorea wallichii	Kachchi
20.	Arundinaria graminifolia	
21.	Cinnamomum verum Pres	Karuva
22.	Cythea nilgirensis Halttum	Perani
23.	Utleria salicifolia Pocold ex Hook	Malai nannarai
24.	Ludwigia perennis L.	Neer kirambu
25.	Polygala rosmarinifolia Wight & Arn.	Nangai
26.	Strobilanthes sp	Kurinji
27.	Bauhinia racemosa Lam.	Aathi
28.	Symplocos oligandra Bedd.	Pachothiparttai
29.	Allophyllus serratus (Roxb)Kurz.	Amalai
30.	Sapindus emarginatus Vahl.	Poovanthi.
31.	Scolopia crenulata (Wight &Arn)Clos	Charalu
32.	Barleria Montana Nees.	
33.	Ceropegia juncea Roxb	Pulipirandai
34.	Vermonia conyzoides W.W.Smith	
35.	Atlantia monphylla (1) Correa	Kurunthu
36.	Casearia coriacea Thw.	Kodicchi
37.	Pennisetum typhoides	Kambu
38.	Sonerilla clarkei Cogn.	
39.	Cinnamomum verum Presl	Ilavangam
40.	Aystasia travancorica Bedd	
41.	Indigofera cassioides Rottl.ex.DC.	
42.	Connarus monocarpus L.	
43.	Elaeocarpus venusutus Bedd	Kattuuthiratchai
44.	Knema attenuata)	Warb.Chorapathiri
45.	Exacum pedunculatum L.	
46.	Homalium zeylanicum L.	
47.	Pouzolzia wightii Benn.	
48.	Cyathea neilghrense	
49.	Vallaris solanacea (Roth) Kuntze	
50.	Ammi majus	
51.	Ficus microcarpa L.f.	
52.	Viscum articultum Burm.	
53.	Ficus arnottiana Mia	Kalarasu
54.	Terminalia arjuna W & A	Marutham
55.	Enicostemma axillara Raynal	Vellarugu.

5 different parts of the plants were collected and added to the Museum collection maintained by the Unit raising the total to 881drug samples.

250 kgs. of different parts of the medicinal plants were collected during the tours and preserved by the Unit. Out of this collection 51.250 kg. dried plant parts were sent to different units of the Council.

The Unit reported 16 Folklore medical claims useful in foot sores, eczema, stomach pain, scrotal swellings and bowel complaints, hemicrania, giddiness, cuts and wounds, hair growth, jaundice, liver problems, atrophy of muscle, scabies, diabetes, dysentery, leucoderma etc.

4. PHARMACOGNOSY RESEARCH STUDIES

The Pharmacognosy Research Programme is being undertaken at Pharmacognosy Research Wing functioning in Central Research Institute (Siddha), Chennai. During the reporting year pharmacognostic study on the following drugs were reported.

Sl.No.	Name of drugs	
1.	Neermulli	- Hygrophila auriculata (Schum)Heine (Whole Plant)
2.	Alam vizhuthu	- Ficus bengalensis L. (aerial root)
3.	Kottai karantai	- Sphaeranthus indicus L. (whole plant)
4.	Aamanakku ilai	- Ricinus cinnybus L. (Leaf)
5.	Ilavu	- Ceiba pentandra (L) Gaertn (stem bark)
6.	Thanneervittan kizhangu	- Asparagus racemosus Willd.(rhizome)
7.	Tippili	- Piper longum L (fruit)
8.	Valmilaku	- Piper cubeba (fruit)
9.	Vagai	- Albizzia lebbeck (L) Willd (leaf)
10.	Thuthuvalai	- Solanum trilobatum (whole plant powder)

The Regional Research Institute(Ay.), Bangalore, Deptt. of Standardisation has carried out the following Physio-chemical studies on finished Siddha products, Pharmacognosy, Physico-chemical & TLC studies on Plant origin of single drugs and Physico-chemical studies on Animal origin:

I. Finished products (Siddha):

Physico-chemical studies

1. Panchalavanaparpam
2. Perandaparpam No.2
3. ARumukhachenduram
4. Chandamarutha chenduram
5. Kasthurikaruppu
6. Talakachenduram

II. Single Drugs:

Pharmacognosy & Chemistry

a) Plant origin:-

Pharmacognosy, Physico-chemical & TLC studies

1. Perande – Cissus quadrangularis (Stem)
2. Thumbai – Leucas aspera (Leaf)
3. Karanthai ilai – Sphearanthus indicus(Leaf)
4. Karithumbai – Anisomeles malabarica (Leaf)
5. Uththamani – Pergularia daemia (Whole plant)
6. Murungapattai – Moringa pterygosperma(stem bark)

b) Animal origin:

Physico-chemical studies

1. Kolimuttai
2. Kolimuttaivenkaru
3. Kolimuttaiodu
4. Kolimuttai manjalkaru
5. Pasu chanam
6. Pasunir
7. Chanippal

LITERARY SURVEY

1.	Milagaranai	-	Toddalia asuatuca Lam
2.	Amanakku	-	Ricinus communis L.
3.	Kottai karantai	-	Sphaeranthus indicus L.

COLLECTION / IDENTIFICATION

Drugs that enter into the formulations have been identified for their authenticity in the Pharmacy department. Apart from this, the following plants were collected and identified for analytical / Pharmacological / clinical studies.

1.	Avarai	Cassia auriculata L
2.	Imbural	Hedyotis puberula (G.Don) Am
3.	Vishnukaranthai	Evolvulus alsinoides L.
4.	Kottaikaranthai	Sphaeranthus indicus L
5.	Kuppaimeni	Acalypha indica L
6.	Thulasi	Ocimum tenuiflorum L.
7.	Vellarugu	Enicistemma axillare (Lam) Raynal
8.	Avuri	Indigofera tinctoria L.
9.	Neerbrahmi	Bacopa monnieri (L) Penn.
10.	Othianpattai	Lannea coromandelica (Houtt) Merr.
11.	Thagarai	Cassia tora L.
12.	Seenthil	Tinospora cordifolia (Willd).Th.
13.	Eshwaramooli	Aristolochia indica L.
14.	Kandankathri	Solanum surattense Burm.f.
15.	Maruthampattai	Terminalia Arjuna (Roxb.ex.DC) W.&A.
16.	Nathaisoori	Spermacoce hispida L.
17.	Pirandai	Cissus quadrangularis L.

HERBARIUM

111 specimens collected for herbarium used in Siddha Medicine were identified and mounted in Herbarium sheets and maintained in the herbarium.

MUSEUM

150 raw drugs are being maintained. A small museum consisting of 175 drug samples of Siddha is being maintained.

5. PHARMACOLOGICAL RESEARCH PROGRAMME

The Pharmacology Research Programme has been carried out by the Pharmacology Section of the Central Research Institute, Chennai. The following single/compound drugs were studied for their efficacy and toxicity studies.

Drugs allocated and studied during the current year:-

Sl. No.	Drug allotted	Target fixed	Studied carried out	Remarks (if the target are not achieved and the reasons thereof ere to be furnished)
1	VS1(alco.Ext)	Toxicity and anti arthritic study	Writhing test in mice	The drug showed analgesic activity
2	VS1 (Choornam)	Toxicity and anti arthritic study	Writhing test in mice	The drug showed analgesic activity
3	VS3	Toxicity and anti arthritic study	Acute toxicity Hot plate analgesic test in mice.	Non-toxic in rat and mice. The drug showed analgesic activity.
4	Nellivatral (*Emblica officinalis)*	Toxicity and Hepatitis	Hot plate analgesic study in mice.	It showed analgesic effect, which is primarily cental.
5	Mahaveera mezhghu	Toxicity and anti arthritic study	Acute toxicity	Non-toxic in rat and mice.
6	Ayush RP	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat. study.	No specific abnormalities in clinical, bio-chemical, hematological, pathological profiles were recorded in rats exposed to the test compound at various dose levels.
7	Ayush OSTO	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat	No specific abnormalities in clinical, bio-chemical, heamatological, pathological profiles were recorded in rats exposed to the test compound at

			Chronic toxicity study.	various dose levels. It is in progress
8	Ayush LIV	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat	No specific abnormalities in clinical, bio-chemical, heamatological, pathological profiles were recorded in rats exposed to the test compound at various dose levels.
9	Ayush Rasyan-A	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat.	It is in progress
10	Ayush Rasayan-B	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat.	No specific abnormalities in clinical, bio-chemical, heamatological, pathological profiles were recorded in rats exposed to the test compound at various dose levels.
11	Annabhedhi chenduram.	Toxicity study	Sub-acute toxicity study on albino rat.	No specific abnormalities in clinical, bio-chemical, heamatological, pathological profiles were recorded in rats exposed to the test compound at various dose levels.

ANTINOCICEPTIVE STUDY:

Eddy's hot plate thermal stimulus on albino mice with drug Nellivatral showed 321 maximum analgesic score at 180 minute and found to be significant.

Eddy's hot plate thermal stimulus on albino mice with drug VS3 showed 311 maximum analgesic score at 90 minute and found to be significant.

Writhing test in mice with drugs VS1 in Choornam form and alco. extract form showed significant analgesic activity.

6. PHARMACEUTICAL/STANDARDISATION RESEARCH PROGRAMME

The drug standardization plays an important role for obtaining authentic medicinal preparations and genuine single drugs for the therapeutic efficacy. The standardization work has been taken up by the Council to study Siddha Formulary (Part-I) and also the single drugs which are entering into those formulations. The study was entrusted with Drug Standardization Research Unit at 1. CRI(S), Chennai. The Programme aims at the study of single drugs, pharmaceutical process involved in the manufacture of the formulations and finished products including laying down analytical standards.

List of single drugs on which phyto-chemical studies have been done (Analytical studies)

STANDARDIZATION

I. Raw Drugs:

1 Koraikizhangu
2 Akasagarudan
3 Kottaikarandai
4 Alamvizhudu
5 Thetrankottai
6 Poovasukai
7 Kthankodi

II. Standardization (Prepared Medicines)

1 Pattukaruppu
2 Kashthurikaruppu
3 Thazhampoomathirai
4 Lingachendooram I
5 Lingachendooram II
6 Lingam
7 Lingakattu
8 Annabedichendooram
9 VS-1

III. **HPTLC Finger printing:**

1. Vishnuchakram
2. Padigalingam I, II and III
3. Thalisathichoornam I and II
4. Mayiliragadi choornam
5. Mynathailam I and II
6. Amukkara choornam.

Single drugs:

1. Kottaikarandai
2. Koraikizhangu
3. Vembupattai
4. Kudasapalaipattai
5. Akasagarudan
6. Imbural with marker alizarin.

IV. **Phyto- Chemistry**

1. Borreria hispida (Nathaichuri)
2. Terminalia arjuna (Marudam pattai)

7. PHARMACY

The Pharmacy attached to Central Research Institute (Siddha), Chennai is engaged in the preparation of classical preparations found in the Siddha literature and also chosen trial drugs for the Institutes/Units of Siddha medicine under the Council.

The raw drug requirement of the Pharmacy met by the Medico-ethno-botanical survey projects and also from the local markets. Thus collected drugs are identified through experts in the field of Siddha medicine and pharmacognosy to determine its genuineness/authenticity.

The prepared medicines based on the method given in the literature are strictly followed in the Pharmacy. Varieties of preparations both required for research and general use are being prepared in the pharmacy such as Parpam, Chendooram, Choornam, Thailam, Nei, Ennai, Kalkam etc. During the reporting period 1671.5 kg. of Chendooram, Choornam, Parpam, etc. and 2324.5 litres of oil based preparations were prepared.

The Institute supplied the prepared medicines to the following institutes/unit during the reporting period:

S.No.	Institutes/Unit	Drugs (kg.)	Drugs (liter)
1.	CCRAS, New Delhi	0.500	0.500
2.	CRU(S), Palayamkottai	4.000	50.000
	Total	4.500	50.500

8. LITERARY RESEARCH PROGRAMME

The Literary Research in Siddha Medicine is being carried out at Literary Research and Documentation Department, Chennai. Following are the work carried out during the reporting period.

1. Konganar Kadaikkandam - 1000.
2. Sangamuni Visha Vaithiyam - 100, English & Hindi versions.
3. Siddha Maruthuva Eliya Vazhakku Muraigal - 5th revised edition.

9. PUBLICATIONS & PARTICIPATIONS

(I) PUBLICATIONS

SL No.	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Journal	Date of Publication
1.	Anbarasi K. et al.	Effect of Bacoside-A on membrane bound a AT Pases in the brain of rats exposed to cigarette smoke.	J. Mol Toxicol. Vol.19 (No.1): 59-65	2005
2.	Anbarasi K. et al.	Creatine isoenzyme patterns upon chronic exposure to cigarette smoke-protective effect of Bacoside-A.	Vascular Pharmacol.,Vol.42:57-61	2005
3.	Anbarasi K. et al.	Effect of Bacoside-A on brain antioxidant status in cigarette smoke exposed rats.	Life Science, Vol.28:1378-84	2006
4.	Etti, S. et al.	5,3-dihydroxy-3,7,4,5 - tetramethoxy flavone.	Acta Crystallography. Section E,Vol.61: 846-48	2005
5.	Manonmani,G et al.	Effect of Terminalia arjuna on the antioxidant defence system in alloxan induced diabetes in rats.	Biomedicine,Vol. 22:52-61,2002	2005
6.	Pandimadevi, K.et al.	Protective effect of Premna tomentosa extract on actamenophen induced mytochodrial dysfunction in rats.	Mol.Cell Biochem., Vol.272: 171-77	2005
7.	Prasad,M.V.V et al.	Hepatoprotective activity of Desmodium gangetionm.,	Asian J.Chem.,Vol.17:2847-49	2005
8.	Santhaoshkumari C.et al.	Lipid lowering activity of Ecliptic prostrata in experimental hyperlipidemia.	J.Ethnopharmacol., Vol.105:332-335	2006
9.	Shanmugakumar, S.D. et al.	Antimycobacterial properties of leaf extract of Pitheulobium dulu:	Indian Drugs,Vol.42 (6):392-96	2005
10.	Shanmugakumar, S.D. et	Pharmacognostic investigations on leaf extracts of Pithacelobium dulce-A	Ed. Pulliah, Regency Publication, New Delhi,	2005

	al.	promising antituberular drugs.Recent trends in plant sciences	2005.	
11.	Umadevi, A. et al.	Phytochemical investigation in the leaves of Flaveria trinervia.	Nat.Prod.Sci.,Vol.11 (No.1):13-15.	2005
12.	Usman Ali.,S. et al.	Contribution to the botanical understanding of Poochandira pattai-a plant drugs of Siddha medicine.	J.Econ.Taxon.Bot,Vol.2 9:372-74.	2005
13.	Vasanth,S. et al.	Standardization of Evolvulus alsinoides.	Convergence, Vol.7:1-4	2005

(II) PARTICIPATIONS

Sl. No.	Name of the Author(s)	Title of the paper	Name of the Conference/Seminars/ Workshop and date of participation.
1.	Chelladurai,V Padmasorna Subramanian,M.	Herbs used in the Varma therapy	National Conference on Varmatherapy organized by CCRAS and Vivekananda Kendra held at Kanyakumari, 12-13/8/2005
2.	Lakshmi Madhavi,M.S. et al.	Efficacy of Sida acuta in wound healing.	Seminar on Global repositioning of Indian leather products held at CLRI, Chennai, 28-30/1/2006.
3.	Chelladurai,V Padmasorna Subramanian,M.	A study of natural dyes.	National Seminar on Bioprospectus of Bioresources held at St. Xavier's College, Palayamkottai, 8-10/12/2005.
4.	Ramesh,C.et al.	Standardization of Naga parpam, a herbo-metallic formulation.	Workshop on Standardization of metallic and mineral Siddha preparations-Role of modern instruments,2/2006.
5.	Saraswathy,A.& Mercy,L.S.	Antibacterial activity of Kunkiliya parpam.	National Seminar on Modern Vistas on standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai, 7-8/7/2005.
6.	Shanmugakumar,S.D .et al.	In vitro assay of anti- fungal and anti-tubercular potentials of the leaf extracts of Pithecelobium dulce.	28th Indian Botanical Society conference held at B.S.I. Dehradun, 24-26/10/2005.
7.	Sumaty,T.et al.	Inhibitory effect of Bacopa monniera on morphine induced Pharmacological studies in mice.	National Seminar on modern Vistas on standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai 28/7/05
8.	Ujeevanan,G & Saraswathy,A.	XRF and XRD Analysis of Cintamani Chanduram.	Workshop on standardization of metallic and mineral Siddha preparations role of modern instruments held at CRI(S),Chennai, 11-12/2/2006.

9.	Umadevi,S.et al.	Phyto-chemical investigation of the leaves of Flaveria trinetisia	National Seminar on Modern Vistas on standardization and GMP's of ISM drugs held at CSMDRIA, Chennai 7-8/7/2005.
10.	Vasanth,S.et al.	Standardisation studies on Nandukkal parpam.	Workshop on standardization of metallic and mineral Siddha preparations-Role of modern instruments held at CRI(S), Chennai,11-12/2/2006.
11.	Veluchamy, G. et al.	Thailams unique on Siddha system-An appraisal.	International Conference on Globalization of traditional, complimentary and alternative systems of medicine held at Agriculture University Coimbatore, 2006.

IV. ACKNOWLEDGEMENT

The Director of the Council places on record its deep appreciation for the services rendered by the members of the Governing Body, Finance Committee and Scientific Advisory Committees. The valuable assistance, guidance and continued support given by them to the Council in the conducting of its work is acknowledged with gratitude.

The Director of the Council also places on record his gratitude and deep sense of appreciation to scientists and scholars of various disciplines of medical system and other ancillary sciences, Universities and Government agencies who are directly or indirectly associated with this Council and officials of all the research projects including the Headquarters office for their cooperation in implementing the various programmes undertaken during the period under report.

The Council avails this opportunity to convey its profound thanks to Government of India, Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of AYUSH for their continuous support, helpful attitude and co-operation which enabled the Council to pause its activities in the field of research and hopes to receive their continued support and co-operation in future also for the over all development of Ayurveda and Siddha.

The Council places on record the effort of Deputy Director (Technical), Programme Officers, Statistical Officer, Nodal Officer and Research Officer (Ay.) for bringing out the Annual Report in the present form.

.....

Designed and Printed at Central Council for Research in Ayurveda & Siddha
Janakpuri, New Delhi - 110058